भारत-सेवक

लेखक

श्री यज्ञदत्त शर्मा

(परिवार, (पुरस्कार-प्राप्त) जय पराजय, महल ग्रौर
मकान, दीवान रामदयाल, बाप बेटी, इन्सान,
इन्साफ, निर्माण पथ, बदलती राहें,
मधु-ग्रादि उपन्यासों के
रचयिता)

ग्रोरिएण्टल बुक डिपो

१७०४, नई सड़क, दिल्ली ।

प्रकाशक
ओरिएण्टल बुक डिपो,
१७०४, नई सड़क, दिल्ली

मूल्य ५।) रुपये
५.५० नये पैसे

मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस,
क्वीन्स रोड, दिल्ली

उपन्यासकार यज्ञदत्त शर्मा

नई पीढी के प्रतिनिधि उपन्यासकारों में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य श्री यज्ञदत्त शर्मा द्वारा हुआ है। गत पच्चीस वर्षों में अनेक आलोचनात्मक पुस्तकों के अतिरिक्त शर्मा जी ने हिन्दी को पंद्रह उपन्यास दिये हैं:—

'भारतसेवक' आपका अंतिम उपन्यास है।

'भारतसेवक' पर कुछ कहने से पूर्व मैं यह आवश्यक समझता हूँ कि शर्माजी के साहित्य पर संक्षेप में थोड़ा प्रकाश डालूं ?

विषय और परिणाम की दृष्टियों से शर्मा जी ने हिन्दी उपन्यासकारों में सर्वाधिक लिखा है और जो कुछ लिखा है बड़े सोच समझ और गंभीर विचार करने के उपरान्त लिखा है। शर्माजी का सारा जीवन देश की आजादी की लड़ाई में सक्रिय भाग लेने में व्यतीत हुआ है। जेल-जीवन, ग्रामीण जगत् और सजीव राजनीति से उनका निकट सम्पर्क रहा है। इसके अतिरिक्त श्रमिकों तथा नगर के जीवन के सभी पहलुओं को उन्होंने स्वयं देखा है। उनकी विशाल अनुभूतियाँ तथा नवनिर्माण की शत-शत योजनाएँ उपन्यासों के माध्यम से प्रकट हुई हैं। भारत के ग्रामीण और राजनीतिक व्यक्तियों को पात्रों में भरकर उपन्यासों में लाने का प्रथम सफल प्रयास शर्माजी के उपन्यासों में मिलता है। देश, समाज, ग्राम, पुलिस तथा भारत के भिन्न-भिन्न वर्गों का सजीव चित्रण यहाँ हमें मिल जाता है।

प्रेमचन्दजी की भांति शर्माजी के उपन्यासों में हमें यथार्थवाद के दर्शन होते हैं, जिसका उद्देश्य भारत के नवनिर्माण की दिशा में आने वाले कंटकों तथा पूंजीवाद के प्रताप से देश में पनपने वाले ईर्ष्या, स्वार्थ, आपाधापी, कपट, ऊँच-नीच, अमीरी गरीबी तथा शोषण के भिन्न-भिन्न रूपों का चित्रण करना है। इन्हें शर्माजी ने प्रकाश में ला दिया है। शर्मा जी का कांग्रेस तथा देश की बदलती हुई अवस्था से निकट सम्बन्ध रहा है। वे सन् १९३० से १९३७ तक कांग्रेस आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेते रहे हैं। प्रगतिशील विचारों और क्रान्तिकारी होने के कारण आप जेल जा चुके हैं। अतः राजनीति के विभिन्न दलों तथा कांग्रेस कार्यों में आपको बहुत दिलचस्पी

रही है। सभी दलों के दृष्टिकोण आपने देखे और समझे हैं पर अपनी श्रद्धा आपने कांग्रेस को ही दी है।

इस गाँधीवाद विचारधारा और क्रान्तिकारी विचारों की छाप आपके जीवन की तरह आपके उपन्यासों में भी पाई जाती है।

शर्माजी के उपन्यासों में बौद्धिक तत्वों की प्रधानता है और उन्होंने जिन सार्वजनिक और सामाजिक समस्याओं को अपने चौदह उपन्यासों में उभारा है, वे हमारे शिक्षा जगत् में प्रचुर महत्त्व रखते हैं, क्योंकि उनका दृष्टिकोण एक स्वस्थ विचारक का है।

शर्माजी ने हिन्दी उपन्यासों को एक नवीन धारा प्रदान की है। उनमें कथानक-निर्माण और पात्रों के चरित्र-चित्रण की अद्भुत क्षमता है और यही कारण है कि उनके १४ उपन्यासों में कथा भाग और पात्रों के अध्ययन सबके लिये भिन्न भिन्न रूप हैं। यथार्थवादी चित्रण के साथ-साथ उनमें मनोरंजन और कौतूहल बनाये रखने की भी प्रतिभा है।

जीवन के सुकुमार स्थलों को, विशेषतः नारी जीवन के कोमल हृदय, उमंग, उल्लास और दलित भावनाओं को लेखनी की नोक द्वारा कागज़ पर उतारकर रख देने की उनमें प्रतिभा है, और है पात्रों में आदर्श को प्रतिष्ठित करने की योग्यता। उनके कथानक एक सरल सीधे चलते हैं, जिनमें कृत्रिमता या अनावश्यक जटिलता नहीं आती। प्रवाह बना रहता है।

श्री यज्ञदत्त शर्मा की प्रतिभा बहुमुखी है। उन्होंने कविता, नाटक और उपन्यास-साहित्य की इन तीनों ही रचनात्मक दिशाओं में रचना की है। इनकी कई सौ कविताएँ हैं, जिनमें बहुत-सी सन् १९३४ से १९४१ तक की "सरस्वती", "देशदूत", माधुरी, विशाल भारत, "चाँद" इत्यादि में प्रकाशित हुई हैं। "चाँद" और "देशदूत" में आपके एकांकी और कहानियाँ छपती रही हैं। लगभग इसी समय (१९३९-४०) शर्माजी ने उपन्यास के माध्यम को अपनाया था और उनके तीन उपन्यास इसी युग में लिखे गये—"विचित्र त्याग "चाँद" कार्यालय, प्रयाग से, "दो पहलू" हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी से, और 'ललिता" नेशनल लिटरेचर कम्पनी कलकत्ता से।

प्रश्न उठता है कि कविता, एकांकी, नाटक और उपन्यास तीनों दिशाओं में लेखनी उठाई, तो उपन्यास को ही उन्होंने क्यों अपनाया? वे स्वयं इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार देते हैं:—

"कविता में बात नपीतुली और सूक्ष्म रूप में कही जाती है, जो सीमित रह जाती है। कुछ कविता प्रेमियों तक ही नाटक को अपना सा ही प्रभाव व्यक्त करने के लिये मंच के आधीन रहना होता है। वह अपने में पूर्ण नहीं है। उपन्यास अपने पूर्ण और विशाल रूप में पाठक के सामने आता है और जो कुछ लेखक कहना चाहता है उसे पूरी तरह व्यक्त करने की क्षमता उपन्यास में है। साहित्य अपने कलात्मक चित्रण और वर्णन के द्वारा मानव जीवन के निकट पहुंचने का प्रयास करता है। यह चित्रण और वर्णन जितना सही ढंग से पाठक को अपनी बात समझाने और उसके जीवन के निकट पहुँचने में सहायक होता है, उतनी ही कला अपना व्यापक रूप ग्रहण करती है। इस सही चित्रण की साहित्य क्षेत्र में सबसे स्वतन्त्र और व्यापक अभिव्यक्ति उपन्यास कला को उपलब्ध है। उपन्यास मानव जीवन की पूरी कहनी कहता है। जो कार्य प्राच्य युग में महाकाव्य सम्पन्न करता था, वह इस युग में उपन्यास द्वारा अधिक सुविधाओं और साधनों के साथ संभव है। मानव जीवन की पूरी कहानी कहने की क्षमता रखने वाली साहित्य की इस धारा को व्यापक क्षेत्र और असीम विचार व्यक्त करने की क्षमता के कारण मैंने अपनाया।"

वास्तव में शर्माजी ने उपन्यास की विस्तृत चित्रपटी पर देश और समाज के जीवन और नाना पहलुओं पर विस्तार से विचार किया है। उपन्यास तो उनके लिए एक माध्यममात्र है, जिसकी पृष्ठभूमि में उन्होंने हमारे समाज और देश के विराट् प्रश्नों को लिया है। उसमें ग्रामीण जीवन का विशद चित्रण हैं, गाँवों की समस्याओं का हल है, भारतीय संस्कृति के प्रश्नों का विवेचन है।

श्री यज्ञदत्त शर्मा का प्रथम उपन्यास "विचित्र त्याग" है, जो सन् १९३७ में लिखा गया था।

दूसरा उपन्यास "दो पहलू" (१९४०) कांग्रेस के १९३० वाले नमक कानून आन्दोलन से सम्बन्धित है। सन् १९३० से १९४० तक यज्ञदत्तजी कांग्रेस क्रान्तिकारी आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेने के दंड स्वरूप दो बार जेल भेजे गये थे। उस राजनैतिक जीवन, अन्दरूनी अवस्थाओं और क्रियात्मक कार्यों को नजदीक से देखने और परखने का उन्हें अच्छा अवसर प्राप्त हुआ था। "दो पहलू" उपन्यास की यही तत्कालीन राजनीतिक

पृष्ठभूमि है।

"दो पहलू" में भारत की सजीव राजनीति पात्रों में भरकर रंगमंच पर लाने का श्रेय शर्माजी को है। इसमें दो नायक हैं, एक भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का रिवॉल्वर धारी क्रान्तिकारी वीर तथा दूसरा गांधीवादी आत्मसमर्पण-कारी अहिंसात्मक क्रान्ति का अग्रदूत।

सन् १९४० के पश्चात् १९४२ तक देश में क्रान्ति का देश-व्यापी आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और उन्होंने इसमें डटकर कार्य किया। सरकारी पुलिस ने उन्हें बन्दी बनाकर कारावास में डाल दिया। जेल से छूटकर आये तो सन् १९४७ के पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में होने वाले हत्याकांड ने उन्हें फिर बुरी तरह झंझोड़ डाला। उनके भावुक हृदय पर इस हत्याकांड का बड़ा आघात पहुँचा। फल स्वरूप उन्होंने इस समस्या पर "इन्सान" उपन्यास की रचना की। दिल्ली में उन्होंने साम्प्रदायिक संकुचितता के नग्न दृश्य देखकर लाहौर में हिन्दुओं की दशा नेत्रों के सम्मुख मूर्तिमान हो उठी और उन्होंने इन्सान द्वारा इन्सान पर किए गये अत्याचारों का चित्रण "इन्सान" उपन्यास में कर डाला। देश में उस समय अव्यवस्था का साम्राज्य था और कोई भी राजनैतिक दल चाहे वह कम्युनिस्ट था, या भारतीय जनसंघ, यदि वह उस विकट परिस्थिति में देश में व्यवस्था होने देने में रुकावट पैदा करता था, तो वे उसे देश का शत्रु मानते थे। "इन्सान" में यही विचारधारा है।

भारत स्वतन्त्र हुआ, देश की राजनीति ने एक करवट ली। पुरानी समस्याएँ बदलीं और उनके स्थान पर नई नवनिर्माण सम्बन्धी समस्याएँ देश के सम्मुख उपस्थित हुईं। नए युग में हिन्दुस्तान अन्दर से, विशेषतः आर्थिक दृष्टि से, खोखला हो चुका था। देश को समृद्धिशाली बनाने के लिए उत्पादन कार्य और ग्रामीण उद्योग धन्धा, कृषि तथा सम्पदा वृद्धि के कार्यों को तीव्रता से बढ़ाने की आवश्यकता थी। लेकिन कुछ स्वार्थी और अदूरदर्शी व्यक्तियों को अपने ही हित का ध्यान रहा। पूंजीपति अपनी पूंजी बढ़ाने की फिक्र में रहे; मज़दूरों का शोषण होने लगा। पूंजीपति मज़दूर समस्या विषमरूप से भारत के सम्मुख आ गई। यह समय मज़दूर तथा पूंजीपतियों के परस्पर उलझने का नहीं था। देश को आवश्यकता थी उत्पादन और निर्माण की। इस समस्या को स्पष्ट करते हुए

शर्माजी ने एक नया उपन्यास लिखा। यह था उनका "निर्माण-पथ".

कांग्रेस ने देश की राज्य सत्ता को सम्हाला। देश के तपेमंजे नेताओं ने पुरानी सरकारी मशीन को लेकर शासन चलाना प्रारम्भ किया। इस समय शर्माजी ने "अन्तिम चरण" उपन्यास की रचना की। यह आद्यो-पान्त की रचना की। यह आद्योपान्त व्यंग्य प्रधान रचना है। इसमें शासन पा जाने पर कांग्रेसी नेताओं में आने वाली तब्दीली और रामराज्य परिषद् तथा जन-संघ के कार्य कर्त्ताओं में उसे देखकर पैदा होने वाली ईर्ष्या का चित्रण है। इसके बाद "महल और मकान" में नवनिर्माण के अन्य प्रश्नों को लिया गया। इसमें भावी समाज के निर्माण की योजनाओं पर विचार किया गया है।

"महल और मकान" में शर्माजी ने भारत की दशा, देश की विगत वर्षों की प्रगति, तथा प्रगति क्षेत्र में पूंजीवादी अनैतिक हथ-कण्डों का भण्डा-फोड़ करते हुए मजदूर वर्ग अथवा नैतिक बलशाली सहयोग संघों द्वारा देश की सफल उन्नति का प्रतिपादन करते हुए विश्वशान्ति का मार्ग दिखाया है। इस प्रकार उपन्यास में यथार्थ का चित्रण करते हुए आदर्श की कल्पना की है। बौद्धिक होते हुए भी यज्ञदत्तजी का यह उपन्यास अत्यन्त मनोरंजक एवं सरस है। प्रगतिशील तत्त्वों से युक्त होते हुए भी इसे हम केवल प्रचार की वस्तु नहीं कह सकते। सहयोग तथा सहकारिता के द्वारा ही हम आज कल की मँहगाई को रोक सकते हैं। जहाँ बड़े पैमाने पर उद्योग चल रहे हैं, वहाँ पारस्परिक सहयोग और त्याग की योजनाएँ नहीं कार्य कर सकतीं, क्योंकि वहाँ पारस्परिक सम्पर्क नहीं रहता। उपन्यास के अन्त में सहयोग समिति बनाने वाले तो अपने नगर का नव-निर्माण कर लेते हैं, दूसरी ओर दूसरे पक्ष वाले महल और किले मँहगाई के प्रहार को नहीं सम्हाल पाते। उपन्यास बौद्धिक होते हुए भी मनोरंजक है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार गाँवों और कस्बों को अपने में पूर्ण इकाई (Selfsufficient Unit) बनाया जा सकता है। एक फिल्म निर्माता ने इस उपन्यास की भावना को इतना महत्त्वपूर्ण माना है कि वे एक चित्र का निर्माण कर रहे हैं।

इसके पश्चात् 'बदलती राहें' उपन्यास में पुनः शर्माजी ने सहकारी आन्दोलन को लेकर गाँवों की खेती की समस्या पर एक सुझाव प्रस्तुत

किया। समाज की बदलती हुई प्रणालियों की ओर इसमें अच्छा संकेत हुआ है। आज की गाँव की दशा का भी इसमें मार्मिक चित्रण है और उपन्यासकार ने अपनी सरकार के राज्य में निर्माण का स्वरूप देखा है।

ग्रामों की ओर उनके नवनिर्माण की दिशा में शर्माजी की दिलचस्पी लगातार बढ़ती गई और अगले उपन्यासों में यही उनके विचार का प्रमुख विषय बन गई। प्रेमचन्द के बाद शर्माजी ने ही देश की उन ग्रामीण समस्याओं पर प्रकाश डाला है, जिनके नवनिर्माण के लिए आज देश को प्रमुख आवश्यकता है।

कांग्रेस सरकार ने ग्रामों के पुनरुद्धार का प्रयत्न किया अवश्य, पर जमींदारी को समाप्त करने का कार्य इतनी शिथिलता से हुआ कि इसमें अधिकांश को हानि हुई। जमींदारों, पटवारियों और अमीनों की गुटबन्दियों की शिला के नीचे काश्तकारों के अधिकार और स्वप्न पिसकर चकनाचूर हो गए। न्यायालय उन्हीं पुरानी लकीरों के फकीर बनकर चलते रहे, प्रत्युत उनकी दशा और भी घृणित हो गई। अपने ग्राम में जाकर यज्ञदत्तजी ने स्वयं इस रोग के रोगी कई किसानों को देखा, जिनके वे खेत उनसे पुलिस की सहायता से छीन लिए गए थे, जिनमें वे युगों से हल चला रहे थे। न्यायालयों के निर्णय भी उनके विरूद्ध हुए। इस गम्भीर घटाना का शर्माजी के हृदय पर इतना प्रभाव हुआ कि उन्होंने "इन्साफ" उपन्यास लिखा। इसमें ग्रामीण समस्याओं का हल प्रस्तुत किया गया और काश्तकारों को ही भेंट किया गया। तात्पर्य यह कि इस उपन्यास से शर्माजी ने अपने उपन्यासों की दिशा बदल दी।

ग्रामीण रूढ़ियों, अन्धपरम्पराओं, जीर्ण-शीर्ण विचारधाराओं के नाश के लिए शर्माजी ने "झुनिया की शादी" और "मधु" उपन्यास लिखे। वे शहर से ग्राम की ओर मुड़े। ग्रामों की परिस्थितियाँ, वहाँ का समाज, सरकारी अफ़सर, जैसे दारोगा, अमीन, पटवारी, सरपंच और पंचों के जीवन में प्रविष्ट होने का प्रयत्न किया। इन उपन्यासों में शर्माजी ने ग्रामों की भाषा, गाँव ही के मुहाविरे, गीत, रीतिरिवाजों को लाने का प्रयत्न किया। इन उपन्यासों में आज का भारतीय ग्राम साकार हो उठा है।

"मधु" में ब्रिटिश राज्य के अन्दर वेश्यावृत्ति का जो व्यवसायीकरण

हुआ है, उसकी दर्दनाक झांकी प्रस्तुत की गई है, ब्रिटिश युग में (और कहीं कहीं आज भी) वेश्यावृत्ति को फैलाने में पुलिस गुण्डों में मिली रहती थी। उन्होंने उन इलाकों में ऐसी मंडियाँ बना दी थीं, जहाँ गरीबी के कारण गाँव वालों को कुछ रुपया देकर उनकी युवती कन्याओं को वेश्यावृत्ति कराने के लिये खरीदा जा सकता था। पहाड़ी इलाकों में इस प्रकार की गरीबी विशेष रूप से थी। इस वृत्ति के लिए कौन-कौन जिम्मेदार है, इसका चित्रण इस उपन्यास में है।

"झुनिया की शादी" में गरीब परिवार में लड़की के विवाह की समस्या को लेकर आने वाली समस्याओं, घटनाओं, परिस्थितियों और उनके भावों की दशा का चित्रण है। इस उपन्यास का कथानक मेरठ जिले के एक गाँव की सच्ची घटना पर आधारित है। इसमें बिगड़े हुए बेटे, सास का दुर्व्यवहार आदि विवाह की कठिनाइयों के हृदय विदारक चित्र खींचे गए हैं।

शर्माजी को ग्रामों में एक और विषम समस्या मिली। वह थी सम्मिलित परिवार की समस्या। सम्मिलित परिवार का ढांचा उन्हें हर परिवार में एक घुन खाये हुए वृक्ष के समान दिखलाई दिया। भाई, भावजों, भतीजों, और बेटे-बेटियों के जीवन को सम्मिलित परिवार की रस्सी में जकड़कर बाँधने के प्रयासों के विरुद्ध उन्हें घर घर में विद्रोह दिखाई दिया। अनेक मुकदमें होते मिले। परिवारों के सदस्यों के हृदयों में एक दूसरे के प्रति विष लेकर गुटबन्दी को पनपते देखा। यह सब उन्होंने अपने उपन्यास "परिवार" में चित्रित किया है। यह उपन्यास एक सम्मिलित परिवार की बरबादी की सच्ची कहानी है, जिसका शब्द-शब्द सत्य है। इसी ग्रामीण वातावरण में शर्माजी ने "परिवार" उपन्यास के बाद "बाप बेटी" उपन्यास की रचना की है।

निष्कर्ष यह है कि शर्माजी ने देश, समाज, और भारतीय ग्राम की प्रायः सभी ज्वलन्त समस्याओं का विस्तृत विवेचन अपने इन चौदह उपन्यासों में किया है। जहाँ एक ओर कांग्रेस और भारत की राजनैतिक उथल-पुथल के मार्मिक और आँखों देखे चित्रण उन्होंने प्रस्तुत किए हैं, वहाँ दूसरी ओर प्रेमचन्दजी की परम्परा को अक्षुण्ण रखा है। प्रगतिशील तत्त्वों का प्राधान्य रहने पर भी उन्हें प्रोपेगेन्डा नहीं कहा जा सकता।

उनके उद्योग से इन उपन्यासों द्वारा हमारा आधुनिक हिन्दी उपन्यास साहित्य आगे बढ़ा है, हर दिशा और जीवन के हर पहलू का कुछ न कुछ विवेचन हुआ है। विषय तो अनेक लिए ही हैं, उन्होंने आधुनिक उपन्यास की टेकनीक को भी संवारा है। बौद्धिक तत्त्व होने पर भी पाठक की जिज्ञासा को स्थिर रख सके हैं। पात्रों के चरित्र-चित्रण में आप को असाधारण सफलता मिली है।

श्री यज्ञदत्त शर्मा उपन्यास साहित्य में एक जीवित संस्था है, जिनके दृष्टिकोण में विस्तार है और समस्याओं का यथातथ्य चित्रण। वे एक स्वस्थ विचारक हैं और उनके १४ उपन्यासों में संजीवनी शक्ति का संचय करने की जो प्रवृत्ति अपनाई है वह बड़ी शुभ है।

'भारतसेवक' आपका अन्तिम उपन्यास है, जिसमें राजनीति की पृष्ठ-भूमि और देश के नवनिर्माण की योजना के साथ-साथ जो सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य शर्माजी ने किया है वह है जन-जाग्रति की भावना को मूर्त रूप देना।

उपन्यास आद्योपांत एक रूपक है और उसके सभी अंगों का निर्वाह शर्माजी ने असाधारण कुशलता और सफलता के साथ किया है।

इस उपन्यास में जो नई बात देखने को मिलती है वह यह है कि शर्माजी ने अपनी भाषा का धारा प्रवाह एक दम बदल दिया है और उपन्यास की रचना-कला को एक नई दिशा प्रदान की है।

भारत की सभी राजनीतिक पार्टियों के प्रतीक पत्रों को लेकर जन-जाग्रति के आन्दोलन को आगे बढ़ाया है। और जो सबसे महत्त्वपूर्ण बात आपने इसमें एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत की है वह यह है कि वास्तव में यदि कोई जन-हित का सच्चा विचारक है तो वह लेखक और कार्यकर्त्ता ही है, नेता नहीं है।

शर्माजी के भारतसेवक उपन्यास को मैं हिन्दी उपन्यास जगत् के लिए एक महान् कला-कृति समझता हूँ।

डा० रामचरण महेन्द्र

: १ :

विनय भाई आजकल भारत-सेवक की परिचय-पत्रिका तैयार करने पर जुटे हुए हैं। कमरे के द्वार बन्द हैं और उसके अन्दर जाने की किसी को भी आज्ञा नहीं हैं।

द्वार की चौकीदारी का काम प्रमिला के सुपुर्द है।

विनय भाई लिखना आरम्भ करने की प्रेरणा अपने अन्दर जाग्रत करने के लिए कमरे में एक कोने से दूसरे कोने तक गुन······गुन······ गुनगुनाते फिर रहे हैं। कभी किसी कविता के एक छन्द को लेकर गुन····· गुन······गुनगुनाने लगते हैं और कभी किसी दूसरी कविता की अंतिम पंक्ति को मधुर स्वर में गा उठते हैं। ऊँ······ऊँ······की ध्वनि से कमरा पूर्ण है।

इसी समय रमेश आया और प्रमिला को "भाभी नमस्कार" करके सीधा अन्दर चला गया।

रमेश को देखकर विनय भाई कमरे में पड़े तख्त पर बैठ गये और रमेश को मूढे पर बैठने का संकेत करते हुए पूछा, "पुस्तक के मुख-पृष्ठ का चित्र पूरा हो गया रमेश ?"

रमेश ने मूढे पर बैठकर उसे तख्त के पास खिसकाते हुए कहा, "पूरा तो क्या विनय भाई ! अभी तो अधूरा भी नहीं हो पाया। चित्र ही आपने ऐसा दे-दिया कि जिसका कोई रूप ही नहीं बनता। अर्थात् आप जो रूप भी चाहें उसका बना सकते हैं।"

"इसका अर्थ यह हुआ कि तुम अभी तक अपने मस्तिष्क में 'भारत-सेवक' का कोई स्वरूप ही निश्चत नहीं कर पाये ?" विनय भाई ने कहा।

"यही समझ लीजिये विनय भाई ! रूप मैं कैसे निश्चत करूँ ? एक रूप तो है नहीं आपके भारतसेवक का। जब एक रूप स्थिर करता हूँ तो दूसरा व्यंग्य कसता हुआ सम्मुख आकर कहता है,—"चित्रकार !

अभी अधूरे ही हो तुम। तुमने कुछ भी नहीं सीखा। हमारे अनेकों रूप हैं, कहाँ तक चित्रित कर सकोगे तुम ?"

रमेश की चिन्ता को देखकर विनय भाई बोले, "घबराने की आवश्यकता नहीं है रमेश ! धैर्य से काम लोगे तो भारतसेवक का वह चित्र बना सकोगे कि जिससे तुम्हारी कला साकार हो उठे। किसी वस्तु का चित्र बनाने से पूर्व उसकी आत्मा में घुसने की आवश्यकता होती है।

मुझे नहीं देख रहे हो तुम ? कितने दिन से भारतसेवक की सेवा में संलग्न हूँ, परन्तु फिर भी उसने मुझे अपने सब रूपों का परिचय नहीं दिया। मैं बराबर साहस के साथ भारत-सेवक के विभिन्न रूपों की खोज कर रहा हूँ। भारतसेवक की संगति में बैठकर उसका अध्ययन कर रहा हूँ। और आज यह दावा है कि मैं भारतसेवक के बहुत से रूप पहचानने लगा हूँ।"

रमेश बोला, "विनय भाई ! धीरज मैं भी कभी नहीं छोड़ता, परन्तु भारतसेवक की बहुरूपता ने चित्त उद्विग्न कर दिया है। एक के पश्चात् एक नये भारतसेवक का मुस्कराता हुआ चेहरा सामने आ जाता है और अपने से पहले सेवक के रंग को फीका करके कहता है—"चित्रकार ! हमें तुमने अपने चित्र में किस रूप में चित्रित किया है ? हमारा स्थान कहाँ है तुम्हारे चित्र में ?"

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "उद्विग्न होने की आवश्यकता नहीं है रमेश ! अपने सामने मुस्कराकर आने वाले भारतसेवक के चेहरों से उसी अदा के साथ, जिस अदा से वे मुस्कराते हैं, तुम भी कह दो,—"घबराइये नहीं महोदय ! आप सबके चित्र चित्रित किये जायँगे। किसी को भी निराश होने की आवश्यकता नहीं है। भारतसेवक की परिचय-पत्रिका वह दर्पण होगा जिसमें भारत के सभी भारतसेवक अपनी-अपनी सही सूरतें देख सकेंगे।"

पास में खड़ी हुई प्रमिला देवी बीच में ही बोल उठीं, "उनसे कहना रमेश भय्या ! कि तनिक अपनी-अपनी आँखों में बीनाई तेज़ करने

वाला सुरमा आँज लें, जिससे उन्हें अपनी-अपनी सूरतें पहचानने में कठिनाई न हो।"

"भाभी का सुझाव भी बड़ा मार्के का है विनय भाई ! सेवकों को पहले से ही अपने चेहरे-मोहरे दुरुस्त करके, आँखों में सुरमा लगाकर दर्पण के सामने आने की सूचना दे देनी चाहिए। नहीं तो बाद में वे उलाहना ही देते रह जायँगे कि चित्र बनाने से पूर्व मैंने उन्हें बन-ठनकर अपने निखरे रूपों में आने का अवसर नहीं दिया।" रमेश मुस्कराकर बोला।

"भारतसेवक का चित्र बनाने के लिए जिस दिन तुम्हें कहा था उसी दिन से भारतसेवक की परिचय-पत्रिका लिखने का काम भी आरम्भ कर दिया था। और आज यह अनुभव कर रहा हूँ कि पहले मुझे परिचय-पत्रिका लिखकर पूरी करनी चाहिए थी और तब तुम्हें चित्र बनाने के लिए कहना चाहिए था। क्योंकि भारतसेवक का पूर्ण परिचय प्राप्त किये बिना तुम उसका सही चित्र नहीं बना सकते।" विनय भाई गम्भीरतापूर्वक बोले।

रमेश ने विनय भाई के कथन को स्वीकार करते हुए कहा, "चित्र बनाना प्रारम्भ करते समय सम्भव था कि मैं अपनी योग्यता की हठ में आपके इस मत से सहमत न होता, परन्तु अब, जब कि चित्र के पचासों खाके बना-बनाकर फाड़ चुका हूँ, मुझे आपकी बात मान लेने में कोई आपत्ति नहीं है।"

विनय भाई रमेश की स्पष्टवादिता पर सरलतापूर्वक बोले, "भारतसेवक की परिचय-पत्रिका की भूमिका तैयार कर चुका हूँ रमेश ! और वही पूरी करना तनिक टेढ़ी खीर थी। भूमिका में मैंने भारतसेवक के ऐतिहासिक और साँस्कृतिक विकास पर प्रकाश डाला है।"

यह सुनकर रमेश के मन में परिचय-पत्रिका की भूमिका सुनने की उत्कंठा पैदा हो गई और वह विनम्रतापूर्वक अपार श्रद्धा के साथ बोला, 'भारतसेवक के ऐतिहासिक और साँस्कृतिक विकास पर प्रकाश डाल-

कर आपने बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया है विनय भाई ! मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप नित्य जितना लिखते जायें, साथ-साथ मुझे सुनाते जायें। मेरा पूर्ण विश्वास है कि आपकी प्रस्तुत की गई भारतसेवक की परिचय-पत्रिका के आधार पर भारतसेवक का जो चित्र निर्मित होगा वह निश्चय ही भारतसेवक के व्यापक और कल्याणकारी रूपों की झाँकी प्रस्तुत करने में समर्थ होगा।"

"बहुत आगे की बातें सोचने लगते हो रमेश ! इस समय इतना ही समझो कि यह पत्रिका भारतसेवक का सही चित्र चित्रित करने में योग देगी।"

इसी समय प्रमिला ने बिना पूछे अपने देवर रमेश की आवभगत कर डाली। भारतीय वातावरण में चटाई पर आज का ही दैनिक पत्र बिछाकर उस पर फलाहार सजा दिया गया। साथ में दो गिलास दूध भी प्रमिला स्वयं लेकर आई।

रमेश का मस्तिष्क अपने चित्र की रूपरेखा तैयार करने में व्यस्त था। दूध का एक घूंट भरकर गिलास नीचे रखते हुए बोला, "भारत-सेवक का ऐतिहासिक और साँस्कृतिक परिचय प्राप्त होने पर चित्र की पृष्ठभूमि तैयार करने में बहुत योग मिलेगा। एक बार भारतसेवक का सही चेहरा मेरे मस्तिष्क के पटल पर उतर आये, तो फिर देखता हूँ कैसे चित्र तैयार नहीं होता है ?"

रमेश के उत्साह को देखकर विनय भाई का हृदय प्रफुल्लित हो उठा। किसी भी युवक में अपने काम के लिए इतनी उत्कट इच्छा देख-कर विनय भाई की आँखें उसे अपने छोटे भाई अथवा बड़े बेटे के रूप में देखने लगती हैं।

विनय भाई ने कहा, "भूमिका-भाग आज ही समाप्त किया है। पूरा एक सप्ताह ले लिया भूमिका ने। परन्तु बन सुन्दर गई है।" इस समय विनय भाई के मुखमण्डल पर संतोषपूर्ण मुस्कराहट खेल रही थी।

पास में पड़े पत्रों को उठाकर एक पिन में नम्बरवार नत्थी करते हुए

बोले, "भारतसेवक सम्बन्धी सभी खोजपूर्ण तत्व इसमें आ गये हैं ।"

रमेश के दोनों कान विनय भाई के मुख पर केन्द्रित हो गये । उनके होठों से निकलनेवाली भारतसेवक की भूमिका को सुनने के लिए रमेश का हृदय और मस्तिष्क एकसूत्र में बँध गये ।

विनय भाई ने भूमिका प्रारम्भ की, "इधर कई वर्ष से भारतसेवक मेरे विचारों का केन्द्र बना हुआ है । भारतसेवक भारत की संस्कृति से सम्बद्ध पुराना शब्द है और इसका साधारण अर्थ भी भारतीय जनता में बहुत प्रचलित है ।

परन्तु आधुनिक युग की प्रगति ने भारतसेवक शब्द के महत्व को और बढ़ा दिया है । आज भारतसेवक के साधारण अर्थ का प्रायः लोप ही हो गया है और इसका विशेष अर्थ ही जनता में प्रचलित है ।

कलयुग में भारतसेवक को प्रभु-सत्ता प्राप्त हो चुकी है ।"

रमेश सुनता-सुनता उछल पड़ा और प्रसन्नतापूर्वक बोला, "प्रभु-सत्ता का प्रयोग आपने भारतसेवक के साथ बहुत सुन्दर किया । दो शब्दों में पूरी बात कह दी ।"

विनय भाई का ध्यान इस समय रमेश के कथन पर नहीं था । वह अपनी भूमिका के ही टूटे--फूटे पन्नों को बटोरकर उनका क्रम मिला रहे थे । क्रम मिलाकर बोले, "हाँ तो मैं अभी-अभी भारतसेवक की प्रभु-सत्ता की बात कर रहा था । भारत-सेवक का स्थान आज के युग में वही है जो सतयुग, त्रेता और द्वापर में राजा का होता था ।

सतयुग से समय बदलता-बदलता कलियुग तक आ गया । समय बदला, समाज बदला और राजा भी बदल गया । राजा ऐश-पसंद हो गया और कर्त्तव्यविमुख होकर अपने उत्तरदायित्व को भुला बैठा ।

उसने सेवा माता और जनता बहन से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया । उसका जीवन रंगमहलों की रँगरेलियों में व्यतीत होने लगा । 'सत्ता' के रूप और वैभव का जाल 'राजा' की आँखों में चरबी बनकर छा गया । राजमद में उसने सेवा माता, जनता बहन और उनके बालबच्चों का

पेट काटकर अय्याशी के मार्ग पर पग बढ़ाया ।

राजा का यह व्यवहार सेवा माता सहन न कर सकीं । राजा की मदांधता में जनता के बालबच्चों को अपनी आँखों के सामने लुटता-पिटता देखना सेवा माता के लिए असम्भव हो गया ।

ऐसे आपत्तिकाल में सेवा माता ने देश और समाज पर आये संकट का निवारण करने के लिए भारतसेवक को जन्म दिया ।"

"भारतसेवक के जन्म की भूमिका वहुत सुन्दर वन गई विनय भाई !" रमेश बोला ।

"भारतसेवक धीरे-धीरे बड़ा हुआ । सेवा माता और जनता बहन के संरक्षण में राजा की कुपित दृष्टि और प्रहारों को सहन करता हुआ सेवक वयस्क हुआ ।"

प्रमिला दूध के गिलासो की ओर देखती हुई वोली, "सेवा और न्याय की बातें करने वालों को मैं नहीं समझती कि दूध के गिलासों के साथ अन्याय करने का कोई अधिकार है । दूध ठंडा हो रहा है और आप दोनों भारतसेवक की भूमिका में उलझे हुए हैं ।"

"दूध की बात तो सचमुच ही भूल गये रमेश, पहले इसे पी लें और तब भूमिका का दूसरा भाग सुनायेंगे । दूध ठंडा होने पर तुम्हारी भाभी का कोप बढ़ने लगता है ।" विनय भाई मुस्कराकर बोले ।

दूध पीने के पश्चात् प्रमिला ने मुस्कराकर कहा, "अब आपकी भूमिका आगे चल सकती है । चाहे जितनी भी देर तक आप सुनाते और यह सुनते रहें । मेरा कार्य समाप्त हुआ, वरना मैं उलझती ही रहती और आपकी भूमिका सुलझती जाती ।"

रमेश विनय भाई की ओर देखता हुआ गम्भीरतापूर्वक बोला, "विनय भाई ! अब आपके भारतसेवक में मेरी श्रद्धा होती जा रही है । सेवा माता ने मानव समाज की प्रगति के शत्रुओं का विध्वंस करने के लिए जिस भारतसेवक को जन्म दिया, उसके सामने मेरा मस्तक और हृदय नत होता है ।"

"तो तुम्हें पसन्द आई भारतसेवक की भूमिका ?" विनय भाई ने पूछा ।

"इसमें सन्देह नहीं । मुझे यह भूमिका बहुत पसन्द आई ।" रमेश ने कहा ।

विनय भाई ने भूमिका आगे बढ़ाई, "जनता बहन ने भारतसेवक के हाथ में रक्षाबंधन की पोंहची बाँधी । उसके गले में हीरे जवाहरातों के हार नहीं, फूलों की मालाएँ डालीं । अपनी रूखी-सूखी रोटी में से अपना और अपने बाल-बच्चों का पेट काटकर भारतसेवक का भाग निकाला और निर्भीक स्वर में कहा, अन्यायी राजा से सत्ता को छीन लो भारतसेवक !"

"जनता बहन ने ठीक कहा विनय भाई !" रमेश बोला ।

"उसी समय सेवा माता ने गम्भीर वाणी में कहा—भारत का राजा शासक नहीं, भारतसेवक होता था, और उसकी स्त्री 'सत्ता' न होकर सेविका होती थी । तुम्हें सत्ता को सेविका बनाने के लिए जन्म दिया है मैंने ।"

सेवा और जनता ने भारतसेवक के मस्तक पर तिलक किया और भारतसेवक ने निर्भीक होकर सत्ताधारी शासक से संघर्ष किया । उसे निकालकर राजमहलों से बाहर खड़ा कर दिया । जनता ने भारत-सेवक की जै-जैकार से चारों दिशाओं को गुंजा दिया ।

सत्ता सेवा की विजय देखकर ठिठकी, परन्तु विदा होते हुए शासक की ओर कनखियों से भी देखने का उसमें साहस न था ।

भारतसेवक सत्ता की ओर देखकर मुस्कराता हुआ बोला, "घब-राने की आवश्यकता नहीं है सत्ता ! केवल इतना समझ लेना आवश्यक है कि यह टीशू की साड़ी, रेशमी चोली, सुनहले आभूषण, हीरे की अंगूठियाँ, काश्मीरी पश्मीने के शाल जो राजासाहब ने तुम्हें भेंट किये थे सब जनता बहन की अमानत से चुराकर दिये थे ।"

भारतसेवक की बात सुनकर सत्ता मुस्करा दी और इठलाकर

बोली, "राजासाहव ने क्या किया था यह आप जानें, परन्तु मैंने जो पाया है वह सेवा से ही पाया है। स्वामी की सेवा करना नारी का धर्म है और स्वामी को स्वयं वरने की प्रथा का अब भारत से लोप हो चुका है।"

"तो सेवा के लिए तैयार हो तुम ?" भारतसेवक ने पूछा। "राजा और भारतसेवक की सेवा में कितना अन्तर है, जानती हो तुम !"

सत्ता ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया, "न जानी हुई बातें जानी जा सकती हैं और जानी हुई बातों को भुलाया जा सकता है। भारत-सेवक की सेवा मेरे जीवन में क्या नवीनता ला पायगी, यह देखना है मुझे।"

"सत्ता का धर्म है सत्ताधारी की आज्ञा का पालन करना", और अन्त में इठलाकर बोली, "आज्ञा-पालन में कमी या मूर्खता मिले तो जो दण्ड उचित समझें, दे सकते हैं आप।"

दण्ड की वात सुनकर सेवा, जनता और भारतसेवक तीनों के चेहरों पर मुस्कान खेल उठी। सत्ता का आशापूर्ण गुलाबी चेहरा दम-दमा रहा था।

भारतसेवक इस समय सत्ता, जनता और सेवा के बीच की भूमि पर खड़ा था। राजा पर विजय प्राप्त की थी उसने, इसका गर्व था उसके हृदय में। जनता वहन की धरोहर और सेवा माता की लाज का ध्यान था उसे। कर्त्तव्य की भूमि सामने थी चलने के लिए।

भारतसेवक चलता-चलता राज-प्रासाद के सामने पहुँच गया। राजप्रासाद पर सत्ता का अधिकार था। पूरी नाकेबन्दियों के साथ उसका जाल विछा हुआ था। मंत्री महोदय और शरीर-रक्षक ने भारतसेवक को अपने संरक्षण में ले लिया।

सेवा और जनता राज-प्रासाद के द्वार पर ही खड़ी रह गईं।"

यह बात सुनकर प्रमिला तिलमिला उठी और उसने पूछा, "तब क्या जनता बहन और सेवा माता राज-प्रासाद में प्रवेश न कर सकीं ?"

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "तुम्हारे हृदह पर चोट लगी प्रमिला-भारतसेवक के इस व्यवहार से, परन्तु भारतसेवक निर्दोष था।

सेवा माता ने स्वयं राज-प्रासाद में प्रवेश नहीं किया। वह भारतसेवक को आशीर्वाद देकर जनता के साथ वापस लौट आई।

विदा होते समय सेवा माता ने गम्भीर वाणी में भारतसेवक से कहा, "मेरी कोख की लाज रखना भारतसेवक ! तेरे साहस और सचाई पर विश्वास करके तुझे सत्ता के पास छोड़ती हूँ। लेकिन इतना याद रखना कि सत्ता से गठबन्धन कराने के लिए ही मैंने तुम्हें जन्म नहीं दिया और जनता तुम्हें यहाँ तक नहीं लाई। जनता की धरोहर जनता को वापस मिलनी ही चाहिए।

सत्ता को प्राप्त करके यदि तुमने जनता बहन को भुला दिया तो मुझे सत्ता-विरोधी भारतसेवकों को जन्म देना पड़ेगा और तुम्हारी भी वही दशा होगी जो कल तुमने राजा की की थी।"

"बहुत सुन्दर, बहुत सुन्दर विनय भाई ! माता का बहुत सुन्दर स्वरूप आपने चित्रित किया।" रमेश गद्-गद् होकर बोला।

प्रमिला के मुखमण्डल पर भी प्रसन्नता की रेखा खिंच गई।

विनय भाई बोले, "भारतसेवक हाथ जोड़कर सेवा माता और जनता बहन के सामने खड़ा हो गया और उसने दृढ़तापूर्वक कहा, "आप दोनों के विश्वास को खंडित नहीं होने दूँगा। जनता बहन की रत्ती-रत्ती धरोहर सत्ता से वापस कराकर ही दम लूँगा।"

और फिर सेवा माता के चरण छूकर बोला, "मेरा स्थान सर्वदा आपके चरणों में रहेगा माँ ! मैं सत्ता को भी अपने साथ आपके चरणों में लाने का प्रयास करूँगा। मैं अपने को अपनी माता और बहन से खो देने के लिए यहाँ नहीं आया।"

भैया की बात सुनकर जनता बहन का हृदय-कुसुम खिल उठा। उसकी सुगन्ध चारों दिशाओं में फूट निकली। जनता के कण्ठ से भारतसेवक की जै का नारा निकलकर सम्पूर्ण वायुमण्डल में आच्छादित हो गया।

सत्ता सकुचाई और ठिठकी सी अपने में बल खाती, अपनी आभा

की छटा चारों ओर छिटकाती एक ओर खड़ी कनखियों से यह दृश्य देखती रही।

इसके पश्चात् जनता बहन और सेवा माता वापस लौट आईं।"

"भारतसेवक की भूमिका बहुत सुन्दर बन गई विनय भाई! सन् १९४७ की बीती घटना साकार हो उठी। भारतसेवक ने सत्ता को प्राप्त किया। जनता ने स्वाधीनता की साड़ी पहनी और सेवा माता ने अपने दोनों बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।" रमेश बोला और फिर उसने मुस्कराकर प्रमिला की ओर देखते हुए पूछा, "विनय भाई की भूमिका में मेरी जोड़ी हुई ये दो अंतिम पंक्तियाँ कैसी रहीं भाभी?"

"बहुत सुन्दर रहीं।" अपने हाथ का पर्चा रमेश को देते हुए विनय भाई ने कहा, "अब तुम भारतसेवक की आत्मा में घुसते जा रहे हो रमेश!"

और रमेश ने आश्चर्यपूर्वक विनय भाई का पन्ना पढ़कर देखा तो उसमें ठीक वही लिखा था जो रमेश ने कहा।

इसके पश्चात् रमेश ने विदा ली और चलते समय प्रमिला भाभी को उनके मीठे दूध के लिए धन्यवाद देता हुआ बोला, "विनय भाई के साथ आपका चित्र बनाना नहीं भूलूँगा भाभी! आपके अन्दर मुझे सेवा माता, जनता बहन और सत्ता रानी......क्या सम्बोधन प्रस्तुत करूँ उनके लिए मैं नहीं जानता, तीनों का मिश्रित रूप दिखाई देता है।"

: २ :

विनय भाई दिल्ली की एक नई बसी हुई बस्ती में रहते हैं। साहित्य-सेवा के लिए उन्होंने अपने जीवन को लगा देने का निश्चय किया है।

विनय भाई का आज तक का जीवन संघर्ष में रहकर आगे बढ़ा है। उनके जीवन में आर्थिक व्यवस्था कभी नहीं आ पाई। इसका कारण यही है कि उन्हें पैतृक सम्पत्ति के रूप में ऊपर आसमान और नीचे भगवान् की भूमि ही मिली है।

परन्तु जो सबसे बड़ी सम्पत्ति उनके पास है, वह है उनकी लेखनी, उनका मस्तिष्क, उनकी विद्या, उनकी प्रतिभा और साथिन के रूप में प्रमिला, जिसने इन सबको व्यवस्था दी है।

विनय भाई के तख्त पर नई-नई पुस्तकों का ढेर लगा हुआ है। एक-से-एक सुन्दर और भड़कीली हैं। कुछ पर चित्रकारों ने सुन्दर स्त्रियों के चित्र बनाकर उन्हें पुस्तक-विक्रेताओं के लिए विशेष मनमोहक बना दिया है और कुछ पर लेखकों ने, यह बिना सोचे ही कि उनके चित्रों में ग्राहकों के लिए कोई आकर्षण है भी या नहीं, विज्ञापन के लिए स्वयं अपने चित्र छपवा दिये हैं।

विनय भाई इन पुस्तकों को उलट-पलटकर देख रहे थे, तभी रमेश ने कमरे में प्रवेश किया।

रमेश को देखकर विनय भाई बोले, "देखो रमेश ! देश के स्वतंत्र होते ही पुस्तक-जगत् में भी क्रांति हुई है। बाज़ार के खिलौनों की तरह पाठक को भी आकर्षित करने के लिए व्यापारियों और चित्रकारों ने कैसी कुशलता दिखाई है।"

रमेश ने तख्त के पास जाकर वहाँ रखी हुई पुस्तकों को देखा और एक दृष्टि डालकर बोले, "मशीन का युग भारत में प्रवेश कर चुका है विनय भाई ! इसीलिए पुस्तकों का प्रकाशन भी बहुत ही तीव्र गति से

बढ़ रहा है ।"

"इसमें कोई संदेह नहीं ! परन्तु मैं देख रहा हूँ कि पुस्तक-व्यवसाय का ऊपरी श्रृंगार साहित्य के भाव और विचार-पक्ष को दबाता चला जा रहा है। यह साहित्य की स्वस्थ दिशा नहीं है।" गम्भीरतापूर्वक विनय भाई ने कहा।

रमेश इधर-उधर देखता हुआ बोला, "भाभी कहीं दिखाई नहीं दे रहीं आज !"

"अभी आती ही होंगी। न जाने कितना काम रहता है उन्हें। पास-पड़ौस का कोई शुभ-या-अशुभ कार्य ऐसा नहीं होता जिसमें उनका जाना आवश्यक न हो।" विनय भाई ने कहा और पूछा, "क्या भाभी के बिना घर सूना-सूना लग रहा है रमेश, क्यों ?"

"इसमें कोई संदेह नहीं। घर तो है ही भाभी का। भाभी के आने से पूर्व आपका घर कहाँ था ? आपके पिताजी का घर रहा होगा।" रमेश ने मुस्कराकर कहा।

इसी समय प्रमिला कमरे में प्रवेश करती हुई बोली, "मुझे लेकर मेरे पीछे क्या-क्या बातें चल रही हैं ?"

वियय भाई ने सरलतापूर्वक उत्तर दिया, "रमेश कहता है कि यह घर तुम्हारा है। तुमने ही इसे आकर बसाया है। इससे पूर्व का जो घर था वह पिताजी का था, मेरा नहीं था। मुझे रमेश की यह बात मान लेने में कोई आपत्ति नहीं। तुम्हें कोई आपत्ति है क्या ?"

"प्रमिला के होठों पर हलकी सी मुस्कान की रेखा खिच गई और फिर वह मधुर शब्दों में आँखें तरेरकर बोली, "घर मेरा बतलाकर उत्तर-दायित्व से भाग निकलने का प्रयत्न न करें, आप !" और फिर रमेश की ओर देखकर बोली, "सेविका हूँ रमेश भैया ! इस घर में रहने वालों की, इस घर के सम्पर्क में आने वालों की और इस घर के पास-पड़ौस वालों की।"

रमेश का मस्तक झुक गया प्रमिला के सामने और प्रमिला ने रमेश

से सस्नेह कहा, "तुम्हारी कला सफल हो रमेश ! मंगलकारिणी हो। मानव-समाज की सेवा में योग-दान हो उसका।"

"आपकी मंगल-कामना सफल हो भाभी ?" अगाध श्रद्धा के साथ रमेश बोला।

विनय भाई रमेश और प्रमिला की बातें बड़े ध्यान से सुनकर बोले, "कला की शक्ति में प्रमिला का अटूट विश्वास है रमेश ! तुम्हारी कला ने प्रमिला को जितना प्रभावित किया है उतना सम्भवतः अन्य किसी को न किया होगा। तुम्हारा बनाया हुआ भारतसेवक का चित्र देखने की प्रमिला के मन में उत्कट इच्छा है।"

"भारतसेवक के चित्र पर रात चार घंटे परिश्रम करता रहा। एक रबड़ और एक पेंसिल रगड़-रगड़कर नष्ट कर दीं परन्तु फिर भी कोई सही खाका तैयार न हो सका।" निराशा के स्वर में रमेश ने कहा।

"निराश होने की आवश्यकता नहीं है रमेश ! पहले मुझे भारत-सेवक की पूरी परिचय-पत्रिका लिखकर समाप्त कर लेने दो। उसमें मैं भारतसेवक की सब उलझी हुई गुत्थियों को सुलझा दूँगा। इसके पश्चात् तुम्हें चित्र बनाने में कठिनाई न होगी।" विनय भाई बोले।

रमेश बोला, "ठीक है, परिचय-पत्रिका जितनी आप लिखते जायें उतनी ही मुझे सुनाते जायें। मैं चाहता हूँ कि साथ-साथ मैं भी अपने चित्र की तैयारी करता चलूँ। जिस दिन प्रातःकाल आप पत्रिका का अंतिम परिच्छेद समाप्त करें उसी दिन रात्रि को मैं भी चित्र बनाकर पूरा कर दूँ।"

विनय भाई आज के लिखे पन्ने सँभालकर बोले, "कल हमने पत्रिका के भूमिका-भाग में बतलाया था कि भारतसेवक सत्ता के महल में चला गया। सत्ता ने 'सेवक' को अपना ठाट-बाट दिखाया। अपने सौंदर्य और अपनी उपयोगिता की झाँकी दिखाई।

भारतसेवक ने सत्ता के व्यवहार में एक विशेष बात पाई औ

वह थी हाँ-में-हाँ मिलाने की योग्यता। भारतसेवक की किसी भी बात को ना कहना सत्ता के धर्म के विपरीत था।

आज्ञा-पालन की भारतसेवक को सत्ता में चरमसीमा मिली भारत-सेवक, सत्ता, जनता बहन और सेवा माता के सामने मैंने जो प्रण किया है, वह सुना था तुमने ?"

"सुना था।" आँखें मिलाकर हल्की मुस्कान के साथ सत्ता ने उत्तर दिया।

"यह मेरी परीक्षा का समय है सत्ता ! प्रण करो कि ईमानदारी से साथ दोगी मेरा।" भारतसेवक बोला। "विदेशी और स्वदेशी राजाओं के चंगुल में फँसकर तुमने जो अपनी मानहानि की है, वह वापस दिलाऊँगा तुम्हें। परन्तु यह सब तभी सम्भव है जब तुम भी मेरे साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर सेवा-पथ पर अग्रसर हो।"

"वचनबद्ध होती हूँ भारतसेवक !" सत्ता ने कहा।

"तुम्हारे ये बड़े-बड़े साधन, ऐश-पसंदी के साधन मात्र न रहकर सेवा के महान् साधन बनें। पुराने सत्ताधारियों ने तुम्हारी जो आराम-तलबी की आदतें बना दी हैं उन्हें बदलने में तुम्हें कठिनाई अवश्य अनुभव होगी, परन्तु तुम देखोगी कि उनके बदलने पर जनता बहन का तुम्हें कितना प्यार मिलेगा, सेवा माता का तुम्हें कितना दुलार मिलेगा।" विनय भाई ने तन्मयतापूर्वक कहा।

सत्ता बोली, "आपसे विश्वास घात नहीं करूंगीभारतसेवक और जब तक बात अपने हाथ में रहेगी, आपके विपरीत मेरा एक भी संकेत न होगा। साथ ही इतना भी ध्यान रहे कि मेरी वर्तमान स्थिति में कोई अन्तर नहीं आना चाहिए। मेरे सम्मान और मेरी स्थिति की रक्षा करनी होगी आपको। दासी नहीं हूँ, मैं आपकी, बहन जनता की, या आपकी सेवा माता की। मालकिन हूँ मैं घर की। मेरी योग्यता और मेरे मान का ध्यान रखना होगा।" यह सब कहते हुए गम्भीरता छा गई सत्ता के मुख-मण्डल पर।

भारतसेवक सत्ता की गम्भीर मुख-मुद्रा देखकर मुस्कराया और

प्यारभरी दृष्टि से उसके सौंदर्य को निहारता हुआ बोला, "सौंदर्य और बड़प्पन की ही रक्षा करना विदेशी राजाओं का काम था सत्ता ! भारत-सेवक तुम्हारे मान और तुम्हारी मर्यादा की रक्षा करेगा।"

सत्ता गम्भीरतापूर्वक बोली, "परन्तु यह समझ लो भारतसेवक ! मैं अनुशासनविहीनता सहन नहीं कर सकती। सबको सबकी सब वस्तुएँ मिलेंगी, परन्तु अनुशासन के साथ। सेवा माता के सभी सम्बन्धी सेवकों की हुल्लड़बाजी या जनता के सम्बन्धी जन-नेताओं की अनियमिकता सहन नहीं की जा सकेगी।"

सत्ता की बात सुनकर भारतसेवक तनिक सिटपिटाया। परन्तु उसके सामने इस समय जनता की लुटी हुई सम्पन्नता को वापस लौटाने का प्रश्न था। 'जनता' की आर्थिक दशा को सँभालने की समस्या थी। उसने सत्ता की बात पर ध्यान नहीं दिया। आपसी झंझटों का निपटारा करने की समस्या को इस समय छूना उचित नहीं समझा।

भारतसेवक ने सत्ता के चेहरे पर देखा। वह मुस्करा रही थी।

"अर्थात सत्ता अपने में कोई परिवर्तन करने को उद्यत न थी ?" रमेश ने पूछा।

"अपनी सेवा और योग्यता के अनुसार जो कुछ वह पा रही थी उसे वह उचित और अपना अधिकार समझती थी। जनता की लुटी हुई सम्पत्ति का प्रश्न सामने आने पर उसने स्पष्ट कह दिया,—'इसे लूटने वाली मैं नहीं हूँ भारतसेवक ! मैंने तो अभी पिछले मास की खरीदारियों के बिल भी चुकता नहीं किये हैं। बेंक-बैलेन्स मेरा साफ़ है। जेवरात के नाम पर ये दो अंगूठियाँ ही हैं मेरे पास जो आपको दिखाई दे रही हैं। जारजेट की साड़ियाँ फट चुकीं। पश्मीने का शाल कितनी जगह से रफू हो चुका इस पर आप की नजर नहीं गई। अभी मेरा ऊपरी रूप ही देखा है आपने।" और यह कहते-कहते सत्ता का मन उदास हो गया। वह रुँआसी सी होकर बोली," जनता ननद को जब-जब भी आपके राजासाहब ने लूटा-खसोटा है, मेरी आत्मा को कितना कष्ट हुआ है, यह कहने की बात नहीं, लेकिन

में भी तो पिंजड़े में बंद चिड़िया थी उस समय। अपने पर फड़-फड़ाकर तोड़ने के अतिरिक्त और कर ही क्या सकती थी ?"

"तब फिर जनता की लुटी हुई सम्पत्ति का क्या बना विनय भाई ?" रमेश ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा।

"वह सब तो विदेशी राजा मेरे बंधन-मुक्त होने से पहले ही अपने देश को ले जा चुका था।" सत्ता ने कहा।

"और जो बचीखुची धन-राशि है भी वह हमारे देसी राजाओं, नवाबों, ज़मीदारों और पूंजीपतियों की तिजोरियों में बन्द पड़ी है। उनके ताले तोड़ डालो भारतसेवक ! उनमें आपको ननद जी की कुछ-न-कुछ धरोहर अवश्य मिल जायगी।"

"सत्ता ने बात तो बड़े बहुत पते की कही विनय भाई !" रमेश बोला।

"सत्ता ने जो बात कही भारतसेवक उसे पहले से ही जानता था। लेकिन सत्ता को प्राप्त करने से पूर्व वह कर कुछ नहीं सकता था। सत्ता को प्राप्त करते ही उसने ज़मीदारों से ज़मीनें छीनकर जनता को दे दीं। राजाओं के कोषों पर कब्ज़ा कर लिया और उसे भी जनता की सम्पत्ति घोषित कर दिया। यह सब सत्ता की सहायता से किया भारतसेवक ने और सत्ता ने पूरी-पूरी ईमानदारी बरती भारतसेवक के साथ"। विनय भाई बोले।

"तब तो निस्सन्देह सत्ता ने सेवा और जनता की दिशा में एक करवट ली। राजों, नवाबों और ज़मीदारों की हवा बदली।" रमेश ने कहा।

"इसमें कोई संदेह नहीं कि भारतसेवक और सत्ता ने मिलकर भारत में यह एक महान् क्रांति की। अंग्रेज़ी शासन-काल में अंग्रेज़ी राज्य के अंदर विदेशी सरकार के विरुद्ध आवाज़ बुलन्द करना उतना कठिन नहीं था जितना देसी राज्यों में ज़बान हिलाना। राजाओं की ज़बान ही उनका क़ानून था। जनता के रक्त में स्नान करते थे ये राजे ! देश भूखों मरता था और ये विदेशों में जाकर ऐयाशी का प्रदर्शन करते थे। विदेशी शासकों की साम्राज्यवादी शक्तियों के संचालक उन्हें भारत की खुशहाली के नमूनों

के रूप में संसार के सामने प्रस्तुत करते थे।" विनय भाई ने कहा।

विनय भाई की संलग्नता और रमेश की दत्तचित्तता को देखकर प्रमिला मुस्कराती हुई बोली, "भारतसेवक की परिचय-पत्रिका तो खूब बनती जा रही है आपकी। लेकिन मैं देख रही हूँ कि तस्वीर के एक ही पहलू पर निखार आता जा रहा है। आदर्श सेवक और आदर्श सत्ता के चरित्रों के गठन पर ही आपकी दृष्टि केन्द्रित है। भारतसेवक और सत्ता के यथार्थवादी रूपों को एकदम भुला दिया जा रहा है। रमेश भैया को भारतसेवक और सत्ता के यथार्थवादी रूपों का भी तो ज्ञान होना आवश्यक है।"

विनय भाई प्रमिला की बात पर मुस्कराकर बोले, "अभी तो पत्रिका का भूमिका भाग ही चल रहा है प्रमिला! पात्रों के यथार्थ रूप सामने आने दो तनिक। मुझे उनके विषय में कुछ बताने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। वे स्वयं काफ़ी जागरूक हैं और अपना पूरा परिचय देने से वे स्वयं बाज आने वाले नहीं हैं?"

प्रमिला मुस्कराकर बोली, "तब ठीक है, मैं सोच रही थी कि कहीं आपकी परिचय-पत्रिका अधूरी ही न रह जाय और भारतसेवक के बहुत से रूप आपकी अनभिज्ञता पर एक साथ मिलकर न मुस्करा उठें।"

विनय भाई ने पत्रिका आगे बढ़ाई और बोले, "भारतसेवक और सत्ता ने मिलकर देश के कोढ़ पर मरहम लगाया। राजों, नवाबों और ज़मीदारों पर ज़ोरदार प्रहार किया। रियासतों और ज़मीदारी को समाप्त कर दिया। परन्तु यह प्रहार करते समय उन्होंने क्या देखा कि उन राजों, नवाबों और ज़मीदारों में बहुत से उनके अपने नाते रिश्तेदार, सगे सम्बन्धी और इष्टमित्रों में से भी थे। उन पर प्रहार करते-करते भारतसेवक और सत्ता दोनों के हाथ रुक गये।"

प्रमिला रमेश की तरफ़ मुँह करके बोली, "रमेश! अब आये तुम्हारे भैया तस्वीर के यथार्थवादी पहलू पर। तुम्हें अपने चित्र में इस पहलू को भी सजग रखना होगा।"

विनय भाई बोले, "भारतसेवक और सत्ता ने देखा कि जिन पर वे प्रहार कर रहे थे उनमें से बहुत से वे थे जिनके निरन्तर एहसानों से वे दोनों दबे हुए थे। यदि उनके गत जीवन में उन्हें उनका योग न मिला होता तो वे वे न होते जो वे आज थे। सत्ता सत्ता न होती, भारतसेवक भारतसेवक न होता।

भारतसेवक ने सत्ता के चेहरे की ओर देखा और सत्ता ने भारतसेवक के चेहरे की तरफ़। दोनों की निगाहों ने एक दूसरे से गम्भीर प्रश्न किया।

"क्या करना चाहिए ऐसी दशा में, धर्म-संकट सामने है। जनता की सम्पत्ति जनता को लौटानी है और इनके एहसानों को भी भुलाया नहीं जा सकता।" भारतसेवक ने गम्भीरतापूर्वक कहा।

सत्ता इठलाती हुई बोली, "इसकी चिन्ता न करें आप। ऐसे धर्मसंकट से आपको उबारकर ले जाना सत्ता का काम है।" सत्ता के दिल में अपनी कुशलता को लेकर उभार आ गया और वह मुस्कराकर तिरछी दृष्टि से देखती हुई बोली, "अपना इतना जीवन पानी में नहीं बहाया है भारत-सेवक! शासन चलाने का पूरा-पूरा अनुभव किया है।"

भारतसेवक सकुचाकर बोला, "तुम्हारा अनुभव कहीं मुझे सेवा माता और जनता बहन की नज़रों में ज़लील करनेवाला न साबित हो सत्ता, इतना ध्यान रहे। वे दोनों मुझे दोषी न ठहरा सकें।"

सत्ता इठलाकर बोली, "यह राजनीति का क्षेत्र है भारतसेवक! धर्म की वेदी नहीं है। थोड़ा-बहुत ऊँच-नीच निभाकर चले बिना काम नहीं चल सकता। ऐसे समय में सत्ता अपने अमोघ अस्त्र कानून का प्रयोग करती है। यही मैं आपको देती हूँ। शासन इसी से चलता है और इसके द्वारा चलने वाले शासन के विरुद्ध सेवा माता और जनता बहन एक शब्द भी नहीं कह सकेंगी।"

सत्ता के कथन में दृढ़ता थी और एक अटल विश्वास की झलक थी। वह गम्भीरतापूर्वक बोली, "कानून की सीमाएँ दिखाकर आप सेवा

माता और जनता बहन के सम्मुख अपनी परवशता प्रकट कर सकते हैं।"

"तो फिर भारतसेवक और सत्ता ने अपने नाते रिश्तेदारों, सगे सम्बन्धियों और इष्टमित्रों के संरक्षण का क्या उपाय सोचा ?" रमेश ने पूछा।

रमेश का यह सरल प्रश्न सुनकर प्रमिला बोली, "कितने भोले हो रमेश ! तुम्हारे भैया को जो कुछ कहने में संकोच हो रहा है उसे मैं स्पष्ट किये देती हूँ। सत्ता के नाते रिश्तेदारों ने यहीं से अपने पहले पदों को त्याग दिया और भारतसेवक पद से अपने को विभूषित कर लिया। और भारतसेवक के इष्टमित्रों का तो इस पद पर जन्मसिद्ध अधिकार था ही।"

"बस यहीं से भारतसेवक दो वर्गों में विभाजित हो गया। सत्ता ने भारतसेवक के इष्टमित्रों और सम्बन्धियों का ध्यान रखा और भारतसेवक का सत्ता के इष्टमित्रों तथा सम्बन्धियों से सम्पर्क बढ़ने लगा।" विनय भाई ने कहा।

"इसका मतलब समझे रमेश !" प्रमिला बोली। "जहाँ एक ओर कुछ राजों, नवाबों और ज़मींदारों को मिट्टी में मिलाया गया वहाँ दूसरी ओर एक समुदाय ऐसा भी रह गया जिस पर इस क्रांति का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह उसी तरह हँसता और किलकता रहा। उसकी दशा में कोई तबदीली नहीं हुई। यानी देश में जो व्यापक क्रांति होनी चाहिए थी, वह अधूरी रह गई।"

विनय भाई बोले, "सुनते जाओ विनोद ! बातें सभी स्पष्ट हो जायँगी। सत्ता ने भारतसेवक का धीरे-धीरे अपनी सेवा, कार्य-कुशलता, विद्वत्ता और साधन-सम्पन्नता के बल पर विश्वास प्राप्त कर लिया। भारतसेवक के मस्तिष्क में सत्ता के प्रति जो घृणा और सन्देह की भावना उसके राजा से संघर्ष के दिनों में पैदा हो गई थी वह सत्ता ने धीरे-धीरे आज्ञापालन और वाक्पटुता से समाप्त कर दी।"

प्रमिला मुस्कराकर बोली, "सत्ता अग्नि-परीक्षा में सती साबित

हुई रमेश ! उसने भारतसेवक को जो-जो यातनाएँ दी थीं उन सब पर अपनी कार्यकुशलता, वाक्पटुता और रूप का मरहम लगा दिया और भारतसेवक ने भी उन्हें प्रेम-मार्ग में आने वाली साधक की कठिनाइयाँ समझकर भुला दिया।"

"लेकिन यह तो बहुत ही गलत हुआ भाभी ! सेवा माता और जनता बहन के साथ विश्वासघात हो गया।" रमेश ने तनिक सतर्क होकर कहा।

"ऐसा नहीं हुआ रमेश !" विनय भाई बोले, "भारतसेवक सेवा माता का सच्चा सपूत था और जनता बहन के जीवन से उसका गहरा सम्बन्ध था। सत्ता के रूप की झाँकी, सत्ता की वाक्पटुता और कार्यकुशलता, सत्ता की साधन-सम्पन्नता कहाँ से आती हैं, इसका उसे पूरा-पूरा ज्ञान था। मूर्ख नहीं था भारतसेवक।"

यह सुनकर प्रमिला बोली, "भारतसेवक की रक्षा कर रहे हैं आप ?"

"उनकी रक्षा नहीं कर रहा हूँ प्रमिला ! तुम्हारे अधिकारों की रक्षा कर रहा हूँ। अपने स्वाभिमान को सुरक्षित रख रहा हूँ। भारतसेवक ने सत्ता के साथ गठ-बन्धन कर लिया, बस इसीलिए तो वह सेवा के पथ से विमुख नहीं हो गया। भारतसेवक के जीवनभर की सेवा सत्ता का स्पर्श करते ही समाप्त नहीं हो सकती।"

सत्ता के विष को अमृत बना देने की कल्पना करता हूँ मैं अपने भारतसेवक से।" विनय भाई ने कहा।

"आपकी कल्पना सत्य हो। सत्ता के जीवन का विष अमृत बन जाय ऐसी मेरी भी मनोकामना है।" अपलक नेत्र और करबद्ध होकर प्रमिला ने कहा। और फिर रमेश की तरफ देखती हुई बोली, "समझे रमेश, अपने भैया की भारतसेवक सम्बन्धी कल्पना ! ईश्वर का साकार स्वरूप ही समझ लो उसे। मानव के रूप में ईश्वर स्वयं जनता की सेवा के लिए भारतसेवक का रूप धारण करता है। यह है तुम्हारे भैया का भारतसेवक के विषय में विचार।"

विनय भाई गद्गद् हो उठे प्रमिला के मुख से अपने आदर्श भारत-सेवक की कल्पना सुनकर और अपने हाथ के कागज़ों को एक ओर रख-कर बोले, "आदर्श भारतसेवक की भूमिका प्रमिला ने कितनी सुन्दर प्रस्तुत कर दी रमेश ! ऐसे भारतसेवक को सत्ता का रूप विमोहित नहीं कर सकता, सत्ता की चाटुकारिता पथ-भ्रष्ट नहीं कर सकती, सेवा माता और जनता बहन के प्रति कर्त्तव्यविमुख नहीं कर सकती।"

"कदापि नहीं कर सकती।" विश्वास और दृढ़ता के साथ रमेश ने कहा।

विनय भाई ने फिर अपने एक तरफ रखे हुए कागज के टुकड़ों को उठा लिया और उनका सिलसिला मिलाते हुए बोले, "हाँ, तो मैं तुम्हें सुना रहा था कि किस प्रकार भारतसेवक और सत्ता ने अपने इष्ट-मित्रों, नाते रिश्तेदारों और सगे-सम्बन्धियों को, देश-व्यापक राजों, नवाबों और ज़मींदारों को सत्ता की पंक्ति में खड़ा कर दिया और बहुत-सों को एम्पी-शेम्पी बनाकर रक्षा प्रदान की।

सेवा माता सत्ता और भारतसेवक की चालाकी और होशि-यारी को देखकर मुस्कराईं परन्तु जनता इसे सहन न कर सकी। वह क्रोध में उबाल खाती हुई सेवा माता के पास पहुँची और जाकर सत्ता भाभी और भारतसेवक की कारगुज़ारियाँ उन्हें सुनाकर बोली, "देख लो माँ ! अब तुम। भैया पर भाभी का रंग चढ़ने लगा है। मेरी इज्जत-आबरू और धन-दौलत के लुटेरे भाभी के नाते रिश्तेदारों और अपने इष्टमित्रों को भैया ने शरण दी है।"

"सेवा माता ने जनता बेटी को प्यार से अपने पास बिठलाते हुए कहा, "भैया में अविश्वास करने की आवश्यकता नहीं है बेटी ! कितनों को शरण दी है और कितनों को दमन-चक्र में पीसा है, इतना समझना आवश्यक है। तुम्हारी सत्ता भाभी और भारतसेवक भय्या ने एक ही झटके में तुम्हारे दामन के अन्दर घुसे हुए कितने कांटों को निकाल साफ कर दिया, यह समझने की ज़रूरत है। तुम्हारी धरोहर का कितना सत्ता

और भारतसेवक ने गाह के मुँह से निकाला है, यह समझने की ज़रूरत है।"

सेवा माता की बात सुनकर जनता का उफान ठंडा पड़ा और ज़रा संतोष की साँस लेती हुई बोली, "भैया में अविश्वास नहीं है मुझे माँ! परन्तु भाभी मुझे अपने से छोटी समझती है, हीन समझाती है, दरिद्र समझती है, दासी समझती है, यह देखकर दिल में जलन पैदा होती है।" जनता ने कहा।

"यह सब स्वाभाविक ही है बेटी! सत्ता भाभी से तुम्हारे सम्बन्ध विच्छेद हुए शताब्दियाँ बीत चुकीं। तुम्हारा भाई राजा नालायक हो गया था, माता-विरोधी हो गया था, भगिनी-विरोधी हो गया था। उसे समाप्त कराने के लिए मुझे भारतसेवक को जन्म देना पड़ा और अपनी ही आँखों के सामने मैंने अपने छोटे पुत्र से बड़े पुत्र का संहार कराया। मेरी सहनशीलता को देखो जनता! और धैर्य से काम लो। भारतसेवक की सेवा में मेरा अटल विश्वास है। वह सत्ता को सही मार्ग पर ले आयगा। जनता बहन का वह सेवा माता से कम आदर नहीं करता।"

उसी समय 'भारतसेवक' भी वहीं पर आ गया और सेवा माता के सामने नतमस्तक होकर बोला, "भारतीय समाज की दो ऊँची-ऊँची दीवालें गिराकर बिस्मार कर दीं। माँ! जनता बहन की बहुत बड़ी सम्पत्ति इन दीवालों के नीचे दबी पड़ी थी। तुम्हारी बहू सत्ता ने बड़े ही साहस से मेरा साथ दिया और समाज-विरोधी शक्तियों को अपने एक ही वार में भूमि पर लिटा दिया।"

"तुम्हारे और सत्ता के इस प्रयास की मैं और तुम्हारी बहन जनता हृदय से सराहना करते हैं बेटा!" सेवा माता ने भारतसेवक के सिर पर प्यार का हाथ फेरते हुए कहा।

लेकिन जनता बहन अपने दिल की सचाई छिपाये न रह सकी और तिरछी नज़र करके बोली, "काम तो भैया और भाभी ने बहुत बड़ा किया है, इसमें कोई संदेह नहीं परन्तु मेरी आबरू के कुछ लुटेरों को जो

भैया और भाभी ने अपने आस्तीनों में साँपों की तरह छिपा लिया है वे किसी दिन डंक मारने से बाज़ नहीं आयेंगे।"

जनता की वात सुनकर भारतसेवक मुस्कराता हुआ बोला, "जीजी ! आपकी बात को मैं काट नहीं सकता, परन्तु मुझे मालूम है कि जीजी के पास एक ज़हर-मोहरा भी है और वह अपने भैया, को उन आस्तीनों के साँपों के डंक से मरने नहीं देगी, इतना भी मुझे विश्वास है।"

"भारतसेवक ने सुन्दर उत्तर दिया जनता बहन को !" रमेश बोला। "तबियत प्रसन्न हो गई भारतसेवक का उत्तर सुनकर।"

प्रमिला मुस्कराकर बोली, "तब जानते हो रमेश ! सेवा माता ने क्या कहा होगा ?"

रमेश ने प्रमिला की ओर देखकर पूछा, "क्या कहा होगा भाभी ?"

"सेवा माता ने कहा होगा, बेटी जनता ! सुनी तुमने अपने भारत-सेवक भैया की बात ? कितना विश्वास है उसे अपनी जनता बहन पर। तुम्हें ही वह अपने जीवन की रक्षा-दायिनी मानता है। तुम्हारा छोटा भाई है वह, उसके प्रति तुम्हारा वही कर्त्तव्य है जो मेरा तुम दोनों के प्रति है।"

विनय भाई अपने हाथ के काग़ज विनोद को देते हुए बोले, "बिलकुल यही तो लिखा है मैंने भी विनोद ! कितना सुन्दर साम्य हुआ है मेरे और तुम्हारी भाभी के विचारों का।"

प्रमिला मुस्कराकर बोली, "इसी तरह एक दिन तुम्हारा चित्र भी मेरे और तुम्हारे भैया के विचारों की साकार प्रतिमा बनकर चित्रित हो उठेगा रमेश ! तुम्हारी पेंसिल आप-से-आप चित्र का ख़ाका तैयार कर देगी और कूंची उसमें रंग भरकर भारतसेवक का चित्र बना देगी।"

"इसमें मुझे अब तनिक भी संदेह नहीं रहा भाभी !" विश्वास के साथ रमेश ने कहा।

'भारतसेवक कल की परिचय-पत्रिका का तीसरा अध्याय सुनोगे रमेश ! तुम रात को चित्र बनाने का प्रयास करना। अब मैं समझता हूँ कि भारतसेवक की काफ़ी सुन्दर रूपरेखा तुम्हारे सामने आ चुकी है।" विनय भाई ने कहा।

विनोद खड़ा होता हुआ बोला, "प्रयास करूँगा भैया !" और फिर प्रमिला तथा विनय भाई को नमस्कार करके उसने विदा ली।

: ३ :

विनय बाबू बाज़ार में आने वाली हर नई पुस्तक को खरीदकर अपने निजी पुस्तकालय में लाते हैं। पुराने लेखकों की नई रचनाएँ तो उन्हें आकृष्ट करती ही हैं लेकिन नये लेखकों की रचनाएँ सामने आने पर उन्हें अधिक प्रसन्नता होती है।

साहित्य के क्षेत्र में आने वाले हर नवयुवक की रचना को वह बड़े प्रेम और ध्यान से देखते हैं।

पुस्तक-व्यवसाय की उन्नति को देखकर भी विनय भाई को प्रसन्नता होती है। कागज़ और छपाई की सुन्दरता पर भी उनका चित्त प्रसन्न हो उठता है।

इस विषय में उनकी प्रकाशकों और नये पुराने लेखकों से भी बात-चीत होती है। बहुत से प्रश्न और बहुत सी समस्याएँ सामने आती हैं। और विनय भाई सभी पर गम्भीरतापूर्वक विचार करते हैं।

पुराने लेखक उनसे कहते हैं, "मूर्ख और व्यवसायी प्रकाशक कल के छोकरों को लेखक बनाते जा रहे हैं। हम लोगों की इतने दिन की साधना और तपस्या पर कल के लेखकों की रचनाएँ नये-नये आवरण के साथ छापकर पानी फेर देना चाहते हैं।"

विनय भाई उनसे मुस्कराकर कहते हैं, "आप लोगों की साधना और तपस्या क्या कोई बालू का क़िला है जो प्रकाशकों के रंगीन आवरणों की धारा में बह जायगी?"

नये लेखक विनय भाई के पास आकर शिकायत करते हैं, "विनय भाई, पुराने लेखक हमें आगे नहीं बढ़ने देना चाहते। हमारी रचनाएँ बाज़ार में आती हैं तो उनके दिलों पर साँप लोटता है। हमारे विषय में दो शब्द भी कहते उनकी ज़बानें घिसती हैं और अपनी प्रशंसा की भूख में वे हर समय तिलमिलाते रहते हैं।"

विनय भाई नये लेखकों से कहते हैं, "आप लोगों को चाहिए कि आप पुराने लेखकों की प्रवृत्तियों पर ध्यान न देकर अपनी साधना के मार्ग पर चलते चलें। झूठी प्रशंसा लेखक को पथ-भ्रष्ट कर देती है। इसीलिए आज बहुत से पुराने लेखकों की प्रतिभाएँ अन्य लोगों को कुंठित दिखाई देती हैं।"

विनय भाई की बात सुनकर नये लेखकों का दिल फुरवाली ले उठता है। और वे तनिक जोश में आकर कहते हैं, "आपने बिलकुल ठीक कहा विनय भाई! आधे से ज्यादा पुराने लेखक ऐसे हैं कि जो उस समय लेखक कहलाने लगे थे जब लेखक होना कोई महत्वपूर्ण बात नहीं थी। यानी साहित्य के बग़ीचे में चन्द अरण्डी ख़रबूज़े के वृक्ष खड़े थे और उन्हीं को माली ने वृक्ष कहना प्रारम्भ कर दिया था।

आज बगीचे में अलीची, आडू, नींबू, आम, फ़ालसे, लौकाट, नारंगी इत्यादि के वृक्ष भी फूलने-फलने लगे हैं। आप ही कहिए कि इन नये वृक्षों के सामने बेचारे अरण्डी खरबूजे के वृक्ष क्या खाकर आयेंगे?"

विनय भाई इस पर मुस्कराकर कहते हैं, "आप लोगों का कहना ठीक है। नये-नये वृक्षों से बाग़ीचे की शोभा बढ़ती जा रही है और बाग़ीचे का मूल्य भी बढ़ रहा है, इसमें कोई संदेह नहीं। अरण्डी खरबूज़े का महत्व अपनी जगह है और अन्य वृक्षों का अपनी जगह। सभी में अपने-अपने गुण हैं।"

यह सुनकर नये लेखकों का समुदाय कहता है, "हम लोग आपकी बात से सहमत हैं विनय भाई! परन्तु यदि अरण्डी ख़रबूज़ा यह कहे कि अलीची, लौकाट, नारंगी, सेव, नाख, सब फलों के शौकीन सब रसों का स्वाद मेरे ही अन्दर चखें। और पुराना माली भी, जिसे नया माली बाग़ीचे में केवल इसलिए घुसने देता है कि उसने बाग़ीचे की बंजर ज़मीन को तोड़कर हमवार किया था, अरण्डी खरबूज़े की हाँ में हाँ मिला-कर उसकी बात का समर्थन करे तो आप क्या कहेंगे?"

विनय भाई बोले, "इसका मतलब यह है कि आप लोगों को पुराने

लेखकों और आलोचकों, दोनों से शिकायत है ।"

"शिकायत ही नहीं विनय भाई ! यदि इन लोगों ने अपना रवैया नहीं बदला तो हमें लाचार होकर इनके इतिहास की गौरव-गरिमा का पर्दा चीर देना होगा और इन्हें बतलाना होगा कि मौलिक रचना क्या होती है और उसकी आलोचना किसे कहते हैं ?" नये लेखकों का समुदाय एक स्वर में कह उठा ।

विनय भाई की आत्मा प्रसन्न हो गई । उन्होंने अनुभव किया कि देश के स्वतंत्र वातावरण में नई प्रेरणा, नई अनुभूति को लेकर जो यह नई रचना का स्रोत उबल रहा है इसका सही मूल्यांकन न करना इसका सही मार्ग-प्रदर्शन न करना, इसकी शक्ति और सौंदर्य के नीचे अपने झूठे अभिमान को दबते देखकर तिलमिलाना, साहित्य के प्रति घोर अन्याय करना है ।

लेकिन फिर भी विनय भाई नये लेखकों की टोली में नम्र स्वर से बोले, "आप लोगों के साहस और बल की मैं हृदय से प्रशंसा करता हूँ परन्तु इतना ध्यान रहे कि आपका यह साहस और बल अनर्थकारी न हो । जिस मार्ग पर बढ़ने की आप लाग साधना कर रहे हैं, इसी मार्ग पर चलने को पुराने लेखकों ने कम साधना नहीं की । उनकी तपस्या, धैर्य और निर्भीकता का एक लम्बा इतिहास है । यह बाग़ीचा जिसमें आज आप लोग नारंगी, आम, संतरा, सेव और जाने क्या-क्या लगाने की बातें सोच रहे हैं, एक दिन बंजर ज़मीन थी । कहीं पर भी हरियाली नज़र नहीं आती थी । इसे इन्हीं पुराने लेखकों और आलोचकों ने तोड़कर आप लोगों की जड़ें मज़बूती के साथ जमाने के लिए हमवार बनाया ।

दो शब्दों में पूरी बात कहता हूँ आपसे । प्राचीन को भुलाकर नवीन का निर्माण हमेशा ग़लत होगा । वह ज़मीन छूट जायगी जिस पर मानव-और मानव की संस्कृति का पूरा इतिहास खड़ा है । धारा ही बदल जायगी उस जीवन की जिसके आधार पर आप लोग साहित्य का बाग़ीचा लगाने की बात सोच रहे हैं ।"

विनय भाई अपने पास आने वाले नये और पुराने सभी लेखकों से बड़ी तन्मयता के साथ बातें करते हैं। पुराने लेखकों से बातें करने की दिशा और होती है और नये लेखकों से बातें करने की दिशा और। और जब कोई अन्य व्यक्ति उनके पास आता है तो दिशा एकदम तीसरी हो जाती है।

विनय भाई ने प्रमिला से पूछा, "आज रमेश नहीं आया ?"

इससे पहले कि प्रमिला विनय भाई के प्रश्न का उत्तर देती, रमेश कमरे में प्रवेश करता हुआ बोला, "मैं आ गया विनय भाई ! थोड़ी देर हो गई मुझे आज।

एक दिन आपने एक छोटी तख्ती बनाने की आज्ञा दी थी। वह बनानी भूल ही गया था मैं। कल जब चित्र बनाने बैठा तो फ़ाइल से आपके हाथ का लिखा वह काग़ज मिल गया और सब काम छोड़कर मैंने पहले यह तख्ती तैयार की। इसी को वार्निश करने में इतनी देर हो गई।" यह कहकर रमेश ने वह तख्ती विनय भाई के सामने रख दी।

विनय भाई उसे उठाकर पढ़ते हुए बोले, "बहुत सुन्दर बनी है रमेश !" और इतना कहकर वह अपनी चादर एक ओर रखते हुए तख्त से नीचे उतरकर प्रमिला से बोले, "प्रमिला, एक कील तो लाओ तनिक खोजकर।"

प्रमिला मुस्कराकर बोली, "ऐसी भी क्या जल्दी है ? रमेश भाई लगा देंगे।"

यह कह तो दिया प्रमिला ने लेकिन वह जानती थी कि विनय भाई मन में आने पर किसी काम को करने से रुकने वाले नहीं हैं और वह उठकर रसोईघर में कील-काँटे की टोकरी से दो कीलें और छोटी हथौड़ी उठा लाई।

फिर तीनों ने जाकर उस तख्ती को घर के द्वार पर लगा दिया।

विनय भाई ज़रा पीछे हटकर पढ़ते हुए बोले, "भारत साहित्य सहयोग बहुत सुन्दर लिखा है तुमने रमेश।"

"सुन्दर और सादा, दोनों गुण हैं इसमें ।" प्रमिला मुस्करा कर बोली ।

फिर तीनों कमरे के अन्दर चले आये और विनय भाई तख्त पर बैठते हुए बोले, "भारत साहित्य सहयोग की कल्पना करते-करते आज कई वर्ष हो गये रमेश ! एक बार पहले प्रयास किया था इस संस्था को स्थापित करने का लेकिन कुछ कारणवश उस समय विचार स्थगित कर देना पड़ा। उसी पुरानी प्रेरणा को लेकर आज सोलह वर्ष पश्चात् प्रमिला के मकान को भारत साहित्य सहयोग केन्द्र बना रहा हूँ ।"

कमरे में जाकर मूढ़े पर बैठते ही रमेश की दृष्टि विनय भाई के पैड पर गई । रमेश ने पैड हाथ में उठाकर पन्ने पलटकर देखा तो एकदम मुस्कराकर बोला, "आज तो आपने काफ़ी लिख लिया विनय भाई ! मेरा ख़याल है कि आज आपने भारतसेवक के विभिन्न वर्गों पर भी विचार किया होगा । मेरे चित्र की प्रगति तब तक सधी रहेगी जब तक भारतसेवक के वर्गों की पूरी रूपरेखा मेरे सामने नहीं आती ।"

विनय भाई रमेश के हाथ से पैड लेते हुए बोले, "आज तुम्हारी कई समस्याएँ मैंने सुलझा दी हैं रमेश ! भारतसेवक को हमने प्रधान रूप से तीन वर्गों में विभाजित किया है ।"

"एक सेवा माता के नाते रिश्तेदारों, सगे सम्बन्धियों और इष्ट-मित्रों में; दूसरे सत्ता के नाते रिश्तेदारों, सगे सम्बन्धियों और इष्टमित्रों में तथा तीसरे जनता के नाते रिश्तेदारों, सगे सम्बन्धियों और इष्ट-मित्रों में ।"

"ये तीन वर्ग बनाये आपने ?" रमेश बोला ।

"तुमने सही दिशा में सोचा है रमेश ! अब तुम्हें चित्र बनाने में अधिक कठिनाई नहीं होनी चाहिए ।

और फिर मै आज पत्रिका की भूमिका समाप्त करके तुम्हारा भारत-सेवक से साक्षात् परिचय कराने का भी विचार कर रहा हूँ ।" विनय भाई बोले ।

इसके पश्चात् विनय भाई ने परिचय-पत्रिका की भूमिका आगे बढ़ाते

हुए कहा, "सेवा माता के समझाने और भारतसेवक से आश्वासन पाने पर जनता के मन की बेचैनी दूर हुई। जनता का क्रोध कम हुआ। लेकिन सेवा और जनता के सगे सम्बन्धी, नाते रिश्तेदारों और इष्टमित्रों का क्रोध ज्यों-का-त्यों बना रहा। उनके दिलों की जलन दूर न हो सकी।

सत्ता के नाते रिश्तेदारों को सेवकों की पंक्तियों में खड़े देखकर इन्हें मानसिक क्लेश हुआ। भारतसेवक का यह व्यवहार उनके दृष्टि-कोण से नितान्त निन्दनीय था। वे इसे सहन न कर सके।

सेवा माता के सम्बन्धियों, नाते-रिश्तेदारों और इष्टमित्रों को लगा कि भारतसेवक ने उनके साथ घोर अन्याय ही नहीं विश्वासघात भी किया। अपने इतने पुराने सम्बन्धियों को भुलाकर भारतसेवक ने सत्ता के सम्बन्धियों को सेवक-पदों से विभूषित किया।

उनके विचार से भारतसेवक के इस कृत्य में भारतसेवक की पवित्रता, योग्यता और ईमानदारी को ही नष्ट कर दिया। स्वार्थी लोगों को सेवकों की श्रेणी में सम्मानित करके भारतसेवक ने जो अनर्थ किया है उसका दण्ड उसे भुगतना ही चाहिए।

ये सब मिलकर सेवा माता के पास पहुँचे और भारतसेवक की अनुचित कार्यवाही का ज़ोरदार शब्दों में विरोध करते हुए बोले, "हम इसे सहन नहीं कर सकते माँ! सेवा हमने भी कम नहीं की है, त्याग भी हमारा भारतसेवक से कम नहीं है। पुलिस की मार खा-खाकर हमारे शरीरों की हड्डियाँ टूटी पड़ी हैं। हम भारतसेवक को दिखा देंगे कि यह सत्ता जिसे पाकर उसने हमें भुलाने की चेष्टा की है, इसे हम भी हासिल कर सकते हैं।

इनकी बातें सुनकर सेवा माता गम्भीर वाणी में बोली, "करोगे तुम लोग वही जो तुम करना चाहते हो। लेकिन मैं पूछती हूँ कि तुमने जिस दिन सेवा के पथ पर कदम बढ़ाया था तो क्या केवल सत्ता को हासिल करने के लिए ही बढ़ाया था? सेवा के और भी दूसरे रास्ते बहुत हैं। सत्ता को प्राप्त करना ही एक मात्र रास्ता नहीं है सेवा का।"

"कितनी सुन्दर बात कही सेवा माता ने।" गद्-गद् होकर प्रमिला बोली। और फिर मधुर शब्दों की वर्षा करते हुए कहा, "रमेश ! भारत-सेवक वही नहीं है जो सत्ताधारी है। सेवा माता को नहीं देखते कहाँ रहती हैं वह। देहात की फूंस से बनी झोंपड़ियों का उनका आश्रय है। अपने बेटे भारतसेवक के राजमहल में रहना उन्होंने स्वीकार नहीं किया।"

विनय भाई बोले, "सेवा माता के इस उत्तर से उनके नाते रिश्ते-दारों, सगे सम्बन्धियों और इष्टमित्रों को महान् निराशा हुई और कई ने तो सेवा माता के सिर अपने बेटे भारतसेवक का पक्षपात करने का दोष भी मढ़ दिया।" इतना कहकर सेवा माता के मुख-मंडल से गम्भीरता जाती रही और वह हँसकर बोलीं, "तुम लोग क्या भारत-सेवक से कम हो किसी तरह ? भारतसेवक की हर गलत बात का जमकर विरोध करो। सत्ता को हावी न होने दो भारतसेवक पर। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे हर सही काम के साथ रहेगा।"

"यही होगा माता !" कुछ ने कहा।

"हमें सत्ता से गठबन्धन नहीं करना माँ ! भारतसेवक पर हमें विश्वास है। सत्ता उस पर हावी नहीं हो सकती। देश को स्वतंत्र कराने और सत्ता को हासिल करने के अतिरिक्त भी राष्ट्रपिता ने और काम सौंपे थे हमें। हम उन्हीं कामों की दिशा में अपना क़दम ब ायेंगे। भारत-सेवक से सहयोग लेंगे और सहयोग देंगे उसे, विरोध नहीं करेंगे उसका।" एकत्रित जनों का दूसरा दल बोला।

सेवा माता ने दोनों को आशीर्वाद देकर कहा, "भारतसेवक की हर ग़लत बात का विरोध और उसके हर सही काम में योग देना, यही मेरी मनोकामना है। मेरे लिए तुम और भारत सेवक दोनों समान हो। भारत-सेवक तुम्हारा भाई है। उसे दुश्मन समझने की भूल न करना। मेरे हृदय में तुम्हारे लिए भारतसेवक से कम प्यार नहीं है।"

सेवा माता के नाते रिश्तेदार और सगे-सम्बन्धी यहीं से दो वर्गों में विभक्त हो गये। एक दल ने अपने को राजनीति के क्षेत्र में संगठित किया

ग्रौर दूसरा दल जन-जागरण ग्रौर जन-सेवा के क्रियात्मक काम पर जुट गया ।"

"सेवा माता के सम्बन्धियों का विभाजन ग्रापने खूब किया विनय भाई !" रमेश बोला। "भारतसेवक की परिचय-पत्रिका के रूप में भारत के राजनीतिक, सामाजिक ग्रौर सांस्कृतिक उत्थान की सुन्दर रूपरेखा तैयार होती जा रही है । भारत की विभिन्न विचारधाराग्रों के कलात्मक प्रतीक प्रस्तुत करते जा रहे हैं ग्राप ।"

विनोद की बात सुनकर प्रमिला बोली, "इतनी गम्भीर बात नहीं है यह विनोद भैया ! तुम्हारे भाई साहव ग्रपने सम्बन्धियों की कहानी सुना रहे हैं तुम्हें। सच्ची कहानी में ज़रा नमक-मिर्च मिलाकर भारतसेवक की परिचय-पत्रिका नाम रख दिया है इसका । जिन भारतसेवक की तुम परिचय-पत्रिका सुन रहे हो उनसे, उनकी माता जी, उनकी जीजी ग्रौर उनके सम्बन्धियों से तुम्हारी भेंट करायी जायगी ।"

"तब तो चित्र बनाने में ग्रौर भी सुगमता होगी । क्या उनका एक खाका भी खींच सकूंगा मैं ?" रमेश ने पूछा ।

"एक नहीं, दो ।" मुस्कराकर विनय भाई बोले, "लेकिन उससे पूर्व तुम जो भारतसेवक की परिचय-पत्रिका सुनोगे, वह तुम्हें चित्र की जो रूप-रेखा दे सकेगी वह वे हाड-मांस के पुतले कदाचित् न दे सकेंगे। उन पुतलों का सम्बन्ध केवल शरीर से होगा ग्रौर मेरी परिचय-पत्रिका का सम्बन्ध उनके मन, मस्तिष्क, हृदय ग्रौर शारीरिक कृत्यों से है । इस परिचय-पत्रिका में उनके जीवन का पूरा रहस्य खुलकर सामने ग्रा जायगा ।"

विनय भाई ने ग्रपने हाथ के वे पन्ने एक तरफ़ रख दिये जिनको वह लिखा चुके थे ग्रौर फिर प्रमिला की तरफ़ देखकर बोले, "ग्राज तुम्हारे फलाहार का क्या वना प्रमिला ?"

"लिखने की धुन में ग्रापको बाहर का पता ही नहीं रहता कि दुनियाँ कैसे चल रही है । देखते नहीं कि बारिश कैसी मूसलाधार हो रही है ? ऐसी बारिश में कैसे दूध ग्राता ग्रौर कैसे दूकानदार यहाँ पहुँचाता । ग्रब

तनिक मंद पड़ी है बारिश ! दूध आते ही फलाहार प्रस्तुत होगा ।" मुस्कराते हुए प्रमिला ने कहा ।

"मुझे सचमुच बाहर का ध्यान ही नहीं रहा । भारतसेवक ने मेरे मस्तिष्क को इतनी बुरी तरह घेरा हुआ है कि जब मैं उसकी परिचय-पत्रिका लिखने या सुनाने बैठता हूँ तो मुझे उसके अतिरिक्त और कुछ सूझता ही नहीं ।" और इतना कहकर वह रमेश की तरफ़ देखते हुए बोले, "अच्छा रमेश ! जब तक तुम्हारी भाभी चाय का प्रबन्ध करें तब तक मैं तुम्हें जनता और उनके नाते रिश्तेदारों, सम्बन्धियों और इष्टमित्रों की कुछ बातें सुना दूँ ।"

रमेश ने दत्त-चित्त होकर विनय भाई के चेहरे की तरफ़ देखा ।

विनय भाई बोले, "भारतसेवक की इस नवीन कारगुज़ारी से जनता के नाते रिश्तेदारों में काफ़ी गर्मागर्म बहसें हुईं और काफ़ी टीका-टिप्पणियाँ की गईं ।"

एक ने कहा, "'सत्ता सेवक की स्त्री नहीं है । सत्ता से हमारा भी वही सम्बन्ध है जो सेवक का है ।"

दूसरे ने पहले का समर्थन करते हुए कहा, "इसमें कोई शक नहीं । प्रजातंत्र में सत्ता हमारी दासी है, सेविका है हमारी और भारतसेवक हमारा सेवक है; राजा नहीं है वह हमारा। उसे मनमानी करने का कोई अधिकार नहीं ।"

तीसरा बोला, "जनता को हमारा साथ देना चाहिए। जनता अब हमारी है । भारतसेवक से उसका कोई सम्बन्ध नहीं रहा । यह सत्ता वही है जिसने जनता को लूटा-खसोटा था, जनता की माँग का सिंदूर पोंछा था, जनता के खून से होली खेली थी, जनता की दरिद्रता की खिल्लियाँ उड़ाई थीं, विदेशी राजाओं की गोद में बैठकर ऐश लूटी थी, हमारे ऊपर लाठियाँ और गोलियाँ बरसाई थीं । आज भारतसेवक से गठबन्धन करके यह एकदम सती-साध्वी कैसे बन गई, यह हमारी समझ में नहीं आता ।"

चोथा बोला, "ऐसी दशा में जनता ने यदि अपने भाई भारतसेवक का पक्ष करके सत्ता की ग़लत कार्यवाहियों के विरुद्ध हमारा साथ नहीं दिया तो जनता का यह भाई भी भारतसेवक से राजा बन जायगा। हमें भारतसेवक को 'डिक्टेटर' के रूप में देखकर इससे भी संघर्ष करना होगा।"

इस पर सब एक स्वर में बोले, "तुमने बिलकुल ठीक कहा जन-नेता! जनता को सत्ता की हर कार्यवाही को शक की दृष्टि से देखना चाहिए। जनता की सम्पत्ति पर ऐश करने वाली सत्ता को जन-नेताओं पर मुस्कराने का कोई अधिकार नहीं। भारतसेवक सत्ता की ग़ुलामी स्वीकार करके, उसके रूप और माया-जाल में फँसकर, उसके सगे सम्बन्धियों को अपने बराबर का दर्जा दे सकता है परन्तु हम लोगों पर वह माया-जाल और रूप का आकर्षण नहीं चल सकता। इनकी यह मुस्कराहट भारतसेवक की शै पर चलती है। इसे सहन नहीं किया जा सकता।"

इनकी गम्भीरता को देखकर जनता के चेहरे पर मुस्कराहट आ गई। उसने कहा, "आप लोगों के विचार से मैं पूरी तरह सहमत हूँ। सत्ता के कुचक्रों से भारतसेवक को बचाये रखने का एक मात्र यही उपाय है कि आप भारतसेवक की हर ग़लत बात का विरोध करें। लेकिन इतना ध्यान रखें कि सत्ता को हासिल करने की धुन में भारतसेवक के सही कामों की भी निन्दा न करने लगें।"

"जनता ने बहुत सुन्दर उत्तर दिया विनय भाई!" रमेश बोला।, "महाभारत का ज़माना होता तो सत्ता पाँच पतियों को स्वीकार कर लेती। लेकिन आज के ज़माने में तो यह भी सभ्यता के विरुद्ध है।"

विनय भाई अपनी ही धुन में थे। रमेश की बात पर ध्यान न देते हुए बोले, "जनता ने मुस्कराकर कहा, आप लोग मेरे नेता हैं। भारतसेवक मेरा भाई है। दोनों से ही मैं अपने अहित की बात नहीं सोच सकती। अब रही सत्ता की बात, सो उसे पाने के लिए अगर आपने मेरा तिरस्कार किया तो मैं आपको कहाँ तक सहयोग दे सकूँगी, इतना ध्यान रखकर

आगे बढ़िये। मेरी सद्भावनाएँ आपके हर जन-हित के काम के साथ रहेंगी।"

जनता की बात सुनकर जन-नेता गम्भीर हो गया। भारतसेवक का सही विरोध करने की दिशा में उसे जनता का आश्वासन मिल गया।

एक बोला, "देख रही हो जनता! भारतसेवक ने सत्ता को हासिल करके भी आज तक कृष्ण भगवान् की इस पवित्र पावन भूमि पर गऊमाता का वध होना नहीं रोका। सत्ता को हासिल करके मैं उसका कान पकड़कर कहूँगा, गऊ-वध रोको सत्ता!"

दूसरा बोला, "कहाँ तक सुनोगी जनता! राम की इस पवित्र पावन भूमि पर जहाँ भक्त हनुमान ने उनकी अनन्य भक्ति और सेवा की थी वहीं से आज करोड़ों वानरों को पकड़-पकड़कर जहाज में भरकर विदेशों को भेजा जा रहा है और वहाँ उनके रक्त से इञ्जेक्शन की शीशियाँ तैयार की जा रही हैं। घोर कलियुग है। मैं सत्ता को हासिल करके कहूँगा,—मूर्ख सत्ता! ये ही वे पवन-पुत्र हैं जिन्होंने माता सीता की खोज की थी और भगवान् राम की सेना में भर्ती होकर उन्हें विजय प्राप्त कराई थी। तू कानून बनाकर इनका वध रोक।"

तीसरा बोला, "तुम्हें बुरा लगे या भला जनता! परन्तु मुझे भारतसेवक का विरोध करना ही होगा। तुम्हारे ऊपर होते हुए अत्याचारों को देखकर मैंने सर्वदा अपने प्राणों को संकट की भट्टी में झोंका है, इसकी तुम गवाह हो।"

और जनता ने स्वीकार करते हुए कहा, "तुम्हारा त्याग सराहनीय है जन-नेता! तुम्हारे त्याग का मैं आदर करती हूँ।"

जन-नेता बोला, "भारतसेवक ने सत्ता को हासिल करके मेरी सेवाओं को, मेरे त्याग को, मेरी कर्मठता को बिलकुल भुला दिया। यह मेरी योग्यता और मेरे त्याग को एक जबरदस्त चुनौती है। इसे मैं सहन नहीं कर सकता और आगामी चुनाव में ही यदि भारतसेवक के मैंने दाँत खट्टे न कर दिये तो मेरा नाम भी जन-नेता नहीं। पहले ही चुनाव

में भारतसेवक का तख्ता पलट दूंगा।"

जनता बोली, "सत्ता भारतसेवक की विवाहिता स्त्री नहीं है जन-नेता ! वह तो तुम्हारे राष्ट्र की सेविका है। शासक उसे सत्ता कहता है। भारतसेवक को उसे सेविका कहना चाहिए और केवल कहने की बात नहीं है जन-नेता ! सत्ता को सेविका बनना ही होगा एक दिन। भारतसेवक यदि सत्ता को सेविका बनाने में सफल नहीं हो तो तुम प्रयास कर सकते हो उसे प्राप्त करने का और जब तुम उसे हासिल कर लोगे तो मैं उसे जन-नेतानी कहूँगी।" यह कहकर जनता के मुख पर मधुर मुस्कान खेल उठी।

जन-नेता गम्भीरपूर्वक बोला, "विश्वास रखो जनता ! जन-नेता, भारतसेवक से कम नहीं है किसी भी दशा में। यह ठीक है कि मैं आस्तिक नहीं हूँ, परन्तु तुम तो आस्तिक हो। आत्मा भारतसेवक की हो या जन-नेता की, दोनों तुम्हारे परमात्मा की छाया हैं। तुम्हारा भाई सत्ता को यदि भारतसेविका न बना पाया तो यह जन-नेता उसे एक दिन तुम्हारी सेविका बनाकर ही छोड़ेगा। मुझे जन-नेतानी नहीं बनाना है सत्ता को। तुम्हारा प्यार चाहिए मुझे, तुम्हारा विश्वास चाहिए।"

जनता मधुर स्वर में बोली, "जन-नेता को जनता का प्यार और जनता का विश्वास सर्वदा मिलेगा। परन्तु भारतसेवक का गलत विरोध भी जनता कभी सहन नहीं करेगी, इतना ध्यान रहे जन-नेता ! मेरे बच्चों की तरक्की और खुशहाली का रास्ता केवल सत्ता को हासिल करने के बाद ही नहीं खुलता, इतना भी जान लो तुम।"

जनता के अन्तिम शब्द सुनकर जन-नेता के चेहरे पर उदासी-सी छा गई और वह एक शब्द भी बोले बिना अपनी धुन में वहाँ से चल दिया।

"जन-नेता के उदास होने का कारण समझ में नहीं आया विनय भाई !" रमेश ने पूछा।

"वही तो कहता हूँ कि बड़े भोले हो रमेश तुम ! जन-नेता के पास राजनीतिक दाव-पेंच के अतिरिक्त और कोई काम नहीं था करने के लिए। वह हर काम सत्ता को प्राप्त करके उसी के द्वारा करने के फिराक़ में थे। कोई ऐसी योजना उसके कार्यक्रम में नहीं थी जो सत्ता को हासिल किये बिना वह चालू कर पाते।" प्रमिला बोली।

"यही कारण था उसकी परेशानी का रमेश ! जनता का कहना था कि उसकी प्रगति केवल सत्ता के नियमों, कानूनों और पाबन्दियों या सुविधाओं से ही सम्भव नहीं है। उसके लिए सत्ता के आकर्षण में न फँसने वाले भारतसेवकों की आवश्यकता है। आज जनता को अपनी समृद्धि के लिए नेताओं की आवश्यकता नहीं, खयाली दाव-पेचों में उलझनेवाले सेवकों की ज़रूरत नहीं, उसे जरूरत है काम करने वाले भारतसेवकों की, मज़दूरों की; दिमाग़ी अय्याशों की नहीं।" विनय भाई ने कहा।

"जनता ने बिलकुल ठीक कहा विनय भाई !" रमेश बोला।

"क्या खाक ठीक कहा जनता ने ?" घोष बाबू बौखलाकर बोले। कमरे में एक नई आवाज़ सुनकर विनय भाई और रमेश का ध्यान उधर गया तो क्या देखा कि घोष बाबू खड़े हैं। विनय भाई खड़े होकर स्वागत करते हुए बोले, "अरे घोष बाबू ! कबसे खड़े हैं आप ?"

घोष बाबू के पास ही खड़ी प्रमिला ने कहा, "आप तो ऐसे तल्लीन हैं अपनी पत्रिका सुनाने में कि आने-जाने वालों का भी ध्यान नहीं। घोष बाबू को खड़े-खड़े दस मिनट हो गये।"

"क्षमा करना घोष बाबू ! आपके आने का पता ही नहीं चला मुझे। मैं अपनी ही धुन में लगा रहा।" बाहर बरांडे से एक मूढ़ा लाकर बिछाते हुए विनय भाई ने कहा, "विराजिये, कहाँ से आना हुआ इस समय ? चेहरे पर कुछ परेशानी के आसार कैसे दिखाई दे रहे हैं ?"

"परेशानी कुछ नहीं है परन्तु मैं पूछता हूँ कि जनता ने बिलकुल ठीक क्या कहा ? आपका मतलब है कि मैं अम्बर चरखा लेकर कातूँ, खड्डी लगाकर कपड़ा बुनूँ और इसी तरह के बेकार कामों में फँसकर

अपनी आज तक की राजनीतिक साधना समाप्त कर दूँ ?" घोष बाबू ने कहा।

रमेश आगंतुक की बात सुनकर सिटपिटाया और उसने गम्भीरता-पूर्वक उनके चेहरे की तरफ देखा।

विनय भाई रमेश की परेशानी को समझते हुए बोले, "जन-नेता घोष बाबू के दर्शन करो रमेश ! अभी-अभी आपके विषय में ही तो चर्चा चल रही थी हमारी पत्रिका में।"

रमेश आदरपूर्वक नमस्कार करते हुए बोला, "सचमुच अभी-अभी आपका ही ज़िक्र कर रहे थे विनय भाई। बड़ी उम्र है आपकी।"

"सब सुन चुका हूँ मैं। मेरी असफलताओं का खाका खींचने में विनय भाई को बहुत आनन्द आता है।" मुस्कराकर घोष बाबू बोले, "परन्तु विनय भाई ! जनता बहुत भोली है और सेवा माता का झुकाव अपने बेटे भारतसेवक की तरफ अधिक है। हमें वह अपना सगा बेटा नहीं समझतीं।"

"सेवा माता यह समझ भी भला कैसे सकती हैं घोष बाबू ?" विनय भाई ने मुस्कराकर पूछा। "उनके सिद्धान्तों पर अमल करना सीख-कर यदि आप उन पर यह दोषारोपण करें तो आपकी बात में दम आ सकता है।"

"न समझें परन्तु एक दिन हमें भी कुछ-न-कुछ समझना ही होगा उन्हें।" घोष बाबू सँवरकर मूढ़े पर रुख बदलकर बैठते हुए बोले। "विदेशी राजाओं से चाल पट्टी करके धोखे और किस्मत से भारतसेवक ने सत्ता पर अधिकार जमा लिया। परन्तु यह अधिक दिन चलने वाला नहीं है। त्याग और वीरता की कसौटी पर भारतसेवक हमारे सामने नहीं ठहर सकता।" गम्भीरतापूर्वक घोष बाबू बोले। "क्रान्ति का जो खौलता हुआ रक्त हमारी नसों में बह रहा है वह अवसरवादी भारतसेवक की नसों में कहाँ है ?"

घोष बाबू की बात सुनकर विनय भाई के चेहरे पर मुस्कराहट आ

गई और वह सरलतापूर्वक बोले, "तो आजकल घोष बाबू का किस्मत पर भी विश्वास बनता जा रहा है ?"

घोष बाबू ने विनय भाई की इस मीठी चुटकी पर ध्यान न देकर गम्भीरतापूर्वक कहा, "विनय भाई भारतसेवक को सत्ता एक दिन जनता के सामने अपराधी बनाकर खड़ा न कर दे तो आप मुझे घोष न कहना। यदि भारतसेवक सत्ता के धोखे में आकर ऐसी ही हरकतें करता रहेगा तो तुम देखना एक दिन उसे कितना लज्जित होना पड़ेगा।"

"यह तो तभी सम्भव है घोष बाबू ! जब सत्ता से आपका गठ-बंधन हो जाय।" और फिर मुस्कराकर बोले, "ऐसा सोचने से पूर्व तनिक अपनी शक्ल भी तो कभी शीशे में देख लिया करो घोष बाबू ! सत्ता जैसी सुन्दर नारी आपके पिचके गालों, सूखे बालों, फटी पेंट और बिना तले के बूटों वाली शक्ल पर भला कैसे रीझ सकती है ?"

"आप हर बात को मज़ाक में टालने का प्रयत्न न किया करें विनय भाई !" घोष बाबू अपने लिबास पर एक दृष्टि डालते हुए बोले, "पूँजीवाद के विरुद्ध आवाज़ बुलन्द करने के लिए यही शक्ल और यही लिबास काम देता है विनय भाई ! नुकीली डेढ़ इंच की कलफदार महीन खादी की सुफेद बग्ग बगले को भी मात करने वाली टोपी, भागलपुरी सिल्क का कुर्ता, पश्मीने की शेरवानी, चूड़ीदार पायजामा, सुफेद जुर्राब और सावर की सुफेद कानपुरी चप्पलें हम मज़दूरों को शोभा नहीं देतीं।"

"तो क्या देश के मज़दूरों में अखाड़ा जमाने का इरादा किया है घोष बाबू ने ?" मुस्कराकर विनय भाई ने पूछा।

"संगठित शक्ति मज़दूर-क्षेत्रों के अतिरिक्त और मिल भी कहाँ सकती है ?" गम्भीरतापूर्वक घोष बाबू बोले।

"परन्तु आपका यह प्रयास भारतसेवक से सत्ता को नहीं छीन सकता। भारत खेती-प्रधान देश है और इसीलिए यह गाँव-प्रधान भी है। कोई भी आन्दोलन जो गाँवों की जनता को नहीं छू सकता वह भारत-सेवक का बाल भी बाँका नहीं कर सकता।" गम्भीरतापूर्वक विनय भाई

ने कहा ।

घोष बाबू मुस्कराकर बोले, "ये राजनीति की बातें हैं विनय भाई ! पुस्तक लिखने से इनका सम्बन्ध नहीं है । गाँव-गाँव घूमकर चक्कर काटने वाला भी भारतसेवक का विरोधी तैयार हो चुका है। वह भारतसेवक का अपना ही नाते-रिश्तेदार है।" और इतना कहकर घोष बाबू ने संतोष की साँस ली ।

इसी समय प्रमिला कमरे में आई और उसने आते ही बातों का रुख बदल दिया ।

वह बोली, "आज काफ़ी दिन बाद घोष बाबू के दर्शन कर रही हूँ। भारतसेवक और सत्ता के गठबन्धन में भी आप नहीं पधारे । अच्छा खासा जशन था बाजे गाजों के साथ। रोशनी भी खूब हुई । जनता ने दीवाली मनाई परन्तु जन-नेता का कहीं पता नहीं था ।"

"हमारी शादी के जशन में भी भारतसेवक नहीं आयगा प्रमिला वह दिन दूर नहीं है जब तुम यह भी देखोगी।" घोष बाबू गम्भीरतापूर्वक बोले ।

"तो क्या आपका भी शादी कराने का विचार है ?" प्रमिला ने पूछा ।

"क्यों नहीं प्रमिला ! तुम भी बड़ी भोली हो । घोष बाबू सत्ता के पुराने प्रेमियों में से हैं। परन्तु प्रेमी होने पर भी यह सत्ता को दासी बनाकर रखना चाहते हैं। समानता के हामी होकर भी उस बेचारी को हीन दृष्टि से देखते हैं ।" विनय भाई तीखे व्यंग्य के साथ बोले ।

घोष बाबू ने प्रमिला की तरफ़ देखकर कहा, "प्रमिला सुन रही हो विनय भाई की बातें ? जनता का नेता सत्ता को जनता के बराबर भला कैसे बिठा सकता है ? तुम ही कहो ।"

"इसीलिए तो सत्ता इनसे रूठकर भारतसेवक के पास चली गई ।" विनय भाई मुस्कराकर बोले ।

इसी समय घर के बाहर मोटर गाड़ी का हॉर्न बजा और किसी ने द्वार पर दस्तक देकर कुंडी खड़खड़ाई ।

प्रमिला ने द्वार खोला तो देखा कि भारतसेवक श्रीलाल जी सत्ता के साथ द्वार पर खड़े हैं।

श्री लाल जी को प्रमिला ने आदरपूर्वक नमस्कार किया।

"विनय भाई घर पर हैं ?" श्रीलाल जी ने पूछा।

"अवश्य हैं, अन्दर पधारिये।" प्रमिला ने कहा।

श्रीलाल जी सत्ता देवी के साथ अन्दर चले आये।

विनय भाई ने खड़े होकर उनका स्वागत किया परन्तु घोष बाबू मूढ़े पर ज्यों-के-त्यों जमे रहे, बल्कि दृष्टि दूसरी ओर को फेर ली, मानो उन्हें पता ही नहीं कि कमरे में कोई नया व्यक्ति आया है।

प्रमिला ने दो तीन गोल मूढे लाकर डाल दिये और श्रीलाल जी तथा सत्ता उन पर बैठ गये।

रमेश आश्चर्य के साथ नवागंतुकों की ओर देख रहा था। उसकी दृष्टि पहचानकर विनय भाई बोले, "रमेश ! दर्शन करो, भारतसेवक श्रीलाल जी के और उनके साथ ही सत्ता रानी के भी।"

रमेश ने नमस्कार किया और सरल वाणी में कहा, "अहोभाग्य जो आप जैसे भारतसेवक तथा भारतसेविका के दर्शन हुए।"

श्रीलाल जी घोष बाबू की ओर देखकर बोले, "अरे घोष बाबू भी विराजमान हैं यहाँ तो ! भाई खूब भेट हुई आप से !" और फिर सत्ता की तरफ़ देखकर बोले, "आपसे भी परिचित हो कि नहीं सत्ता ! बड़े त्यागी और कर्मठ प्राणी हैं। भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में भी आपने कम योग नहीं दिया। परन्तु स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् आप कुछ रूठे-रूठे रहने लगे हैं।"

श्रीलाल जी की बात सुनकर सत्ता मुस्कराकर निहायत सतर्कता के साथ बोली, "घोष बाबू मेरे बहुत पुराने परिचितों में से हैं। इनकी नाराज़गी का कारण मैं आपसे अधिक समझती हूँ। लेकिन इलाज नहीं है उसका मेरे पास। मैं भारतीय संस्कृति और संविधान के अनुसार चलने वाली हूँ।"

प्रमिला की ओर देखते हुए घोष बाबू आँखों से चश्मा उतारकर आँखें मिचमिचाते हुए सत्ता पर तीखा व्यंग्य कसकर बोले, "प्रमिला देवी, आदर्श भारतीय नारी की शक्ल तुमने न देखी हो तो देख लो, बैठी हैं सत्ता देवी सामने।"

प्रमिला अपने चेहरे पर बनावटी गम्भीरता लाकर बोली, "सत्ता रानी के भारतीय आदर्श-पालन की मै हृदय से सराहना करती हूँ घोष बाबू !"

श्रीलाल जी के पास अधिक समय नहीं था। उन्होंने विनय भाई को वराँडे में ले-जाकर कुछ सेवा माता के विषय में पूछा और फिर सबको नमस्कार करके चलने का रुख बनाकर बोले, "सब महानुभावों को नमस्कार करता है भारतसेवक ! और विशेष रूप से घोष बाबू को कि जिनसे अकस्मात् ही विनय के यहाँ भेंट हो गई।"

सत्ता ने भी एक अदा के साथ सबको नमस्कार किया और फिर दोनों ने विदा ली।

विनय भाई, प्रमिला देवी और रमेश द्वार के बाहर खड़ी कार में उन्हें बिठलाने के लिए आये।

परन्तु घोष बाबू उसी तरह मूढे पर जमे बैठे रहे। कौन आया और कौन गया, इसकी उन्होंने लेश मात्र भी चिंता न की। उनके मस्तिष्क में अपनी ट्रेड-यूनियन चक्कर लगा रही थी।

श्रीलाल जी को विदा करके विनय भाई, प्रमिला देवी और विनोद लौटे तो घोष बाबू भी खड़े होते हुए बोले, "एक बुलेटिन निकालने का विचार कर रहा हूँ विनय भाई ! मेरी ज़बान उर्दू है और आज मज़दूरों में भी हिन्दी का बोलबाला होता जा रहा है। क्या आप मेरी कुछ मदद कर सकेंगे बुलेटिन निकालने में ?"

विनय भाई बोले, "मेरे योग्य जो सेवा होगी वह अवश्य कर सकूँगा। परन्तु पत्र का सम्बन्ध केवल छापने और बेचने से ही नहीं है। इसका सम्बन्ध विचारों से है। और उसमें अगर मेरा आपका सामंजस्य न हुआ

तो मेरा सहयोग आपके लिए असहयोग बन जायगा।"

घोष बाबू को विनय भाई की इस बात से सहमत होने में समय न लगा और वह दरवाजे की तरफ़ रुख करके बोले, "अच्छा विनय भाई ! आज्ञा चाहता हूँ अब आपसे। आपका सहयोग न मिलने पर भी मेरा बुलेटिन अवश्य निकलेगा।"

दो कदम चलकर फिर सर को खुजलाते हुए एक बार बोले, "और आप जैसे साहित्यकारों को अपनी साहित्य-सेवा का फल प्राप्त करने का भी तो यही समय है। सरकारी शिक्षा-विभाग, आकाशवाणी केन्द्र, तथा सूचना-विभाग में आपकी सेवाएँ माँगी जा रही होंगी। फिर क्यों आप इस मज़दूर के बेकार के बुलेटिन में अपना अमूल्य समय और मस्तिष्क नष्ट करें।"

घोष बाबू की बात सुनकर विनय भाई खड़े होते हुए मुस्कराकर बोले, "घोष बाबू ! मुझे अमरीका, चीन या रूस कहीं से भी कोई सहायता नहीं मिलती। सरकारी पंक्ति में भी मेरा नाम कहीं पर दर्ज नहीं है। परन्तु यह सब न होने पर भी आपके व्यंग्य से मैं तिलमिलाऊँगा नहीं। समय पड़ने पर विदेशी सरकार को सहयोग देने वालों को जब मैं अपनी सरकार के सहयोगियों के प्रति अनुत्तरदायी व्यंग्य कसते सुनता हूँ तो उनकी बुद्धि पर मुस्कराने के अतिरिक्त और मेरे पास कुछ रह ही नहीं जाता।"

घोष बाबू के साथ-साथ विनय भाई मकान के द्वार तक आ पहुँचे। मकान के द्वार पर लटकी पट्टी को घोष बाबू ने बड़े ही ध्यान के साथ पढ़ा और पढ़कर बोले, यह 'भारत साहित्य सहयोग' क्या चीज़ बन रही है विनय भाई ?"

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "यह सरकारी संस्था नहीं है घोष बाबू ! देश की जनता को साहित्य का सहयोग देने की योजना पर बहुत दिन से विचार कर रहा हूँ।" और फिर रमेश की ओर संकेत करके बोले, "रमेश भाई एक प्रतिभासम्पन्न चित्रकार हैं। इनके सामने मैंने एक दिन

अपनी इच्छा प्रकट की और आज यह इस तख्ती को बना लाये । प्रमिला, रमेश और मैंने इसे मकान के द्वार पर लटका दिया । बस यही है सब कुछ अभी तक ।"

घोष बाबू ने एक बार फिर ध्यान से विनय भाई, रमेश और प्रमिला की तरफ देखा और फिर अपना चश्मा आँखों पर चढ़ाते हुए कहा, "क्षमा करना विनय भाई ! यदि कोई ऐसी बात मैंने कह दी हो जो आपको बुरी लगी । भारतसेवक ने मुझे नही समझा, जनता भी कभी-कभी गलत समझने लगती है । तुमसे प्रार्थना है कि तुम गलत न समझना ।"

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "निश्चिन्त रहें आप मेरी तरफ़ से । मैं आपको कभी ग़लत नहीं समझूंगा और मुझे भी आप तनिक समझने का प्रयास करें । मेरे विषय में कोई भी बात ज़बान से निकालते समय जरा देर के लिए उसे मस्तिष्क की तराज़ू पर तौल लिया करें ।"

घोष बाबू के चले जाने पर रमेश ने विनय भाई से पूछा, "विनय भाई ! क्या घोष बाबू को भी आप अपने भारतसेवकों की पंक्ति में खड़ा करते है ?"

"घोष बाबू एक महान् भारतसेवक हैं रमेश ! त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्ति है । स्वार्थ इनके जीवन को छू तक नहीं गया ।" विनय भाई ने उत्तर दिया ।

"परन्तु बड़े ही क्रोधी जीव मालूम पड़ते हैं ।" रमेश बोला ।

"स्वाभिमानी व्यक्ति में क्रोध होता ही है । इसीलिए मैंने कभी जीवन में इनके किसी भी कथन पर क्रोध नही किया ।" विनय भाई बोले ।

रमेश का चित्त आज बहुत ही प्रसन्न था । वह बोला, "आज भारत-सेवक का एक नया रूप सामने आया इसने पहले सब काल्पनिक चित्रों को मिटा दिया । आज सत्ता का रूप भी देखा, उसकी चलती-फिरती पुतलियाँ और मटकते अंगों की इठलाहट भी देखी, उसकी चाल-ढाल देखी, मुस्कराना देखा और भारतसेवक के पीछे-पीछे मखमली बटुवा लेकर

चलना भी देखा । काफी कुछ देखा ग्राज । जन-नेता के भी दर्शन हुए।"

"ग्रब तो तुम्हे चित्र वनाने का पर्याप्त मसाला मिल गया ।" प्रमिला मुस्कराकर बोली ।

"इसमे कोई सदेह नही भाभी ! ग्राज रात्रि को मै ग्रवश्य ही चित्र का खाका तैयार कर सकूँगा ।" रमेश ने विश्वास के साथ कहा ।

इसके पश्चात् रमेश ने भी विदा ली ।

विनय भाई संलग्नता के साथ भारतसेवक की परिचय-पत्रिका तैयार करने पर जुटे हुए थे। प्रातःकाल नियम से चार बजे उठकर वह अपने अध्ययन-कक्ष में चले गये।

विनय भाई के उठते ही प्रमिला भी आँखें मलती हुई खटिया से उठकर खड़ी हो जाती है। सुबह उठकर उसका पहला काम विनय भाई की चाय की तैयारी का होता है।

पड़ौसी दूधवाला भी विनय भाई की सवेरे की चाय से अपरिचित नहीं है। मस्ती में गाता हुआ अपनी गाय और उसके लवारे को लेकर वह भोर के सवेरे ही आ जाता है और घर के आँगन में ही गाय को दूहकर प्रमिला की पतीली दूध से भर देता है।

प्रमिला चाय बनाकर छोटी केतली, दो प्याले और चीनी, दूध एक छोटी ट्रे में रखकर विनय भाई के कमरे में मस्ती के साथ झूमती इठलाती और मुस्कराती हुई आकर कहती है, "लाजवाब चाय बनाई है आपके लिए। पानी में अदरक और दारचीनी को डालकर पहले खूब रझाया है। पीकर देखिए, आनन्द न आ जाय, तो तब कहिये।"

विनय भाई ने इस नित्य के वाक्य को सुनकर लिखना बन्द कर दिया और फिर प्रमिला की आँखों में आँखें डालकर मीठे स्वर में बोले, "प्रमिला, यह तुम्हारी भोर की चाय ही तो है जो मेरी लिखने की गति में एक उभार ला देती है। तुम्हारी चाय पीकर क़लम में वह गति आती है कि क्या कहूँ तुमसे ?"

चाय की ट्रे को मेज़ पर रखकर प्रमिला बोली, "कहिए कुछ नहीं आप, मौन ही रहिए बस। आपके हृदय की भाषा को पढ़ना मुझे खूब आ गया है।" और फिर चाय की प्याली बनाकर विनय भाई के हाथ में देते हुए कहा, "चीनी आप अपने मन की डालिए। चीनी के न्यूनाधिक होने

का उत्तरदायित्व मैं अपने ऊपर नहीं लूंगी।"

चीनी मिलाकर चाय की प्याली होठों से लगाते हुए विनय भाई बोले, "चाय वास्तव में लाजवाब बनी है प्रमिला ! तुम्हारी चाय में जो आनन्द आता है वह अन्य किसी वस्तु में नहीं आता।"

विनय भाई का यह वाक्य सुनकर प्रमिला के हृदय की कली खिल गई। उसके मुख-मण्डल पर प्रसन्नता की एक रंगीन रेखा खिच गई। मानो उसे अपने सम्पूर्ण श्रम का पुरस्कार मिल गया, उसके देवता ने उसकी पूजा स्वीकार कर ली।

प्रमिला चाय पी-पिलाकर कमरे से बाहर चली गई। विनय भाई फिर लिखने पर जुट गये।

नौ बजे ज्यों ही विनय भाई ने लिखना बन्द किया त्यों ही रमेश ने कमरे में प्रवेश किया। रमेश ने देखा कि आज विनय भाई के तख्त पर लिखे काग़ज़ों का ढेर लगा हुआ है। उन्हें देखकर वह बोला, "आज तो आपने मैं समझता हूँ, भारतसेवक की परिचय-पत्रिका को काफ़ी आगे बढ़ा दिया है।"

विनय भाई तख्त पर पड़े कागज़ों को समेटकर बोले, "इसमें कोई संदेह नहीं रमेश ! परन्तु आज एक और काम भी था सामने। कल तुमने 'भारत साहित्य सहयोग' की पट्टी इस घर के द्वार पर लटकाकर क्या समझते हो कि मेरे उत्तरदायित्व को और बढ़ा नहीं दिया ?"

प्रमिला कमरे में प्रवेश करती हुई मुस्कराकर बोली, "यानी प्रत्येक आगंतुक के पूछने के लिए एक नया प्रश्न पैदा कर दिया तुमने रमेश ! अपने भैया के मस्तिष्क की उधेड़-बुन का नामकरण कर दिया तुमने।"

"प्रमिला सही कह रही है रमेश ! कल यहाँ आनेवालों का पहला प्रश्न यही रहा,—'भारत साहित्य सहयोग' क्या है ? उन्हें उत्तर देना-देना थक गया मैं। आज प्रातःकाल लेखनी हाथ में सम्भालते ही जो पहला काम मैंने किया वह था कल के अपने उत्तर को लेखनीबद्ध करना।"

"अर्थात् 'भारत साहित्य सहयोग' का विधान तैयार कर दिया आपने।

संस्था का विधान बन जाने से संस्था का निर्माण हो गया।" और इतना कहकर रमेश ने दो गत्तों के बीच बँधा हुआ एक चित्र खोलकर प्रमिला और विनय भाई के सामने रख दिया।

विनय भाई देर तक चित्र को देखते रहे और मंत्र-मुग्ध होकर उनके मुख से निकला, "तुम्हारी कला अमर हो रमेश! सरस्वती का जो चित्र तुमने चित्रित किया है वह आज तक कोई चित्रकार नहीं कर सका। 'भारत साहित्य सहयोग' के कार्यालय में लगाने के लिए इससे सुन्दर कोई चित्र नहीं हो सकता। मेरी कल्पना और इस संस्था की प्रेरणा को साकार कर दिया तुमने।"

"सरस्वती को मूर्त रूप देने का प्रयास किया है मैंने विनय भाई! इतने दिन से आपके सम्पर्क में रहने और नित्य भारतसेवक की व्याख्या सुनने पर भी मैं अभी तक भारतसेवक को समझने में असमर्थ हूँ, परन्तु सरस्वती के दर्शन तो नित्य होते हैं मुझे।"

प्रमिला मौन थी। रमेश का बनाया हुआ चित्र उठाकर सामने मेज़ पर रखकर दूर से देखा और फिर सरल वाणी में बोली, "रमेश! तुमने तो सरस्वती का रूप ही बदल दिया। हंसवाहिनी सरस्वती, वीणा हाथ में लिए, मंत्रमुग्ध सौंदर्य की प्रतिमा चित्रित न करके सेवा माता का चित्र बना दिया तुमने।"

सेवा माता शब्द प्रमिला के होठों पर आते ही विनय भाई सक-पकाये से रह गये। उनका ध्यान ही नहीं गया था उधर। वह तो केवल कल्पना के वायुमण्डल में ही उड़ानें भर रहे थे। उन्हें ध्यान भी नहीं था कि रमेश ऐसा यथार्थवादी चित्र उपस्थित कर सकेगा।

उन्होंने एक बार फिर ध्यानपूर्वक चित्र की ओर देखा और देखते ही रह गये इस बार तो वह। कितना सुन्दर था वह चित्र। यौवन का अद्भुत विकास था उसमें, सरल सौंदर्य की छटा थी, जीवन का नवोदय प्रस्फुटित हो रहा था, आशा और उमंग नेत्रों से छलछला रही थी, होंठ ऐसे प्रतीत होते थे कि मानो अब फड़के, अब बोले, अब मुस्कराये।

"माता का यह रूप क्या आपने नहीं देखा ?" सरल भाव से प्रमिला विनय भाई के चेहरे पर दृष्टि डालती हुई बोली।

"देखा क्यों नहीं प्रमिला ! सेवा माता का यही तो वह रूप है जिसने मुझे साहित्य की प्रेरणा दी थी। जिसने मुझे सुन्दर, स्वस्थ और मानव-कल्याण की कल्पना, भावना और विचार की प्रेरणा दी। परन्तु सोच रहा हूँ कि रमेश ने यह चित्र कैसे चित्रित किया। सेवा माता के तो दर्शन भी रमेश ने कभी नहीं किये।"

रमेश की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि प्रमिला और विनय भाई क्या बातें कर रहे हैं। उसने तो सरस्वती को सेवा का स्वरूप दिया था।

प्रमिला, रमेश और विनय भाई ने चित्र को कमरे के बीचोंबीच सामनेवाली दीवार पर टाँग दिया और उसके नीचे की कानस पर धूपदान रखकर तीनों ने आदरपूर्वक नमस्कार किया।

विनय भाई प्रसन्नतापूर्वक बोले, "माँ ! 'भारत साहित्य सहयोग' का मार्ग-दर्शन करना। जो-जो साहित्य-सेवी आपकी शरण में आयें उन्हें आशीर्वाद देना; कल्पना, साधना और प्रेरणा से अनुप्राणित करना। आपकी दया से उनकी प्रतिभा मानव के नवांकुरित समाज में आनन्द और उत्साह की जीवनदायिनी बयार को धीरे-धीरे बहाकर उसकी मुँदी हुई कलिकाओं को पुष्पों में परिणित करेगी।"

इसी समय मकान के द्वार पर आकर एक ताँगा रुका।

विनय भाई ने कमरे के बाहर बरांडे में आकर देखा तो क्या देखते हैं कि ताँगे से सेवा माता उतर रही हैं।

विनय भाई नंगे ही पैर तीव्र गति से आगे बढ़कर ताँगे के पास पहुँच गये और नमस्कार करके सेवा माता का छोटा-सा खादी का थैला अपने हाथ में उठा लिया।

प्रमिला को भी यह सब देखने में समय न लगा और वह भी लपक कर उनके पास पहुँच गई।

सेवा माता ने दोनों को आशीर्वाद देकर पूछा, "पूर्ण स्वस्थ हो दोनों ?"

"माता की सब प्रकार की कृपा है।" विनय भाई ने कहा।

"बच्चे भी सब स्वस्थ हैं ? कहाँ है प्रमिला की फुलवारी ?" सेवा माता ने पूछा।

विनय भाई ने उत्तर दिया, "लड़के दोनों मेडिकल कालेज लखनऊ में हैं और लड़की महिला विद्यापीठ प्रयाग में। यहाँ तो मैं और प्रमिला ही रहते हैं माँ !"

"तभी सब सूना-सूना दिखाई दे रहा है। बच्चों की चहल-पहल के बिना मुझे कोई जगह अच्छी नहीं लगती। कोई काम ही नहीं रहता करने के लिए। और बिना काम के निकम्मी पड़े रहने की मेरी शुरू से आदत नहीं रही है।" सरलतापूर्वक सेवा माता बोलीं।

प्रमिला ने ताँगेवाले को दो रुपये देकर विदा किया और फिर तीनों घर में प्रवेश करने के लिए उसके द्वार की ओर बढ़े।

द्वार पर लटकी 'भारत साहित्य सहयोग' की पट्टी को सेवा माता ने बड़े ध्यान से पढ़ा परन्तु पढ़कर कोई प्रश्न नहीं किया।

तीनों ने कमरे में प्रवेश किया। रमेश उन्हें देखकर आदर-भाव से खड़ा हो गया।

रमेश को देखकर सेवा माता ने पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है बेटा ?"

"सुना है, मेरी मां रमेश कहकर पुकारती थीं मुझे। पास-पड़ौस वाले भी रमेश कहते थे मुझे और अब तो मैं भी अपने को रमेश ही कहता हूं।" रमेश ने सरलतापूर्वक कहा।

सेवा माता ने ध्यानपूर्वक रमेश के चेहरे पर देखा। कितना भोला और कितना सरल था वह। मानो जो कुछ वह अंदर था, वही बाहर था। अंदर और बाहर में कोई अंतर नहीं था।

विनय भाई ने इसी तरह सेवा माता का ध्यान रमेश के बनाये हुए चित्र की ओर आकर्षित करते हुए कहा, "देखो तो माँ ! सरस्वती का

कितना मौलिक चित्र चित्रित किया है रमेश ने।"

सेवा माता की दृष्टि सामने दीवार पर लगे चित्र पर गई तो वह उसे देखती ही रह गईं। उन्हें लगा कि उनके यौवन का विकास, उनके सौंदर्य की प्रतिमा, उनके कर्त्तव्य की साकार मूर्ति उनकी आँखों के सामने खड़ी थी।

काफ़ी समय तक चित्र को देखते रहने के पश्चात् उन्होंने बड़े ही स्नेह के साथ रमेश की ओर देखा और एक क़दम आगे रखकर रमेश के सिर पर हाथ रखती हुई बोलीं, "चित्र बहुत ही सुन्दर चित्रित हुआ है। मेरे विचार से आज के युग की सरस्वती का केवल वीणा से काम नहीं चल सकता। तुमने अपने चित्र में सरस्वती का जो स्वरूप चित्रित किया है साहित्य को वही स्वरूप देने के लिए मैंने विनय से आशा की थी।"

"आपकी आशा को निराशा में परिणित नहीं होने दिया माँ! मेरा साहित्य मानव की मानसिक तथा शारीरिक शृंगार की प्रवृत्तियों का पूरक मात्र नहीं है। उसमें मानव-जीवन की प्रगति का इतिहास है। जीवन के विकास की योजना है, शांति और सौंदर्य का संदेश है।" विनय भाई ने नम्रतापूर्वक कहा।

"मुझे पूर्ण विश्वास है विनय! कहकर सेवा माता प्रमिला की ओर देखती हुई मुस्कराकर बोलीं, "और जिस साहित्य-कुटीर में प्रमिला जैसी देवी निवास करती हो उसमें कैसे साहित्य का निर्माण होगा, यह अनुमान लगाना भी मेरे लिए कठिन नहीं है विनय!"

रमेश बड़े ध्यान से सेवा माता की तरफ़ देख रहा था। उनके चेहरे पर एक दृष्टि डालकर उसने अपने बनाये हुए चित्र की ओर देखा और पाया कि दोनों में कितना वास्तविक साम्य था। अन्तर केवल इतना ही था कि चित्र युवावस्था का था और इस समय उनके सब बाल पक चुके थे।

विनय भाई रमेश की ओर देखते हुए बोले, "सेवा माता के दर्शन करो रमेश! भारतसेवक श्रीलाल जी की माता ने आज विनय की

कुटिया को अपने चरणकमलों से पवित्र किया है।"

रमेश आदरपूर्वक नमस्कार करता हुआ बोला, "आपके दर्शन करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ माँ ! मै अपने को धन्य समझता हूँ।"

इसके पश्चात् विनय भाई ने सेवा माता को तख्त पर बिछे गद्दे पर आराम से बिठलाया और स्वयं भी उनके पास ही बैठ गया। रमेश और प्रमिला पास में पड़े मूढों को और पास खिसकाकर उन पर बैठ गये।

सबके बैठने पर विनय भाई ने पूछा, "आपका आश्रम कैसा चल रहा है माँ ! जनता बहन की तो पहले से कुछ दशा सुधरी ही होगी। कुछ-न-कुछ बाल-बच्चों की शिक्षा का भी प्रबन्ध हुआ ही है, खेती-बाड़ी मे भी सुधार हुआ है। बीज का अनाज सोसायटी से मिलने लगा है और खाद भी फ़सल के उधार पर मिल जाता है। खेनी की सिंचाई का प्रबन्ध भी पहले की अपेक्षा सुधर रहा है।"

सेवा माता बोली, "यह सब नो ठीक ही है विनय ! लेकिन जनता को अभी पेटभर भोजन नही मिलता। कपडा भी पूरा नही है उसके शरीर पर। उसके जीवन में असंतोष भी काफ़ी है, लेकिन यह सब होने पर भी वड़ी समझदार है जनता। अपने भाई की परेशानियों, कठिनाइयो और सीमाओ को खूब पहचानती है। कोई धोखा नहीं दे सकता उसे।" विश्वास के साथ सेवा माता ने कहा।

"यही तो सतोष की बात है माँ ! जनता जीजी बहुत ही साधारण शिक्षित होने पर भी बड़ी समझदार हैं। उन्हें आसानी से धोखा देखकर फुसलाया नही जा सकता, गलत मार्ग पर लगाया नहीं जा सकता। अपने भैया की तपस्या और साधना उन्होने देखी है। अपने भाई का त्याग और निस्वार्थ परिश्रम भी उनसे छिपा नही है।" विनय भाई बोले।

विनय भाई के मुख से बेटे श्रीलाल और बेटी जनता के विषय में यह प्रशंसात्मक वाक्य सुनकर सेवा माता ने संतोष की साँस ली और फिर विनय भाई पर पुत्रवत् स्नेह उड़ेलकर बोलीः—

"आश्रम मेरा क्या है विनय ! बेटे सुनील के प्रयास का फल है । तपस्वी सुनील ने ग्राम-सेवा का व्रत लेकर देश के कोने-कोने में ग्रामोद्योग आश्रम खोलने की योजना बनाई है और बड़ी सफलता मिल रही है उसे विनय ! गत दो वर्ष में दस आश्रम खोल चुका है वह ।" सेवा माता ने कहा ।

"समाचार-पत्रों में पढ़ता रहता हूँ माँ ! और अब तो आकाशवाणी-केन्द्र से भी उसकी सूचनाएँ प्रसारित होती रहती हैं । जनता के कल्याण की बहुत ही सही दिशा को अपनाया है तपस्वी सुनील ने । मैं हृदय से उनके कार्य की सराहना करता हूँ । विनय भाई बोले । "और प्रमिला तो जब भी रेडियो पर या किसी पत्र में तपस्वी सुनील के किसी कार्य-क्रम को सुनती या पढ़ती है तो गद्‌गद् हो जाती है ।"

सेवा माता ने स्नेह भरी दृष्टि से प्रमिला के मुख पर देखा, उसके नेत्रों में झाँका । और प्रमिला के नेत्रों ने भी मौन भाषा में कहा, "बिलकुल सच है माँ ! जो कुछ यह कह रहे हैं ।"

प्रमिला बोली, "तपस्वी सुनील का यह कथन सत्य ही है माँ ! कि आज के ग्रामों और उनके रहने वालों की उन्नति बिना ग्रामोद्योगों के विकास के सम्भव नहीं । ग्राम जब तक केवल मात्र खेती के अंग हैं तब तक उनका आधुनिक विकास असम्भव है ।"

प्रमिला की बात सुनकर सेवा माता को हार्दिक संतोष हुआ । तपस्वी सुनील के महत्वपूर्ण कार्य की विनय भाई और प्रमिला के मुख से प्रशंसा सुनकर सेवा माता आनन्द-विभोर हो उठीं ।

विनय भाई बात की दिशा बदलते हुए बोले, "बहुत दिन में दिल्ली आना हुआ माँ ! श्रीलाल जी और सत्ता के गठबंधन के अवसर पर आपसे भेंट हुई थी । उसके पश्चात् क्या देहली आना ही नहीं हुआ ?"

"सचमुच ही नहीं हुआ विनय ! मैं जनता बेटी की ही उलझनों में उलझी रही ।" सेवा माता ने कहा ।

विनय भाई बोले, "जनता बहन की दशा वास्तव में अभी तक ठीक नहीं

हो पाई है माँ ! परन्तु फिर भी पहली और अब की दशा में आकाश-पाताल का अन्तर है। सूदखोर साहुकारी और अय्याश ज़मीदारी की बीमारियों से जनता बहन को श्रीलाल जी और सत्ता रानी ने मुक्त कर दिया है। छूआछूत के रोग की भी दवादारू चल रही है और ज्यों-ज्यों शिक्षा के इन्जेक्शन जनता के शरीर में लग रहे हैं त्यों-त्यों यह रोग और इसके द्वारा जनता बहन के शरीर में आई शिथिलता का भी लोप होता जा रहा है।"

विनय भाई की बात सुनकर भावुकतापूर्ण शब्दों में सेवा माता बोली, "'जनता' बेटी का भविष्य अब मुझे कुछ-कुछ प्रकाशपूर्ण दिखाई देता है विनय ! मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि भारतसेवक श्रीलाल सत्ता को सेवा के पथ पर लाता जा रहा है और जनता के प्रति उसके उत्तर-दायित्व की ओर उसे जागरूक कर रहा है।"

"इसमें कोई संदेह नही माँ ! श्रीलाल जी के अनथक परिश्रम की मैं हृदय से सराहना करता हूँ। उनकी विचारशीलता, दूरदर्शिता, निर्भीकता और कर्मठ कार्य-प्रणाली जनता बहन के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाती जा रही है। श्रीलाल जी की पंचवर्षीय विकास-योजना जनता बहन के स्वास्थ्य, शिक्षा और सुख-सम्पन्नता में एक महत्वपूर्ण योगदान देगी। जनता बहन के बाल-बच्चों के लिए नये-नये कामों की दिशाएँ उन्मुक्त होंगी।" विनय भाई ने कहा।

'तुम्हारी वाणी सफल हो विनय ! तुम्हारी आशाएँ फलें फूले। श्रीलाल को उसके, जनता की उन्नति की दिशा में किये गये प्रयत्नों में सफलता मिले। तुम सभी लोग फलो-फूलो और जनता बेटी अपनी आँखों के सामने अपनी सन्तान को शिक्षित, स्वस्थ और सुनिश्चित प्रगति के पथ पर, स्वर्णिम भविष्य की कल्पनाओं के साथ, पग बढ़ाते देखे। मेरे जीवन का सार यही है बेटा !" सेवा माता के भावनापूर्ण हृदय से ये शब्द निकले।

विनय भाई ने गम्भीर वाणी में कहा, "आपकी साध पूरी होगी

माँ ! आपके सेवा-पथ पर चलकर भारतसेवक श्रीलाल जनता वहन और हम सबके सुन्दर भविष्य का निर्माण करने में सफल होंगे । हमारी हार्दिक शुभ कामनाएँ और सेवाएँ उनके मार्ग में पुष्प बनकर बिछती रहेंगी ।"

प्रमिला और रमेश मंत्रमुग्ध होकर विनय भाई और सेवा माता की वातें सुन रहे थे ।

सेवा माता का सरस्वती के रूप में जो काल्पनिक चित्र रमेश ने चित्रित किया था उसकी सफलता पर रमेश का हृदय उत्साह से भर उठा। उसने बार-बार अपने वनाये हुए चित्र की ओर देखा और फिर सेवा माता के मुख की ओर ।

विनय भाई रमेश के उत्साह और सफलता के उल्लास को देखकर सेवा माता से बोले, "कला की सफलता या हृदय की कलिका कैसे विकसित होकर मँहकने वाला पुष्प बन जाती पर, इसका स्पष्ट रूप रमेश के चेहरे पर देखिए माँ !"

सेवा माता की दृष्टि रमेश की ओर गई और उन्होंने रमेश के आभायुक्त दमदमाते हुए चेहरे पर देखा । रमेश का चेहरा कला की सफलता का साकार स्वरूप था ।

सेवा माता मधुर स्वर में बोलीं, "बेटा रमेश ! तुमने जो सरस्वती का चित्र बनाया है उसमें साहित्य की सेवा का सुन्दर स्वरूप प्रस्तुत किया है । साहित्य ज्ञान, भावना और कला का समन्वय है परन्तु इन तीनों की सफलता मानव-सेवा के महान् उद्देश्य की पूर्ति में निहित है । मानव-कल्याण के उद्देश्य की पूर्ति से पृथक् चलने वाला साहित्य निरर्थक है, चाहे उसमें कितनी ही कला की कलाबाज़ियाँ क्यों न हों, कितनी ही दिमाग़ी उछलकूद क्यों न हो और कितनी ही दिल के फफोले फोड़ने वाली भावनापूर्ण नाज़ुक ख़यालियाँ क्यों न हों ।"

सेवा माता की वात सुनकर रमेश बोला, "आपके विचारों को साकार स्वरूप देने के लिए ही सम्भवतः विनय भाई ने 'भारत साहित्य

सहयोग' की स्थापना की है।"

सेवा माता बोलीं, "परन्तु तुमने यह चित्र वास्तव में बहुत सुन्दर वनाया है। सेवा का बहुत ही सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया है। सेवा और सरस्वती का सुन्दर समन्वय हो गया है। इतना सुन्दर चित्र प्रस्तुत करने की प्रेरणा देने वाले के मस्तिष्क में इसका कितना सही चित्र होगा, यह अनुभव करना कठिन है।"

"वास्तव में कठिन है माँ! और किसी वस्तु को बिला देखे उसका इतना सही चित्र बना देना भी एक समस्या है। परन्तु प्रमिला भाभी ने मेरी इस समस्या को मुस्कराते-मुस्कराते हल कर दिया। आपके शरीर के एक-एक अंग का वर्णन भाभी ने इतना सजीव किया कि मेरी आँखों के सामने आपको बिला देखे ही आपका वही रूप आ गया जिसे देखने का मुझे आज सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।" रमेश ने सरलतापूर्वक कहा।

सेवा माता प्रमिला की ओर देखकर बोलीं, "तो तुम ही हो इस सरस्वती के चित्र की प्रेरणा प्रमिला!"

"मै तो तुम्हारे मन्दिर की पुजारिन हूँ माँ!" मधुर शब्दों में प्रमिला ने उत्तर दिया।

रमेश बोला, "विनय भाई के सम्पर्क में आने पर भारत साहित्य की योजना सामने आई। योजना को कार्य रूप देने के लिए उसका प्रतीक प्रस्तुत करने का निश्चय हुआ और वह प्रतीक विनय भाई की दृष्टि में सरस्वती के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं था।

"सरस्वती के मैने अनेकों चित्र देखे माँ! हंसवाहिनी है वह और वीणा की गायिका भी है। विचार और संगीत की सुन्दर सन्धि है उनमें।"

"चित्रकार की सुन्दर कल्पना है।" सेवा माता बोलीं।

विनय भाई सेवा माता की बात सुनकर बोले, "परन्तु कल्पनायुग समाप्त हो चुका माँ! सेवा माता कल्पना की कल्पना पर मुग्ध हो उठीं, यह भी विचित्र ही वात है।

आज के युग में साहित्य का उत्तरदायित्व बहुत बढ़ गया है। सर-

स्वती का जो चित्र आज हमें मिलता है वह दार्शनिक कविता के युग का चित्र है। आज उपन्यास और कहानी का युग है। आज का साहित्य दार्शनिक चिन्तन और धार्मिक भावना से आगे बढ़कर मानव-जीवन के विचार और भावनापूर्ण चिन्तन पर आ टिका है।

ऐसी दशा में सरस्वती का वह पुराना चित्र, जिसमें केवल विचार और संगीत का ही संगम है, कैसे साहित्य का प्रतीक-चित्र बना रह सकता है।"

सेवा माता विनय भाई की बात सुनकर मुग्ध हो गईं। उन्होंने मातृ-वत् स्नेह से विनय भाई को सीने से लगाकर सिर पर हाथ रखते हुए कहा, "तुम्हारा विचार सत्य हो विनय !"

"विनय भाई के इसी विचार को सत्य करने की प्रेरणा मुझे प्रमिला भाभी से मिली।"

सेवा माता रमेश की बात सुनकर, उसकी कल्पना के चित्रण की सफलता देखकर, मन्त्र-मुग्ध हो गईं और उनकी स्नेहपूर्ण वाणी ने कहा, "साहित्य को मानव-चिन्तन और मानव-सेवा के पथ पर लाने वाली सर-स्वती का जो प्रतीक-चित्र तुमने बनाया है वह अमर हो, उसकी सेवा-भावना अमर हो, उसकी मानव-शक्ति में आस्था अमर हो।"

सेवा माता के इन शब्दों को सुनकर विनय भाई, प्रमिला और रमेश ने मस्तक झुका लिया और श्रद्धा-भावना से हाथ जोड़कर कहा, "आपकी वाणी अमर हो माँ ! हमारी सेवा और हमारा परिश्रम सफल हो माँ ! यही कामना है, यही भावना है।"

आज रात्रि को सेवा माता ने विनय भाई का आतिथ्य ग्रहण किया। प्रमिला और विनय के जीवन में यह पहला अवसर था, जब सेवा माता उनके घर आई और ठहरीं भी।

रमेश को भी हार्दिक प्रसन्नता हुई कि वह एक दिन के लिए सेवा माता के निकटतम सम्पर्क में रह सकेगा।

सेवा माता ने 'भारत साहित्य सहयोग' की पूरी योजना पढ़ी और उसे पढ़ते-पढ़ते वह आनन्दविभोर हो उठीं।

रात्रि को भोजन के पश्चात् सेवा माता, प्रमिला, विनय भाई और रमेश जब बैठक में बैठे तो 'भारत साहित्य सहयोग' के विषय में ही प्रधान रूप से चर्चा चली।

मेवा माता ने कहा, "योजना तुम्हारी बहुत सुन्दर है विनय! परन्तु धन के अभाव में इतनी बड़ी योजना कैसे पूरी कर सकोगे?"

"जैसे आज तक अपने जीवन और जीवन से सम्बद्ध परिवार को चलाता आया हूँ माँ! उसी तरह इस योजना को भी चलाने का विचार है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह योजना बहुत शीघ्र अपने कार्य में आगे बढ़ेगी।" विनय भाई ने दृढ़तापूर्वक कहा।

सेवा माता ने विनय भाई की नौ वर्ष की लिखी रचनाओं पर दृष्टि डाली तो उनका हृदय गद्‌गद् हो उठा और वह उन्हें उलट-पलट कर देखती हुई बोलीं, "तुम्हारी साहित्य-साधना को देखकर मेरे मन की शंका दूर हो गई विनय! सुनती तो थी कि मेरा विनय साहित्य-रचना पर जुटा है, परन्तु आज उसका साक्षात् रूप देखकर मुझे जीवन का वास्तविक सुख प्राप्त हुआ।

तुम्हारी यह योजना भारतसेवक श्रीलाल, तपस्वी सुनील और आचार्य प्रकाश को बहुत पसंद आयगी। घोष भी इसकी प्रशंसा करेगा।"

"सेवा माता के मन की शंका दूर हो गई, इससे अधिक प्रसन्नता की अन्य कोई बात मेरे लिए नहीं हो सकती ।

रही योजना के पसन्द आने की बात, सो पसंद तो वह सभी को आनी चाहिए। 'भारत साहित्य सहयोग' का साहित्य आज के मानव की कलात्मक कहानी कहता हुआ सामने आयगा। मानव के जीवन की उदासीनता को प्रसन्नता में परिणत करेगा।" विनय भाई ने कहा ।

"बहुत बड़ा कार्य-भार सिर पर उठा लिया विनय !" सेवा माता ने कहा।

"सचमुच बहुत बड़ा भार अपने सिर पर उठा रहा हूँ माँ ! कोई उत्तरदायित्व न होने पर भी उत्तरदायित्व के बोझ से दबा जा रहा हूँ।

परन्तु मुझे विश्वास है माँ ! कि 'भारत साहित्य सहयोग' के संरक्षण में जिस साहित्य का निर्माण होगा वह देश की भावी संतान का मार्ग-प्रदर्शन करेगा, देश में फैली गलत रूढ़ियों के जंजाल से जनता जीजी की सन्तान को मुक्त करायेगा। जनता में जन-जागरण का संदेश फूँक कर शताब्दियों की प्रगाढ़ निद्रा को समाप्त करेगा।

जनता, सत्ता और प्रमिला के बाल-बच्चों के मनोरंजन और शिक्षण की सामग्री होगी उसमें।" विनय भाई ने कहा।

"और सबसे बड़ी बात यह होगी माँ ! कि प्रतिभासम्पन्न नवोदित कलाकारों को आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा। उनकी रचनाओं को देख-कर उनकी प्रतिभा के विकास की दिशा सुझाई जायगी उन्हें। जंगल की झाड़ियों और वृक्षों की तरह शीत और ताप के आघात सहने के लिए उन्हें रामासरे नहीं छोड़ दिया जायगा। 'भारत साहित्य सहयोग' की वाटिका के योग्य माली के संरक्षण में, ऐसे माली के संरक्षण में जो साहित्य को मानव-जीवन की सच्ची झांकी दे सके, मानव के सच्चे भविष्य की कल्पना कर सके और आनंद, सुख तथा शांति का संदेश दे सके, उन्हें छोड़ा जायगा।"

प्रमिला का यह वाक्य सुनकर सेवा माता को सन् १९३० के सत्या-

ग्रह आंदोलन की बात याद आ गई, जब उन्होंने जेल जाते समय सत्याग्रह आश्रम को प्रमिला के सुपुर्द करते हुए कहा था, "आश्रम की व्यवस्था ख़राब न होने पाये प्रमिला !"

और प्रमिला ने करबद्ध सेवा माता को प्रणाम करते हुए कहा था, "आश्रम की चिंता मुझ पर छोड़ दें माँ ! जेल से लौटने पर आश्रम की किसी भी व्यवस्था में कोई त्रुटि नहीं मिलेगी आपको।"

और वास्तव में जब सेवा माता जेल से लौटीं तो आश्रम ज्यों-का-त्यों ही नहीं था, उसमें अनेकों सुधार हो गये थे।

सेवा माता बोलीं, "प्रमिला ! तुम विनय बेटे की सच्ची साधना हो। विनय के मस्तिष्क और हृदय को तुमसे सही और कोई नहीं समझता। जिस 'भारत साहित्य सहयोग' की व्यवस्था का भार तुम जैसी व्यवस्थापिका के हाथों में रहेगा वह संस्था कभी मर नहीं सकती।"

"यह आपका आशीर्वाद है माँ और आपका ही दिखाया हुआ सेवा का मार्ग है। एक मार्ग जो आपने सुझा दिया उसी पर जीवन भर चलने का व्रत लिया है मैंने ! और उसी पर चलते-चलते एक दिन मार्ग की धूलि में अपने शरीर की मिट्टी को मिला दूँ, यही मेरी मनोकामना है।" सरलतापूर्वक प्रमिला ने कहा।

रमेश ने प्रमिला के इस स्वरूप को आज प्रथम बार देखा। सेवा माता के चेहरे पर दृष्टि डाली और फिर प्रमिला की सौम्य मूर्ति को निहारा तो उसे लगा कि मानो उसकी आँखें उसे धोखा दे रही हैं। वह ग़लत ही सेवा माता और प्रमिला को दो देह में देख रहा है।

दोनों की दृष्टि एक है, दोनों के अधरों की मुस्कान एक है, दोनों के नेत्रों की भाव-भंगिमा एक है, दोनों के शब्दों की गम्भीरता और सरलता एक है, दोनों की भावना एक है, दोनों की समझदारी एक है, केवल अंतर है तो यह है, कि सेवा माता के बाल सफ़ेद और प्रमिला के काले हैं, सेवा माता की माँग में सिंदूर नहीं है और प्रमिला की माँग सिंदूर से भरी है, सेवा माता के मस्तक पर सुहागबिन्दी नहीं है और प्रमिला के

मस्तक पर सुहागबिन्दी दमदमा रही है।

विनय भाई रमेश की दृष्टि को पहचानते हुए मुस्कराकर सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करके बोले, "देखो माँ 'भारत साहित्य सहयोग' का सेवक आप दोनों को पढ़ने का प्रयत्न कर रहा है।" और फिर रमेश की ओर देखकर बोले, "दोनों में कोई अन्तर नहीं है रमेश ! जो कुछ अन्तर तुम्हें दिखाई देता है वह सब बाहरी आवरण मात्र है। आत्मा में कोई अन्तर नहीं है। भावना दोनों की एक है। मार्ग भी दोनों के दो नहीं। कार्य-क्षेत्र भी दोनों का मानव-समाज है।"

रमेश को उसके दिल में उठने वाली शंका का उत्तर मिल गया।

प्रमिला मुस्कराकर बोली, "रमेश भैया ! जनता मेरी सगी बड़ी बहन हैं। यह रहस्य तुम्हें अब तक ज्ञात नहीं था। परन्तु अब जब तुम इसी परिवार के एक अंग बन गये हो तो तुमसे छिपाना ही क्या ?"

रमेश विनय भाई की बात सुनकर आत्मा और परमात्मा के आध्यात्मिक क्षेत्र में उतर गया था। वह सेवा माता और प्रमिला की आत्माओं की सेवा-भावना में उलझा हुआ था।

और जाने कब तक उलझा रहता यदि प्रमिला के मुस्कान भरे चार शब्दों ने उसे फिर इसी मनुष्यों की चलती-फिरती दुनियाँ में न घसीट लिया होता।

"प्रमिला जनता की छोटी बहन है" ये शब्द रमेश के कानों में ज़ोर-ज़ोर से बज उठे। और उसे लगा कि वह सरस्वती देवी के मंदिर में है और उसके कानों में घंटे घड़ियालों की मधुर ध्वनि आ रही है।

रमेश 'भारत साहित्य सहयोग' की बैठक में सरस्वती की तस्वीर के सामने बैठा था और सेवा माता ठीक तस्वीर के नीचे थीं।

थोड़ी देर के लिए रमेश के नेत्र मुँद गये।

आँखें खोलकर जब रमेश ने देखा तो सेवा माता ने उसके सिर पर अपने आशीर्वाद का हाथ रखते हुए कहा, "एक दिन तुम सफलता की सबसे ऊँची सीढ़ी के सबसे ऊँचे डंडे पर खड़े होकर अपनी कला की

पताका फहरा सकोगे रमेश ! तुम्हारे अन्दर मैंने मानव के जीवन और उसकी भावना के अन्दर घुसने की प्रवृत्ति के दर्शन किये।

एक दिन तुम विश्व-विख्यात कलाकार होगे।"

रमेश ने सेवा माता के चरणों पर मस्तक टिका दिया।

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "रमेश 'भारत साहित्य सहयोग' का सहयोगी है माँ। संस्था का पहला सेवक आपकी वगल में बैठा है।

क्या मेरी कला आपके आर्शीवाद से वञ्चित ही रह जायगी ?"

रमेश ने अर्धनिमीलित नेत्रों से त्रिमूर्ति के दर्शन किये। अपनी चित्र-कला को धन्य समझा जो साहित्य की सेवा करने का उसे अवसर मिला।

रमेश सरल वाणी में बोला, "विनय भाई, प्रमिला भाभी और सेवा माता के सम्पर्क ने मेरी चित्र-कला में मानव-सेवा की भावना को प्रस्फुटित किया है।"

और फिर इसके पश्चात् विनय भाई की ओर देखता हुआ रमेश बोला, अब भारतसेवक के चित्र की भावना के बहुत निकट लाकर खड़ा कर दिया मुझे आपने विनय भाई !"

भारतसेवक शब्द सेवा माता के कानों में पड़ा तो उन्होंने गम्भीरता-पूर्वक उसे सुना और सव ओर से ध्यान हटाकर पूछा, "भारतसेवक क्या चीज़ है विनय !"

विनय भाई अभी उत्तर देने को तैयार ही हो रहे थे कि प्रमिला बीच में ही बोल उठी, "इन्हें तो आजकल दिन के चौबीसों घंटे पुस्तकें लिखने की ही धुन है माँ ! भैया श्रीलाल का जीवन-चरित्र लिख रहे हैं और कहते हैं कि भारतसेवक की परिचय-पत्रिका तैयार कर रहा हूँ।"

प्रमिला के बाद रमेश बोला, "इसी परिचय-पत्रिका के मुखपृष्ठ का आवरण-चित्र बनाने का कार्य विनय भाई ने मेरे सुपुर्द किया है माँ ! आजकल इसी कार्य में संलग्न हूँ। आपके आर्शीवाद से में इस चित्र को पूरी सफलता के साथ पूर्ण कर सकूँगा, ऐसा मुझे विश्वास है।"

"अवश्य कर सकोगे बेटा !" सेवा माता ने कहा और फिर विनय

भाई से पूछा, "भारतसेवक की परिचय-पत्रिका कहाँ तक लिख चुके हो विनय ?"

"भूमिका पूरी करके थोड़ा ही आगे बढ़ा हूँ माँ, अभी तो।" मुस्करा-कर विनय भाई ने कहा, और फिर तनिक सुधरकर बैठते हुए बोले, "तपस्वी सुनील पुराने तपस्वी हैं। सत्ता के प्रति उनका कभी आकर्षण नहीं रहा। आपके समझाते ही वह जनता बहन की सेवा में जुट गये। ग्रामोद्योगाश्रमों की सुन्दर योजना द्वारा उन्होंने ग्रामोद्धार का महत्वपूर्ण कार्य हाथ में ले लिया।"

सेवा माता विनय भाई के मुख से तपस्वी सुनील के कार्य की प्रशंसा सुनकर बहुत प्रसन्न हुईं और बोलीं, "सुनील ने वास्तव में बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया है। गाँव के रहनेवालों को अपने पैरों पर खड़े होने का सन्देश ही नहीं विनय ! कार्य-क्रम भी दिया है। रोटी और कपड़े की व्यवस्था का मार्ग सुझाया है।"

"इसमें कोई सन्देह नहीं माँ ! तपस्वी सुनील के कार्यक्रम की मैं जानकारी रखती हूँ।"

उन्होंने ग्रामीण जीवन को एक नई दिशा दी है। केवल खेती पर आश्रित न रहकर ग्रामोद्योगों के विकास का मार्ग दिखाया है।" प्रमिला बोली।

विनय भाई भारतसेवक की परिचय-पत्रिका का क्रम आगे बढ़ाते हुए एक लहजे के साथ बोले, "तपस्वी सुनील ने राजनीति को छोड़ दिया परन्तु आचार्य प्रकाश उसी क्षेत्र में डटे है।

आचार्य प्रकाश ने समाजवाद का नारा लगाया और विधान-सभा में विरोधी दल की स्थापना की।"

सेवा माता मुस्कराकर बोलीं, "आचार्य प्रकाश ने भी ठीक ही किया विनय ! यदि विरोधी दल विधान-सभा में न रहे तो सत्ता जो चाहे सो करा ले श्रीलाल से।"

सेवा माता की बात सुनकर विनय भाई ने मन-ही-मन कहा सेवा

माता के मन में सत्ता के प्रति अभी भी विश्वास की भावना दृढ़ नहीं हो सकी। और फिर सरल भाव से बोले, "आप अपने बेटे को सही समझकर देखिये माँ! श्रीलाल जी सच्चे भारतसेवक हैं; उन पर सत्ता का जाल नही चल सकता। सत्ता को सेवा के रंग में रँगने की शक्ति है उनमें।"

सेवा माता मौन हो गईं विनय भाई की बात सुनकर। उनके मन का रहा-सहा संशय भी विनय भाई के इस वाक्य को सुनकर दूर हो गया।

विनय भाई पत्रिका को आगे बढाते हुए बोले, "जब तपस्वी सुनील और आचार्य प्रकाश आपसे मिले, ठीक तभी घोष बाबू और वेदान्ताचार्य रमरण जी तथा उनके अन्य साथी जनता जीजी से मिले। इन लोगो ने भी मिलकर जनता से श्रीलाल जी की वही शिकायत की जो तपस्वी सुनील और आचार्य प्रकाश ने आपसे की थी।"

"जनता ने क्या उत्तर दिया उन्हे?" उत्सुकता के साथ सेवा माता ने पूछा।

विनय भाई बोले, "जनता जीजी ने घोष बाबू और श्री रमरण जी से स्पष्ट कह दिया कि वे लोग सत्ता की हर कार्यवाही को कडी दृष्टि से देखें और साथ ही यह भी कह दिया कि सत्ता श्रीलाल जी की विवाहिता पत्नी नही है।"

यह सुनकर सेवा माता बहुत प्रसन्न हुईं और बोली, "अब मेरी जनता बिटिया भी कुछ-कुछ समझदार होती जा रही है विनय!"

"इसमें कोई सन्देह नहीं माँ!" विनय भाई बोले। "जनता जीजी ने इस उम्र में भी जितनी शीघ्रता और समझदारी के साथ अपने को सुशिक्षित किया है, यह विश्व के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है।"

बात की दिशा बदलती हुई सेवा माता बोलीं, "परन्तु चुप बैठनेवाला घोष भी नहीं है विनय! कुछ-न-कुछ उखाड़-पछाड़ मचा ही रखी होगी उसने भी।"

"उखाड़-पछाड़ तो चलती ही रहती है माँ! इनकी चिन्ता करने-

वाला भारतसेवक श्रीलाल नहीं है। उसपर वेदान्ताचार्य रमण जी का भी प्रभाव नहीं पड़ता। इन लोगों की राजनीतिक चालों को श्रीलाल जी अपनी मुट्ठी में दबाकर चलते हैं।" विनय भाई बोले।

इतना कहकर विनय भाई ने अपना फ़ाइल सम्भाला और उसके अन्दर से आज के लिखे पन्ने निकालकर पढ़ते हुए बोले, "तो लो सुनो माँ ! सेवक की परिचय-पत्रिका।

सत्ता से सम्बन्ध जोड़ते ही श्रीलाल जी के सामने कई महत्वपूर्ण समस्याएँ आईं। रियासत और ज़मींदारियाँ समाप्त कर दीं। उनकी भूमि और सम्पत्ति जनता के बाल-बच्चों में बँट गई। जनता के ग़रीब बच्चों के बदन में थोड़ी शक्ति का संचार हुआ।"

"थोड़ी नहीं विनय ! ज़मींदारी समाप्त होने से जनता बेटी के बाल-बच्चों को काफ़ी राहत मिली।" सेवा माता बोलीं।

"परन्तु जिन-जिन पर सत्ता के नातेदार, पटवारी, लेखपाल, अमीन, तहसीलदार और हल्के के थानेदार की कृपा-दृष्टि हो गई, उनके भाग्य की रेखाएँ कई-कई पीढ़ियों से ख़सरे और खतौनी में चली आती हुई भी ज़मींदारी समाप्त होने के साथ-साथ मिट गईं।" विनय भाई बोले।

विनय भाई की यह गम्भीर बात सुनकर सेवा माता ने लम्बी साँस ली और गर्दन नीची करके कहा, "बात तो तुम्हारी यह भी सच है विनय परन्तु......"

"परन्तु की बात जाने दो माँ ! मुझे भारतसेवक की परिचय-पत्रिका बहुत शीघ्र समाप्त करनी है।

'भारत साहित्य सहयोग' के उद्घाटन समारोह पर अतिथियों को भेंट देने के लिए मेरे विचार से यह बहुत ही उत्तम वस्तु रहेगी।"

रमेश का चित्त आज बहुत ही प्रसन्न था। वह मुग्ध मन से कभी सेवा माता और कभी प्रमिला के चेहरों की ओर देखता था।

विनय भाई के चेहरे पर भी उसे आज एक विचित्र आभा की दमक

दिखाई देती थी। उसके मस्तिष्क में अपने चित्र की रूपरेखा बनती जा रही थी।

बातों-ही-बातों में रात्रि के ग्यारह बज गये। घंटे ने टन-टन-टन ग्यारह ध्वनियाँ कीं।

सेवा माता बोलीं, "आज बहुत देर तक जगा दिया मैंने अपने विनय बेटे को ! तुम्हारी पुरानी आदत तो आठ बजे सो जाने की थी।"

"वही आज भी बनी हुई है माँ ! आज तो भगवान् की न जाने कौन-सी कृपा है, या आपके चरणों का प्रताप है, कि यह ग्यारह बजे तक जाग रहे हैं।" प्रमिला ने कहा।

"मैं क्या जानती नहीं हूँ ? विनय की पुरानी आदतें मुझे रत्ती-रत्ती याद हैं।" सेवा माता ने कहा।

इसके पश्चात् सब लोग अपने-अपने शयन-कक्ष में चले गये।

रमेश को विनय भाई ने इसी मकान का एक कमरा पृथक् से रहने के लिए दे-दिया था और रमेश ने उसे अपनी चित्र-कला के साजो-सामान से सजा लिया था।

आज बिस्तर पर लेटकर रमेश बहुत देर तक सेवा माता, प्रमिला भाभी और विनय भाई के विषय में सोचता रहा।

रमेश की माता का स्वर्गवास उसे याद नहीं कब हो गया था। उसकी बड़ी बहन ने उसे पाला, परन्तु वह भी रमेश को छः वर्ष से अधिक संरक्षण न दे सकी।

पिता का स्वर्गवास तो माता से भी पहले हो चुका था।

रमेश ने प्रमिला में अपनी माता और विनय भाई में अपने पिता की अन्तरात्मा के दर्शन किये।

इसके पश्चात् रमेश का ध्यान भारतसेवक का चित्र बनाने की दिशा में चला गया और न जाने कितनी रात तक वह कमरे की खिड़की से अपने पलंग पर पड़ा-पड़ा तारे गिनता रहा।

निशा की काली चादर पर चमकने वाले चाँदी के जितने भी टुकड़े

उसकी दृष्टि में आये उन सबमें उसने विनय भाई का मुस्कराता हुआ चेहरा देखा और उनके पास ही प्रमिला की सौम्य मूर्ति के दर्शन किए।

दोनों को अपने नेत्रों की पुतलियों में समेटकर रमेश आनन्द की निद्रा में निमग्न हो गया।

: ६ :

सेवा माता आज बहुत प्रसन्न थी। उनकी दशा ऐसे व्यक्ति की थी जो मन की इच्छित वस्तु पा गया हो।

जिस समय सेवा माता विनय भाई से मिलने को चली थी तो उनके मन मे कई प्रकार की शंकाएं थी, तर्क और वितर्क थे।

उनको संदेह था कि कहीं विनय भाई ने श्रीलाल की बढ़ती हुई ख्याति और पद-सम्पन्नता से खीजकर साहित्य की शरण न ले-ली हो।

लेकिन विनय भाई से मिलने पर उन्हें विश्वास हुआ कि उनके मन का भ्रम भ्रम ही था और जो लोग विनय भाई के विषय में उनसे आकर अनर्गल बातें करते थे उनकी भी पोल-पट्टी खुल गई।

विनय भाई से मिलकर सेवा माता को पता चला कि वह श्रीलाल का कितना सम्मान करते हैं और उनकी कार्य-प्रणाली के अन्दर भी उन्हें कोई भ्रम नही है।

भ्रम तपस्वी सुनील को हुआ और उन्हें समझाने की सेवा माता को आवश्यकता हुई।

भ्रम आचार्य प्रकाश को हुआ और वह आज भी विपक्षी दल के नेता हैं।

लेकिन विनय भाई को इसकी आवश्यकता नही थी। वह पूरी तरह समझते थे देश की उस दशा को जिसके अन्दर श्रीलाल जी ने सत्ता का भार अपने ऊपर वहन किया था।

इसी समय सेवा माता को घोष बाबू के वे शब्द भी याद आये जो जनता ने उनसे कहकर दोहराये थे। श्रीलाल की कार्य-प्रणाली के विषय में उन्होंने कहा था, "यह छलनी के समान है जनता! इसमें ठहरने वाला कुछ नहीं है। श्रीलाल की सरकार पूँजीपतियों के हाथों में खेलने वाली गुड़िया है। श्रीलाल सरकारी ठेले को आँखें बन्द करके सरकारी

सड़क पर दो बैलों से ठेलता चला जा रहा है। यह सब प्रजातन्त्र की आड़ में एकतंत्रीय शासन चल रहा है।"

तभी सेवा माता को वेदांताचार्य रमण की भी बात याद आ गई जिन्होंने मुँह बिचकाते हुए कुढ़कर कहा था, "श्रीलाल धर्म की लुटिया को गहरे पानी में डुबोकर ही दम लेंगे। वह हाथ धोकर धर्म की प्राचीन मान्यताओं को मिटा डालने के पीछे पड़े हैं।"

सेवा माता अकेली ही पलंग पर लेटी-लेटी मुस्करा दीं। उन्हें श्रीलाल का उत्तर याद आ गया जो ये वाक्य सुनकर उन्होंने सेवा माता को दिया था। कितनी दृढ़ता थी उसमें और कितना स्पष्ट था वह उत्तर। उन्होंने कहा था, 'मैं अपने देश की सामाजिक विषमता को समझता हूँ माँ! और कितनी गति से उसमें क्रांति लाई जा सकती है, जिससे वह राष्ट्र-पिता द्वारा प्रदर्शित शांतिमय मार्ग से विचलित न हो, उसका मुझे ज्ञान है। राष्ट्र-पिता के आश्रम में रहकर मैंने उनसे शिक्षा प्राप्त की है। मैं ज़बानी जमाखर्च नहीं करता घोष बाबू की तरह।"

और फिर मुस्कराकर बोले, 'माँ! घोष बाबू जो चाहते हैं, चाहता मैं भी वही हूँ। खाना, कपड़ा और मकान की सुविधाएँ सब मनुष्यों को समान रूप से मिलनी चाहिएँ। मैं और सत्ता दोनों इस दिशा में अपने सम्पूर्ण प्रयत्नों के द्वारा बढ़ रहे हैं। जनता जीजी और उनकी सन्तान भी जी-तोड़ परिश्रम करके अपने को सुशिक्षित, सुरक्षित और सुव्यवस्थित करके हमारी ओर बढ़ी चली आ रही हैं।

दोनों का संगम निश्चित है। बहुत सी खाइयाँ पार करनी हैं दोनों को। परन्तु संतोष की बात यही है कि चलने की दिशा ठीक है दोनों की।

और रही वेदांताचार्य रमण जी के धर्म-संकट की बात, सो मेरे सामने मानव-समाज की सेवा का धर्म ही मुख्य है। मानव-समाज का कल्याण ही धर्म की कसौटी है। राम-राम जपने और गाय-बन्दर की पूँछ पकड़ने से जनता, सत्ता, प्रमिला और इनके बाल-बच्चों का भविष्य उज्ज्वल नहीं हो सकता।

मुझे अपने बच्चों को संसार के बच्चों के साथ चलाना है, संसार के बच्चों के समान शिक्षित और सम्पन्न करना है, मेरी समझ में नहीं आता इसमें बन्दर की पूँछ कहाँ काम आती है।'

'तुम अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल हो बेटा।' कहकर सेवा माता ने श्रीलाल जी को आशीर्वाद दिया था।

विनय भाई की श्रद्धा श्रीलाल के अन्दर देखकर सेवा माता को हार्दिक आनन्द की प्राप्ति हुई। उनके हृदय में हर समय काँटे की तरह चुभने वाली कसक दूर हो गई। उनके मन की शंका जाती रही।

रात्रि में न जाने किस समय नींद आई। विनय भाई की 'भारत साहित्य सहयोग' योजना पढ़ते-पढ़ते आँखें झपक गईं। और वे तभी खुली जब विनय भाई और प्रमिला ने उनके कमरे में प्रवेश करके आँयत-पाँयत से यह कहा, "सुबह हो गई माँ! रात्रि में सम्भवतः आप हमसे विदा होकर भी काफ़ी देर तक जागती रहीं।"

सेवा माता ने नेत्र खोले तो देखा बेटी प्रमिला पाँयत की ओर खड़ी है और विनय भाई सिराहने के पास।

"सचमुच रात बहुत देर से नींद आई विनय!" आँखें मिच-मिचाते हुए बैठी होकर सेवा माता बोलीं। "नई बातें पुरानी बातों को जगा देती हैं, और जब मनुष्य एकांत में होता है तो वे जागी हुई बातें मस्तिष्क में आकर मँडराने लगती हैं। हम लोगों के सो जाने के बाद भी न जाने कितनी देर तक मैं पुरानी बातों से उलझती-सुलझती रही। सो गई, यह भी पता नहीं कितने बजे और क्या सोचती-सोचती।"

इसी समय रमेश भी वहीं आ गया और उसने तीनों को सादर प्रणाम किया।

सेवा माता ने रमेश की सौम्य मूर्ति को देखकर कहा, "बड़े ही भोले हो रमेश! तुम्हारे चेहरे जैसी सरलता मैंने अन्य किसी के चेहरे पर नहीं देखी। सरल होना किसी भी कलाकार के लिए नितान्त आवश्यक है।"

इस पर प्रमिला मुस्कराकर बोली, "परन्तु रमेश का यह भोलापन कला नहीं है माँ !"

भाभी की मीठी चुटखी से रमेश के मन की कली खिल गई। बोला वह एक शब्द नहीं, केवल कृतज्ञ नेत्रों से देखा भर एक बार प्रमिला के चेहरे पर। मानो कह रहा हो, 'भाभी ! तुम्हारा वह चित्र बनाऊँगा कि जिसमें मेरी कला की साकार अभिव्यक्ति उतर आये। कितनी मीठी बातें करती हो तुम, इसका अनुभव मेरे अतिरिक्त और कौन कर सकेगा ?"

प्रातःकाल के नाश्ते पर बैठकर नमकीन पराठे का तनिक सा टुकड़ा मुँह में डालते हुए सेवा माता ने कहा।

"रात में देर तक जागने का यह फल मिला विनय कि मैं तुम्हारी 'भारत साहित्य सहयोग' योजना को अद्योपांत पढ़ गई। मुझे तुम्हारी योजना बहुत पसंद आई और तुम्हारी साहित्य-साधना की प्रशंसा किये बिना भी मेरा मन न रह सका। बहुत ही सुन्दर योजना बनी है।"

"योजना आपको पसंद आने से योजना की सार्थकता तो सिद्ध हो ही गई माँ ! सिर पर आशीर्वाद का हाथ रहेगा तो क्रियान्वित भी सफलता पूर्वक होगी।" विनय भाई ने कहा।

"सफलतापूर्वक क्यों नहीं होगी विनय ! तुम्हारे त्याग की साध अधूरी नहीं जा सकती। तुम्हारा विचार और प्रमिला की व्यवस्था···" इतना कहकर सेवा माता की दृष्टि यकायक रमेश के चेहरे पर जा टिकी।

रमेश की दृष्टि ने धीरे से पूछा, "तो क्या 'भारत साहित्य सहयोग' में मेरा कोई स्थान नहीं है माँ ?"

"है क्यों नहीं बेटा रमेश ! तुम्हीं तो प्रतिमा के दर्पण बनोगे। आँखों को सुख और साहित्य को सौन्दर्य का प्रथम आकर्षण प्रदान करने की क्षमता तुम्हारे ही अन्दर है। तुम्हारा प्रथम सहयोग होगा योजना को।" सेवा माता ने कहा।

"विनय भाई के विचारों और प्रमिला भाभी की भावनाओं के चित्र बनाने का प्रयास कर रहा हूँ माँ ! अपने चित्रों में यदि मैं इन दोनों की

संधि कर सका तो अपनी चित्रकला को धन्य समझूँगा।" रमेश बोला।

सेवा माता एकटक रमेश के चेहरे पर देखती रहीं, मानो वह उसके चेहरे पर लिखा हुआ कुछ पढ़ना चाहती थीं।

इसी समय रमेश ने सेवा माता के सामने अपना एलबम रखकर कहा, "विनय भाई के सम्पर्क में आने के पश्चात् जो चित्र बनाये हैं वे सब मेरे इस एलबम में लगे हैं।"

सेवा माता प्रमिला से बोलीं, "बेटी प्रमिला! तनिक खोलकर तो दिखाओ रमेश बेटे का एलबम! देखें विनय भाई का शिष्य······"

सेवा माता के मुख से शिष्य शब्द निकलते ही विनय भाई कट्ट-कट्ट की ध्वनि मुख से करके बोले, 'भारत साहित्य सहयोग' में सभी विद्यार्थी हैं, शिक्षक की व्यवस्था नहीं की गई माँ! यह अध्ययन और सेवा का केन्द्र है, शिक्षण का केन्द्र नहीं।"

रमेश के एलबम को देखकर सेवा माता वास्तव में चमत्कृत हो उठीं। कितनी सजीवता थी रमेश के चित्रों में, इसे वर्णन करना कठिन है।

एलबम देखते-देखते सेवा माता की दृष्टि कमरे के सामने की दीवार पर लगी सरस्वती देवी के चित्र पर चली गई और उसे ध्यानपूर्वक देखकर बोलीं, "प्रमिला, तू भी बड़ी ही बावली है। रमेश बेटे ने यह सामने वाला चित्र बनाकर हम सबको धोखा दे दिया।"

और फिर रमेश की ठोड़ी के नीचे अपनी उँगली लगाकर बोलीं, "क्यों बेटा रमेश! तुम्हारा यह सरस्वती का चित्र नहीं है क्या?"

रमेश मुस्कराकर बोला, "भाभी से पूछो माँ! अपने चित्र को पहचानती भी हैं या नहीं?"

चित्र को देखकर विनय भाई मुस्करा दिये और मुस्कराते हुए ही रमेश के मुख पर देखकर बोले, "कितना भोलापन है और कितना कलापूर्ण है।"

प्रमिला ने दीवार पर टँगे चित्र को ध्यानपूर्वक देखा तो वह सचमुच ही उसका अपना चित्र था।

प्रमिला ने कहा, "तो जो कुछ देखा था क्या वह भ्रम था ?"

"भ्रम नहीं था प्रमिला ! वह कला का पहला रूप था और रूप बदलता रहता है। आज का यह चित्र कला का दूसरा रूप है। और कल इसके स्थान पर तुम कला का तीसरा रूप, यानी जनता का चित्र लगा हुआ देखोगी।" विनय भाई ने मुस्कराकर कहा।

"यही बात है विनय भाई !" रमेश बोला। "परन्तु वास्तव में है यह चित्र सेवा माता का ही, रूप चाहे इसका कितना ही क्यों न बदल गया हो।"

रमेश की बात सुनकर सेवा माता भी मुस्करा दीं और प्यार-भरे शब्दों में बोलीं, "तब तो प्रमिला ग़लत ही समझ रही है कि रमेश के चेहरे का यह भोलापन कला नहीं है। रमेश के इसी भोलेपन ने तो रात-भर में कला का रूप बदल दिया।"

"बहुत सुन्दर चित्र बनाया है तुमने अपनी भाभी का रमेश ! परन्तु तुमने वीणा से इनका सम्बन्ध विच्छेद करके चित्र को अधूरा कर दिया।" और फिर तनिक सोचकर और थोड़ी मुस्कान की रेखा अपने मुख-मण्डल पर लाकर बोले, "परन्तु इसमें दोष तुम्हारा नहीं है।" सरलभाव से विनय भाई बोले।

प्रमिला सकुचाकर बोली, "किसी वस्तु की जानकारी न होना दोष नहीं है रमेश ! परन्तु यह सच है कि वीणा मेरा बहुत ही प्रिय वाद्य है। और मेरी बचपन की सहेली है वीणा।"

रमेश के लिए यह वास्तव में नई जानकारी थी। प्रमिला की सेवा-भावना, कार्यकुशलता, जीवन-व्यवस्था, स्नेह, सरल सौन्दर्य और मीठी बोल-चाल से रमेश परिचित था। प्रमिला के जीवन में संगीत की सरिता भी बहती है, इसका उसे किंचित् मात्र भी ज्ञान नहीं था। इतने दिन के सम्पर्क के पश्चात् भी यह बात कभी उसके जीवन में नहीं आई थी।

रमेश सरल वाणी में सेवा माता की ओर मुँह करके बोला, "देखा आपने माँ ! कितने बड़े धोखे की बात निकली। यानी भाभी ने आज तक अपना पूरा परिचय देने के योग्य भी मुझे नहीं समझा।"

अब आप ही निर्णय दें कि भाभी का इतने बड़े रहस्य को आज तक रमेश से छिपाये रहना बड़ी कला है या मेरे चेहरे का भोलापन।"

"तुम दोनों ही कलाकार हो बेटा !" सेवा माता ने कहा।

विनय भाई बोले, "परन्तु रात-रात में तुमने यह चित्र बनाया खूब रमेश ! तुम्हारी तीव्रगति की हृदय से सराहना करता हूँ।"

"इस तीव्रगति के पुरस्कारस्वरूप इन्हें आज दो मीठे-मीठे रसगुल्ले अधिक खाने पड़ेंगे," प्रमिला ने रसगुल्लों की तश्तरी उठाकर रमेश के सामने करते हुए मुस्कराकर कहा।

ये सब बातें चल ही रही थीं कि इसी समय कोठी के द्वार पर एक साइकिल-रिक्शा आकर रुक गई।

विनय भाई ने ऊपर गर्दन उठाकर देखा तो घोष बाबू को रिक्शा से उतरते हुए पाया और वह उनके स्वागत के लिए खड़े होते हुए द्वार की ओर बढ़कर बोले, "घोष बाबू आ रहे हैं।"

घोष बाबू के लिए प्रमिला ने छोटी आराम कुर्सी बराबर में डालकर उसके सामने एक छोटी मेज़ लगा दी।

कमरे में प्रवेश करते हुए घोष बाबू की दृष्टि सेवा माता पर गई और उन्हें देखते ही आँखों से चश्मा उतारकर आँखें साफ़ करते हुए बोले, "आज तो सेवा माता का यहाँ मिल जाना बहुत ही अच्छा हुआ। मेरा गाँव तक जाने का श्रम बच गया। वरना तो मैं आपसे मिलने आने का पक्का विचार कर चुका था।"

रमेश और प्रमिला ने घोष बाबू को नमस्कार किया और आदरपूर्वक कुर्सी पर बिठाया। घोष बाबू खाकी जीन की पतलून पहने थे, इसलिए जमीन पर बैठते उन्हें तकलीफ़ होती। इसीलिए प्रमिला ने पहले ही उनके लिए आरामकुर्सी का प्रबन्ध कर दिया था।

घोष बाबू के बैठने पर सेवा माता मुस्कराकर बोलीं, "मेरे यहाँ मिलने से ग्रामोद्योगाश्रम और गाँव के लोग घोष बाबू जैसे त्यागी

जन-नेता के दर्शनों से वंचित रह गये । कितना सुन्दर होता यदि तुम वहीं आकर दर्शन देते ?"

"वहाँ आने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है और मैं आना भी अवश्य चाहता हूँ परन्तु जब आप यहीं पर मिल गईं तो मैं मजदूरों का मूल्यवान समय क्यों वृथा नष्ट करूँ ?" घोष बाबू बोले ।

घोष बाबू की बात को और साफ करते हुए विनय भाई ने कहा, "घोष बाबू ने अपना जीवन मजदूरों के निमित्त अर्पण कर दिया है माँ ! अब इनके जीवन का जो क्षण भी नष्ट होता है, वह मज़दूरों की उन्नति के समय में से कट जाता है । ऐसा इनका विचार है ।"

विनय भाई की बात को अनसुनी करके घोष बाबू बोले, 'इधर-उधर की बातों को जाने दो विनय भाई ! तनिक अपने भारतसेवक की करतूतों पर एक दृष्टि डालकर देखो । और माँ ! आप भी तनिक अपने लाड़ले की कार्यवाहियों को समझने का प्रयत्न करें । किधर बहक रहे हैं आपके श्रीलाल जी ?"

विनय भाई घोष बाबू की बात को पूरी तरह समझ रहे थे । सेवा माता को अभी उसका पता नहीं था । प्रमिला और रमेश का भी इतनी गम्भीर बातों में घुसने से कोई सम्बन्ध न था ।

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "घोष बाबू ! पूंजी और पूंजीपति स्वयं कुछ नहीं हैं । उनका उपयोग ही सब कुछ है और देखना यह है कि उस उपयोग का फल किसके हाथों में अधिक पहुँचता है ।

श्रीलाल जी ने पंचवर्षीय योजना के लिए जो सहयोग लिया है उसे देखकर आपके रक्त में उबाल आने लगा है । परन्तु यह उबाल खाने का समय नहीं है । देश की दरिद्रता का सामना करना है, देश की खेती का उद्योगीकरण करना है, देश के छोटे-बड़े उद्योगों को विकसित करना है, देश की प्राकृतिक शक्तियों को उनकी विनाशकारी दिशा से रोक-कर निर्माणकारी दिशा की ओर संचालित करना है और जनता तथा उसके बाल-बच्चों की दशा को सुधारना है ।"

विनय भाई की बात सुनकर घोष बाबू का पारा तेज़ हो गया और वह तनिक चिढ़कर बोले, "पूंजीपतियों के साथ मिलकर ग़रीब जनता और उसके बाल-बच्चों की दशा सुधारने का यह नया रूप है विनय भाई ! उन योजनाओं के द्वारा जनता और उसके बाल-बच्चों का उद्धार नहीं, उनका रक्त चूसा जायगा, उनके सिर पर वह ऋण थोपा जायगा जिसे शताब्दियों तक उनके बाल-बच्चे अदा नहीं कर पायेंगे।

सेवा माता और जनता बेचारी देहात में पड़ी हैं। श्रीलाल इनका बेटा है, सगा भाई है, इसलिए जो कुछ भी वह कर रहा है उसका आँखें मींचकर ये दोनों समर्थन कर रही हैं। लेकिन मैं स्पष्ट कहे देता हूँ कि श्रीलाल ने भी राजा साहब के ही मार्ग पर चलना प्रारम्भ कर दिया है। सत्ता ने उसे बुरी तरह अपने चंगुल में जकड़ लिया है।"

और इतना कहकर घोष बाबू नाटकीय ढंग से मुस्करा दिये। जेब से निकालकर उन्होंने एक सिग्रेट सुलगाई और उसमें एक कश लगाकर विनय भाई से पूछा, "सिग्रेट पीना तो मना नहीं है तुम्हारे 'भारत साहित्य सहयोग' में ?"

सेवा माता घोष बाबू की बात सुनकर गम्भीरतापूर्वक बोलीं, "तो तुम्हारा मतलब है कि मेरा श्रीलाल ग़लत मार्ग पर जा रहा है ? उसे जनता बहन और उसके बाल-बच्चों का कोई ध्यान नहीं। वह सत्ता के संकेत पर नाच रहा है, और सत्ता जिस मार्ग पर भी उसे चलाना चाहती है, वह चला रही है।"

"मेरे कहने का ठीक यही अभिप्राय है सेवा माता ! और इसी के स्पष्टीकरण को मैं आपके ग्रामोद्योगाश्रम में आने का विचार कर रहा था। परन्तु आजकल मजदूरों की समस्याओं में इतना उलझा हुआ रहता हूँ कि कहीं जाने-आने का समय ही नहीं मिलता।" घोष बाबू बोले।

"सारा समय तो आपका वह मज़दूर बुलैटिन ले-लेता होगा जिसमें खोज-खोज कर हर सप्ताह आपको श्रीलाल जी की भूलें छापनी पड़ती हैं।" विनय भाई ने कहा।

इस पर घोष बाबू बहुत प्रसन्न हुए और अन्दर-ही-अन्दर अपनी बुद्धि और खोज के प्रभाव का अनुभव करके बोले, "आपने सहयोग नहीं दिया विनय भाई ! परन्तु पर्चा नहीं रुका। वह बराबर प्रकाशित हो रहा है। तुम्हारे श्रीलाल और सत्ता की वह पोल-पट्टियाँ खोलता है कि जनता और उसके बाल-बच्चों को पढ़ने में आनंद आ जाता है।"

घोष बाबू के व्यंग्य को समझकर विनय भाई बोले, "पर्चे ऐसे न जाने कितने निकलते हैं घोष बाबू ! परन्तु इनसे बनता क्या है? आज के युग में आंदोलन भी हवाई नहीं चलाये जा सकते। उनके लिए भी ठोस कार्य करने की आवश्यकता है। दूसरों की त्रुटियाँ गिनाने मात्र को ही मैं कोई काम नहीं समझता।

जनता और उसकी सन्तान अब इतनी मूर्ख नहीं है कि उसपर ऐसे बुलेटिनों का प्रभाव पड़ सके। वह काम देखती है, अपने जीवन के विकास की दिशा देखती है, अपनी सम्पन्नता का भविष्य देखती है। साधारण उत्तेजित करनेवाली सूचनाओं का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

श्रीलाल जी और सत्ता की भूलें खोजने के आपके महत्वपूर्ण कार्य में यह सब मुझे कुछ दिखाई नहीं देता। इसलिए मेरा और आपका सहयोग सम्भव नहीं था। जीवन में जब कभी भी आप कोई ठोस कार्य लेकर चलेंगे तो विनय आपको अपने से चार कदम आगे चलता दिखाई देगा।"

विनय भाई की बात सुनकर घोष बाबू ने बात को आगे बढ़ाना वृथा समझा और सेवा माता की ओर देखते हुए बोले, "मुझे अधिक कुछ नहीं कहना है सेवा माता ! श्रीलाल जो कुछ भी करता है उस पर अपना दृष्टिकोण आपके सामने रखना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।"

सेवा माता मुस्कराकर बोलीं, "तुम्हारी स्पष्टवादिता की मैं हृदय से सराहना करती हूँ घोष बाबू ! तुम्हें स्वतंत्र रूप से विचार करने का पूर्ण अधिकार है। तुम्हारी सरकार में जनता और उसके बाल-बच्चों की कैसी दशा होगी, इसका तुम्हारा अपना स्वप्न है और श्रीलाल का अपनास्वप्न है। दोनों की दिशा एक है परन्तु विचारों में भारी अन्तर है।"

"अन्तर थोड़ा नहीं है माँ ! आकाश-पाताल का अन्तर है। दोनों की देश और विदेश की नीतियाँ दो हैं। आज का विश्व दो गुटों में बटा हुआ है और घोष बाबू उनमें से एक गुट के साथ अपने भविष्य को नत्थी कर देना चाहते हैं। परन्तु श्रीलाल जी ऐसा करने को तैयार नहीं। वह राष्ट्रपिता के उस महान् संदेश की पूर्ति में संलग्न है जिसमें उन्होंने समस्त विश्व को मैत्री भावना से देखा है। वह किसी भी गुट के साथ बँधकर अपने व्यक्तित्व को नष्ट नहीं करना चाहते।" गम्भीरतापूर्वक विनय भाई ने कहा। "उनके सामने विश्व-सहयोग के साथ अपने देश और देश की सन्तान को समुन्नत बनाने का महत्वपूर्ण प्रश्न है।"

विनय भाई की बात सुनकर घोष बाबू तिलमिला उठे और बोले, "यह कोई विचारात्मक नीति नहीं है विनय भाई ! पूँजीवाद और साम्य-वाद के बीच में लटकने का कार्यक्रम है, जिसमें कोई व्यवस्था नहीं और इस अव्यवस्थित कार्यक्रम के अन्दर पूँजीवाद और व्यक्तिवाद पनपेगा। सत्ता को खूब खुलकर खेलने का अवसर मिलेगा। आपके श्रीलाल जी योजनाएँ बना-बनाकर प्रसन्न होंगे और जनता के कल्याण का स्वप्न देखेंगे और उन योजनाओं पर आसीन होकर जनता के जीवन से नितान्त अभिनय सत्ता ऐश लूटेगी और राजा साहब के शासनकाल में जनता की जैसी दशा हुई इस काल में उससे भी बदतर हो जायगी।"

"ये भविष्य की बातें हैं घोष बाबू ! आपकी भविष्यवाणी कभी पूरी न हो, मैं तो यही कामना करूँगा।" विनय भाई बोले।

"तुम साहित्यकार हो विनय भाई ! भावनाओं में बहना तुम्हारा पेशा है, परन्तु मैं राजनीतिज्ञ हूँ और मेरे ऊपर भावनाएँ व्यर्थ साबित होती हैं। मुझे जो कठोर सत्य सामने दिखाई दे रहा है उसकी ओर इंगित न करना मैं अपनी कर्त्तव्य-विमुखता समझता हूँ।" बहुत ही गम्भीरता के साथ घोष बाबू ने कहा।

इसी समय प्रमिला बीच में बोल उठी, "मेरी समझ में नहीं आता कि आप लोगों के पास राजनीति के अतिरिक्त क्या कोई और विषय

ही नहीं है बातें करने के लिए ?

अभी आकर भली प्रकार बैठे भी नहीं कि जाने कहाँ-कहाँ के किस्से ले दौड़े ।"

प्रमिला की बात सुनकर घोष बाबू मुस्कराकर बोले, "चलो जाने दो राजनीति को । आपके 'भारत साहित्य सहयोग' की क्या प्रगति है ? चर्चा तो काफ़ी चल रही है ।"

"चर्चा कैसे चल रही है ? यह समझ में नहीं आया । अभी तो उद्घाटन भी नहीं हुआ उसका विनय ।" भाई ने सरलतापूर्वक पूछा ।

"चर्चा चलाने के लिए आपके द्वार पर पट्टी लटका देना क्या पर्याप्त नहीं है विनय भाई ? आपके घर की यही तो विशेषता है कि यहाँ सब प्रकार के विचारों का समन्वय हो जाता है । सभी विचारधाराओं के विचारक यहाँ आते हैं और बिला पुस्तकों से मस्तिष्क रगड़े ही आपको विद्वान् बना जाते हैं ।" घोष बाबू बोले ।

"यही तो खूबी है घोष बाबू !" घोष बाबू के व्यंग्य का उत्तर देते हुए विनय भाई बोले, "मस्तिष्क एक चट्टान के समान होती है घोष बाबू! और चट्टानें भी कई प्रकार की होती हैं । एक चट्टान ऐसी होती है कि जिस पर जो कुछ भी पड़े उसमें समा जाता है और एक ऐसी होती है कि जिस पर पड़ने वाली हर वस्तु बिखरकर खील-खील हो जाती है ।

आपने पढ़ी है किसी पुस्तक में इन दोनों चट्टानों की कहानी ?"

सेवा माता, प्रमिला और रमेश विनय भाई और घोष बाबू के व्यंग्य-विनोद में आनंद ले रहे थे ।

इसी समय विनय भाई बोले, "घोष बाबू को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि 'भारत-साहित्य-सहयोग' की योजना तैयार हो चुकी है । आप यदि उसे अपने बुलेटिन में छापना चाहें तो टाइप कराके एक प्रति आपकी सेवा में भी भेज दी जाय ?"

घोष बाबू बोले, "तुम्हारी योजनाओं से डर लगता है विनय भाई ! बड़े परिश्रम से बुलेटिन को जमाया है और मिल-कोलोनी के मजदूरों में

उसे लोक-प्रिय बनाया है। कहीं तुम्हारी योजना में सरकारी पंचवर्षीय योजना की झलक आ गई तो मेरा किया धरा सब चौपट हो जायगा।" गम्भीरतापूर्वक घोष बाबू बोले।

"आपकी यह बात सुनकर यदि मैं यह निर्णय निकालूँ कि घोष बाबू की लोकप्रियता श्रीलाल जी की पंचवर्षीय योजना से घबराती है, तब फिर आप क्या कहेंगे? वैसे सच यह है कि 'भारत साहित्य सहयोग' का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। देश की जनता और जनता के बाल-बच्चों की सच्ची कहानियाँ......"

विनय भाई पूरी बात भी न कहने पाये थे कि घोष बाबू प्रसन्न-मुख-मुद्रा से बोले, "बहुत सुन्दर बात सोची तुमने विनय भाई! तुम्हारी योजना को मेरे बुलेटिन का पूरा-पूरा समर्थन मिलेगा।"

और इतना कहकर वह खड़े होते हुए बोले, "मिल कोलोनी में एक पुस्तकालय खोल रहा हूँ। आज उसका उद्घाटन करना है और वह उद्-घाटन श्री विनय भाई के करकमलों द्वारा होगा। सेवा माता, प्रमिला और रमेश भाई को भी इस शुभ अवसर पर निमंत्रित करता हूँ। परन्तु आना आप लोगों को अपने पास से पैसा खर्च करके पड़ेगा। श्रीलाल जैसे सरकारी साधन मेरे पास उपलब्ध नहीं हैं।"

विनय भाई घोष बाबू को 'नाँ' नहीं कह सकते थे। उन्होंने 'हाँ' में उत्तर दिया और सेवा माता को भी घोष बाबू का यह समारोह देखने के लिए रुकना पड़ा।

इसके पश्चात् घोष बाबू ने विदा ली।

वेदान्ताचार्य रमण जी अपने को भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म का सच्चा शुभचिन्तक और सोलह आने ठेकेदार समझते हैं। भारत उनके विचार से हिन्दुओं का देश है। मुसलमान विदेशी हैं; ठीक उसी तरह विदेशी हैं, जैसे अंग्रेज थे।

भारत का विभाजन होने से पूर्व रमण जी ने विभाजन का भरसक विरोध किया, परन्तु अंग्रेज़ी सरकार और कांग्रेसी नेताओं के निर्णय को उलट देना इनकी सामर्थ्य में न था, और देश का विभाजन हो गया।

भारत का विभाजन होकर एक भाग पाकिस्तान बना। यह बँटवारा वेदान्ताचार्य रमण जी के दिल का वह नासूर है जो सम्भवतः उनके जीवन में भरने वाला नहीं।

देश विभाजित हो गया। मुसलमानों को उनका पाकिस्तान मिल गया। करोड़ों हिन्दू विस्थापित होकर पाकिस्तान से भारत चले आये और आज भी उनका आना बन्द नहीं है परन्तु यह सब देखकर भी श्रीलाल जी की धार्मिक नीति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

रमण जी के दिल में श्रीलाल जी की हिन्दू धर्म के प्रति इस अवहेलना को देखकर गहरी जलन पैदा हो जाती है। हिन्दू धर्म के नाम पर बलिदान होने वाले वीरों की आत्माएँ उनकी आँखों में आकर नाचने लगती हैं और कहती हैं, "कैसी दुनियाँ बदलती जा रही है रमण जी ! इस धार्मिक-पतन के युग में आपकी ही ओर हमारी दृष्टि है। आने वाली संतति कहीं हमारे नामों को भी न भूल जाय। हमारा त्याग और हमारा बलिदान साम्प्रदायिक भावना कहकर न ठुकराया जाने लगे।"

उन आत्माओं की यह वाणी सुनकर वेदान्ताचार्य रमण जी के तमाम बदन में एक नवीन जागृति का संचार होता है और वह ओम् नाम की केसरिया ध्वजा फहराकर नेत्र बन्द करते हुए गायत्री का जाप करके उन महान्

आत्माओं के सामने नतमस्तक होकर कहते हैं, "धर्मनिष्ठ वीर आत्माओ! तुम्हारा नाम और तुम्हारी कीर्ति को अमर रखना मेरे जीवन का परम लक्ष्य होगा। तुम्हारे नाम और तुम्हारी कीर्ति पर ही तो मैं धार्मिक प्रजातन्त्र के मंच का निर्माण करूँगा।"

रमण जी ने इतना कहकर अपने नेत्र खोले और गीता की पोथी को बगल में दबाकर कोठी से बाहर निकले।

रमण जी के बाहर आते ही सेवक ने आगे बढ़कर नमस्कार किया।

"चालक से कहो गाड़ी लाये।" रमण जी बोले।

"जो आज्ञा श्रीमन्!" कहकर तिलकधारी सेवक कोठी के बराबर वाली दिशा में लपका और गाड़ी आने में देर न लगी।

रमण जी की गाड़ी चन्द मिनटों में हवा से बातें करने लगी।

रमण जी के मस्तक पर ज्यों-ज्यों ताज़ी हवा के झोंके लगते थे त्यों-त्यों उनकी विचारधारा और निखरने लगी। विनय भाई से बातें करने का क्षेत्र बढ़ने लगा।

इधर काफी दिनों से उनकी विनय भाई से भेंट नहीं हुई थी। विनय भाई ने जबसे राजनीति का पल्ला छोड़कर साहित्य-सेवा के क्षेत्र में पदार्पण किया है तबसे वह एकान्तवासी हो गये हैं।

जिस समय श्री रमण जी विनय भाई के घर पहुँचे तो सेवा माता, प्रमिला, रमेश और विनय भाई घोष बाबू के निमन्त्रण की पूर्ति के लिए मिल कोलोनी में जाने का विचार कर रहे थे।

सवारी का कोई प्रबन्ध नहीं था।

इसी समय श्री रमण जी की कार उनके द्वार पर आकर रुकी और उसे देखते ही मुस्कराकर विनय भाई आगे बढ़ते हुए बोले, "वेदान्ताचार्य रमण जी आये हैं माँ! सवारी की कठिनाई तो दूर हो गई।"

विनय भाई ने रमण जी का आगे बढ़कर स्वागत किया और उन्हें आदर भाव से अन्दर ले आये।

कोठी के द्वार में प्रवेश करते समय उनकी दृष्टि 'भारत साहित्य सहयोग'

की पट्टी पर गई और उसे देखकर बोले, "क्या किसी नई संस्था का श्रीगणेश कर डाला और रमण को भी याद नहीं किया ?"

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "ऐसी भूल क्या कभी स्वप्न में भी सम्भव है ? श्रीगणेश जिस दिन होगा उस दिन श्री रमण जी सभा के विशेष सम्मानित अतिथि होंगे।

अभी तो केवल पट्टी लिखकर लटका दी है।"

मकान के वरांडे से कमरे में प्रवेश किया तो वेदान्ताचार्य रमण जी की दृष्टि सेवा माता पर गई। रमण जी ने नमस्कार करते हुए पूछा, "सेवा माता का इधर कब आना हुआ ? आपके तो दर्शन भी दुर्लभ हो गये। जाने कहाँ देहात में जाकर धूनी रमाई है। हम लोगों से सम्पर्क ही समाप्त कर दिया।"

रमण जी की बात सुनकर सेवा माता बोलीं, "शहरों का उद्धार करने के लिए आप लोग क्या कम हैं ? मैंने सोचा ऐसी जगह चलूँ जहाँ रमण जी की कार न पहुँच सके। जहाँ जाने के लिए अभी आधुनिक युग में पक्की सड़कों का भी निर्माण नहीं हुआ है।"

रमेश रमण जी की ओर आश्चर्य से देख रहा था। उसकी जिज्ञासा को पहचानकर विनय भाई बोले, "वेदान्ताचार्य श्री रमण जी के दर्शन करो रमेश !"

रमेश ने अपने दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया और रमण जी ने श्रद्धा भाव से आशीर्वाद दिया।

अभी सब लोग बैठक में ठीक से बैठे भी न थे कि विनय भाई घड़ी देखते हुए बोले, "आज कैसे भूल से इधर आ पधारे श्री रमण जी ? सम्भवत: प्राचीन आर्यवीरों की कीर्ति और यशगौरव ने आपको कोई नया मन्त्र तैयार करने की प्रेरणा दी है। ॐ नाम की नई केसरिया रेशमी ध्वजा फहरा रही है कार पर।"

विनय भाई का यह वाक्य सुनकर रमण जी का मुख-मण्डल खिल उठा और मुस्कराते हुए बोले, "कैसा समय आ गया विनय भाई ? धर्म

का ह्रास इन आँखों से नहीं देखा जाता।"

"देखा भी नहीं जाना चाहिए।" गम्भीर मुख-मुद्रा बनाकर विनय भाई बोले ।

"और फिर तुम भी यदि धर्म का ह्रास देखकर अविचलित रहोगे तो फिर बेचारे धर्म को इस कलि-काल में कहाँ शरण मिलेगी रमण ?" सेवा माता मुस्कराकर बोलीं।

सेवा माता के व्यंग को समझकर रमण जी को तनिक क्रोध आ गया और वह तमककर बोले, "यह सब आपके ही लाडले की करतूत है 'सेवा' माँ ! वह जनता के बाल-बच्चों को फुसला-बहकाकर धर्म-विरुद्ध करता जा रहा है।

लेकिन इतना समझना ही चाहिए उसे कि धर्म-विरुद्ध होकर वह राज्य नहीं चला सकेगा। सत्ता के साथ अठखेलियाँ करना धर्म-राज्य नहीं है।"

"इसमें कोई संदेह नहीं रमण जी !" गम्भीरतापूर्वक विनय भाई बोले।

विनय भाई की गम्भीरता को देखकर रमण जी ने अपने मन में धारणा बना ली कि विनय भाई निश्चय ही श्रीलाल के वर्तमान रवैये से खीजे हुए हैं और उनका यह एकांतवास भी उनकी इसी खीज का परिणाम है।

रमण जी तनिक और उभरकर बोले, "हमने वेद और शास्त्रों का अध्ययन किया है सेवा माता ! आज तक का जीवन वृथा नहीं खोया। सत्ता को हस्तगत करना कोई महत्वपूर्ण कार्य हम नहीं समझते। लेकिन इस कलि-काल में देख रहा हूँ कि सत्ता बहुत प्रभावशाली होती जा रही है।..."

"और उसे आपको हस्तगत करना ही होगा।" उसी गम्भीरता के साथ विनय भाई ने कहा।

प्रमिला और रमेश ने विनय भाई के चेहरे पर देखा तो उनकी कुछ

समझ में न आया परन्तु सेवा माता बराबर मुस्करा रही थीं और उनकी मुस्कराहट वेदांताचार्य रमण जी के हृदय में काँटे की तरह चुभ रही थी।

विनय भाई के इन शब्दों ने रमण जी को विशेष प्रोत्साहन दिया और वह तनिक उभरकर बोले, "लेकिन विनय भाई, सत्ता बड़ी मक्कार है।"

रमण जी के मुख से 'सत्ता' के लिए मक्कार शब्द का प्रयोग सुनकर विनय भाई को हँसी आ गई। वह हँसी रोककर बोले, "भाई रमण जी! इसमें 'सत्ता' बेचारी का दोष बहुत ही कम है। उसे जैसे सत्ता-कारी के चंगुल में रहना होता है, वैसा ही रूप भी धारण करना पड़ता है।"

वेदांताचार्य रमण जी विनय भाई की इस बात से सहमत हो गये।

इसी समय विनय भाई दुबारा घड़ी देखते हुए बोले, "तो अब आपने भी राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश करने का निश्चय कर लिया, ऐसा ज्ञात होता है।"

"निश्चय ही नहीं, पूर्ण निश्चय कर लिया विनय भाई! 'सेवा' माता को सम्भवत: मेरे इस निश्चय से कष्ट हो लेकिन अपनी ओर से मैं उन्हें यह विश्वास दिला सकता हूँ कि मैं जो कुछ करने जा रहा हूँ वह जनता के बाल-बच्चों के धार्मिक गौरव को बचाने के लिए करने जा रहा हूँ।" रमण जी बोले।

'सेवा' माता बोलीं, "विचार तो तुम्हारा बहुत शुभ है रमण, परन्तु यदि धार्मिक गौरव के साथ तुम 'जनता' के बाल-बच्चों की आर्थिक और सामाजिक दशा की ओर भी ध्यान दे सको तो तुम्हारे उद्देश्य और सेवा की सीमा का विस्तार हो जाये।"

'सेवा' माता की बात सुनकर वेदांताचार्य रमण जी बोले, "आप यह उपदेश अपने भारतसेवक श्रीलाल को दें 'सेवा' माता! मैं जिस धर्म की प्रतिष्ठा के लिए प्रयत्नशील हूँ उसके अन्दर सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था वेद-शास्त्रों ने आदि काल से निहित कर दी है……।"

रमण जी की वेद और वेदान्त पर एक बार वार्ता छिड़ जाने पर फिर उसका अन्त सुगमता से नहीं होता, इस रहस्य से विनय भाई पूर्ण परिचित थे। वह तिबारा घड़ी देखते हुए बोले, "आप सम्भवतः आज किसी आवश्यक कार्य से आये हैं रमण जी ! परन्तु इस समय मुझे मिल कोलीनी में जाना है, वहाँ घोष बाबू ने एक पुस्तकालय खोलने की योजना बनाई है।

क्या आप हमें वहाँ तक नहीं छोड़ सकते ?"

"छोड़ क्यों नहीं सकता विनय भाई !" रमण जी बोले। "सुना है इधर घोष बाबू ने मिल कोलोनी में अपना अच्छा सिक्का जमा लिया है और उन्हें आशा है कि आगामी चुनाव में उन्हें वहाँ से अच्छी सफलता मिलेगी।"

बातें भी चलती रहीं और घर से बाहर निकलने पर दरवाज़े के सब ताले भी लगा दिये गये।

सब कार में जाकर बैठ गये और थोड़ी ही देर में कार ने उन्हें मिल कोलोनी में पहुँचा दिया।

घोष बाबू पहले से ही प्रतीक्षा में खड़ें थे और उनके चारों ओर मिल-मज़दूरों का लम्बा-चौड़ा जमाव था।

वेदान्ताचार्य रमण जी की कार से सेवा माता, प्रमिला, रमेश और विनय भाई उतरे और स्वागतकारिणी सभा के सदस्यों ने उनके गले में मालाएँ डालीं।

रमण जी से मिलकर घोष बाबू बोले, "भाई रमण जी, आप खूब आये। मैं हृदय से आपका आभारी हूँ कि आपने इस शुभ अवसर पर दर्शन देकर उत्सव की शोभा को बढ़ाया।"

रमण जी घोष बाबू की बात का कोई उत्तर देते इससे पूर्व विनय भाई मुस्कराकर बोले, "अजीब दुनियाँ है रमण जी ! देखिये न ! आपको यहाँ लाने का श्रेय मुझे मिलना चाहिए था और वह मिल रहा है आपको।"

घोष बाबू कृतज्ञतापूर्वक बोले, "विनय भाई ! आपने आज वास्तव में हमारे उत्सव में सेवा माता और वेदान्ताचार्य रमण जी को लाकर चार चाँद लगा दिये ।"

कार से उतरकर सेवा माता, विनय भाई और रमण जी आगे-आगे चले और प्रमिला तथा रमेश उनके पीछे-पीछे थे ।

उत्सव के मंच पर पहुँचकर आज की सभा के प्रधान पद के लिए सेवा माता से प्रार्थना की गई और उन्होंने सहर्ष उसे स्वीकार कर लिया ।

विनय भाई ने अपने भाषण में प्रसन्नता प्रकट की कि घोष बाबू ने मिल कोलोनी में वहाँ के निवासियों के लिए एक आम पुस्तकालय की व्यवस्था की । और उससे भी महत्वपूर्ण बात यह रही कि इस पुस्तकालय के उद्घाटन-समारोह में सेवा माता तथा वेदान्ताचार्य श्री रमण जी ने भी भाग लिया ।

वेदान्ताचार्य रमण जी ने पुस्तकालय के लिए पाँच सौ रुपये की पुस्तकें भेंटस्वरूप दीं और मन-ही-मन सोचा, "अपनी विचारधारा का घोष बाबू के व्यवस्थित समाज के शरीर में कैसा इञ्जेक्शन लगाया ।"

सेवा माता ने भी मिल कोलोनी के पुस्तकालय को तपस्वी सुनील की लिखी हुई 'ग्रामोद्योग-साहित्यमाला' के दो सेट भिजवाने का वचन दिया और आश्वासन दिया कि वह उनकी कोलोनी में अपने ग्रामोद्योगों की बनी सस्ती, सुन्दर और स्वच्छ वस्तुओं का उनके लिए प्रबन्ध कर सकती है, यदि कोलोनी के रहने वाले उनके वितरण के लिए सहकारी केन्द्र स्थापित कर लें ।

मिल कोलोनी पुस्तकालय का उद्घाटन करके विनय भाई अपने मकान पर आये तो वेदान्ताचार्य रमण जी उनके साथ थे ।

रमण जी विनय भाई से एकांत में वार्ता करना चाहते थे परन्तु घर के अन्य सदस्यों से कमरा खाली करने को कह नहीं पा रहे थे। विनय भाई उनके मन की बात समझकर प्रमिला से बोले, "प्रमिला, सेवा माता को तुमने अपना गुलाब-बाग नहीं दिखाया। इतने में रमण जी से कुछ

आवश्यक बातें करूँ तुम लोग गुलाब-बाग की सैर कर आओ ।"

सेवा माता, प्रमिला और रमेश कोठी के पीछे वाली बगिया में चले गये ।

उनके जाने पर विनय भाई बोले, "अब तो आपने भी अपना जन-मंच तैयार कर लिया है रमण जी ! ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आप भी अब कर्म-क्षेत्र में पदार्पण करने वाले हैं ।"

विनय भाई की बात सुनकर रमण जी गम्भीरतापूर्वक बोले, "धर्म-नीति और राजनीति में बड़ा अन्तर है विनय भाई ! धर्म के गौरव के लिए मुझे राजनीति के क्षेत्र में पदार्पण करना पड़ रहा है । श्रीलाल धर्म की शृंखलाओं को, प्राचीन संस्कृति की पवित्र रूढ़ियों को, उन रूढ़ियों को जिनके पीछे हिन्दू धर्म के गौरव का इतिहास छिपा हुआ है, छिन्न-भिन्न करने पर उतारू है ।

मुझसे सहन नहीं होता यह सब ।"

"सहन हो भी कैसे ?" गम्भीर मुख-मुद्रा बनाकर विनय भाई ने कहा, "परन्तु जनता पर श्रीलाल का जादू काम कर रहा है । उससे कैसे टक्कर लेंगे आप ? जनता और उसके बाल-बच्चे श्रीलाल को आपके भगवान् से अधिक महत्व देने लगे हैं ।"

"यही तो घोर पतन की दिशा है विनय भाई ! धार्मिक अंधकार में नास्तिक लोगों का बोलबाला हो जाता है । घोष बाबू जैसे व्यक्ति जनता को अधार्मिक दिशा की ओर घसीट ले जाने पर उतारू हैं ।

उनके निकट एक यज्ञोपवीतधारी और एक यवन में कोई अन्तर नहीं । बिल्कुल यही दशा श्रीलाल की होती जा रही है ।" और फिर एक गहरी साँस लेकर रमण जी बोले, "राष्ट्र-पिता जीवित होते तो यह कभी सम्भव न होता ।"

इसी समय घर के द्वार पर एक कार आकर रुकी ।

विनय भाई ने बाहर के वरांडे में जाकर देखा तो क्या देखते हैं कि कार में से श्रीलाल जी और सत्ता रानी उतर रहे हैं ।

विनय भाई ने और आगे बढ़कर उनका स्वागत किया और श्रीलाल जी ने पूछा, "माता जी अभी गई तो नहीं हैं ?"

"अभी तो ठहरी हैं। कल चली जातीं—परन्तु घोष बाबू ने मिल कोलोनी में एक पुस्तकालय स्थापित किया है, अभी-अभी उसी के समारोह से हम लोग आ रहे हैं। उसी के सभापति पद के लिए घोष बाबू ने माता जी को निमंत्रित कर दिया और उनके आग्रह से वह रुक गई।" विनय भाई ने कहा।

"उनके आग्रह से नहीं, मेरे सौभाग्य से रुक गईं। मुझे दर्शन होने थे उनके।" मुस्कराकर सत्ता रानी ने कहा।

तीनों ने बैठक में प्रवेश किया तो देखा कि श्री वेदान्ताचार्य रमण जी पधारे हुए हैं।

श्रीलाल जी बोले, "ओहो ! आप भी विराजमान हैं श्री रमण जी ! विनय भाई, यहाँ आकर उन महानुभावों से भी भेंट हो जाती है, जिनसे मिले लम्बी अवधियाँ निकल चुकीं।"

श्रीलाल जी ने फिर मुस्कराकर कहा, "विनय भाई के घर को मैं घर नहीं मानता। यह तो विभिन्न विचारों के व्यक्तियों का अजायबघर बन गया है।

और विशेष बात यह है कि सभी लोग विनय भाई में आस्था रखते हैं।" सत्ता रानी ने श्रीलाल जी की मुस्कान में अपनी मुस्कान मिलाकर कहा।

सत्ता रानी की बात सुनकर वेदान्ताचार्य रमण जी गम्भीरतापूर्वक बोले, "रमणी सत्ता ! तुमने जो बात अभी-अभी उच्चारण की, कभी यह भी सोचा कि इसका कारण क्या है ?"

रमण जी की गम्भीर मुद्रा देखकर सत्ता स्तम्भित रह गई, मौन हो गई।

उसके मौन पर मुस्कराकर रमण जी बोले, "रमणी सत्ता ? समझो, विनय भाई भावना के स्रोत हैं। और स्रोत के पास हर भावुक व्यक्ति

आता ही है। और कुछ भावनाविहीन व्यक्ति भी यहाँ अजायबघर की सैर करने के लिए आ जाते हैं।"

श्रीलाल जी ने विनय भाई से पूछा, "माता जी कहाँ हैं ?"

विनय भाई बोले, "घर के पीछे एक छोटी-सी फुलवारी लागा ली है प्रमिला और रमेश ने। उसी में तीनों सैर करने चले गये है।"

विनय भाई को यहीं छोड़कर श्रीलाल जी और सत्ता रानी घर के पीछेवाली फुलवारी में चले गये।

उनके जाने पर रमण जी ने क्रोध में भरकर कहा, "देखा आपने विनय भाई ! महोदय का दिमाग़ ! परन्तु इसमें बेचारे श्रीलाल का क्या दोष है ? सत्ता बड़ी ही मक्कार रमणी है। यह बड़े-बड़े त्यागी और वैरागियों को पथ-भ्रष्ट कर देती है। इसका मद बुद्धि को ग्रस लेता है। मनुष्य विवेकहीन हो जाता है। विद्वानों के सम्मुख नतमस्तक होने वाली बुद्धि का ह्रास हो जाता है।"

विनय भाई ने रमण जी की बात का कोई उत्तर ने देकर केवल मुस्कराते हुए इतना ही कहा, "आपने सत्ता रानी की बात का तो उत्तर दिया परन्तु श्रीलाल जी से आप बोले भी नहीं। इसका कारण समझ में नहीं आया। यदि उनमें विवेकहीनता होती तो वह आपसे बोलते ही नहीं। कमरे में प्रवेश करते ही सर्वप्रथम वह आपसे बोले।"

"बोलना व्यर्थ है विनय भाई ! जिस व्यक्ति ने भारत माता की छाती पर पाकिस्तान का पत्थर उठाकर रखने में योग दिया, उससे बातें करने को मेरी आत्मा गवाही नहीं देती। और फिर, अब भी जिनकी गतिविधि में सुधार नहीं हुआ, उनसे दूर रहना ही मैं अच्छा समझता हूँ।

श्रीलाल से इतना गहरा मतभेद होने पर मैं ऊपर से मीठा बनकर नहीं रह सकता। दुरंगी चालें मुझे पसंद नहीं हैं विनय भाई !

राष्ट्र-पिता कभी दुरंगी चालें नहीं चलते थे। श्रीलाल ने ये दुरंगी चालें इधर ही कुछ दिन से सीखी हैं।"

इतना कहकर रमण जी खड़े हो गये और चलते समय बोले, "सुना है इधर आपने बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं। क्या यह सच है ?"

"लिखी तो हैं", विनय भाई ने कहा।

"क्या जान सकता हूँ कि उनमें आपने क्या लिखा है ? राम और कृष्ण का सन्देश है उनमें ? रामायण, गीता और भागवत की भावना है उनमें ? पुराणों की कथाएँ हैं उनमें ?" गम्भीरतापूर्वक रमण जी ने पूछा।

विनय भाई बोले, "यह सब तो कुछ भी नहीं है उनमें रमण जी ! उनमें तो मेरे, आपके, श्रीलाल जी, तपस्वी मुनील, आचार्य प्रकाश, घोष बाबू, सेवा माता, प्रमिला, सत्ता रानी, जनता और इन सबके माता-पिता तथा बाल-बच्चों के किस्से-कहानियाँ हैं। सबके जीवन की मुख्य और साधारण घटनाएँ हैं, समस्याएँ हैं, और समस्याओं के हल भी हैं कहीं-कहीं, जहाँ जैसे मेरी तुच्छ बुद्धि में आ गये हैं। इन सबके जीवन में समय-समय पर आने वाले प्रश्न हैं और उनका समाधान है।"

वेदान्ताचार्य रमण जी ने बड़े ही ध्यान से विनय भाई के चेहरे पर देखा और देखकर बोले, "यह तो आपने साहित्य के साथ महान् अनर्थ कर दिया विनय भाई !" रमण जी की वाणी इस समय बहुत ही गम्भीर थी। मानो उनकी चिरसंचित निधि में से विनय भाई ने कुछ चुपके-ही-चुपके चुरा लिया हो।

एक क्षण चुप रहकर रमण जी बोले, "जिस प्रकार श्रीलाल और घोष बाबू जनता और उसके बाल-बच्चों को हिन्दू धर्म के वातावरण से पृथक् कर देने का प्रयास कर रहे हैं उसी प्रकार आपने साहित्य की गौरव-गरिमा को ठेस पहुँचाई है।

पहले तो संस्कृत से हिन्दी भाषा में लिखा जाकर साहित्य का गौरव नष्ट हुआ और अब आपने साहित्य के विषय पर भी कुठाराघात करना प्रारम्भ कर दिया। इल्लू, पिल्लू, टिल्लू मुल्लू, कुल्लू, डल्लू की कथा-कहानियाँ ही लिखना यदि इस युग का साहित्य होगा तो प्राचीन युग का

अमर साहित्य रसातल को चला जायगा।''

विनय भाई रमण जी की गम्भीरता को देखकर मन-ही-मन मुस्कराये और उनके मस्तिष्क में प्राचीन रूढ़ियो की जमी हुई चीकट उन्हें स्पष्ट दिखाई दी।

विनय भाई ने यह भी देखा कि वह चीकट रमण जी के मस्तिष्क की माँस-पेशियों पर इतनी बुरी तरह जम गई है कि उसे तर्क या सद्भावना के जल से धोकर साफ नहीं किया जा सकता।

सम्भवतः इसीलिए श्रीलाल जी ने रमण जी से दो-चार बातें करने को भी वहाँ और ठहरना पसन्द नहीं किया और वह आते ही सत्ता रानी के साथ सेवा माता के पास चले गये। घर के पीछे फुलवारी में चले गये।

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "तो आपको यह सब जो कुछ भी मैंने लिखा है इल्लू, पिल्लू, टिल्लू, मुल्लू, कुल्लू, डल्लू की कथा-कहानियाँ प्रतीत हुआ?" और फिर तनिक गम्भीर होकर बोले, "साहित्य का सम्बन्ध अध्ययन से है रमण जी! बिना पढे साहित्य की टीका-टिप्पणी करने-वालों की पंक्ति में मै आपका नाम नहीं लिखना चाहता, क्योंकि उनके विषय में मेरी बहुत अच्छी धारणा नहीं है।"

विनय भाई की यह गम्भीर बात सुनकर रमण जी मुस्कराते हुए बोले, "बुरा न मानना मेरी बात का साहित्यकार! यह बात आपकी सच है कि साहित्य पर बिना पढे टीका करना भूल है। मुझे आप अपनी एक रचना दे दें। उसे पढकर मैं आगामी सप्ताह में आपके पास किसी दिन आऊँगा।

आज भी एक अभिप्राय को लेकर यहाँ आया था लेकिन अब मै उस अभिप्राय का स्पष्टीकरण आपकी पुस्तक पढ़ लेने के पश्चात् ही कर सकूँगा।"

रमण जी को विनय भाई ने आदरपूर्वक अपनी एक पुस्तक भेंट की और फिर बाहर सड़क तक उन्हें विदा करने के लिए गये।

: ८ :

रमण जी को विदा करके विनय भाई भी अपनी फुलवारी में पहुँच गये ।

सभी महानुभाव हरी घास पर बैठे बातें कर रहे थे । बातें भी विनय भाई के ही विषय में चल रही थी और प्रधान चर्चा का विषय, जो सेवा माता और श्रीलाल जी के बीच में था, वह 'भारत साहित्य सहयोग' की योजना का था ।

सत्ता रानी सेवा माता के मुख से भारत साहित्य सहयोग' की योजना सुनकर बोली, ' विनय भाई ने साहित्य-निर्माण और प्रसार की जो योजना प्रस्तुत की है उसका राष्ट्र के बौद्धिक विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण योग हो सकता है ।"

"हो सकता है, क्यो कहती हैं आप ?" रमेश ने तनिक उत्तेजित होकर पूछा, "होगा कहिये सत्ता रानी ! विनय भाई की योजनाओ में हवाई किलो का निर्माण नही होता; उनमें सेवा-कुटीर छाई रहती है ।"

रमेश की बात सुनकर सेवा माता मुस्कराकर सत्ता रानी की ओर निहारती हुई बोली, "सुनी तुमने सत्ता रानी, रमेश बेटे की बात ! रमेश कुटीर योजनाओ का समर्थक है, और तुम सोच रही हो विशाल उद्योगो की बात, यही दोनो का मूल अन्तर है ।"

इस पर प्रमिला मुस्कराकर बोली, "भाभी का विचार भी ठीक ही है माँ ! अपने-अपने साधनो और अपनी-अपनी सामाजिक व्यवस्थाओं के अनुसार ही तो योजना और उनका कार्यक्रम बनाया जाता है ।"

प्रमिला की बात सुनकर विनय भाई का मन आनन्द-विभोर हो उठा । प्रमिला के सन्तोष और उसकी समझदारी पर वह गद्‌गद् होकर बोले, "प्रमिला ने ठीक कहा है । अपनी-अपनी चादर के अनुसार ही हर व्यक्ति को पैर पसारने चाहिएँ सत्ता रानी ! मैंने अपनी योजना को अपने

साधनों के अनुसार बनाया है। और उन्हीं के आधार पर मैं उसके विकास का स्वप्न देख रहा हूँ।

देखता हूँ कि इस कुटिया में रहकर मैं साहित्य और साहित्य-प्रेमियों की कितनी सेवा कर सकूँगा।"

श्रीलाल जी ने बात की दिशा बदलते हुए पूछा, "आज रमण जी का इधर कैसे पधारना हुआ ?"

"अभी मन्तव्य स्पष्ट नहीं हुआ।" विनय भाई ने उत्तर दिया।

"रमण जी राजनीति में प्रवेश कर रहे हैं। आगामी चुनाव में मेरे हाथ से सत्ता रानी को छीन लेने की चुनौती दे चुके हैं मुझे। वे राजे और ज़मींदार, जिनकी रियासतें और ज़मींदारियाँ समाप्त करके उनकी भूमि जनता के बाल-बच्चों में बाँट दी गई है, रमण जी के समर्थकों में से हैं।" श्रीलाल जी ने कहा।

"दूध से निकालकर फेंक दी जानेवाली मक्खियों के समान छटपटाते हुए ये राजे और ज़मीदार पहले अपने प्राणों की रक्षा तो कर लें, तभी रमण जी का सही समर्थन कर सकेंगे। ये सब अकर्मण्य व्यक्ति हैं और शताब्दियों से जनता के बाल-बच्चों का रक्त पीकर पलते चले आ रहे हैं।

जनता और उसके बाल-बच्चों के शरीर से चिपटी हुई इन जोकों को छुड़ाकर आपने एक महान् कार्य किया है। देश के जन-जीवन में सामाजिक क्रांति का बीजारोपण किया है आपने। जनता के बाल-बच्चों की छाती पर पत्थर की तरह रखे हुए एक निकम्मे समाज को समाप्त किया है आपने।

अब रमण जी इन जोकों को अपने शरीर में चिपटाकर राजनीतिक क्रांति के पथ पर अग्रसर होना चाहते हैं, तो होने दीजिये उन्हें। आप देखेंगे कि कुछ ही दिनों में ये जोकें रमण जी और इनकी धार्मिक आस्था, दोनों का रक्त समाप्त कर देंगी।" विनय भाई ने कहा।

सत्ता रानी प्रसन्न होकर बोलीं, "आपका विचार और आपकी कल्पना बहुत ही मार्मिक और सजीव है विनय भाई ! रमण जी जैसे

पोंगापंथी और रूढ़िवादी महोदय से मेरा सम्बन्ध होना नितान्त असम्भव है।

उनसे सम्बन्ध स्थापित करने की अपेक्षा मैं आत्महत्या करना पसंद करूंगी।"

सत्ता रानी की बात सुनकर प्रमिला मुस्कराती हुई बोली, "घबराओ नहीं भाभी ! भैया श्रीलाल के हाथों से तुम्हें यूंही छीनकर ले जाना सरल काम नहीं है। कितने त्याग और कितनी तपस्या के पश्चात् भैया ने तुम्हें राजा से मुक्त कराया है, यह क्या तुमसे छिपा है ?

और मैं समझती हूँ कि चाहे कितनी ही पश्चिमी हवा किसी भारतीय नारी को क्यों न लग चुकी हो फिर भी बार-बार अपना पति बदलने की प्रथा उसे प्रिय होनी असम्भव है।"

प्रमिला की बात सुनकर श्रीलाल जी मीठी चुटखी लेते हुए बोले, "बात तुम्हारी ठीक ही है प्रमिला बहन ! परन्तु तुम्हारी भाभी के ऊपर से अभी पश्चिमी वातावरण का प्रभाव हल्का नहीं हो पाया है। साड़ी पहनने में इन्हें काफ़ी तकलीफ होती है। ऊँची एड़ी के जूते की जगह चप्पलें पहनने में भी संकोच होता है। परन्तु धीरे-धीरे आदत बदलती जा रही है। देख नहीं रही हो आज इनका चेहरा ! अब तो सादगी भी जीवन में आती जा रही है। होठों पर लिपस्टिक लगाना भी छोड़ दिया।"

श्रीलाल जी की बात सुनकर सेवा माता बोलीं, "तुम्हारी यह बात वास्तव में सच है श्रीलाल ! इधर थोड़े ही समय में सत्ता रानी ने भारतीयता की ओर आशातीत प्रगति की है। भारतीय लज्जा और शील भी सत्ता रानी के मुख-मण्डल की शोभा बनता जा रहा है। और सेवा की दिशा में भी सत्ता प्रगतिशील है।"

सेवा माता के मुँह से अपनी प्रशंसा सुनकर सत्ता रानी के दिल की कली खिल गई और उसके चेहरे पर हल्की मुस्कान की रेखा खिंच गई।

प्रमिला की ओर देखती हुई सत्ता बोली, "प्रमिला के विश्वास को ठेस पहुँचाने का साहस मुझमें भला हो ही कैसे सकता है। और फिर

मै पत्नी भी प्रगति के वातावरण में हूँ। रूढ़िवादी परम्पराएँ मेरे जीवन को वन्दिनी नही बना सकतीं।

वेदान्ताचार्य रमण जी अपनी पोथी-पत्तरी के आधार पर मेरे, तुम्हारे और जनता जीजी के बाल-बच्चों का भविष्य निर्माण करने का स्वप्न देख रहे हैं। आज के मानव-जीवन की प्रगति से वह नितान्त अनभिज्ञ है।

मैं बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहे देती हूँ प्रमिला! उनके साथ मेरा सम्बन्ध नितान्त असम्भव है।"

सत्ता की बात सुनकर प्रमिला ने मुस्कराकर कहा, "चलो वेदान्ताचार्य रमण जी की बात तो समाप्त हुई। उनकी आशाओ पर तो आपने तुषारपात कर दिया। परन्तु घोष बाबू तो प्रगति के पुजारी हैं और जहाँ तक प्रगति का सम्बन्ध है वह भैया श्रीलाल जी से भी अधिक क्रांतिकारी विचार रखते हैं।"

प्रमिला की बात सुनकर सत्ता रानी तनिक सिटपिटाईं और रूमाल से मस्तक के स्वेद-विन्दु पोंछती हुई बोली, "घोष बाबू का नाम लेकर तुम मेरे शरीर में थरथरी पैदा कर देती हो प्रमिला! उनकी प्रगति से मुझे भय लगने लगता है। उनकी प्रगति क्या है, एक भूचाल है।"

"भय क्यों लगता है सत्ता रानी?" विनय भाई ने मुस्कराकर पूछा।

"आप सब कुछ जानते हुए भी मेरे ही मुख से सब बातें कहलाना चाहते हैं विनय भाई!" सत्ता ने कहा, "घोष बाबू जिस गति के साथ चलना चाहते हैं उसकी मैं आदि नही हूँ। उनके साथ चलना मेरे लिए असम्भव है और मुझे भय है कि कहीं चाल की उस तीव्र गति में मेरा शरीर टूटकर न रह जाय, मेरा अंग-अंग शिथिल न पड़ जाय।"

सत्ता रानी की बात सुनकर सेवा माता बोलीं, "तुम्हारा भय और तुम्हारा संकोच उचित ही है सत्ता! घोष आदमी नही है, लोहे की मशीन है वह। सत्ता जैसी वैभव की पली सुकुमारी का घोष के शिकंजों में जकड़े जाने की सम्भावना से तिलमिलाना स्वाभाविक ही है प्रमिला!'

"आपने बिल्कुल सच कहा माता जी!" श्रीलाल बोले, "दृढ़ता

कमाल की है घोष में। वह जिस काम पर भी जुट जाता है उसको पूरा करने में रात-दिन एक कर देता है।

मिल कोलोनी का बच्चा-बच्चा उस पर प्राण देता है। आगामी चुनाव में उसके क्षेत्र से खड़ा होकर अन्य कोई व्यक्ति सफल नहीं हो सकता।"

सूर्य अस्ताचल के निकट पहुँचकर अंतिम लालिमा छिटकाता हुआ रात्रि के अंधकार में विलीन हो गया। सड़कें बिजली की बत्तियों से जगमगा उठीं।

सेवा माता बोलीं, "चलो अब अन्दर चलें और कुछ काम की बातें कर लें। मुझे कल प्रातःकाल अवश्य ही आश्रम को लौट जाना है। तपस्वी सुनील मेरी प्रतीक्षा में होगा। कल दोपहर को उसने आश्रम में अम्बर-चरखा-प्रतियोगिता का आयोजन किया है और प्रतियोगिता के पुरस्कार-वितरण के लिए आचार्य प्रकाश भी वहाँ पहुँच रहा है।"

सभी लोग उठकर बड़े कमरे में चले आये और दरी पर आलथी-पालथी मारकर बैठ गये।

सेवा माता ने पूछा, "तुम्हारी पंचवर्षीय योजना कैसी चल रही है श्रीलाल!"

श्रीलाल बोले, "सत्ता रानी से पूछो माँ! काम तो यही कर रही हैं। योजना मेरी है, साधन मैं जुटा रहा हूँ, वातावरण मैं पैदा कर रहा हूँ, देश की जनता की आय पर कर लगाकर और विदेशों से ऋण लेकर मैंने इनके हवाले कर दिया है।"

सेवा माता सत्ता की ओर देखती हुई बोलीं, "तुम्हीं बताओ सत्ता रानी! कैसी दशा है तुम्हारी योजनाओं की? कार्य की कैसी प्रगति है?"

सत्ता मुस्कराकर बोली, "मेरे विचार से तो कार्य ठीक ही चल रहा है माँ! बहुत बड़ा कार्य है और जल्दबाज़ी में कार्य बनने की अपेक्षा बिगड़ने की सम्भावना अधिक रहती है। इसीलिए बहुत फूंक-फूंककर पैर आगे बढाना पड़ रहा है।

आज की स्थिति में घोष बाबू, रमण जी और आचार्य प्रकाश यही कह सकते हैं कि मेरी गति धीमी है परन्तु यह नही कह सकते कि कार्य नही हो रहा ।"

सत्ता की बात सुनकर सेवा माता ने कहा, "अपनी गति को और तीव्र करो सत्ता रानी ! तीव्र गति के प्रवाह में छोटी-मोटी भूले दबती और कुचलती चली जाती हैं । तुम्हारी इस पंचवर्षीय योजना की सफलता की ओर जनता के बाल-बच्चे आँखें पसारकर अपने भविष्य की बहु-मुखी निर्माण और विकास-योजनाएँ लिए बैठे है ।"

सेवा माता की बात सुनकर श्रीलाल जी गम्भीरतापूर्वक बोले, "सुन रही हो सत्ता ! मुझे लज्जा आ रही है सेवा माता के मुख से अपनी धीमी गति की बात सुनकर । राष्ट्र-पिता ने सर्वदा ही मेरी कमर को मेरी प्रगतिशीलता पर शाबासी देकर थपथपाया था ।"

श्रीलाल जी के आवेश को देखकर सता रानी मुस्कराते हुए इठला-कर बोली, "वह समय ही कमर थपथपाने का था, निर्माण और विकास का कार्य नहीं था वह । जल्दबाजी में यदि किसी बाँध का एक पुल भी ग़लत बँध गया तो पूरी योजना ही मिट्टी में मिल जायगी । आपकी तनिक सी जल्दबाज़ी में मेरी सारी योग्यता, सारी बुद्धिमत्ता, सारी जानकारी और सारी सहिष्णुता नष्ट हो जायगी ।"

और फिर तनिक तुनककर तिरछी भवें घुमाते हुए सत्ता ने कहा, "देख नहीं रहे है आप कितने घंटे काम करती हूँ मैं ? एक मज़दूरिनी से आप आठ घंटे से अधिक काम नही ले सकते और मुझे दिन के चौबीसों घटे रगड़ना चाहते है ।"

सत्ता के अंतिम शब्द सुनकर श्रीलाल जी सिटपिटा गये । सत्ता रानी की कार्यकुशलता और कार्य करने की योग्यता की वह सर्वदा ही सराहना करते है । सेवा माता के सामने भी उन्होंने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है ।

यह सब सुनकर विनय भाई मुस्कराते हुए बोले, "सता रानी की

कार्यकुशलता पर श्रीलाल जी को संदेह होने की आवश्यकता नहीं है।" और फिर सेवा माता की ओर मुँह करके बोले, "मुझे इनकी कार्य-प्रणाली पर पूर्ण संतोष है। परन्तु इतना अनुभव मैं अवश्य करता हूँ कि श्रीलाल जी का जब से सत्ता के साथ सम्बन्ध हुआ है तब से भारत-सेवकों के साथ सम्बन्ध-विच्छेद सा होता जा रहा है।"

विनय भाई की बात सुनकर श्रीलाल जी बोले, "तुम्हारे अनुभव की प्रशंसा करता हूँ विनय ! ऐसा कुछ दिन से मैं भी अनुभव कर रहा हूँ।"

"क्या अनुभव कर रहे हैं आप ?" उत्सुकतापूर्वक सत्ता ने पूछा।

विनय भाई और सेवा माता के चेहरों पर सत्ता की मुखाकृति को देखकर मुस्कान छा गई।

श्रीलाल जी ने सत्ता की बात का कोई उत्तर न देते हुए बातों की दिशा बदलकर विनय भाई की ओर देखते हुए पूछा, "प्रमिला और रमेश चुपके से ही न जाने किधर को खिसक गये।"

"भोजन की व्यवस्था में जुटे होंगे दोनों। उन्होंने सोचा जितनी देर हम लोग गप्पें झाड़ें उतनी देर में वे कुछ रचनात्मक कार्य कर लें।" विनय भाई ने उत्तर दिया।

सेवा माता विनय भाई की बात पर मुस्कराकर बोलीं, "प्रमिला वास्तव में बचपन से ही अपने आवश्यक कार्य के प्रति बहुत जागरूक रही है। उसे कभी किसी काम के लिए मुझे कहने की आवश्यकता नहीं हुई।"

इसी समय श्रीलाल जी की दृष्टि बैठक में लगे चित्र पर गई। उन्होंने उसे बहुत ही ध्यानपूर्वक देखा और फिर सेवा माता की ओर देखकर बोले, "यह तो आपका ही चित्र है माँ ! उन्हीं दिनों का चित्र है जब आपने सेवा-पथ पर पग बढ़ाया था। सेवा की साधना के लिए कटि-बद्ध होकर आपने शहर का वह विशाल भवन कन्या पाठशाला के लि ; देकर आप देहात के भ्रमण को निकल पड़ी थीं।"

"ठीक उन्हीं दिनों का चित्र है श्रीलाल जी ! उन्हीं दिनों की आकृति और भाव-भंगिमा प्रदर्शित हो रही है। परन्तु इस चित्र को देखकर जो सराहनीय बात है वह है रमेश की कला, रमेश की कल्पना और अनुभूति। मैंने, आपने और प्रमिला ने तो माँ का वह रूप, वह छटा, सौम्य आभा देखी है, परन्तु रमेश का तो तब कहीं भी पता नहीं था।" विनय भाई ने कहा।

सत्ता ने भी चित्र को वड़े ध्यान से देखा और फिर सेवा माता के मुखमण्डल की ओर निहारती हुई बोली, "चित्रकार ने सचमुच ही चमत्कार पैदा कर दिया है चित्र में। किसी वस्तु को बिना देखे केवल अनुभूति और कल्पना के आधार पर उसके आकार का निर्माण करना साधारण कला नहीं है।"

रमेश कमरे के बाहर से सत्ता की बात सुनकर अन्दर आया और मुस्कराकर बोला, "यह चित्र सेवा माता का नहीं है सत्ता रानी ! तनिक ध्यान से देखिए इसे। यह आधुनिक युग की सरस्वती का चित्र निर्मित किया गया है। वीणा और लेखनी के साथ-साथ झाड़ू और चरखा इनके पास है। यह सरस्वती देवी केवल मानसरोवर पर मोती चुगने वाली हंसवाहिनी मात्र नहीं है। कल्पना के लोक से आगे बढ़कर प्रत्यक्ष-लोक में भी इनका विचरण होता है।"

रमेश की बात सुनकर विनय भाई और सेवा माता के मुख पर आनन्द की रेखा मुस्करा उठी। सत्ता रानी एक क्षण के लिए स्तम्भित सी रह गईं और फिर तुरन्त नाटकीय ढंग से हँसकर बोली, "चित्रकार ! कल्पना तुम्हारी भी सुन्दर है। परन्तु क्या सरस्वती का प्रतीक ही बदलने का निश्चय कर लिया है तुमने !"

सत्ता की बात सुनकर विनय भाई बोले, "सत्ता रानी को यह परिवर्तन सम्भवतः कुछ विचित्र सा प्रतीत हो रहा है। वेदान्ताचार्य रमण जी का ध्यान इस दिशा में जायगा तो उन्हें यह परिवर्तन गऊ-हत्या के

समान प्रतीत होगा परन्तु निश्चित रूप से घोष बाबू चित्रकार की प्रशंसा करेंगे।"

विनय भाई की बात सुनकर श्रीलाल जी हँसते हुए बोले, "यहाँ आप भूल रहे हैं विनय भाई ! घोष बाबू इस चित्र की प्रशंसा नहीं कर सकते। इस चित्र की सराहना श्रीलाल ही कर सकता है। श्रीलाल ने राष्ट्र-पिता को झाड़ू, चरखा, लेखनी और संगीत का एक स्थान पर समन्वय करते देखा है। यह चित्र तपस्वी सुनील और आचार्य प्रकाश को भी पसंद आयगा। यदि घोष बाबू की रुचि का बनवाना है तो सरस्वती के पास एक रिवाल्वर और एक हाईड्रोजन बम की स्थापना होना नितान्त आव-श्यक है।"

श्रीलाल जी की बात सुनकर सभी लोग खिलखिलाकर हँस पड़े।

विनय भाई बोले, "बात तो आपने बहुत पते की कही श्रीलाल जी ! घोष बाबू के मस्तिष्क पर छोटा-मोटा परिवर्तन चढ़ता ही नहीं।"

इसी समय प्रमिला ने कमरे में प्रवेश कर सूचना दी, "भोजन तैयार है। सब महानुभाव भोजन करने चलें। भोजन से निवृत्त होकर फिर रात आपकी है। बातों की भी कमी नहीं है और फिर आज जब यहाँ दो-दो योजनाकार उपस्थित हैं तो बातों की कमी हो ही कैसे सकती है।"

"हम लोग योजनाएँ बनाना ही नहीं जानते प्रमिला ! योजनाओं को सफल बनाना भी हमने सीखा है। यह सच है कि इस बार जो योजना हाथ में ली है वह बहुत व्यापक और लम्बी है और उसकी सफलता सत्ता के सहयोग पर आधारित है, परन्तु हमें पूर्ण विश्वास है कि सत्ता अपने कर्त्तव्य से एक पग भी पीछे नहीं हटेगी और इसने जो वचन मुझे दिया है उसका पूरी तरह पालन करेगी।" श्रीलाल जी बोले।

सेवा माता ने कहा, "तुम्हारी योजना और सत्ता रानी का सुसं-चालन एक दिन अवश्य फले-फूलेगा। बेटी जनता और उसकी सन्तान तुम्हारे इस महान् यज्ञ में श्रमदान देकर देश और देश के समाज को उन्नति के उच्चतम शिखर पर ले जाने में अवश्य सफल होगी।"

"अवश्य होगी माँ ! श्रीलाल जी की पंचवर्षीय योजना देश और देश के समाज की बहुमुखी प्रगति की योजना है। इसके द्वारा देश के प्राकृतिक साधनों का विकास होगा, प्रकृति की शक्तियों को विनाशकारी दिशा से रोककर निर्माण की दिशा मे मोड़ा जायगा और इसके द्वारा देश औद्योगिक क्रांति के पथ पर अग्रसर होगा।" विनय भाई ने कहा।

"अवश्य होगा विनय भाई !" श्रद्धा और प्रेम के साथ श्रीलाल जी ने विनय भाई के मुख पर निहारते हुए कहा।

और आज श्रीलाल जी अपने मन की बात को भी और अधिक छिपाकर न रख सके। उसी भावना के प्रवाह में उन्होंने विनय भाई से कहा, "विनय भाई ! आज एक बात पूछ लूँ आपसे ? माँ की उपस्थिति में बात और भी स्पष्ट हो जायगी।"

"अवश्य पूछो श्रीलाल जी !" मुस्कराकर विनय भाई ने कहा।

"मैंने जबसे अपना सम्बन्ध सत्ता से जोड़ा है तुमने अपने आपको मुझसे अलग कर लिया। इसका क्या कारण है ? मेरी योजनाओं के तुम प्रशंसक हो, मेरी नीति का भी तुम समर्थन करते हो। मेरा कोई विरोध भी तुम नहीं करते, परन्तु सहयोग भी तुम्हारा प्राप्त नही हो रहा, इसका क्या कारण है। तुम्हारे राजनीतिक क्षेत्र से पृथक् हो जाने का मै विरोध नही करता, परन्तु सहयोग के और भी तो अनेकों मार्ग हैं।"

विनय भाई श्रीलाल जी की बात का उत्तर न देते हुए खड़े होकर बोले, "प्रमिला बहुत जल्द नाराज़ हो जाती है, यह मुझसे अधिक आप जानते है। उसका भोजन ठंडा हो गया तो उसे सँभालना कठिन हो जायगा। चलिये पहले भोजन कर लें और तब आपके प्रश्नों का उत्तर देंगे।"

सत्ता खड़ी होती हुई बोली, 'आपके प्रश्न का उत्तर देने के लिए विनय भाई को थोड़ा सोचना-समझना होगा और भोजन करते-करते उन्हे यह समय मिल जायगा।"

इसके पश्चात् सभी लोग भोजन के लिए रसोईघर में चले गये। प्रमिला के यहाँ सबने भारतीय ढंग से लिपे-पुते चौके में पटरों पर बैठकर भोजन किया।

भोजन के पश्चात् सत्ता रानी ने विदा ली और श्रीलाल जी सेवा माता तथा विनय भाई से कुछ अन्य आवश्यक बातें करने के लिए ठहर गये।

सेवा माता की उपस्थिति में आज विनय भाई और श्रीलाल जी का छः वर्ष का मौन टूटा और विनय भाई ने विनम्रतापूर्वक कहा, "आपने जब से सत्ता रानी के साथ सम्बन्ध स्थापित किया है तब से आपके और जनता के बीच एक दीवार खड़ी हो गई है।"

"ऐसा मैं भी अनुभव कर रहा हूँ," श्रीलाल जी ने कहा।

आपका जनता और जनता के सम्बन्धी तथा इष्टमित्रों से सीधा सम्पर्क कम होता जा रहा है। इसका कितना भयंकर कुपरिणाम हो सकता है, कभी आपने इस दिशा में भी विचार किया ?" विनय भाई ने कहा।

विनय भाई की बात सुनकर श्रीलाल जी बोले, "आजकल मैं इसी विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहा हूँ विनय ! परन्तु सत्ता से सम्बन्ध हो जाने का अर्थ यह नहीं कि मैं कोई जादूगर बन गया हूँ। इतना भी तो जनता बहन को समझना ही चाहिए। एक इन्सान हूँ मैं भी, और इन्सान की सीमा में रहकर कार्य कर रहा हूँ। जनता बहन को चाहिए कि वह अपने सर्वव्यापक, सर्वशक्तिशाली, सर्वगुण सम्पन्न भगवान् का आरोप मेरे अन्दर करने की कृपा न करें।"

"आपका कथन सर्वथा सत्य है श्रीलाल जी और मैं उससे पूर्णतः सहमत हूँ। जनता को भी अपने भाई श्रीलाल की योग्यता, त्याग और कर्मठता पर पूर्ण विश्वास है, परन्तु फिर भी पारस्परिक सम्पर्क का जो जीवन आपका जन-आन्दोलन-काल में रहा, आज उसका नितान्त अभाव दिखाई देता है।" विनय भाई ने कहा।

"सत्ता के कार्यक्रमों में मुझे इस बीच कितना व्यस्त र

कभी तुमने इस पर भी विचार किया है विनय ? स्वतन्त्रता-प्राप्ति और देश के विभाजन ने कितनी समस्याओं को जन्म दिया और उनका कितनी कठिनाइयों के साथ सामना किया गया, कभी तुमने इस दिशा में भी सोचा है विनय ?" श्रीलाल जी ने गम्भीरतापूर्वक पूछा ।

"निश्चित रूप से सोचा है, और सोचा ही नहीं, अपने साहित्य में उस पर प्रकाश भी डाला है, सुझाव भी दिये हैं।" विनय भाई ने मुस्करा-कर कहा ।

"दुनियाँ से दूर आश्रम बनाकर बैठ गये हो विनय ! केवल लेखनी के महारथी की ही आज जनता को आवश्यकता नहीं है । इससे आगे बढ़ने का भी कभी विचार किया है तुमने ?" श्रीलाल जी बोले ।

सेवा माता के चेहरे पर श्रीलाल जी की बात सुनकर मुस्कान खेल उठी और उन्होंने मन-ही-मन सोचा, "श्रीलाल जी ने विनय को रचनात्मक क्षेत्र में घसीट लाने के लिए एक सशक्त झटका दिया ।"

विनय भाई ने श्रीलाल जी की बात सुनकर कहा, "लेखक का कार्य है मानव-जीवन की सचाई को आगे बढ़ाना । लेखक और जनता के बीच सत्ता की दीवार नहीं है । वह जन-जन के हृदय में उठने वाले आन्दोलनों को समझता और परखता है ।"

श्रीलाल जी बोले, 'परन्तु विनय ! आज केवल समझने और परखने का ही युग नहीं रह गया है । समझने और परखने के पश्चात् सही दिशा में सुझाव देने और उन सुझावों को कार्यान्वित करने का समय आ गया है आज ।"

श्रीलाल जी की यह बात सुनकर प्रमिला बोली, "चिन्ता न करो भैया ! उसे क्रियान्वित करने की भी योजना बनकर तैयार हो चुकी है। इनकी योजना को क्रियान्वित करने का उत्तरदायित्व आपकी छोटी बहन ने अपने सिर लिया है ।

इसी समय सेवा माता ने 'भारत साहित्य सहयोग' की योजना के पन्ने श्रीलाल जी के हाथों में देते हुए कहा, "योजना बहुत सुन्दर बनाई है

विनय ने श्रीलाल ! जन-हित से सम्बन्धित सत् साहित्य को जनता तक पहुँचने का बहुत ही सुन्दर सुझाव दिया है ।

साहित्य को दिमाग़ी उछल-कूद के क्षेत्र से बाहर निकालकर जन-जागरण और जन-कल्याण की दिशा में रचनात्मक रूप से बढ़ने का अवसर भी इस योजना द्वारा मिलेगा ।"

श्रीलाल जी ने योजना को उलट-पलट कर देखा और फिर उन्हें घर के द्वार पर लटकी हुई उस पट्टी का ध्यान आया जिस पर "भारत साहित्य सहयोग" लिखा था ।

श्रीलाल जी के मुख-मण्डल पर मुस्कान की रेखा खिंच गई और वह गद्गद् होकर बोले, "तुमने बहुत ही सुन्दर दिशा में सोचा है विनय ! जनता और उसकी सन्तान को ऐसे साहित्य की नितान्त आवश्यकता है । आज के साहित्यकारों को समय की गति पहचानकर साहित्य-रचना करनी चाहिए, इसमें कोई संदेह नहीं ।"

विनय भाई बोले. "मैं आपके विचारों से पूरी तरह सहमत हूँ । स्वस्थ साहित्य का विकास किन्हीं रूढ़िवादी शृंखलाओं के बीच बँधकर नहीं चल सकता । उसे जन-जीवन की भावना और उसके विचार का माध्यम बनना होगा । मानव के समक्ष भविष्य की मंगलमय कामना का स्वरूप प्रस्तुत करना होगा ।"

"तुम्हारा यह कार्य मेरी जन-जागृति की कल्पना को बल देगा विनय ! जिसके देश को राजा के अंकुश से मुक्त कराया वह संघर्ष मेरा नही था । वह सेवा माता, जनता बहन, तपस्वी सुनील, आचार्य प्रकाश, प्रमिला, विनय और सभी के बाल-बच्चों, नाते-रिश्तेदारों, सगे सम्बन्धियों और इष्टमित्रों का था, उसमें मुझे सफलता मिली। सफलता के फलस्वरूप प्राप्त की सत्ता को साथ लेकर मैंने देश के जीवन को सुखी बनाने की दिशा में सोचा ।" श्रीलाल जी ने कहा ।

"आपने बहुत ठीक सोचा, यही आपको सोचना चाहिए था और इसी की हम सब आपसे आशा रखते हैं । मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप

इसके अतिरिक्त और कुछ सोच ही नहीं सकते ।" विनय भाई ने कहा ।

विनय भाई की इस बात पर प्रमिला मुस्कराकर बोली, "भैया को क्या पता कि इसी बात के पीछे एक दिन घोष बाबू और इनमें काफ़ी तनातनी हो गई और उन्होंने इनके विचारों पर यहाँ तक कीचड़ उछाली कि यह आपकी वकालत इसलिए कर रहे हैं कि आप मेरे भाई हैं । और हो सकता है कि आप गुप्त रूप से इन्हें सहायता भी करते हों ।"

प्रमिला की बात सुनकर सेवा माता बोलीं, "घोष बेटे की यह पुरानी आदत है प्रमिला ! बड़ी जल्दबाज़ी है उसके मस्तिष्क में ! विनय के लिए उसने ऐसी बात कही, कोई यह बड़ी बात नहीं, उसने तो कभी तुम्हारे पिता को भी पूंजीपतियों का दास कहने में संकोच नहीं किया।"

"इसमें कोई संदेह नहीं ।" श्रीलाल जी ने भारी मन से कहा ।

"तब फिर क्या आप समझते हैं कि विनय का ही मस्तिष्क इतना कच्चा है कि उसमें जो बीज भी चाहे जमकर वृक्ष बन सकता है । विनय अपने मस्तिष्क की बगिया का स्वयं माली है । वह उसमें वे ही पौदे उगने देगा जो देश में अपने फूलों की सुगन्धि फैला सकें, जो अपने फलों से देश के रहने वालों की भूख मिटा सकें ।" विनय भाई ने कहा ।

विनय भाई की बात सुनकर श्रीलाल जी आनन्द-विभोर हो उठे । उन्हें जन-जागृति-आन्दोलन प्रारम्भ करने की दिशा में देश के एक सच्चे विचारक का योग मिला ।

"आपको जनता का हार्दिक सहयोग प्राप्त है और फिर भी आप अनुभव करते हैं कि उस सहयोग में वह मिठास नहीं है, वह आकर्षण नहीं है, जो उन जन-आन्दोलनों में था जब जनता का बच्चा-बच्चा राजा की गोलियों, लाठियों, बेंतों और जेलों की चिंता न करता हुआ भारत-सेवक की आवाज़ को अपनी आवाज़ बनाता हुआ आगे बढ़ता था ।

आज वही सहयोग आप दुबारा प्राप्त करना चाहते हैं ।" विनय भाई ने कहा ।

"तुमने मेरे मन की बात कह दी विनय ! आज मैं सचमुच अनुभव

कर रहा हूँ कि बिना जन-सहयोग के मेरी और सत्ता की योजनाएँ पूरी होती दिखाई नहीं देतीं ।"

श्रीलाल जी की सचाई पर विनय भाई आत्मविभोर होकर बोले, "इसका कारण यही है आदरणीय, कि जनता और जनता के बाल-बच्चे पहले तो यह समझ ही नहीं पाये कि आपकी योजनाओं में जन-जीवन को ऊपर उठाने की कितनी शक्ति है। और जो दूसरी महत्वपूर्ण बात है, वह है उनकी यह समझने की अनभिज्ञता कि उन बड़े-बड़े कामों में वे अपने जन-बल का कितना महत्वपूर्ण योग दे सकते हैं।" विनय भाई ने कहा।

"ठीक इसी दिशा में मै भी विचार कर रहा हूँ विनय ! तुम्हारी योजना को पढ़कर कल अपना विचार लिख भेजूंगा। परन्तु मैं यह नहीं चाहता कि देश की जनता को वहुत से आन्दोलन वहुत सी संस्थाओं द्वारा संचालित करके भिन्न दिशाओं में घसीटा जाय। एक सी विचार-धाराओं को एक संस्था के अन्तर्गत कार्य करना चाहिए।" जाने के लिए खड़े होते हुए श्रीलाल जी बोले। और फिर सेवा माता को नमस्कार करके पूछा, "आप यहाँ कब तक हैं माँ ?"

"मुझे अभी जाना है। सुनील मेरी प्रतीक्षा में होगा। मेरठ ज़िले के एक गाँव में उसने ग्रामोद्योगाश्रम खोला है। आज संध्या को उसका उद्-घाटन करना है।" सेवा माता ने कहा।

इसके पश्चात् और कोई महत्वपूर्ण बात न हुई। श्रीलाल जी को आश्रम के द्वार तक छोड़ने के लिए प्रमिला, विनय भाई और सेवा माता आये।

श्रीलाल जी के चले जाने पर सेवा माता ने कहा, "कितना सुन्दर हो विनय, कि तुम दोनों मेरे साथ चलकर सुनील के रचनात्मक कार्य-क्रमों को देखो। तुम्हें सचमुच ही एक नवीन जागरण की प्रेरणा मिलेगी। जन-जीवन का नियोजित विकास नहीं, स्वाभाविक प्रगति के दर्शन होंगे। सेवा और सद्भावना का साकार स्वरूप देखने को मिलेगा।"

"आपकी आज्ञा का पालन करना विनय ने सर्वदा अपना कर्तव्य समझा है माँ ! तपस्वी सुनील और उनके कार्य-क्रम का मैं हृदय से स्वागत करता हूँ। उनकी जन-जीवन के उदय की कल्पना में मानसिक शांति, हार्दिक सनोष और शारीरिक सुख-सम्पन्नता निहित है, मानव के विकास का चरम लक्ष्य है। मेरा तन, मेरा मन और मेरी कला, उनसे कोई सम्बन्ध न रहने पर भी, कोई परिचय न होने पर भी, उनके कार्य-क्रम में सहयोग के लिए प्रस्तुत हैं।" विनय भाई ने कहा।

विनय भाई की बात सुनकर सेवा माता को हार्दिक संतोष हुआ और प्रसन्नतापूर्वक बोलीं, "तुम्हारी विचारधारा बहुत स्पष्ट है विनय, जनता की सुख-समृद्धि और संतोप की प्रेरणा तुम्हारे मस्तिष्क और हृदय में बलवती है। यह देखकर मेरा हृदय गद्-गद् हो उठा है।"

सेवा माता की बात सुनकर प्रमिला मुस्कराती हुई बोली, "तपस्वी सुनील को माँ, यह जन-जीवन की उन्नति का सही मार्गद्रष्टा समझते हैं। राष्ट्र-पिता के जन-जागरण का सही रूप इन्हें तपस्वी सुनील के सर्वोदय में ही दिखाई देता है। सर्वोदय को यह मानव की उन्नति की दिशा में समाज की अपनी योजना समझते हैं। तपस्वी सुनील की ग्रामोद्योग योजना गंगा की वह पवित्र धारा है जिसमें सब सरकारी और गैर सरकार योजनाएँ अपने-अपने क्षेत्रों में फलती-फूलती, बहती-सूखती आकर मिल जायेंगी और गंगा माता इन सबको अपने पवित्र हृदय में समेटकर अपने जैसा ही पवित्र बनाकर सर्वोदय के सागर में मिल जायगी।"

सेवा माता प्रमिला की बात सुनकर मंत्र-मुग्ध हो गई। एकटक प्रमिला के चेहरे को निहारती रहीं। अपनी सेवा और अपनी सेवा-भावना की प्रतिमा उन्हें अपने सामने बैठी दिखाई दी।

एक क्षण पश्चात् वह गम्भीरतापूर्वक बोलीं, "प्रमिला और विनय, तुम दोनों ने मेरे हृदय और मस्तिष्क को प्रसन्नता और शांति का वातावरण प्रदान किया है। तपस्वी सुनील वास्तव में सर्वोदय की दिशा में जा रहा है।

परन्तु यहाँ इतना न भूलो कि श्रीलाल का स्नेह और सहयोग भी उसके प्रति कम नहीं है। बड़े ही निर्लिप्त भाव से श्रीलाल सुनील के कार्यक्रमों में योग देता है। सहयोग के इसी मार्ग का अनुसरण करके भारत की पवित्र भूमि पर सर्वोदय लाने का स्वप्न पूरा होगा। यही तुम्हारे पिता की कल्पना थी।"

राष्ट्र-पिता की याद आने पर सेवा माता की वाणी में भारीपन आ गया। उनका गला रुँधा-रुँधा सा हो गया। पुरानी स्मृतियाँ नेत्रों के सम्मुख साकार चित्रित हो उठीं। प्रमिला के पिता का जीवन-संघर्ष उनकी पुतलियों में उतर आया। एक क्षण के लिए उनके नेत्र बन्द हो गये। अतीत की अनमोल स्मृति को पलकों में समेटकर सेवा माता मौन बैठी रहीं।

सेवा माता के मौन को रमेश ने कमरे में प्रवेश करके तोड़ दिया और अपने हाथों में उठाया हुआ एक बड़ा चित्र सेवा माता के सम्मुख दीवार के सहारे रखता हुआ बोला, "रात भर परिश्रम करके सेवा माता की सेवा में अपनी टूटी-फूटी कला का यह उपहार प्रस्तुत कर पाया हूँ। तपस्वी सुनील के आश्रम के लिए इससे सुन्दर भेंट मेरी समझ में नहीं आई।"

सेवा माता, विनय भाई और प्रमिला ने एकटक उस चित्र पर देखा तो मानो उनके नेत्र ही चित्र से चिपककर रह गये। तीनों की वाणी मौन थी। मंत्र-मुग्ध से बैठे-बैठे उस चित्र की ओर देख रहे थे।

चित्र राष्ट्र-पिता का था और उनके दोनों ओर भारतसेवक श्रीलाल तथा तपस्वी सुनील खड़े थे। दोनों के कंधों पर हाथ रखकर राष्ट्र-पिता सर्वोदय के प्रकाश की ओर संकेत कर रहे थे।

सेवा माता चित्र को देखकर बोलीं, "देश के समाज को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली त्रिमूर्ति को नमस्कार करती हूँ। सेवा के दोनों रूप सामने हैं।"

विनय भाई और प्रमिला ने भी त्रिमूर्ति को नमस्कार किया।

रमेश आनन्दविभोर हो उठा। उसकी कला का पुरस्कार उसे मिल

गया । सेवा माता, विनय भाई और प्रमिला के नेत्रो के सम्मुख वह स्वर्णिम अतीत का चित्र प्रस्तुत कर सका, यही उसकी कला की सफलता थी।

सेवा माता रमेश की ओर देखकर बोली, "बेटा रमेश, तुम एक दिन विश्व के महान् चित्रकार होगे । तुम्हारे चित्रो में कल्पना और भावना का सुन्दर सामजस्य है ।"

"सेवा माता का आशीर्वाद पाकर मेरी कला निरन्तर विकास और सफलता की दिशा में अग्रसर होगी, इसमे मुझे कोई सन्देह नही ।" रमेश ने कहा ।

इसी समय प्रमिला मुस्कराकर बोली, "सरल और स्वाभाविक चित्र बनाने में तुम्हारी कला वास्तव में बडी दक्ष है रमेश ! परन्तु तुम्हारे भारतसेवक के चित्र की क्या स्थिति है ?"

"भारतसेवक की स्थिति जहाँ की तहाँ है भाभी ! वह समस्या ज्यो-की-त्यो मस्तिष्क में स्थिर है । भारतसेवक का सही रूप अभी तक निखरकर मेरे सम्मुख नही आया और अब मैने यह निश्चय कर लिया है कि जब तक उसका सही चित्र सामने नही आयगा, व्यर्थ के खाके बनाने का प्रयास नही करूँगा !" रमेश ने कहा ।

सेवा माता घडी की ओर देखकर बोली, "यह तो बारह बजना चाहते हैं और मुझे सुनील के आश्रम पर सध्या के चार बजे पहुँच जाना चाहिए। विलम्ब का समय नही रहा प्रमिला ! तैयारी करो चलने की और रमेश बेटे को भी साथ लेते चलो ।"

"मै तैयार हूँ माँ ।" प्रमिला ने कहा। "परन्तु सध्या को इनसे मिलने के लिए कुछ महानुभाव यहाँ आने वाले है। इसलिए इनका चलना तो सम्भव न हो सकेगा । मै और रमेश आपके साथ चल रहे हैं ।"

विनय भाई ने चलते समय सेवा माता से कहा, "आशा है अब आप पिछली अवधि से कम दिन में अपने विनय को याद करेंगी ।"

"और विनय भी अपनी मानसिक परिधि को तोडकर जन-जागरण के मार्ग पर पग बढायगा ।" सेवा माता ने मुस्कराकर कहा ।

"निश्चित रूप से बढायगा ।" विनय भाई सेवा माता के स्वर में स्वर मिलाकर बोले ।

भारतसेवक श्रीलाल ने विनय भाई की 'भारत साहित्य सहयोग' योजना को आद्योपांत पढ़ा और पाया कि उसका उनकी जन-जागृति की योजना से घनिष्ट सम्बन्ध है।

मनुष्य के विचारों और हृदय पर किसी बात के सुनने, पढ़ने या देखने का प्रभाव पड़ता है। विचार और हृदय परिवर्तन की ये क्रियाएँ अपने-अपने क्षेत्र में अपना स्थान रखती हैं।

मानवीय विचारों और भावनाओं के संकलन में साहित्य का विशेष स्थान है। साहित्य में मानव के जीवन की झाँकी मिलती है। यही मानवीय झाँकी साहित्य का प्राण है, जीवन की प्रेरणा है और मानव के उन्नत भविष्य का मार्गदर्शन है।

देश की जनता को सत् साहित्य का सहयोग मिलना ही चाहिए। सत् साहित्य जनता में आशा, उमंग, आनन्द और प्रगति का वातावरण उत्पन्न करेगा। जहाँ वह मानव में अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष को बल देगा वहाँ उनके अन्दर अपने उत्तरदायित्व को निभाने की प्रेरणा उत्पन्न करेगा।

भारतसेवक श्रीलाल यह विचार कर ही रहे थे कि उसी समय सत्ता रानी ने कमरे में प्रवेश किया। भारतसेवक ने सत्ता रानी से पूछा, "तुमने विनय भाई की 'भारत साहित्य सहयोग' योजना को पढ़कर देखा है सत्ता !"

सत्ता रानी को भारतसेवक के सम्पर्क में आये पाँच-छः वर्ष व्यतीत हो चुके थे और अब वह उनके हाव-भावों और मुखाकृति को देखकर ही उनके अन्दर के भावों को जानने में पर्याप्त चतुर हो गई थी।

सत्ता ने अविलम्ब उत्तर दिया, "योजना बहुत सुन्दर ही नहीं, मौलिक भी है। साथ-ही-साथ आपकी जन-जागृति और जन-सम्पर्क योजनाओं का

भी इससे गहरा सम्बन्ध है। इस योजना के द्वारा जन-जागृति का बहुत बड़ा माध्यम तैयार हो सकता है।"

भारतसेवक सत्ता रानी की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। सत्ता रानी ने वही बात कही जो उनके मन की बात थी, जो वह स्वयं विचार कर रहे थे।

सत्ता रानी मुस्कराकर बोली, "विनय भाई की यह योजना जन-जागृति की आधार-शिला के रूप में स्थापित की जा सकती है। योजना के फलीभूत होने की दिशा मे मेरा पूर्ण सहयोग रहेगा।"

"तुम्हारा सहयोग तो रहेगा ही, परन्तु इस योजना की सफलता केवल तुम्हारे सहयोग पर ही आधारित नही है। इसकी सफलता जनता का सहयोग चाहती है।" भारतसेवक श्रीलाल बोले।

सत्ता ने और भी मीठी मुस्कान से मुस्कराकर कहा, "जनता के सहयोग की भी आपके पास कौन कमी है। आपके सकेत पर जनता एक योजना में सहयोग तो क्या, प्राणों को न्यौछावर कर सकती है।"

भारतसेवक श्रीलाल को सत्ता रानी की इस बात में कोई अतिशयोक्ति दिखाई नही दी। उसने अपने कंठ के एक स्वर पर भारत के लालों को गोलियों की बौछारों के सामने हँसते-खेलते आगे बढ़ते देखा है और आज भी उसके संकेत में वही शक्ति वर्तमान है।

भारतसेवक श्रीलाल ने निश्चय किया कि विनय भाई को उनकी योजना संचालित करने के लिए जन-जागृति-आन्दोलन में निमन्त्रित किया जाना चाहिए।

ये बातें चल ही रही थी कि इसी समय चपरासी ने एक चिट लाकर भारतसेवक श्रीलाल के हाथ में दी। चिट को देखते ही श्रीलाल प्रसन्नता-पूर्वक उछलकर बोले, "विनय आया है, देखो तो तनिक सत्ता रानी! विनय को सम्मानपूर्वक अन्दर लिवा लाओ।"

सत्ता रानी तुरन्त विनय भाई के स्वागत के लिए बाहर आईं और उन्हें साथ लेकर भारतसेवक के कमरे में ले गईं।

विनय भाई को यह देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि भारतसेवक श्रीलाल उन्हीं की योजना के पन्ने अपने हाथों में लिए बैठे हैं।

विनय भाई का प्रेमपूर्वक स्वागत करते हुए भारतसेवक श्रीलाल बोले, "इतने निकट रहकर इतने दिन बाद इधर आये हो विनय!"

विनय भाई ने सरलतापूर्वक उत्तर दिया, "भारतसेवक श्रीलाल को जब विनय की याद आई तब विनय आकर उपस्थित हो गया। अनावश्यक आकर आपका समय नष्ट करना मैंने उचित नही समझा।"

"प्रमिला बहन को साथ क्यों नही लेते आये?" सत्ता रानी ने आत्मीयता प्रदर्शित करते हुए पूछा।

विनय भाई ने उसी सरलता के साथ उत्तर दिया, "प्रमिला और रमेश सेवा माता के साथ तपस्वी सुनील के ग्रामोद्योग आश्रम के उद्घाटन-समारोह में चले गये। सन्ध्या तक कहीं लौट पायेंगे।"

तपस्वी सुनील के ग्रामोद्योग आश्रम की बात सुनकर भारतसेवक श्रीलाल बोले, "तपस्वी सुनील ने विनय! वास्तव में सर्वसाधारण के उदय का मार्ग प्रशस्त किया है। देश की भूमि पर देश की जनता के अधिकार का महान् सन्देश दिया है।"

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "यही तो साम्यवाद की चरम सीमा है। सबके उदय में अपने उदय की कल्पना कितनी महान् है तपस्वी सुनील की।" और फिर सत्ता रानी की ओर देखते हुए तनिक मुस्कराकर बोले, "और वह भी सत्ता रानी के अंकुश से चालित होकर नही, मानव के विशुद्ध मानवीय विचारों से प्रेरित होकर।"

"इसमें कोई सन्देह नही विनय! तपस्वी सुनील ने राष्ट्र को एक महान् विचार दिया है, कर्त्तव्य की अनथक प्रेरणा दी है। अब रही ग्रामोद्योग आश्रमों की बात, सो वह तो राष्ट्र-पिता की पुरानी देन है। राष्ट्र-पिता के लगाये हुए पौधे आज भी देश की जनता को अपनी शीतल छाया में सुरक्षित लिए बैठे हैं। वैसे ही अनेकों वृक्षों का देश में बीजारोपण होगा जो देश की जनता को अपनी शीतल छाया प्रदान कर सकेंगे।"

विनय भाई ने भारतसेवक श्रीलाल की बात सुनी और सत्ता रानी ने गम्भीर दृष्टि से उनकी मुखाकृति का निरीक्षण किया। उनके चेहरे पर आने वाले भावों के उतार-चढ़ावों को परखा।

विनय भाई बोले, "आपका सामुदायिक विकास का योजनाबद्ध प्रयास वास्तव में राष्ट्र-निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण क़दम है। सत्ता रानी की व्यवस्था के अन्तर्गत इसका संचालन भी बहुत बड़े पैमाने पर, बहुत बड़ी शान-शौकत के साथ, बहुत प्रभावशाली योजना के अन्तर्गत हो रहा है। शासन और आपकी पूरी शक्ति इस दिशा में सफलता के लिए प्रयत्नशील है। साधनों की भी आपके और सत्ता रानी के पास कमी नहीं है परन्तु...... ।"

कहते-कहते विनय भाई रुक गये।

भारतसेवक श्रीलाल को लगा कि मानो जो महत्वपूर्ण बात विनय कहना चाहता था वह उसने नहीं कही। वह बोले, "अपने मन की बात स्पष्ट कहो विनय ! मुझे अपनी आलोचना सुनने में तनिक भी कष्ट न होगा।"

सत्ता रानी आँखें तरेरती हुई मुस्कराकर बोलीं, "मन की बात को मन में न रहने दो विनय भाई ! साफ़-साफ़ कहो जो कुछ कहना चाहते हो। मेरी भूलों की ओर यदि मेरा ध्यान आकर्षित करोगे तो मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी।"

सत्ता रानी की बात सुनकर विनय भाई ने कहा, "क्षमा करना सत्ता रानी ! भूलें गिनाने की बातें आम तौर पर कड़वी लगती हैं, परन्तु एक साहित्यकार होने के नाते मेरा कड़वाहट से कोई सम्बन्ध नहीं।"

"विनय का यह कहने का अर्थ है," भारतसेवक बीच ही में सत्ता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हुए बोल उठे, "कि तुम इसके व्यंग्य और कटाक्षों को खाँड में पगी कोनैन की गोलियाँ समझा करो सत्ता !"

भारतसेवक का रुख विनय भाई की ओर आत्मीयता का देखकर

सत्ता को भी विनय भाई के और निकट आने में कठिनाई न हुई। वह मुस्कराकर बोलीं, "विनय भाई की बातों में तीखा व्यंग्य होने पर भी मैंने सर्वदा अपनेपन के दर्शन किये हैं। न तो इनमें घोष बाबू जैसा चिड़-चिड़ापन ही है और न रमण जी जैसी रूढ़िवादिता ही।"

विनय भाई सत्ता की बात सुनकर मुस्कराते हुए बोले, "ये चापलूसी की बातें आपके और भारतसेवक के बीच ही शोभा देती हैं सत्ता रानी!"

"और मेरे इनके सम्बन्ध ऐसे बन गये हैं कि जिनमें चापलूसी की आवश्यकता नहीं रह जाती।" भारतसेवक सतर्कतापूर्वक बोला।

इस पर सत्ता ने मुस्कराकर कहा, "आप दोनों मुझे लक्ष बनाकर जो बातें कर रहे हैं, उन्हें मैं समझती न हूँ, ऐसी बात नहीं है, परन्तु यह सच बात है कि मैं आप दोनों के सहयोग में देश और देश की जनता का महान् हित देखती हूँ।"

सत्ता रानी की बात सुनकर आज विनय भाई पर एक गहरा प्रभाव हुआ। उन्होंने अनुभव किया कि भारतसेवक के सम्पर्क में आने पर सत्ता के चरित्र में एक महान् परिवर्तन दिखाई देता है। अब सत्ता ने देश और देश की जनता की दिशा में विचारना प्रारम्भ कर दिया है। सत्ता अब केवल राजा की हाँ-में-हाँ मिलाकर शासन करनेवाली मशीन मात्र नहीं रह गई है।

विनय भाई सत्ता की ओर मुँह करके बोले, "सत्ता रानी! आपनें देश की जनता के कल्याण की भावना को अपने हृदय में स्थापित किया, इसके लिए आप मेरे हार्दिक धन्यवाद की पात्र हैं। भारतसेवक के सम्पर्क में आने से तुम्हारा यह हृदय-परिवर्तन देखकर मुझे आज जितनी प्रसन्नता हो रही है, उसका वर्णन नहीं कर सकता।"

विनय भाई की बात सुनकर सत्ता रानी लजा गईं और कुछ शरमाई-सी आँखों से अपने स्वर में कृतज्ञता की ध्वनि भरकर बोलीं, "इसमें कोई सन्देह नहीं विनय भाई! भारतसेवक के सम्पर्क ने मेरा जीवन ही बदल डाला। विचारों की दिशा ही बदल दी।

और मैंने भी जिस दिन से भारतसेवक से सम्पर्क स्थापित किया है अपनी पूरी शक्ति इनकी आज्ञा का पालन करने में पूर्ण दत्तचित्तता के साथ लगाई है।"

इस पर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "यही तो आपकी सबसे बडी विजय है सत्ता रानी ! आज्ञापालन से ही तो गृहिणी घर की रानी बन जाती है। यह आपका जन्मजात गुण है ।"

विनय भाई के इस अंतिम व्यंग्य पर सत्ता रानी मुस्कराकर बोलीं, "आज्ञापालन और सेवा के बीच कोई बड़ी दीवार नही है विनय भाई !"

"बहुत बड़ी दीवार है अभी सत्ता रानी ! आपके जीवन में इतना बड़ा परिवर्तन आने पर भी वह दीवार जहाँ की तहाँ है। उसमें कोई परिवर्तन नही हुआ।"

यह कहते-कहते विनय भाई का मन भारी हो उठा। उसके नेत्र पसीज गये। परन्तु फिर भी दृढता के साथ बोले, "राष्ट्र-पिता का कुसमय में निधन इसका मूल कारण है सत्ता रानी ! आपको दुर्भाग्य से केवल भारतसेवक का ही सम्पर्क प्राप्त हुआ है। राष्ट्र-पिता से आपका सम्पर्क हुआ होता तो सेवा माता और आपके बीच जो ऊँची दीवार दिखाई देती है वह कभी की गिर गई होती। आपका और सेवा माता का स्वरूप एक हो गया होता।"

भारतसेवक विनय भाई की बात सुनकर गद्-गद् हो उठे और हार्दिक प्रसन्नतापूर्वक बोले, "तुमने मेरे मन की बात कह दी विनय ! माँ को समझने में सत्ता रानी आज भी असमर्थ हैं। जनता बहन के कुछ-कुछ निकट आती जा रही हे परन्तु बडा संकोच होता है इन्हें जनता बहन की नई पौद के उत्साहपूर्ण स्वर को सुनकर कभी-कभी इनका कलेजा अन्दर को बैठने लगता है विनय ! परन्तु फिर भी मैं इतना अवश्य कहूँगा इनकी प्रशंसा में कि जो नियामकता मैंने इनमें पाई है वह अपने में अपनी विशेषता रखती है।"

"इसमें कोई सन्देह नही।" विनय भाई ने सत्ता रानी में आज्ञापालन

के साथ-ही-साथ नियामकता का गुण भी देखा ।

बातों का क्रम बन्द करके भारतसेवक ने अपनी जन-जागृति की योजना निकालकर विनय भाई को देते हुए कहा, "भारत की जनता को जागरूक करके उसके उत्तरदायित्व का उसे ज्ञान कराने और सामूहिक उन्नति के लिए सहयोग प्रदान करने की प्रेरणा देने के लिए देश के एक कोने से दूसरे कोने तक जन-जागृति-आन्दोलन खड़ा करने की आवश्यकता है । आज जनता को स्वयं संगठित होकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देनी चाहिए ।

जनता का जीवन चिन्ताग्रस्त होता जा रहा है । जनता का चिन्ताग्रस्त होना देश की उन्नति के लिए घातक है । चिन्ता ऐसा रोग है कि उसमें सत्ता रानी के इन्जेक्शन भी काम नहीं देते ।"

विनय भाई ने भारतसेवक को आज निकट से देखा। उन्हें भारतसेवक अपनी स्थिति से असंतुष्ट मिला । विनय भाई बोले, "जनता की दशा आपसे छिपी नहीं है भारतसेवक ! उसके बच्चों का जीवन अनिश्चित है । इससे बड़ी चिंता किसी माता को और क्या हो सकती है ?"

विनय भाई की इस बात का उत्तर न देकर भारतसेवक ने कहा "योजना को पढ़कर देखना विनय ! इसमें कहीं तुम्हारी योजना अवश्य समा जायगी ।"

विनय भाई ने योजना को लेकर खड़े होते हुए नमस्कार करके कहा, "अब आज्ञा चाहूँगा भारतसेवक ! जन-जागृति की योजना में 'भारत साहित्य सहयोग' का बहुत महत्वपूर्ण स्थान बन सकता है । अपने जन-जागृति-आन्दोलन को आप 'भारत साहित्य सहयोग' की भूमि पर खड़ा कर सकते हैं ।"

चलते समय विनय भाई ने भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता रानी को प्रणाम किया । सत्ता मुस्कराकर बोलीं, "जहाँ तक मुझे स्मरण है हमारे गठबन्धन के समारोह के पश्चात् आज ही आपने इधर आने का कष्ट किया है । मुझे आशा है कि अब भविष्य में यह कष्ट करने की अवधि इतनी

लम्बी नही होगी।"

सत्ता से भी गहरी और गम्भीर वाणी में भारतसेवक ने कहा, "सत्ता से मेरा गठबन्धन कराके विनय ! कुछ इष्ट मित्र और सगे-सम्बन्धी अपने मनों में यह धारणा ले बैठे कि बस उनका कार्य समाप्त हो गया। देश को स्वतंत्र भर कराना उनका लक्ष्य था, उससे आगे नहीं।"

सत्ता रानी और भारतसेवक की बातों का उत्तर विनय भाई ने अपनी सरल मुस्कान से दिया और फिर दोनों से विदा ली।

: ११ :

विनय भाई ने आज पूरी सात वर्ष की तपस्या के पश्चात् घर से बारह क़दम रखा। गत सात वर्ष आपने साहित्य की मौन सेवा में व्यतीत किये।

भारतसेवक के यहाँ से चलकर विनय भाई घोष बाबू के कार्यालय की ओर घूम गये।

आज अचानक ही विनय भाई को अपने कार्यालय में पाकर घोष बाबू के आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

खड़े होकर प्रेम-भाव से मिले और फिर पूछा, "आज आपने इतना कष्ट कैसे किया ?"

विनय भाई ने सरलतापूर्वक उत्तर दिया, "भारतसेवक श्रीलाल जी से मिलने गया था। लौटते समय सोचा आपके भी दर्शन करता चलूं।"

यह सुनकर घोष बाबू ने चौकन्ने होकर पूछा, "भारतसेवक के यहाँ आना-जाना आपने कब से प्रारम्भ कर दिया ?"

"आज ही से ! अभी-अभी चन्द घंटे पूर्व से।" विनय भाई ने मुस्करा-कर उत्तर दिया।

विनय भाई को मुस्कराते देखकर घोष बाबू भी तीखे व्यंग के साथ आँखें तरेरकर बोले, "अफ़वाहों को पहले मैं कोरी अफ़वाह ही समझा करता था। परन्तु देखने में यह आया है कि अफ़वाहों में भी कुछ-न-कुछ तथ्य अवश्य होता है।"

विनय भाई ने घोष बाबू की बात को समझते हुए सरलतापूर्वक पूछा, "आज आपको कौन-सी अफ़वाह का सही तथ्य ज्ञात हुआ ? क्या मैं भी परिचित हो सकूंगा उससे ?"

"अवश्य हो सकोगे विनय भाई ! अभी-अभी एक साहित्यकार पधारे थे। कह रहे थे कि विनय भाई ने कोई सरकारी नौकरी कर ली

है।" घोप बाबू ने कहा

घोप बाबू की बात सुनकर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "की तो नहीं है अभी, परन्तु करने का विचार अवश्य है घोष बाबू ! आखिर कहीं तो हमें भी अपना कोई सहारा बनाना ही चाहिए।"

विनय भाई की यह बात सुनकर घोप बाबू गम्भीरतापूर्वक बोले, "आपको विस्मरण नहीं होना चाहिए विनय भाई कि एक दिन मै आपको अपने बुलेटिन के सम्पादन के लिए निमंत्रित करने गया था। यदि आपने स्वीकार कर लिया होता तो निश्चित रूप से यह रोटी की समस्या आपके सामने इस भयंकर रूप में न आ खड़ी होती जैसी आज खड़ी है कि आपको अपना आत्मसम्मान खोकर भारतसेवक की शरण में जाकर सत्ता की दासता स्वीकार करनी पड़ रही है।"

घोष बाबू की गम्भीरता को देखकर विनय भाई मन-ही-मन प्रसन्न हो उठे; परन्तु उन्होंने मन के भावों को अपने चेहरे पर नहीं छा जाने दिया। वह उसी प्रकार गम्भीर बने बैठे रहे और उनके चेहरे से यह झलक रहा था कि वह वास्तव में घोष बाबू के कथन से बहुत ही प्रभावित हुए हैं और अपने मन में अपनी भूल पर उन्हें बड़ा भारी पश्चात्ताप है।

घोष बाबू और आगे बढ़कर बोले, "दफ्तर देखा आपने हमारे जन-बुलेटिन का ?"

"देख रहा हूँ घोष बाबू !" विनय भाई बोले। "और देख रहा हूँ कि सब कुछ बदल गया, केवल आपका पुराना सूट और फटा हुआ जूता वैसा ही बना है जैसा पहले था।"

यह सुनकर घोप बाबू बहुत ज़ोर से हँसे, बहुत ज़ोर से हँसे और फिर विचारों की अभिन्नता प्रकट करते हुए बोले, "यह सूट-बूट बड़ा करामाती है विनय भाई ! इसका जो प्रभाव देश के मज़दूर-वर्ग पर पड़ता है वह सुन्दर वस्त्रों का नहीं पड़ता। और तुम्हारे भारतसेवक की नुकीली कलफ़-दार डेढ़ इंच वाली गाँधी टोपी से प्रारम्भ होकर सिल्क के कुर्ते पर सिल्क की सुन्दर शेरवानी, जिसके नीचे खद्दर का सफ़ेद चूड़ीदार पायजामा, सफ़ेद

जुर्राब और साबर की सफ़ेद जूतियों वाली वेशभूषा तो मज़दूरों के दिलों में एक जलन सी पैदा कर देती है।"

"आपके कथन से मैं सोलह आने सहमत हूँ घोष बाबू ! और भारतसेवक भी आपके बताये इस रहस्य को समझते न हों, ऐसा आप न समझें।" और भी गम्भीरता के साथ विनय भाई ने कहा।

विनय भाई का यह उत्तर सुनकर घोष बाबू तनिक सकपकाये और सुधरकर बोले, "आइये आपको अपने दफ्तर की सैर करायें।"

विनय भाई को घोष बाबू का दफ्तर देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। यहाँ का सब कार्यक्रम एक सुन्दर व्यवस्था के साथ चल रहा था। घोष बाबू का जन-सम्पर्क-विभाग बहुत ही ज़िम्मेदारी के साथ अपने सम्पर्क में आनेवालों की समस्याओं को समझ रहा था।

घोष बाबू ने अपने दफ्तर के विशेष कार्यकर्त्ताओं से विनय भाई का परिचय कराया और बतलाया कि किस प्रकार विनय भाई ने उनके साथ कंधे-से-कंधा भिड़ाकर देश के स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लिया था।

सब कुछ देखकर विनय भाई बोले, "आपके साहस और संगठन की शक्ति की मैं हृदय से सराहना करता हूँ घोष बाबू ! जीवन के जो गत सात वर्ष मैंने साहित्य की सेवा को दिये उन्हीं में आपने इस संस्था को जन्म दिया। मज़दूर-वर्ग के जीवन से सम्पर्क स्थापित करने के लिए जो जन-बुलेटिन प्रकाशित किया, वह भी अपने प्रकार का एक महत्वपूर्ण कार्य है।

आपने रचनात्मक कार्य किया है। इसी की आज देश को वास्तव में आवश्यकता है।"

विनय भाई की यह निर्भीक सम्मति अपने कार्य की सफलता के विषय में सुनकर घोष बाबू चकित रह गये। उनका विचार था कि भारतसेवक के पास नौकरी के लिए चक्कर लगाकर आनेवाले विनय भाई में उनके कार्य की सराहना करने का साहस न होगा।

घोष बाबू साहित्यकार की निर्भीक राय के सम्मुख नत-मस्तक हो गये।

उन्होंने पूछा, "क्या मैं पूछ सकता हूँ कि भारतसेवक के पास आप किस कार्य के लिए गये थे ?"

"मेरी कोई बात किसी से छिपी नहीं है घोष बाबू ! मैं कोई ऐसा कार्य करता ही नहीं जिसे कोई रहस्य कहा जा सके ।

गत सात वर्ष साहित्य की सेवा करने के पश्चात् मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि भारत में साहित्य का विकास विचित्र ढंग से हो रहा है। साहित्य-प्रकाशन और उसके प्रसार के साधनों का नितान्त अभाव है। जनता में पुस्तकें पढ़ने की रुचि है ही नहीं ।"

"साहित्य की दिशा में आपका अध्ययन बिलकुल ठीक है ।" घोष बाबू बोले ।

"इसी समस्या के हल को लेकर, 'भारत साहित्य सहयोग' योजना पर विचार हुआ । उधर भारतसेवक ने जन-सम्पर्क और जन-जागृति की योजना दी हैं । यह योजनाओं का युग है घोष बाबू !"

"तो भारतसेवक श्रीलाल आपको अपनी जन-सम्पर्क और जन-जागृति की योजना के लिए प्रयोग करने में सफल हो गये।" मुस्कराकर घोष बाबू ने पूछा ।

"सफलता का प्रश्न उनका नहीं है घोष बाबू ! यदि मैं अपने को उनके किसी कार्य के योग्य बना सका तो यह मेरे जीवन की बड़ी सफलता होगी । 'भारत साहित्य सहयोग' का मैं जन-सम्पर्क और जन-जागृति से गहरा सम्बन्ध समझता हूँ । इसीलिए मैं भारतसेवक श्रीलाल जी से स्वयं जाकर इसके विषय में मिला ।"

तनिक ठहरकर विनय भाई बोले, "घोष बाबू ! कितने दु:ख की बात है कि आज हम सब लोग अपने को विचारवान कहते हुए भी जीवन में एक साथ बिला विरोध के चलने का कोई मार्ग नहीं बना पाये । राजनीति का मतभेद हमारे जीवन की आवश्यकताओं, सामाजिक विकास, राष्ट्रीय संगठन के बीच में नहीं आना चाहिए और इन सब कामों को एक संगठित समाज द्वारा करना चाहिए ।"

घोष बाबू विनय भाई की बात सुनकर मुस्कराये और बहुत ही सरलता-पूर्वक कहा, "आपके भारतसेवक श्रीलाल किसी काम में पीछे रहने वाले नहीं हैं विनय भाई ! जो चीज़ आप सोचते हैं वह आपके सोचने से पहले बनाकर खड़ी कर देते हैं। आप विचार ही रहे हैं और भारतसेवक ने भारत की सेवा करनेवालों का समाज भी तैयार कर दिया। समाज क्या, नई सरकार बना दी एक।"

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "दोष आपका नहीं है घोष बाबू ! दोष इस युग का है कि जिस पर राजनीति इस बुरी तरह छा गई है कि मनुष्य की हर बात के दो अर्थ लगाये जाते हैं। विशेष रूप से विचारकों का यह मत हो गया है कि राजनीति के लोग राजनीति से बाहर की बात सोच ही नहीं सकते।"

"यही बात है विनय भाई ! और राजनीति के दाव-पेचों को समझना, उनकी हर बात की महँक लेना हमारे ही बूते की बात है। कोई गर्व की बात नहीं, काम है अपना।" घोष बाबू स्थिरता और गम्भीरता के साथ बोले।

घोष बाबू की बात सुनकर विनय भाई अपनी हँसी न रोक सके। और फिर एकदम सरल होकर बोले, "मैं अपने को राजनीति से जहाँ तक भी हो सकेगा दूर रखकर चलने का प्रयास करूँगा घोष बाबू ! भारत के वातावरण में जो विचारधाराएँ फैली हुई हैं उन्हें एक धारा में लाने का प्रयास करूँगा। जन-जीवन की समस्याओं का अध्ययन करूँगा और पारस्परिक सहयोग के साधनों द्वारा उन समस्याओं के हल करने के सुझाव प्रस्तुत करूँगा।

कहिए मेरे इस समाज-शिक्षा की दिशा में उठाये हुए पग का आप समर्थन करेंगे या नहीं ?"

"आपका समर्थन अवश्य होगा विनय भाई ! हमें विश्वास है कि यदि आप वाणी से अपने कार्य को अराजनैतिक कहेंगे तो कार्य के क्षेत्र में भी वह अराजनैतिक सिद्ध होगा।" घोष बाबू ने कहा।

"आपके विश्वास का मैं सम्मान करता हूँ। और आप भी विश्वास रक्खें कि आपकी राजनीति चाहे जो-जो भी पहलू बदले अपना क़दम वहीं रहेगा, अपना काम वही रहेगा। भारतीय जनता की सेवा करना, भारतीय जनता को सुशिक्षित करना।"

इतना कहकर विनय भाई उठ खड़े हुए। घोष बाबू आदरपूर्वक उन्हें द्वार तक छोड़ने आये।

बाहर सवारी का कोई प्रबन्ध न देखकर लज्जित से होते हुए बोले, "दफ्तर के ऊपर की टीपटाप देखकर आप समझे होंगे कि घोष बाबू के पास पैसे की कमी नहीं है, परन्तु सच यह है कि सवारी का भी ठीक से प्रबन्ध नहीं है। एक जीप किसी तरह खरीद ली थी, वह भी गले में फँसी पड़ी है। हर महीने उसकी मरम्मत के लिए कहाँ से सौ-दो-सौ रुपया जुटाऊँ?"

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "घोष बाबू! आज जब से यहाँ आया हूँ तब से अब तक मन की बात एक यह अंतिम ही कही है आपने। बाकी सब राजनीति है आपकी दृष्टि से और अब यदि उसे मैं भी वैसा ही समझकर कहूँ कि अभी आर्थिक कठिनाई का हल नहीं खोज सके आप, तो क्या उत्तर है आपके पास?"

"यह राजनीति का प्रश्न है। इसे उत्तरविहीन ही रहने दो विनय भाई और आपके रचनात्मक कार्य में मेरी आकृष्टि हुई है उसे और दृढ़ बनने दो। विचार करने दो मुझे।" गम्भीरतापूर्वक घोष बाबू ने कहा।

सामने सड़क से गुज़रने वाली रिक्शा को रोककर घोष बाबू ने विनय भाई को उसमें बिठाकर विदा किया।

प्रमिला, रमेश और सेवा माता तपस्वी सुनील द्वारा स्थापित ग्रामोद्योगाश्रम में उद्‌घाटन-समय से ठीक पंद्रह मिनट पूर्व पहुँचे। तपस्वी सुनील उनकी प्रतीक्षा में थे।

सेवा माता के साथ प्रमिला को आते देखकर तपस्वी सुनील को बहुत प्रसन्ना हुई। सन् १९४७ के पश्चात् आज ही प्रथम बार उनसे भेंट हुई।

सेवा माता ने चित्रकार रमेश का परिचय तपस्वी सुनील को देते हुए उसका बनाया हुआ चित्र उन्हें दिया। चित्र को देखकर तपस्वी सुनील एक अर्से तक उसे देखते ही रह गये।

सेवा माता ने देखा कि तपस्वी सुनील की दोनों आँखों में दो मोटे-मोटे आँसू ढुलककर आ गये हैं, जिन्हें उन्होंने बड़ी ही चतुराई के साथ अपने कन्धे पर पड़े अंगोछे से पोंछते हुए कहा, "इस चित्र ने सेवा माता! जीवन की पुरानी स्मृतियों को साकार मेरी आँखों के सम्मुख लाकर खड़ा कर दिया।

राष्ट्र-पिता के दाँये-बाँये किस प्रकार मैं और भारतसेवक श्रीलाल चलते थे, इसकी याद ताज़ा कर दी। अब ऐसा अनुभव कर रहा हूँ कि यहीं कहीं से राष्ट्र-पिता की आवाज़ मेरे कानों में आकर पड़ने वाली है। न जाने आश्रम के किस कोने में बैठे मेरे काम का लेखा-जोखा ले रहे हों।"

तपस्वी सुनील की बात सुनकर रमेश का हृदय बाँसों उछलने लगा। उसे विश्वास हो गया कि वह वास्तव में अब भारतसेवक का भी सही चित्र बनाने में सफल हो सकेगा। उसका अपनी चित्रकला पर विश्वास जमने लगा।

प्रमिला को भी यह देखकर कि रमेश की कला ने तपस्वी सुनील को कितना प्रभावित किया, हार्दिक प्रसन्नता हुई और वह बोली, "सुनील

भाई, देखी आपने मेरे देवर की कला। बड़े-बड़े तपस्वियों को हिला देने की शक्ति है इसमें। न जाने कितने पुराने युग की स्मृतियों को साकार रूप देना आता है मेरे देवर को।"

"तुम्हारा कथन सर्वथा सत्य है प्रमिला! कला की शक्ति से इंकार नही किया जा सकता। विनय भाई ने इधर सात वर्ष में जितना कार्य किया है उतना कार्य कई-कई देशभक्त भारत के सेवकों ने मिलकर भी नहीं किया होगा।

देश की जनता को उसके जीवन का साहित्य दिया है विनय भाई ने। सीधी-सादी ग्राम जनता की भाषा में मानव-जीवन की कला के फूलों को खिलाया है। कोरी कल्पना के फूल नहीं खिलाये और उसने साहित्य की रूढ़िवादी आकाश-चुम्बी चोटियों को हिलाया है।

उसी कलाकार के छोटे भाई के चित्र ने आज मेरी आँखों में दो प्रेम, भक्ति और श्रद्धा के आँसू ला दिये।" बहुत ही सरल वाणी में तपस्वी सुनील ने कहा।

तपस्वी सुनील के जीवन की सरलता कोदेखकर रमेश आनंदविभोर हो उठा। उसे तपस्वी सुनील एक सरल बालक जैसे दिखाई दिये। वह श्रद्धा से झुक गया उनके सम्मुख और सरल वाणी में बोला, "आपके दर्शन करने की बहुत दिन से इच्छी थी। जब-जब भी विनय भाई ने किसी प्रसंगवश आपका उल्लेख किया है तब-तब आपके दर्शनों की इच्छा हुई है।"

"तो क्या विनय भाई को याद रहती है मेरी? मैं तो समझा था कि वह साहित्य के गहरे समुद्र में इतने नीचे उतर गये हैं कि जहाँ उन्हें सच्चे मोतियों के अतिरिक्त मेरे जैसे घोंघे दिखाई ही न देते हों।" तपस्वी सुनील ने कहा।

तपस्वी सुनील की इस बात का उत्तर सेवा माता ने दिया। वह बोलीं, "बेटा सुनील! विनय के विषय में हमारे सब विचार ग़लत साबित हुए। हमारे पास जो-जो भी सूचनाएँ आईं, वे सब ग़लत निकलीं। विनय अपने

स्थान पर उसी दृढ़ता के साथ खड़ा है जिस पर हमने उसे छोड़ा था। उसमें कोई अन्तर नहीं आया।"

इस पर तपस्वी सुनील मुस्कराकर बोले, "तब तो भारतसेवक श्रीलाल का ही विचार ठीक निकला। हम दोनों भ्रम में रहे। सेवा माता, तुमने और मैंने ही विनय भाई को ग़लत समझा।"

"भैया के प्यार में माँ ने अपनी बेटी प्रमिला को भी ग़लत समझा। अपने रक्त के ऊपर से भी माँ का ऐसा विश्वास उठ जायगा, इसकी मैंने स्वप्न में भी कल्पना न की थी।" गम्भीरतापूर्वक प्रमिला ने पीड़ा-भरे हृदय से कहा।

सेवा माता प्रमिला के सम्मुख एक अपराधिनी के समान सरल वाणी में बोलीं, "तुम्हारे हृदय को ठेस लगी है प्रमिला! मेरे और तपस्वी सुनील के इस विचार से। परन्तु तुम पराधीन थी।"

"यह तो और भी दुःख की बात है माँ! मुझ पर आपको अविश्वास हुआ इसकी मुझे चिंता नहीं, परन्तु उन पर भी संसार में कोई व्यक्ति, और वह भी सेवा माता और तपस्वी सुनील, अविश्वास कर सकते हैं, इसकी तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकती।" और भी गम्भीरतापूर्वक मार्मिक स्वर में प्रमिला ने कहा और उसका चेहरा तमतमा उठा।

यकायक वातावरण गम्भीर हो गया। प्रमिला के चेहरे का रंग तपे हुए सोने की तरह दमकने लगा।

प्रमिला का सतीत्व उसके नेत्रों में उभर आया। उसका श्वाँस तेज़ी से चल रहा था।

तभी तपस्वी सुनील ने सरलतापूर्वक प्रमिला के चेहरे पर देखते हुए रमेश से कहा, "सती की साकार प्रतिमा खड़ी है तुम्हारे सम्मुख चित्रकार! कल्पना के चित्र बहुत बनाये जाते हैं, परन्तु तुम्हें कल्पना के पीछे लगने की आवश्यकता नहीं। तुम्हारी भाभी साकार कल्पना है।"

तपस्वी सुनील का सरल वाक्य सुनकर प्रमिला के मन का क्रोध धीरे-धीरे उतरना प्रारम्भ हो गया। शब्द एक भी किसी का जिह्वा से

न निकला। परन्तु वातावरण की गर्मी धीरे-धीरे शांति की दिशा में बहने लगी।

आश्रम के उद्घाटन का समय हो गया।

सेवा माता ने आस-पास के गाँवों की इकट्ठी भीड़ के बीच से आगे बढ़कर ग्रामोद्योग आश्रम का उद्घाटन किया। सेवा माता की जै-जैकार से आकाश गूँज उठा। सेवा, सेवा, सेवा शब्द वहाँ के वायुमण्डल में भर गया।

उद्घाटन के पश्चात् आश्रम में एक विराट् सभा का आयोजन था। सभा के मंच पर भाषण देते हुए तपस्वी सुनील ने कहा, "जन-जीवन को चलाने के लिए सबसे पहली आवश्यकता भोजन की है और भोजन खेती से मिलता है। इसीलिए देश को सबसे बड़ी आवश्यकता सुव्यवस्थित खेती की है।

खेती से मन चुराकर शहरों की नौकरी की ओर भागना देश के नौजवानों की स्वस्थ प्रवृत्ति नहीं है। खेती हमारे देश के अधिकांश लोगों को भोजन देती है।

खेती के पश्चात् मानव-जीवन को सुसंस्कृत करने में कुटीर उद्योगों का स्थान आता है। हमारे देश की जनसंख्या अधिक होने के कारण हमें जन-बल का आश्रय लेकर कुटीर-उद्योगों पर जुट जाना चाहिए। और आप देखेंगे कि कितने कम काल में आप अपने हाथों से अपने जीवन का स्वयं कायापलट कर डालेंगे।

सरकारी योजनाओं और सरकारी सहयोगों का बैठे-बैठे मुँह ताकते रहना कोई योग्यता की बात नहीं है। आप लोग अपने परिश्रम से अपने रास्ते पर आगे बढ़िये और आने दीजिये सरकारी योजनाओं को भी। जहाँ-जहाँ वे आपको आगे बढ़ने में योग दें, वहाँ-वहाँ उनका सहयोग भी लीजिये और सहयोग दीजिये भी उन्हें।

परन्तु इतना याद रखिये कि वास्तविक शक्ति आप में है। हमारे देश की जनता में है।"

खेती आप लोगों का पुराना काम है। नये-नये साधनों के साथ, नये खाद और पानी के साथ अपनी धरती को हरी-भरी बनाइये। और साथ ही अपने आसपास में पनपने वाले ग्रामोद्योगों की भी ऐसी शृंखला बाँधो कि आपलोगों की आवश्यकताएँ यहीं पूरी होने लगें। आपकी पूँजी आपके उत्थान में काम आनी चाहिए। वह आपको किन्हीं जाल-जालों में फँसकर अपने देहात से बाहर नहीं फेंक देनी चाहिए।"

तपस्वी सुनील के पश्चात् सेवा माता ने भी दो शब्द कहे। वह बहुत ही धीमे स्वर में बोलीं, "बच्चो! तुमने, तुम्हारे राष्ट्र ने, सेवा, तपस्या, त्याग और अहिंसा के बल से राजा की सत्ता को उखाड़कर फेंक दिया। अपने राष्ट्र को स्वतंत्र कर लिया।

अब आपके सम्मुख आपके अपने जीवन को ऊपर उठाने की बात है। और यह बात भी राष्ट्र की स्वतंत्रता से कम महत्वपूर्ण नहीं है। क्योंकि इसी के लिए तो राष्ट्रीय स्वतंत्रता का इतना बड़ा संग्राम किया गया था। जन-जीवन की सम्पन्नता के ही तो लक्ष्य को लेकर आपके राष्ट्र-पिता ने स्वाधीनता-संग्राम में पग बढ़ाया था।

उनका ध्येय था जन-जागरण और जन-कल्याण।

आपके देहात में इस ग्रामोद्योगाश्रम का उद्घाटन करके मुझे अपार हर्ष हुआ और आप सबका उत्साह देखकर मैं समझती हूँ कि यह आश्रम आपके आस-पास के जन-जीवन में आत्म-निर्भरता और जन-जागृति का संचार करेगा।"

"अवश्य करेगा माँ।" जनता में से हर्षध्वनि के साथ किसी की आवाज़ आई।

इसके पश्चात् प्रमिला खड़ी होती हुई बोली, "सेवा माता की कृपा से आज मैं अपने को आप लोगों के बीच खड़ी देखकर फूली नहीं समाती। आप लोगों के उत्साह और आपकी प्रसन्नता के झकोरों में मेरे हृदय की कलिका खिलकर महँकने लगी है।

सात वर्ष एक साहित्य-सेवी की सेवा में व्यतीत करके आज जनता-

जनार्दन की सेवा में उपस्थित होने का अवसर मिला है मुझे। परन्तु देख रही हूँ कि आप सबका रूप वही है जो उस साहित्य-सेवक के मस्तिष्क की कल्पना है। उसमें कहीं भी कोई अन्तर दिखाई नहीं देता।

जानते हैं आप लोग मैं किसकी बातें कर रही हूँ आपके सम्मुख ! मैं आपके उस कलाकर का आपको परिचय दे रही हूँ जो दिन के चौबीस घंटे आपके ही जीवन से उलझता और सुलझता रहता है। आपके जीवन को निरखता और परखता रहता है।

कलात्मक इतिहास लिख रहा है आपके जीवन का, जीवन के विभिन्न पहलुओं का।" और इतना कहकर वह मुस्कराती हुई बोलीं, "अपने इतिहास की इज्ज़त को बनाना आज आपका अपना काम है। आपके बाल-बच्चे आपसे अधिक सुशिक्षित होंगे। और वह आपका इतिहास पढ़ेंगे। सुनील भाई ने जिस आश्रम की स्थापना आप लोगों के बीच की है इसके अन्दर से सेवा, तपस्या और त्याग की वह धारा बहनी चाहिए जो आपके देहात को हर प्रकार की उन्नति, सुख और शांति की दिशा में ले जाय। यह आश्रम आप लोगों के पारस्परिक सहयोग का केन्द्र बने।

राजनीति का अखाड़ा न बनने देना इसे, यही मेरा छोटा सा विचार है आप लोगों के सम्मुख।"

सभा का कार्यक्रम समाप्त होने पर सेवा माता ने चित्रकार रमेश का सभा की जनता को परिचय देते हुए सबका ध्यान मंच पर लगे एक बड़े चित्र की ओर आकर्षित करके कहा, "इस महान् कलाकृति का चितेरा यह बेटा रमेश है। आपमें से किसी को पता नहीं कि जाने किस-किस का चित्र इसके मस्तिष्क में उतर आया हो।

आप सबका चित्र बनायेगा रमेश बेटा !"

और रमेश ने सेवा माता की बात का समर्थन करते हुए कहा, "माता की आज्ञा पालन न करना बहुत बड़ा पाप है; यह आप सभी लोग मुझसे अधिक जानते हैं। इसलिए आप सबका चित्र तो मुझे बनाना ही होगा। परन्तु उत्तम उसी का बनेगा जो सुधर कर अपनी शक्ल

दिखायेगा।"

इसके पश्चात् आज की सभा की कार्यवाही समाप्त हुई। प्रमिला, रमेश, सेवा माता और तपस्वी सुनील ने आश्रम को इधर-उधर घूमकर देखा।

आश्रम को देखकर जाने क्यों प्रमिला को संतोष न हुआ। पूरा आश्रम देखकर उसने तपस्वी सुनील से कहा, "आपके आश्रम को देखा तपस्वी! और उसके प्रति जनता का आकर्षण और सहयोग भी देखा, परन्तु सब कुछ देखकर ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो जीवन की गाड़ी यात्रा पर उलटी लौट चली।"

प्रमिला की बात सुनकर तपस्वी सुनील सरलतापूर्वक बोले, "तो क्या आगे-ही-आगे बढ़ने की ठानी है प्रमिला! जीवन भर आँखें बन्द करके तेली के बैल की तरह चलते जाना भी तो कोई अक्ल की बात नही है। जीवन में कही तो शांति आनी ही चाहिए।

इसीलिए आज आवश्यकता है कि मनुष्य वापस लौटकर प्रकृति की गोद में विश्राम करे। प्रकृति उसे सुन्दर स्वास्थ्य देगी, भोजन देगी, और सबसे बडी वस्तु जो वह दे सकती है वह है मानवता की चरम सीमा।"

तपस्वी सुनील की बात सुनकर प्रमिला मुस्करा दी। और फिर सरलतापूर्वक कहा, "एक चरम सीमा का विरोध करके दूसरी चरम सीमा की ओर आँखों पर पट्टी बाँधकर चल देने की बात समझ में नही आती तपस्वी!

वर्तमान को भुलाकर केवल भूत या भविष्यत पर मानव-जीवन की कल्पना करना जन-हित में घातक हो सकता है।"

प्रमिला अपने विचारों में दृढ थी।

तपस्वी सुनील गम्भीरतापूर्वक बोले, "भारतसेवक श्रीलाल का यही मत है जो तुम्हारा है प्रमिला! परन्तु मुझे मानव का कल्याण प्रकृति की पुरातन गोद में बैठकर ही दिखाई देता है। मैं चाहता हूँ कि सब भूमि

भगवान् की हो और उस पर रहने वाले भगवान् के सब प्राणी आनन्द-पूर्वक विचरण करें। सबको विचारों और अपने विचारों को व्यक्त करने की स्वतन्त्रता हो। सब सबकी सुख-सम्पन्नता में संलग्न और प्रसन्न हों। सर्वोदय हो, सबका उदय हो प्रमिला ! यही मेरी कामना है।"

प्रमिला मौन हो गई। उसके पास शब्द नहीं थे बोलने को। सर्वोदय से आगे और कहने की बात ही क्या रह जाती है।

प्रमिला घड़ी देखती हुई बोली, "अरे सात बज गये माँ ! मुझे आठ बजे तक देहली अवश्य पहुँच जाना चाहिए। 'भारत साहित्य सहयोग' की योजना तैयार करनी है और उधर भारतसेवक की परिचय-पत्रिका की पांडुलिपि टाइप करने का कार्य-भार भी मैंने अपने ऊपर ही ले लिया है। ठीक आठ बजे वह टाइप कराना प्रारम्भ कर देते हैं।"

भारतसेवक की परिचय-पत्रिका की बात सामने आने पर तपस्वी सुनील बोले, "यह परिचय-पत्रिका क्या है प्रमिला ? केवल संक्षेप में बता दो इस समय। विस्तार से तो पत्रिका प्रकाशित होने पर जान लूँगा।"

प्रमिला मुस्कराकर बोली, "भारतसेवकों की सेवाओं का संकलन नहीं है यह पत्रिका, बस इस समय इतना ही जान लें आप।" और रमेश के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़कर जीप गाड़ी पर जा बैठी।

चलते समय का नमस्कार हुआ और ललचाई आँखों से आश्रम की भीड़ और सेवा माता तथा तपस्वी सुनील को देखती-देखती प्रमिला मोटर की रफ्तार के साथ दूर होती चली गई।

काफी दूर जाने पर प्रमिला ने इधर-उधर देखा। रमेश बोला, "सेवा माता और तपस्वी सुनील के पास से विदा होते हुए दिल भारी हो उठा भाभी !"

प्रमिला बोली, "अपनों से अलगाव के समय ऐसा होता ही है रमेश ! और फिर जब माता से उसकी सन्तान विदा होती है तो दोनों ओर का रक्त, कर्त्तव्य की प्रेरणा से दूर हटता हुआ भी मिलने की लालसा लेकर

लपकता है और यही विरोधी आकर्षण हृदय को भारी करने का कारण बनता है ।

हृदय पर मस्तिष्क का बल नहीं चलता । आँखें डबडबाने लगती हैं और आँसू की बूँदें टपक जाती हैं ।"

प्रमिला की बात सुनकर जीप गाड़ी का ड्राइवर बोला, "बीबी जी ! निहायत सही बात कही आपने । इतनी उम्र हो गई मेरी और अम्मीजान तो तिहत्तर से ऊपर गुज़र चुकी हैं लेकिन अब भी जब घर से चलना हूँ तो दोनों को रोना आ जाता है ।"

ड्राइवर मियाँ की बात सुनकर प्रमिला और रमेश के चेहरों पर हल्की-सी मुस्कान की रेखा खिच गई । प्रमिला ने सरल भाव से पूछा, "आप कहाँ के रहने वाले हैं ड्राइवर मियाँ ?"

"जिस आश्रम में सरकार तशरीफ़ ले गई थीं उसी के क़रीब के एक कस्बे का बाशिन्दा है ख़ादिम ।" ड्राइवर मियाँ ने कहा ।

"तो आपकी माता जी अभी जीवित हैं ? कुछ सेवा भी करते हो उनकी ?" प्रमिला ने पूछा ।

"उन्हें सेवा-वेवा की दरकार नहीं है बीबी जी ! वह तो इस तिहत्तर साल की उम्र में भी भरे-पूरे खान्दान की सेवा करने का दम रखती हैं ।" निहायत दिलेरी के साथ ड्राइवर मियाँ ने कहा ।

प्रमिला प्रसन्न होकर बोली, "आपकी माँ मानव-समाज की सच्ची सेविका हैं ड्राइवर मियाँ ! आपने वहीं बताया होता तो मैं दर्शन करती उनके ।"

प्रमिला की बात सुनकर ड्राइवर मियाँ बोले, "शरमिन्दा न कीजिये बीबी जी ! मेरी माँ तो खुद आप लोगों के दर्शन करने के लिए मील भर पैदल चलकर आई थी ।"

बातों-ही-बातों में काफ़ी समय निकल गया । आकाश पर खुले हुए खेतों की बालों से टकराती हुई झनझनाती हवा बहती चली आ रही थी । जीप गाड़ी पेंतीस मील फ़ी घंटे की रफ्तार पर दौड़ रही थी ।

इसी दौड़-भाग में दिल्ली की बत्तियाँ दिखाई देने लगीं और बीस मिनट पश्चात् जीप विनय भाई के मकान पर खड़ी थी।

विनय भाई बाहर लॉन में घूम रहे थे। जीप को आती देखकर द्वार के निकट पहुँच गये और प्रमिला तथा रमेश को उतरते देखकर बोले, "आप लोगों की अगुवानी के लिए 'भारत साहित्य सहयोग' के द्वार पर खड़ा हूँ। मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई कि 'भारत साहित्य सहयोग' के दो कार्यकर्त्ता आज जनता के निकट पहुँचे।"

प्रमिला और रमेश ने जीप से नीचे उतरकर विनय भाई को प्रणाम किया।

इन्हें उतारकर ड्राइवर मियाँ ने वापस लौटने की आज्ञा माँगी परन्तु प्रमिला ने भोजन किये बिना लौटने की आज्ञा न दी।

भोजन पर बैठते समय मियाँ बोले, "बीबी जी! मोटर चलानी शुरू करने से पहले मै एक मँझोली जोतता था और सच कहता हूँ कि जब कहीं भी किसी भले आदमी को मै अपनी मँझोली में ले जाता था तो वह मंज़िल पर पहुँचकर कभी मुझे खाना खिलाये बिला नहीं लौटने देता था।

लेकिन जबसे यह कार-ड्राइवरी शुरू की है तबसे ऐसे आदमी तो काफ़ी मिले हैं जो तै की हुई रकम से ऊपर रुपया-दो-रुपया अधिक देकर इनाम दे देते हो, लेकिन खाने की बात पूछने वाली आप पहली नेकबख़्त औरत हैं।"

ड्राइवर की बात सुनकर विनय भाई बोले, "इसका मोटा अर्थ यही है बड़े मियाँ कि आज का मानव आपस में एक दूसरे से दूर होता जा रहा है। घर पर आने वाले से खाना-पानी की बात का भी न पूछना मानवता की कितनी गिरावट है।"

"आप जो कुछ भी कहें सरकार! लेकिन अपनी कम अक्ल में तो यही आता है कि यह सब हम लोग के रहन-सहन की तबदीली की वजह से आपस में एक दूसरे से अलग होते जा रहे हैं।" ड्राइवर मियाँ ने कहा।

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "आपका अन्दाज़ बहुत हद तक सही है बड़े मियाँ ! गुलामी की तालीम ने हमारा रहन-सहन बदल दिया…।"

विनय भाई कुछ कहने जा रहे थे परन्तु बीच में ही ड्राइवर मियाँ बोल उठे, "और वही गुलामी की तालीम, जिसका मक़सद दिमाग़ी गुलाम तैयार करना था, आज आज़ादी के दिनों में भी उसी तेज़ी के साथ बढ़ रही है।"

ड्राइवर मियाँ की बात सुनकर विनय भाई ने पूछा, "मियाँ साहब यदि कुसूर माफ़ हो तो क्या मैं आपकी तालीम के बारे में जानकारी हासिल कर सकता हूँ ?"

"क्यों नहीं ?" मुस्कराकर ड्राइवर मियाँ ने कहा, "तालीम के बारे में ही क्या मैं चन्द फ़िक़रों में अपना खुलासा आपके सामने पेश किये देता हूँ।

मेरे वालिद डिप्टीकलक्टर थे। गाँव की अच्छी-खासी जायदाद थी। मुझे अंग्रेज़ी पढ़ाना चाहा। मैंने इंकार कर दिया। उन्होंने नाराज़ होकर मुझे घर से निकाल दिया। मैंने एक मँझोली चलाने वाले उस्ताद की शागिर्दी कर ली और एक दिन आसपास के देहात का मशहूर मँझोली वाला बन गया।

वालिद साहब ने मरते समय अपनी सब दौलत और जायदाद बड़े भाई साहब को दी। उन्हें इस बात से भी शर्म आती थी कि उनका एक बरख़ुरदार मँझोली वाला है।

बड़े भाई साहब की सब जायदाद ज़मीदारी समाप्त होने से सरकारी कानून की नज़र हो गई और वह खुद घर का अड़ंगा बेचकर पाकिस्तान चले गये।

लेकिन मैं जहाँ था वहीं मौजूद हूँ। सिर्फ़ फ़र्क यह आया है कि तब मँझोली वाला था और आज जीप गाड़ी चलाता हूँ। तालीम यही है कि कोई दर्जा पास न करने पर भी मैं अपने को उर्दू का आलिम समझता हूँ।

ग़ालिब और ज़फर जैसे शायरों ने अपने कलाम में जो फिलासफी

भर दी है उस तक ख़ादिम की पहुँच है।"

विनय भाई बोले, "बड़े मियाँ ! आपसे मिलकर वास्तव में हार्दिक प्रसन्नता हुई।" और प्रमिला की ओर देखते हुए बोले, "तुम्हारा आज का सबसे बड़ा काम यही रहा कि तुम मौलाना को मेरे निकट लाई।"

ड्राइवर मियाँ को बड़े आदर के साथ विनय भाई, प्रमिला और रमेश ने विदा किया।

जीप गाड़ी धीरे-धीरे दूर निकलकर आँखों से ओझल हो गई। विनय भाई, रमेश और प्रमिला सड़क पर खड़े रह गये।

वेदान्ताचार्य रमण जी के कानों में 'भारत साहित्य सहयोग' की बात धीरे-धीरे बजते-बजते ज़ोर-ज़ोर से बजने लगी। उन्होंने विनय भाई की पुस्तकों को पढ़ा और जहाँ उनमें यह पाया कि उनके मस्तिष्क की रूढ़ियों पर उनमें गम्भीर चोट की गई है वहाँ उन्हें यह भी अनुभव हुआ कि जन-जीवन की सचाई को परखने की दिशा में विनय भाई पर्याप्त जागरूक रहे हैं।

जैसा उनका विचार था कि विनय भाई ने भारतसेवक श्रीलाल की प्रशंसा के पुल बाँधे होंगे, वैसा उनको नहीं मिला। साथ ही घोष बाबू की क्रांति की चिंगारियाँ भी उनकी पुस्तकों में देखने को नहीं मिलीं और न लाल आवरण से दहकते अंगारों के समान ही विनय भाई का साहित्य पाठकों के सम्मुख आया।

तपस्वी सुनील की विचारधारा का उस पर कुछ प्रभाव अवश्य था। परन्तु अधिकांश तो सीधी-सादी बातों को लेकर ही विनय भाई ने जन-जीवन की समस्याओं को छूने का प्रयास किया था, और जो सबसे अच्छी बात लगी उन्हें वह थी भारतीय संस्कृति और परम्परा की रक्षा। विनय भाई की यह भारतीयता उन्हें वेदांताचार्य रमण जी के निकट खींच लाई।

संध्या-समय नित्य-नियम के कार्यक्रम से निवृत्त होकर रमण जी ने अपना भागलपुरी साफ़ा बाँधा, सिल्क के कुर्ते पर बन्द गले का कोट पहना, कैलीको मिल्स की पतली महीन धोती बाँधी और पैरों में पेटेन्ट लैदर का पम्प शू पहना। मस्तक पर तिलक की गहरी छाप दी और आँखों पर सुनहरी फ्रेम का चश्मा चढ़ा लिया।

एक क़रीने के साथ वह कोठी से बाहर निकले तो दो सेवक हाथ जोड़कर सामने आये। रमण जी ने कहा, "चालक को आज्ञा करो, गाड़ी लाये।"

"जो आज्ञा," कहकर दोनों सेवक चले गये और कहते-कहते गाड़ी सामने आकर खड़ी हो गई।

चालक ने गाड़ी का द्वार खोला और वेदान्ताचार्य रमण जी उसमें बैठकर बोले, "विनय भाई के मकान पर चलना है हमें।"

चालक ने गाड़ी चला दी और आधे घंटे में गाड़ी विनय भाई के घर पर पहुँच गई।

गाड़ी से उतरकर रमण जी की विनय भाई के घर के द्वार पर दृष्टि गई तो क्या देखते है कि 'भारत साहित्य सहयोग' की छोटी-सी पट्टी के स्थान पर एक बड़ा बोर्ड लगा था। 'भारत साहित्य सहयोग' का बोर्ड इतना सुन्दर था कि वेदान्ताचार्य रमण जी उसे एकटक देखते ही रह गये।

घर के द्वार पर कार रुकने की आवाज़ को पहचानकर विनय भाई ने झुककर देखा और बोले. "वेदान्ताचार्य रमण जी पधारे है। उनका स्वागत करो प्रमिला !"

प्रमिला और रमेश दोनों स्वागत के लिए आगे बढ़ गये। विनय भाई ने स्वयं भी तख्त छोड़कर खड़े होते हुए उनका स्वागत किया।

वेदान्ताचार्य रमण जी ने कमरे में प्रवेश करके देखा कि आज कमरे का रूप ही बदला हुआ था। दीवारो पर एक-से-एक सुन्दर चित्र बना था; परन्तु 'भारत साहित्य सहयोग' के कमरे में साकी और मैखाने के चित्र नही थे। सागर और सुराही भी उन्हे दिखाई नही दी। चंदा की चाँदनी में अभिसार करने वाली अभिसारिका के भी दर्शन नहीं हुए। देव और बिहारी की नायिकाओं के चित्र भी देखने को नही मिले। हाँ शाकुन्तला और पर्णकुटी की सीता के चित्र अवश्य थे और था होरी की हड्डियों का ढाँचा, भारत की सत्तर प्रतिशत जनता का प्रतीक। झुनिया और अग्निदत्त के चित्र भी दीवार पर लगे थे।

यह सब वेदान्ताचार्य रमण जी ने बड़े ध्यान से देखा। प्रमिला उनके ध्यान को भंग करती हुई बोली, "आप तो चित्रों में ही उलझकर रह गये,

ऐसा प्रतीत होता है ।"

"मैं चित्रकार की सराहना किये बिना नहीं रह सकता ।" रमण जी ने कहा । "चित्र वास्तव में बहुत सुन्दर बने हैं ।" और तभी उनकी दृष्टि सरस्वती के चित्र पर चली गई । उसे देखकर वह एकदम तिलमिला उठे ; मानो उनके पैर के अंगूठे से बिच्छू लड़ गया हो । और तुनककर बोले, "यह तो आपने अनर्थ करा दिया विनय भाई ! सरस्वती के प्रतीक-चित्र में परिवर्तन करने की आज्ञा आपको किसने दी ?"

विनय भाई उत्तर देने भी न पाये थे कि चित्रकार रमेश बोला, "कलाकार को आज्ञा करने वाली होती है उसकी प्रेरणा । और उसी की आज्ञा से मैंने यह घृष्टता की है ।"

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "ठीक कह रहा है रमेश रमण जी ! जिसने उस आदि चित्रकार को सरस्वती का प्रतीक चित्र प्रस्तुत करने की आज्ञा दी थी उसी प्रतिभा ने चित्रकार रमेश को सरस्वती का यह सेवा-चित्र प्रस्तुत करने पर बाध्य कर दिया ।"

वेदान्ताचार्य रमण जी विनय भाई की बात में रस न ले सके । पुरानी किसी भी बात में परिवर्तन देखकर उनके हृदय में एक टीस सी उत्पन्न होने लगती है । उनका विचार है कि उनके पुर्खाओं ने जो रूढ़ियाँ स्थापित की हैं, आखिर वे एक दीर्घ काल के विचार और अनुभव के पश्चात् स्थापित की हैं । उनमें यों ही बिना विचारे परिवर्तन कर देने में देश और समाज का बहुत बड़ा अहित हो सकता है । वह क्या अहित हो सकता है, इस पर वेदान्ताचार्य रमण जी तुरन्त अपना कोई मत न रखते हुए भी इतना मत अवश्य रखते हैं कि निश्चित रूप से सम्भावना अहित की ही है ।

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "संसार बड़ी ही तीव्र गति के साथ आगे बढ़ रहा है रमण जी ! इसकी गति के साथ पग न बढ़ाने से आप कहाँ रह जायेंगे इसका पता नहीं । इसलिए इन रूढ़ियों की अच्छाई और बुराई पर आपको तुरन्त विचारकर अपना मत प्रस्तुत करना चाहिए ।"

विनय भाई की बात सुनकर रमण जी बोले, "तो क्या आपका मतलब है कि मैं बिना विचारे ही किसी बात का विरोध करने लगा हूँ !"

"मेरा ऐसा ही मत है।" दृढ़तापूर्वक विनय भाई ने कहा।

वातावरण गम्भीर होता देखकर प्रमिला बोली, "वेदान्ताचार्य जी ! आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि 'भारत साहित्य सहयोग' की योजना बनकर तैयार हो चुकी है और उसके अंतर्गत हमने भारत के प्राचीन साहित्य को सरल-से-सरल भाषा में संक्षिप्त-से-संक्षिप्त रूप देने के लिए आपसे अनुरोध करने का विचार किया है।"

"मुझसे ?" आश्चर्य के साथ वेदान्ताचार्य रमण जी ने कहा।

"भारतसेवक श्रीलाल जी से जब मेरी इस विषय में बातचीत हुई तो उन्होंने कहा कि इसके लिए मुझे वेदान्ताचार्य रमण जी से उपयुक्त अन्य कोई व्यक्ति नहीं मिल सकता।" विनय भाई सरलतापूर्वक बोले।

"भारतसेवक श्रीलाल का यह सुझाव है ?" और भी आश्चर्य के साथ वेदान्ताचार्य रमण जी ने पूछा, "समझ में नहीं आ रही आपकी बात विनय भाई ! इसमें अवश्य ही कुछ गड़बड़झाला है। भारतसेवक की राजनीति की चालों में वेदान्ताचार्य रमण फँसनें वाला नहीं है।" चश्मा उतारकर धोती के पल्ले से उसे साफ करते हुए रमण जी बोले।

रमण जी की बात सुनकर विनय भाई को हँसी आ गई। वह हँसी शांत करते हुए बोले, "रमण जी ! यह राजनीति का भूत हमारे देश को कह नहीं सकता कि किस अधोगति तक पहुँचाने में सफल होगा। इसका अर्थ मुझे यह समझना चाहिए कि राजनीति में काम करने वाले महानुभाव एक दम निकम्मे हो चुके हैं, उनका राजनीति से बाहर देश और देश की जनता की सेवा के क्षेत्र में झाँकना ही असम्भव है।"

"नितान्त असम्भव, नितान्त असम्भव !" दृढ़तापूर्वक वेदान्ताचार्य जी ने कहा। "और जो राजनीतिज्ञ राजनीति को छोड़े बिना यह कहता है कि मैं अमुक कार्य केवल सेवा के उद्देश्य से कर रहा हूँ, वह अपने को नहीं, सत्ता को नहीं, जनता को धोखा दे रहा है।"

"तो आपका मतलब है कि भारतसेवक ने जो यह बात कही कि प्राचीन साहित्य पर वेदान्ताचार्य रमण जी से सुन्दर प्रकाश अन्य कोई व्यक्ति नहीं डाल सकता यह जनता को धोखा देने के अभिप्राय से कही ?" विनय भाई मुस्कराकर बोले।

वेदान्ताचार्य रमण ने तनिक सिटपिटाकर कहा, "सिद्धान्त का बातों को इस प्रकार व्यक्तिगत बातों के साथ नहीं जोड़ा जा सकता विनय भाई !"

"जिसे व्यक्तिगत बातों के साथ नहीं जोड़ा जा सकता वह सिद्धान्त ही क्या है वेदान्ताचार्य जी ! मेरा मत है कि यदि आप सब चीज़ों को राजनीति का चश्मा चढ़ाकर परखने की अपनी आदत को छोड़ दें तो अपने ज्ञान और अपनी बुद्धि से आप देश और देश की जनता का उतना हित कर सकते हैं जितना राजनीति के पचड़े में पड़कर करना सम्भव नहीं।

राजनीतिकों में कोई ऐसी सम्मान की बात नहीं समझता कि जिसके बिला व्यक्ति हल्का पड़ जाय।"

विनय भाई की बात का वेदान्ताचार्य रमण जी पर प्रभाव पड़ा और वह सरल वाणी में बोले, "सोचता तो कभी-कभी मैं भी हूँ इस दिशा में —विनय भाई ! सोचता हूँ कि मैंने राजनीति के पचड़े में पड़कर कुछ खोया ही है, पाया कुछ नहीं। मेरा अध्ययन छूट गया। साहित्य से सम्बन्ध टूट गया। मानव जीवन की वास्तविक समस्याओं पर विचार करता-करता में राजनीति के घृणित कुचक्रों और चालों में फँस गया।"

विनय भाई ने अनुभव किया कि राजनीति के चक्कर में पड़कर इसने अपने जीवन की दिशा को गलत दिशा दी। यह वेद और शास्त्रों का प्रकाण्ड पंडित और प्राचीन भारतीय साहित्य का ज्ञाता यदि अपना जीवन प्राचीन साहित्य की इस महान् निधि को जनता-जरार्दन के उपयुक्त बनाने में लगा दे तो देश की जनता और भारतीय साहित्य का कितना हित कर सकता है।

विनय भाई बोले, "वेदान्ताचार्य रमण जी ! 'भारत साहित्य सह-

योग' आपका सच्चा सहयोग चाहता है। 'भारत साहित्य सहयोग' के अंतर्गत कोई राजनीतिक कुचक्र नहीं है। यह किसी राजनीतिक पार्टी का अखाड़ा नहीं तैयार किया जा रहा है। जनता और जनता के बाल-बच्चों को शिक्षित करने के लिए सरल साहित्य के सहयोग का उद्योग किया जा रहा है। देश में फैली अविद्या, निराशा और असंतोष को दूर करने का यह एक प्रयास है।

मै पूछता हूँ कि क्या आप जनता के जीवन पर छाई अविद्या, निराशा और असंतोष से दुःखी नही है ?"

वेदान्ताचार्य रमण जी, विनय भाई, प्रमिला और रमेश चारों ने आश्चर्यचकित होकर सुना कि उनके सामने खड़े घोष बाबू बोल उठे, "विनय भाई ! आपकी बात पर मैंने खूब विचार करके देख लिया। जनता के जीवन की अविद्या और निराशा को दूर करने का जहाँ तक सम्बन्ध है मैं आपके साथ हूँ और 'भारत साहित्य सहयोग' की नीति से मेरा कोई मतभेद नहीं, परन्तु जहॉ असंतोष की बात आ जाती है वहाँ राजनीति स्पष्ट रूप से मुखरित हो उठती है। मै पूछता हूँ यदि शासन-व्यवस्था ठीक है तो असंतोष क्यों है जनता के मन में, उसके बाल-बच्चों के मन मनों में ?"

विनय भाई ने घोष बाबू को आदरपूर्वक अपने पास बिठाया और मधुर शब्दों में बोले, "शंका आपकी ठीक है घोष बाबू ! और वेदांताचार्य रमण जी आप भी विचार कर लें इस पर। घोष बाबू का कहना है कि यदि 'भारत साहित्य सहयोग' जनता और उसके बाल-बच्चों को संतोष का पाठ पढ़ायेगा तो वह भारतसेवक और सत्ता के विरुद्ध असंतोष कैसे प्रकट कर सकेंगे।

और जनता तथा उसके बाल-बच्चों के जीवन का असंतोष ही घोष बाबू के विचार से उनकी राजनीतिक क्रांति की मूल प्रेरणा है।"

विनय भाई की बात सुनकर वेदान्तचार्य रमण जी बोले, "मैं घोष बाबू के इस विचार से सहमत नहीं। जनता और उसके बाल-बच्चों को

संतोप की शिक्षा न देना उन्हें अभारतीय बनाना है। आखिर असंतोष का तो कहीं अंत नहीं। कहीं पर तो जाकर उसे रोकना ही होगा।"

इस पर विनय भाई मुस्कराकर बोले और जब भी यह रोकने की समस्या खड़ी होगी तभी विरोधी राजनीतिज्ञ उसका विरोध करेगा।"

"अवश्य करेगा।" वेदान्ताचार्य रमण जी बोले।

"तब तो असंतोष की भट्टी में मानव स्वयं ही किसी दिन जल-भुनकर राख हो जायगा घोष बाबू !" विनय भाई ने गम्भीरतापूर्वक कहा। "उत्साह, आशा और संतोप तीनों को जीवन में पनपने दीजिये घोष बाबू ! जीवन की ज्वाला को असंतोष की भट्टी में न झुलसने दीजिये, उत्साह और प्रगति की प्रेरणा पैदा कीजिये उसमें। 'भारत साहित्य सहयोग' इसी दिशा में एक जन-क्रांति का बीजारोपण करेगा। मैं तो निमंत्रित करता हूँ आपको कि आप दोनों ही महानुभाव राजनीतिक दलदल से बाहर निकलकर जन-सहयोग के इस आशा, उत्साह और संतोष भरे पथ के राही बनें।"

विनय भाई की बात सुनकर घोष बाबू मुस्कराकर बोले, "विनय-भाई ! बात बहुत सुन्दर कही आपने। आपकी बुद्धि की मैं सराहना किये बिला नहीं रह सकता। एक ही तीर से दो-दो चिड़ियों को बींधने की कला में निपुण होना चाहते है आप। परन्तु घोष बाबू पर आपका यह तीर वार नहीं करेगा।

वैसे सहयोग आपकी योजना को पूरा-पूरा है मेरा।"

घाष बाबू की बात सुनकर सबके चेहरे खिल उठे। वेदान्ताचार्य रमण जी को तो ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो घोष बाबू ने उनके चारों ओर पुरते हुए विनय भाई के आल-जाल को चीरकर उन्हें बाहर निकाल दिया।

घोष बाबू खड़े होते हुए चलने की मुद्रा बनाकर रमेश से बोले, "चित्रकार रमेश ! तुम्हारे चित्रों की, चलने से पूर्व, प्रशंसा किये बिला मैं नहीं रह सकता। तुमने अपने चित्रों में जन-जीवन की सुन्दर झाँकियाँ

प्रस्तुत की हैं।"

और फिर प्रमिला की ओर देखकर बोले, "भाभी ! तुमसे मुझे आशा है कि तुम विनय भाई की योजना को व्यापक रूप दे सकोगी। तुम्हारी यह योजना जन-जागृति की दिशा में महत्वपूर्ण योग देगी।"

और फिर व्यंग्यपूर्ण मुस्कराहट के साथ बोले, "भारतसेवक श्रीलाल तथा सत्ता रानी के जैसे आकर्षक साधन तो मेरे पास नहीं हैं विनय भाई आपकी योजना के सहयोग के लिए, परन्तु जो कुछ भी टूटे-फूटे साधन हैं वे सब आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं।"

घोष बाबू की बात सुनकर विनय भाई ने मुस्कराकर कहा, "यह बात आपने भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता रानी की उपस्थिति में कही होती तो अधिक प्रभावशाली होती।"

"इसमें कोई सन्देह नहीं।" वेदान्ताचार्य रमण जी अपने चश्मे का शीशा साफ करके उसे आँखों पर चढ़ाते हुए बोले।

घोष बाबू के चले जाने पर वेदान्ताचार्य रमण जी बोले, "विनय भाई ! आपकी 'भारत साहित्य सहयोग' योजना मुझे बहुत पसन्द आई और आपने मुझसे जो सहयोग माँगा है मुझे उसके देने में कोई संकोच नहीं; परन्तु मेरी हार्दिक इच्छा यही है कि आप अपनी इस योजना को आदर्श आर्य-संस्कृति के संरक्षण में संचालित करें।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आर्थिक सहयोग की कमी नहीं रहेगी। सेठ डोंगरमल, राजा भोंसला, महाजन कनकबिहारी, रानी रामगढ़ स्टेट, राजकुमारी सेंगरगढ़, सेठ गुदड़ीमल, मुनीम उजागरमल, डेंगरमल मिल ओनर इत्यादि-इत्यादि सब आपके शिष्य है। आपके कहने पर रुपया पानी की तरह बहा देंगे।

भारतसेवक और सत्ता रानी का मुँह ताकने की आवश्यकता नहीं रहेगी आपको।"

वेदान्ताचार्य रमण जी की बात सुनकर प्रमिला गम्भीर मुख-मुद्रा बनाकर विनय भाई से बोली, "लीजिए सब समस्या हल हो गई आपकी।

भारतसेवक और सत्ता रानी के दफ्तरों में अपनी योजना लेकर चक्कर काटने के श्रम से बचा दिया आपको वेदान्ताचार्य रमण जी ने। आपको चाहिए कि इन्हें धन्यवाद दें।"

विनय भाई प्रमिला के व्यंग्य का मिठास मन-ही-मन अनुभव करके हल्की मुस्कान होठों पर लाकर बोले, "आपके सहयोग का मैं हृदय से आभारी हूँ रमण जी ! आपके सेठों, राजों, महाजनों, रानियों, राजकुमारियों और मुनीमों की मुझे आवश्यकता नहीं है। मुझे आवश्यकता है वेदान्ताचार्य रमण जी की, जिन्हें साहित्य से राजनीति ने छीन लिया है। मैं चाहता हूँ कि साहित्य को वह अपनी अमूल्य निधि वापस मिलनी चाहिए जिसका राजनीति में दुरुपयोग हो रहा है।"

विनय भाई के ये अन्तिम शब्द सुनकर वेदान्ताचार्य रमण जी तिलमिला उठे और बोले, "तो क्या आप मेरे राजनीतिक पहलू को ग़लत समझते हैं विनय भाई ?"

विनय भाई तनिक सतर्क होकर बोले, "मैं क्या समझता हूँ और क्या नहीं समझता यह मेरी व्यक्तिगत राय है। मेरा राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं और इसीलिए मैं इस विषय में अपना कोई मत प्रकट नहीं करूँगा।"

रमण जी से आज आगे बातचीत नहीं चली। प्रमिला और विनय भाई उन्हें कार तक छोड़ने गये। रमेश भी उनके साथ था।

उनके चले जाने पर विनय भाई, प्रमिला और रमेश कमरे में आकर तीनों आलथी-पालथी लगाकर तख्त पर बैठ गये। विनय भाई बीच में थे और प्रमिला तथा रमेश दाँयें-बाँयें।

विनय भाई ने रमेश से पूछा, "तपस्वी सुनील के दर्शन किये रमेश !"

"किये और बहुत निकट से किये।" रमेश ने कहा।

"क्या गुण देखा उनमें तुमने ?" विनय भाई ने पूछा।

"वह बालक के समान सरल हैं। बेकार नहीं बैठ सकते थे वह एक भी क्षण।" बस इतना कहकर रमेश चुप हो गया।

विनय भाई ने प्रमिला से पूछा, "राष्ट्र-पिता के सामने और अब में कोई परिवर्तन देखा तुमने ?"

"आज वह पहले की अपेक्षा अधिक सतर्क थे। परन्तु मुझे वहाँ जाकर एक बात पर आश्चर्य हुआ कि आपके विषय में जो शंकाएँ भारतसेवक श्रीलाल जी के मन में भी कभी उत्पन्न नहीं हुई वे सेवा माता और तपस्वी सुनील के मन में थीं।" प्रमिला ने कहा।

प्रमिला की बात सुनकर विनय भाई ज़ोर से ताली बजाकर खिलखिला पड़े और फिर तनिक गम्भीर होकर बोले, "और तुम्हें निश्चित रूप से क्रोध आया होगा इस बात पर, परन्तु यह क्रोध की बात नहीं है प्रमिला! स्वाभाविक निर्बलता है मनुष्य की।

और भारतसेवक श्रीलाल इस निर्बलता से ऊपर उठ चुका है। उसपर इन बातों का प्रभाव पड़नेवाला नहीं है। वह यदि बातों में प्रभाव प्रदर्शित करता भी है तो वास्तविक बात को झुठलाने के लिए करता है। व्यंग्य में मिठास भरने के लिए करता है।"

विनय भाई की बात सुनकर रमेश मंत्र-मुग्ध रह गया। वह समझ ही न सका कि वह किसके सम्मुख बैठा है। अपने विपक्षी विचार रखनेवालों की बातों को भी इतनी सद्भावना के साथ परखने वाला व्यक्ति आज तक रमेश की दृष्टि में नहीं आया था।

रमेश इधर कई दिन से इसी बात का अनुभव कर रहा था कि विनय भाई के पास इतने राजनीति-विरोधी विचारों के व्यक्ति आते हैं और सभी अपने तन-मन की बातें कर जाते हैं। अपनी निर्बलताओं को उधेड़-उधेड़कर इनके सामने रख जाते हैं और सुझाव भी ले जाते हैं, परन्तु यह कभी उनकी निर्बलताओं या सबलताओं से कोई लाभ उठाने की इच्छा नहीं रखते।

इनका मार्ग अपना अलग मार्ग है। अपने ही काम की धुन है इन्हें और उसी के विषय में रात-दिन सोचते और कार्य करते रहते हैं।

सेवा की सच्ची भावना विनय भाई के मन में रहती है। प्रमिला

भाभी को भी इन्होंने अपने साँचे में कितनी कुशलतापूर्वक ढाल लिया है, यह सराहना की बात है।

अन्त में धीमे स्वर में रमेश ने कहा, "विनय भाई ! मैं आपके पास आने वाले महानुभावों को बड़ी ही श्रद्धा और भक्ति के साथ देखता हूँ। उन्हें बहुत बड़ा विद्वान् और योग्य व्यक्ति मानकर चलता हूँ। उन्हें आदरणीय देशभक्त के पद पर सुशोभित करता हूँ और निरीक्षण करता चला जाता हूँ तो क्या देखता हूँ......" कहते-कहते रमेश चुप हो गया।

प्रमिला ने आश्चर्य के साथ रमेश के चेहरे पर देखकर पूछा, "क्या देखते हो रमेश ?"

रमेश ने गम्भीरतापूर्वक कहा, "देखता क्या हूँ भाभी ! देखता हूँ कि मैं जहाँ से चलता हूँ बराबर पीछे ही हटता जाता हूँ। आगे नहीं बढ़ पाता।"

रमेश की बात सुनकर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "तुम पहले ही अन्तिम सीढ़ी पर जाकर खड़े हो जाते हो रमेश तो फिर आगे कौन सी सीढ़ी बनाई जाय तुम्हारे लिए।"

परन्तु विनय भाई के इस उत्तर से रमेश की जिज्ञासा शान्त न हो सकी।

तीनों व्यक्ति कमरे से निकलकर घर के पीछे वाले गुलाब बाग में चले गये।

विनय भाई ने भारतसेवक की जन-जागृति योजना को ध्यानपूर्वक पढ़ा तो पाया कि उसमें भारतसेवक ने जनता के सहयोग की आकांक्षा की है।

अपनी और सत्ता की योजनाओं को फलीभूत करने के लिए जन-सहयोग का स्वप्न देखा है। और उसी स्वप्न में जनता और उसके बाल-बच्चों के स्वर्णिम भविष्य की कल्पना की है।

जनता और उसके बाल-बच्चों के उज्ज्वल भविष्य-की सुनहली दिशा के स्वप्न में सहयोग देना भारतसेवक या सत्ता की दासता स्वीकार करना है क्या? उनके पास जाकर अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करना, उनसे याचना करना है क्या?

विनय भाई ने इस समस्या पर आज रातभर विचार किया। खूब सोचा, खूब समझा और अच्छी तरह जाना कि कच्ची खोपड़ी के लोग उनके इस निस्स्वार्थ सहयोग में भी अनेकों स्वार्थों को सूंघने का प्रयास करेंगे, परन्तु क्या उनके इस सूंघने के भय से ही भयभीत होकर विनय भाई को उस दिशा में क़दम नहीं बढ़ाना चाहिए?

"आज आपकी आँखें सूजी-सूजी सी लग रही हैं। मालूम देता है कि रात भर के जगे हैं।" प्रमिला ने प्रातःकाल भेंट करते हुए पूछा।

"जागे अवश्य हैं आप।" रमेश ने प्रमिला की बात का समर्थन किया।

विनय भाई बोले, "तुम दोनों की बात सही है। आज रातभर मुझे नींद नहीं आई। सोचता ही रहा कि भारतसेवक के जन-जागृति-आन्दोलन में अपने 'भारत-साहित्य सहयोग' को डुबा दूँ क्या? उस महान् आन्दोलन का श्रीगणेश कर डालूँ क्या?"

"तब क्या निर्णय किया आपने?" उत्सुकता के साथ प्रमिला ने पूछा।

"निर्णय का प्रश्न तो उसी दिन समाप्त हो चुका था प्रमिला, जिस

दिन में भारतसेवक से भेंट करने गया था। यदि जन-जागृति में अपने 'भा त साहित्य सहयोग' को आत्मसात न करना होता तो उनके पास जाने की आवश्यकता ही क्या थी ?" विनय भाई ने कहा।

"तव फिर सोच-विचार कैसा ?" प्रमिला ने पूछा। "एक बार निश्चय कर लेने पर फिर तो कभी निश्चय को बदलते मैंने आपको नहीं देखा। कैसा भी संकट चाहे क्यों न आया परन्तु आपका निश्चय डगम-गाया नहीं।"

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "निश्चय बदलने की बात नहीं है प्रमिला ! भारतसेवक की वर्तमान स्थिति की बात है। जिस समय की बात तुम कर रही हो उस समय भारतसेवक केवल भारतसेवक मात्र था, सत्ता-पति नहीं था वह। उस समय जो कार्य भी वह करता था वह जनता और उसके बाल-बच्चों के बल पर करता था, परन्तु आज उसकी योज-नाओं का मूलाधार केवल जन-सहयोग नहीं है। जन-सहयोग के अभाव में ही तो जन-जागृति की योजना सामने आई है। इस जागृति शब्द में सहयोग की ध्वनि है।"

"आज क्या कह रहे है आप ?" प्रमिला ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

"ठीक कह रहा हूँ प्रमिला ! भारतसेवक के जलसे-जलूसों को देखकर यह अनुमान लगाना कि उनमें जनता के कर्मठ बाल-बच्चे, जिनके खून-पसीने के बलिदान पर पैर रखकर भारतसेवक ने राजा को गद्दी से नीचे घसीटा था, कितने है ? जनता के तमाशबीन बाल-बच्चों की भीड़ को देखकर राष्ट्र के उत्थान की कल्पना करनेवाले स्वप्न का कहीं मै भी एक अंग बनकर न रह जाऊँ, यही भय लगता है। अपनी सात वर्ष की तपस्या को केवल भावना की लहरों में डुबा देने को मै तैयार नहीं।" गम्भीरतापूर्वक विनय भाई ने कहा।

प्रमिला विनय भाई की बात सुनकर एक शब्द भी न बोली। कितनी ही देर तक सोचने के पश्चात् उसने गम्भीरतापूर्वक कहा, "आज्ञा करें

तो अपना सुझाव प्रस्तुत करूँ।"

"अवश्य करो प्रमिला ! मै रातभर इसी उधेड़बुन में लगा रहा हूँ। अभी तक कोई सुझाव मेरी समझ में नहीं आया।" विनय भाई ने कहा।

प्रमिला अभी कुछ कहने भी न पाई थी कि रमेश गम्भीर वाणी में बोला, "मेरी तुच्छ राय इस गम्भीर समस्या के विषय में यह है कि आप इस पर विचार किये बिना ही कार्य-पथ पर पग बढ़ा दें। भारतसेवक के विचार और उनकी दिशा में जब आपको सन्देह नहीं है तो बीच की आने वाली समस्याएँ आपसे आप हल होती चली जायँगी।" और फिर मुस्कराकर बोला, "देखिये मेरे मस्तिष्क में भारतसेवक का चेहरा आपसे आप निखरता जा रहा है। मैंने अब उसे निखारने या उसका सही खाका तैयारों करने का प्रयास बिलकुल बन्द कर दिया है। मै देख रहा हूं कि विचार की उलझी हुई गुत्थियाँ धीरे-धीरे समय पाकर आप सुलझती जा रही है।"

रमेश की बात सुनकर प्रमिला बोली, "मैं भी रमेश के मत से सहमति प्रकट करती हूँ। और चाहती हूँ कि आपका जो क़दम आगे वढ़ गया है। वह पीछे न लौटे।"

इस पर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "तो तुम दोनों के मत से मैं सहमत होता हूँ। सब के मत को सहर्ष स्वीकार कर लेने की मेरी पुरानी आदत है।"

प्रमिला और रमेश ने देखा कि विनय भाई के पास आज काग़ज़ों का ढेर लगा हुआ है। चार-पाँच फाइल भी इधर-उधर तख़्त पर पड़े है। प्रमिला ने उन्हें सँवारकर एक ओर पेपरवेट से दबाकर रख दिया और फिर बोली, "आपको याद है आज सोमवार का दिन है और आचार्य प्रकाश आने वाले है। आपने कहा था कि उन्हें लेने के लिए स्टेशन जाना होगा।"

प्रमिला की बात सुनकर विनय भाई बोले, "हाँ, मैं तो तुम्हें सूचित करना भूल ही गया प्रमिला ! आचार्य प्रकाश कल दिल्ली आ चुके हैं और आज उनसे मिलने के लिए मुझे दस बजे जाना है। तुम और रमेश

भी साथ चलोगे मेरे ।"

जब तीनों व्यक्ति नहा-धोकर, थोड़ा नाश्ता करके, चलने को तैयार हुए तो क्या देखा उन्होंने कि एक जीप गाड़ी आकर उनके मकान के सामने रुकी और उस पर से उन्हें आचार्य प्रकाश उतरते दिखाई दिये ।

विनय भाई लपककर कमरे से बाहर बरांडे में आते हुए बोले, "लो आचार्य प्रकाश तो स्वयं ही आ पधारे । वह कह भी रहे थे कल फोन पर कि वह स्वयं आकर 'भारत साहित्य सहयोग' का कार्यालय देखना चाहते हैं और सेवा माता ने उनसे रमेश के बनाये हुए सरस्वती के चित्र की बड़ी प्रशंसा की है । रमेश का बनाया हुआ राष्ट्र-पिता का वह चित्र उन्हें बहुत पसन्द आया जो तुम लोगों ने गत सप्ताह मेरठ ज़िले के एक ग्रामोद्योग आश्रम को भेंट किया था ।"

"तब क्या आचार्य प्रकाश इस समय वहीं से पधारे हैं ?" प्रमिला ने पूछा ।

"नहीं" विनय भाई बोले, "आये तो बम्बई से हैं, परन्तु एक दिन के लिए तपस्वी सुनील से मिलने गये थे ।"

और इतना कहकर उन्होंने आगे बढ़कर आचार्य प्रकाश का स्वागत किया ।

प्रमिला और रमेश भी विनय भाई के साथ थे ।

प्रमिला को देखकर आचार्य प्रकाश बोले, "प्रमिला भूल ही गई मुझे । आखिर ऐसा भी क्या एकांतवास कि मिलना-जुलना ही बंद कर दिया सबसे ?"

प्रमिला ने मुस्कराकर कहा, "स्वयंसेविका का कार्य करनेवाली प्रमिला की जब आचार्य प्रकाश को आवश्यकता ही नहीं रही तो मैं क्यों व्यर्थ आपसे मिलकर आपका समय नष्ट करतीं ।"

प्रमिला का तीखा व्यंग्य सुनकर आचार्य प्रकाश तिलमिला उठे और सरल वाणी में बोले, "सच बात तो यह है प्रमिला ! कि देश की स्वतंत्रता के पश्चात् कार्यक्रम का ढाँचा ही बदल गया । क्या-क्या स्वप्न लेकर स्वतंत्रता-

संग्राम संचालन किया था। विजय भी प्राप्त की और राजा को शासन-विहीन भी कर दिया, परन्तु सत्ता रानी के आकर्षक जाल को छिन्न-भिन्न करने का जब समय आया तो आपस में फूट पड़ गई।"

आचार्य प्रकाश की बात सुनकर विनय भाई बोले, "देश की राजनीति में यह दुर्भाग्यपूर्ण बात हुई जो दो सच्चे भारतसेवकों ने पारस्परिक मतभेद के कारण देश की संगठित शक्ति को दो भागों में विभाजित कर दिया।"

आचार्य प्रकाश को आदरपूर्वक विनय भाई, प्रमिला और रमेश बैठक में लाये और तख्त पर पड़े क़ालीन पर बिठाया।

कमरे में प्रवेश करते ही आचार्य प्रकाश की दृष्टि सरस्वती के चित्र पर गई और उसे बड़े ध्यानपूर्वक देखकर बोले, "चित्र वास्तव में बहुत सुन्दर बना है। सेवा माता ने ठीक ही प्रशंसा की थी इस चित्र की।"

आचार्य प्रकाश के मुख से चित्र की प्रशंसा सुनकर रमेश सामने आकर बोला, "चित्रकार रमेश नमस्कार करता है आचार्य प्रकाश को।"

आचार्य प्रकाश रमेश की ओर देखकर बोले, "तुम्हारा यह चित्र कला को एक नई दिशा देगा चित्रकार! नई प्रेरणा देगा। साहित्य का सम्बन्ध अकर्मण्य भोगविलास से विच्छेद करके मनोरंजन और आनन्द के साथ सेवा, त्याग और साधना से जोड़ देगा। तुम्हारा साहित्य का यह प्रतीक जन-जागृति का सन्देश देगा साहित्य-सेवकों को।"

"मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि मैं अपने चित्र को उतनी सफलता प्रदान कर सका कि जिसे देखकर दर्शक चित्रकार की भावना को परख सके। चित्र को देखकर आपने चित्रकार का जो आशय समझा ठीक उसी प्रेरणा को विनय भाई और प्रमिला भाभी के सम्पर्क से प्राप्त करके मैंने इस चित्र को चित्रित करने के लिए तूलिका उठाई थी।" रमेश ने कहा।

इसके पश्चात् बातों का विषय बदल गया। आचार्य प्रकाश ने कहा, "तपस्वी सुनील के कार्य-क्रम का अध्ययन तो तुमने किया ही होगा विनय भाई!"

"अपनी टूटी-फूटी समझ में जहाँ तक उस तपस्वी की बातें आ सकी हैं वहाँ तक तो अवश्य किया है।" विनय भाई ने कहा।

"तब फिर क्या विचार है आपका ? क्या उनके रास्ते पर चलकर जनता और उसके बाल-बच्चों की दशा को तीव्र गति के साथ समुन्नत किया जा सकता है ?" आचार्य प्रकाश ने पूछा।

"किया क्यों नहीं जा सकता ? यही तो वास्तव में सही और सर्वोत्तम मार्ग है जन-जीवन को उन्नत बनाने का, परन्तु क्या आप समझते हैं कि भारत का समाज़ इतना शिक्षित और जागरूक हो चुका है कि वह अपने अधिकार से अधिक साधनों को निस्स्वार्थ भाव से त्यागने के लिए तैयार है ?" गम्भीरतापूर्वक विनय भाई ने कहा।

"कठिनाई तो हर बड़े काम में आती ही है और त्याग के मार्ग पर किसी को लाने के लिए कितनी प्रतीक्षा करनी पड़ती है, यह भी आपसे छिपा नहीं है। परन्तु यह तो आपको मानना ही होगा कि आदर्श मार्ग यही है। सत्ता के अंकुश के नीचे जो काम जनता और उसके बाल-बच्चों को करने होते हैं उनमें से अधिकांश में उनकी सहमति नहीं होती।" आचार्य प्रकाश ने कहा।

आचार्य प्रकाश की यह बात सुनकर विनय भाई मुस्कराये और फिर सरल वाणी में बोले, "आपसे किसी बात पर विवाद करना मैं व्यर्थ समझता हूँ। समझते आप भी हैं सब और मैं भी समझता हूँ। पारस्परिक मतभेदों के बीच में आ जाने से सिद्धान्त नहीं बदल सकते। सत्य नहीं बदल सकता।

भारत जैसे देश में जन-जागृति का एक नहीं अनेकों आन्दोलन होने की आवश्यकता है। भारतसेवक और सत्ता भी इस दिशा में गम्भीरतापूर्वक विचार कर रहे हैं।"

विनय भाई के मुख से भारतसेवक और सत्ता की बात सुनकर आचार्य प्रकाश ज़ोर से खिल-खिलाकर हँस पड़े और फिर हँसते ही रहे काफी देर तक। इसके पश्चात् सरल शब्दों में बोले, "सात वर्ष के मौन अध्ययन

में आपका सम्पर्क जनता, उसके बाल-बच्चों और भारतसेवक से विच्छेद हो गया है विनय भाई ! इनके हृदयों की क्या दशा है, इनके मस्तिष्क किन विचार-धाराओं में बह रहे हैं, इनके जीवन के कार्य-क्रम कैसे बन चुके हैं, इसका आपको ज्ञान नहीं।"

आचार्य प्रकाश से सन् १९४७ के पश्चात् यह पहली भेंट थी विनय भाई की। विनय भाई सरल मुख-मुद्रा से बोले, "मेरा इस बीच की राजनीति से वास्तव में कोई सम्बन्ध नहीं रहा और सम्भव है इस नाते मैं देश की वस्तुस्थिति से अनभिज्ञ भी हूँ, परन्तु आपको, भारतसेवक श्रीलाल को और तपस्वी सुनील को भी मैंने समझना बन्द कर दिया है, यह मानने के लिए मैं उद्यत नहीं।"

विनय भाई की बात सुनकर आचार्य प्रकाश अपने सिर के सफेद बालों पर हाथ फेरते हुए बोले, "चलो जो भी सही; आज अपना इन बातों से कोई सम्बन्ध नहीं। मैंने तो अपने को राजनीति से बिलकुल अलग कर लिया है। और सोचा है कि अपना जीवन तपस्वी सुनील के कार्य-क्रम को सौंप दूँ।"

"बहुत ही सुन्दर विचार किया है आपने।" विनय भाई प्रसन्नतापूर्वक बोले, "इससे सुन्दर विचार और कोई हो ही नहीं सकता। आप जैसा साथी पाकर तपस्वी सुनील की सर्वोदय-भावना देशव्यापी होकर जन-जीवन के उज्ज्वल भविष्य की साकार कल्पना होगी।"

आचार्य प्रकाश की समझ में न आया कि विनय भाई ने आखिर क्यों उनके विचार से अपनी इतनी प्रबल सहमति प्रदान की जबकि वह स्वयं अपनी 'भारत सहित्य सहयोग' योजना को भारतसेवक श्रीलाल की जन-जागृति योजना में विलीन करने का विचार कर रहे हैं।

आचार्य प्रकाश ने इस विषय में बात को आगे न बढ़ाते हुए पूछा, "तो आजकल क्या कार्य-क्रम चल रहा है आपका ? 'भारत साहित्य सहयोग' योजना की क्या दशा है ? मेरे विचार से आपको यह योजना भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता के आधीन होकर संचालित नहीं करनी चाहिए।

यह मेरा स्पष्ट मत है।"

विनय भाई बोले, "आपके मत का मैं हृदय से स्वागत करता हूँ आचार्य ! परन्तु आज यह देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा है कि आपने भारतसेवक श्रीलाल को इतना गलत समझना कैसे प्रारम्भ कर दिया। सत्ता रानी के विषय में आपका मत ग़लत हो सकता है, परन्तु भारत-सेवक श्रीलाल के विषय में आपका यह मत देखकर मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।"

"आपकी समझ में आ भी नहीं सकता विनय भाई ! कोरे काग़ज़ पर कमरे के द्वार बन्द करके लेखनी रगड़ते रहने से जनता और उसके बाल-बच्चों की वास्तविक दशा का ज्ञान नहीं हो सकता।" गम्भीरतापूर्वक आचार्य प्रकाश ने कहा।

प्रमिला आचार्य प्रकाश के वाक्य को शर्बत के घूँट की तरह पीकर बोली, "जनता और उसके बाल-बच्चों की दशा का जो ज्ञान नेता के पास नई दिल्ली की कोठियों में बैठकर टैलीफोनों द्वारा पहुँचता है वह एक साधारण पाठक के नाते इस बन्द कमरे में भी चला आता है। और इससे भी कहीं अधिक उसके वास्तविक रूप का दिग्दर्शन कलाकार की अनुभूति से टकराकर होता है और वह तभी सम्भव है जब आपका परिचय साहित्यकार की शक्ल से न होकर उसके साहित्य से होना प्रारम्भ हो जाय।

आज से यह मानकर चलिए कि राजनीतिक लीडरी ही जनता का सम्पर्क नहीं है।"

प्रमिला की बात सुनकर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "आचार्य प्रकाश की बात पर रूठने का कोई कारण नहीं है प्रमिला ! और तुम्हारी बात को सच करने के लिए ही तो आचार्य प्रकाश इतना बड़ा क़दम उठाने जा रहे हैं कि आप राजनीति से सम्बन्ध विच्छेद करके तपस्वी सुनील के आन्दोलन में अपना समस्त जीवन लगाने का विचार कर चुके हैं।"

"कितना सुन्दर विचार है आचार्य प्रकाश का !" रमेश ने मंत्र-मुग्ध

होकर कहा । "तपस्वी सुनील के सम्पर्क और सेवा माता तथा जनता का सहचर्य आनंद की स्वयं सिद्धि है ।"

"इसमें कोई सन्देह नहीं ।" विनय भाई ने कहा ।

आचार्य प्रकाश के मस्तिष्क में विचारों का एक तूफ़ान-सा आ रहा था । उन्हें लग रहा था कि उनका तपस्वी सुनील की दिशा में अपने जीवन को घुमा देना, उनकी राजनीतिक असफलता का प्रमाण-पत्र है ।

भारतसेवक श्रीलाल के विरुद्ध मोर्चा लगाने में उन्हें इतनी सफलता तो मिली कि वह लोकसभा के सदस्य बन सके और अपनी एक राजनीतिक पार्टी भी उन्होंने बना ली परन्तु देश और देश की जनता के सम्मुख वह कोई कार्यक्रमप्रस्तुत न कर सके ।

भारतसेवक और सत्ता के कामों की आलोचना भर करते रहने से किसी कार्य की सिद्धि न हो सकी । और अब तो आचार्य प्रकाश को यह भी स्पष्ट हो गया कि वह भारतसेवक श्रीलाल को लोकसभा के चुनावों में भी परास्त नहीं कर सकते ।

ऐसी दशा में तपस्वी सुनील के साथ जन-आन्दोलन खड़ा करने के अतिरिक्त और कोई नई दिशा ही नहीं रही उनके सामने ।

विनय भाई आचार्य प्रकाश के मस्तिष्क की उलझन से भलीभाँति परिचित थे । इसीलिए मुस्कराकर बोले, "यह मस्तिष्क की उलझन का समय नहीं है आचार्य प्रकाश ! जीवन के अंतिम दिनों को जनता और उसके बाल-बच्चों के उत्थान में होम देने का समय है ।

भारतसेवक राजा नहीं है । उससे सत्ता को छीनकर अपने आधीन करने के स्वप्न में मुझे कोई तथ्य दिखाई नहीं देता ।

आज तो समय है जन-जीवन में घुल-मिलकर; उसके जीवन की वास्तविक कठिनाइयों को समझकर, भारतसेवक को उनका सही परिचय कराने की दिशा में दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ने का ।

भारतसेवक और आम लोगों के बीच हो सकता है कि कोई लम्बी-चौड़ी दीवार खड़ी हो गई हो, परन्तु आपके और उनके बीच में कोई दीवार

नहीं है। आपसे वह और उनसे आप पूरी तरह परिचित हैं।

मुझे विश्वास है कि आपका सहयोग जन-जागरण के कार्य को आगे बढ़ायेगा, जनता को समृद्ध करेगा और देश में एक स्तर पर खड़े होनेवाले समाज का निर्माण करेगा। यहीं से सर्वोदय के समाज का प्रारम्भ होगा, जिसमें सेवा माता, जनता, सत्ता, प्रमिला, भारतसेवक श्रीलाल, तपस्वी सुनील, आचार्य प्रकाश, रमेश, घोष बाबू, वेदान्ताचार्य रमण जी और विनय मिलकर एक स्वर में कहेंगे—हम सब एक हैं, हमारा समाज एक है, हमारा राष्ट्र एक है, हमार देश एक है, हमारा भोजन एक है, हमारे वस्त्र एक से हैं, हमारे मकान एक से हैं, हम सब सुखी हैं, हम सब सुशिक्षित हैं और हम सब मिलकर संसार के मानव मात्र की सेवा के लिए कटिबद्ध होकर निकले हैं। हमने संसार के मानव मात्र को अपने जीवन जैसी सुविधाएँ प्रदान करने का निश्चय किया है।"

विनय भाई की बात सुनकर आचार्य प्रकाश बोले, "मैं देख रहा हूँ विनय भाई! कि आपकी ज़बान से इस समय विनय भाई नहीं बोल रहे, बोल रहे हैं भारतसेवक श्रीलाल जी और आप यह निश्चय जान लें कि मैं उनकी राजनीति का शिकार होना पसंद नहीं करूँगा।"

आचार्य प्रकाश की बात सुनकर विनय भाई को हँसी आ गई और वह उनका हाथ अपने हाथ में लेकर बोले, "गत सात वर्षों में दुनियाँ इतनी बदल गई, ऐसा मैं नहीं समझता था। वही आचार्य प्रकाश जो भारतसेवक श्रीलाल के वचन को वेदवाक्य मानते थे, उन्हें आज भारतसेवक के जीवन का हर घुमाव राजनीति दिखाई देता है। इसका अर्थ यह हुआ कि उनकी दृष्टि में आज भारतसेवक श्रीलाल राजनीति से बाहर विचार ही नहीं सकते।"

"निश्चित रूप से नहीं विचार सकते विनय भाई! आपके समय की राजनीति में और आज की राजनीति में आकाश-पाताल का अंतर हो गया है। ऐसा मैं नहीं समझता कि आप उससे नितान्त अनभिज्ञ हैं। परन्तु उसका प्रत्यक्ष अनुभव और बात है और सुनी-सुनाई, पढ़ी-पढ़ाई बातों को

जान लेना और बात है। राष्ट्र-पिता की राजनीति में और आज की राज-नीति में आकाश-पाताल का अन्तर हो गया है।" आचार्य प्रकाश ने गम्भीरतापूर्वक कहा और विनय भाई ने भी इस बात पर गम्भीरतापूर्वक ही विचार किया।

आचार्य प्रकाश को अभी-अभी एक कार्यकर्त्ताओं की सभा में जाना था। वह खड़े होते हुए बोले, "आपका पत्र मिलते ही मैं निश्चय कर चुका था कि इस बार दिल्ली आने पर आपसे अवश्य भेंट करूँगा। अभी मुझे दो दिन यहाँ और ठहरना है। कल संध्या को सायंकाल चार बजे मैं फिर आऊँगा। रही-सही बातों पर कल विचार करेंगे। वैसे आपकी योजना से मैं सहमत हूँ। थोड़ी बहुत आपत्ति की बात यही है कि कहीं आप भारत-सेवक के रंग में रंगकर योजना के मूल सिद्धान्त को ही न खो बैठें।"

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "मेरी योजना भारतीय जनता को सत्-साहित्य के सम्पर्क में लाकर उनके जीवन को विकास की दिशा दिखाने की है। और मेरे विचार से भारतसेवक श्रीलाल और आप सबका सहयोग इस दिशा में किसी भी प्रकार मुझे अपने रंग में रँगने-वाला क्या हो सकता है यह मेरी समझ में नहीं आता। मैं तो सबके रंग में रँगने को तैयार बैठा हूँ आचार्य प्रकाश! बशर्ते कि आप मेरे रंग में भी रँग जायें। और सत्-साहित्य का रंग तो वह रंग है कि जो सबके ऊपर अपनी छटा छिटकाने से बाज़ नहीं आयगा।"

"यह मैं जानता हूँ विनय भाई!" मुस्कराकर आचार्य प्रकाश ने कहा।

चलते समय रमेश ने आचार्य प्रकाश के हाथों में तभी चन्द लाइनों में खींचा हुआ आचार्य प्रकाश का एक स्केच भेंट करते हुए कहा, "विनय भाई के पास आने वाले भारतसेवकों में आप सबसे अधिक व्यस्त प्रतीत होते हैं। आपकी इस व्यस्तता का यह रेखा-चित्र आपको भेंट करता हूँ।"

चित्र के नीचे लिखा था "भारतसेवक को नमस्कार" और उससे भी नीचे लिखा था

'चित्रकार'
- 'रमेश'
'भारत साहित्य सहयोग'

चित्र हाथ में लेकर आचार्य प्रकाश ने रमेश के चेहरे पर देखते हुए कहा, "भावना को चित्रित करने में तुमने कमाल कर दिया चित्रकार ! तुम्हारा यह चित्र वास्तव में मेरी वर्तमान मनोस्थिति का सही चित्र है। मैं देख रहा हूँ कि मेरा जीवन इन दिनों बहुत ही व्यस्त होता जा रहा है और मेरी प्रगति की दिशा धुँधली दिखाई देती है। भारतसेवक श्रीलाल से टकराकर मैंने भूल की, ऐसा मैं नहीं मानता, परन्तु मैं जो कुछ कर सकता था वह नहीं कर सका, यह निश्चित ही है।"

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "जब इतना अनुभव कर रहे हो आचार्य प्रकाश ! तो इतना मान लेने में क्या आपत्ति है कि आपका उठाया हुआ यह पग जनता और उसके बाल-बच्चों की उन्नति के मार्ग में बाधक सिद्ध हुआ।"

"यह मैं कदापि नहीं मान सकता विनय भाई ! मेरी और भारत-सेवक श्रीलाल की टक्कर ने सत्ता के कान खड़े कर दिये। सत्ता को सतर्क कर दिया।

वरना तुम जानते हो कि क्या दशा होती ? घोष बाबू और वेदान्ता-चार्य रमण जी के विरुद्ध तो सत्ता भारतसेवक श्रीलाल जी के हज़ार प्रकार से कान भर सकती थी, परन्तु मेरे विरुद्ध यों ही अनर्गल बातें करने का उसमें साहस नहीं हुआ और यह सत्ता की निरंकुशता पर एक गहरा प्रतिबन्ध लग गया।" आचार्य प्रकाश ने कहा।

"आपकी यह बात बहुत हद तक ठीक है।" प्रमिला बोली। "प्रजा-तन्त्र में विरोधी दल का सशक्त होना नितान्त आवश्यक है। लोकसभा में एक दल का होना प्रजातन्त्र का सही रूप प्रस्तुत नहीं कर सकता।"

प्रमिला द्वारा अपने मत का समर्थन पाकर आचार्य प्रकाश बोले,

'तुम्हारे समर्थन ने मेरे मन की शंका का निवारण किया प्रमिला ! परन्तु फिर भी मैं कहीं-न-कहीं अपने इस काम में कोई भूल अवश्य पाता हूँ, जिसके कारण मैं जो कुछ करना चाहता था वह नहीं कर सका और जो कुछ करना चाहता हूँ वह नहीं कर पा रहा ।"

बातें करते-करते ही घर के बाहर खड़ी जीप गाड़ी के पास तक तीनों पहुँच गये ।

कल आने की बात निश्चित करके ड्राइवर को गाड़ी चलाने की आचार्य प्रकाश ने आज्ञा दी ।

: १५ :

विनय भाई अपनी 'भारत साहित्य सहयोग' की योजना सोचते विचारते रहे, अपने इष्ट मित्रों और साथी कार्यकार्त्ताओं से पत्र-व्यवहार करते रहे। योजना के विषय में सबका मत मालूम करते रहे।

इसी बीच में उन्होंने देखा कि भारतसेवक श्रीलाल का जन-सेवक-समाज सामने आ गया। वह मुस्कराकर प्रमिला से बोले, "लो तुम सोचती और विचारती ही रह गईं और भारतसेवक ने नये समाज का बीजारोपण भी कर दिया। देश के त्यागी, निःस्वार्थ सेवी, निःशुल्क कार्यकर्त्ता और श्रमदानियों को एक पंक्ति में खड़ा करके राष्ट्र की उन्नति में सहयोग देने के लिए आवाहन दे दिया गया।"

प्रमिला बोली, "सुन तो चुकी हूँ मैं भी और पत्रों में भी जहाँ-तहाँ इसकी चर्चा है। उद्देश्य भी महान् है इसका। देश की जनता को समुन्नत बनाने के लिए जन-सहयोग को पुकारा गया है। परन्तु जन-सहयोग को पुकारने की यह नई प्रणाली है।"

विनय भाई हँसकर बोले, "केवल प्रणाली की ही बात नहीं है प्रमिला ! अभी तो तुम देखोगी कि इसके कार्यकर्त्ताओं के चुनाव में कितनी विचित्रता सामने आती है। इस समाज का ढाँचा प्रजातन्त्र का ढाँचा नहीं है, इसमें तो देश के चुने हुए सेवकों को निमन्त्रित और सम्मानित किया जायगा।"

"तो इसका अर्थ यह हुआ कि कोई पौदा न लगाकर गुलदस्ता सजाया जायगा।" रमेश ने सामने दीवार पर टँगे केनवेस पर अपने बुरुश से एक रेखा खींचते हुए अपना ध्यान इधर आकर्षित करके कहा। "बहुत सुन्दर कल्पना है 'जन-सेवक-समाज' की। विनय भाई कहें तो एक चित्र बनादूँ इस आदर्श समाज का।"

बातें चल ही रही थीं कि विनय भाई ने अपने मकान के सामने रिक्शा

से घोष बाबू को उतरते देखा। उन्हें देखकर वह मुस्कराकर बोले, "लो घोष बाबू आ रहे हैं। इनसे सुनना अब 'जन-सेवक-समाज' की टिप्पणी। देखिये क्या धज्जियाँ बिखेरते हैं उसकी।" और इतना कहकर गम्भीर मुद्रा में उठकर उन्होंने बाहर वराँडे में आकर घोष बाबू का स्वागत किया।

प्रमिला और रमेश ने भी खड़े होकर आदरपूर्वक नमस्कार किया।

विनय भाई ने पूछा, "कहिए कुशल तो है। आज सुबह-ही-सुबह कैसे कष्ट किया ?"

घोष बाबू ने अपने थैले से 'जन-सेवक-समाज' का घोषणा पत्र और संविधान निकालकर विनय भाई के हाथों में देते हुए कहा, "अपने भारतसेवक श्रीलाल की नई चाल देखिए। प्रजातंत्र का पोषक देखिये कैसे डिक्टेटरी समाज का निर्माण करने चला है। परन्तु मैं कहे देता हूँ कि यह 'जन-सेवक-समाज' का जो बच्चा आपके भारतसेवक ने पैदा किया है, यह पैदा ही मुर्दा हुआ है। इससे जनता का कोई सम्बन्ध नहीं, कोई सरोकार नहीं। यह जनता का बच्चा नहीं है। इसके बदन में रक्त नहीं है, प्राण-वायु भी आक्सीजन-ट्यूब की भाँति भारतसेवक अपने शरीर से कब तक इसमें पहुँचाता रहेगा, यह देखना है हमें।"

घोष बाबू की बात सुनकर प्रमिला को हँसी आ गई और वह मुस्कराकर बोली, "घोष बाबू ! आप भी कमाल की बातें करते हैं। क्या आज के युग में पुरुषों ने भी बच्चे पैदा करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया है ?"

प्रमिला की बात सुनकर घोष बाबू मुस्कराये। वैसे बहुत कम मुस्कराते हैं वह। परन्तु प्रमिला की बात पर वह अपनी मुस्कान को होठों में बन्द करके न रख सके। और फिर बोले, "भूल अवश्य हुई मुझसे प्रमिला ! परन्तु बच्चा यह भारतसेवक का ही कहा जायगा। यों पैदा करने में सत्ता का पूरा-पूरा सहयोग है और वह उस समय तक बना भी रहेगा जब तक उस बेचारी के स्तनों में दूध है; और उस दूध को दुहने का यन्त्र भारतसेवक के हाथ में है।"

"फिर आज कौन कमी दिखाई दे रही है आपको ? बच्चे को दूध और प्राण वायु-मिलने की ही तो आवश्यकता है। इन दोनों ही वस्तुओं की व्यवस्था के पश्चात् बच्चा स्वयं स्वस्थ होकर बड़ा होगा और भारत सेवक तथा सत्ता ने राष्ट्र-निर्माण के जिस महत्वपूर्ण कार्य को अपने कंधों पर उठाया हुआ है उसे आगे बढ़ायेगा।" प्रमिला ने मुस्कराकर कहा।

"कल्पना बहुत सुन्दर है प्रमिला !" और फिर विनय भाई की ओर मुँह करके बोले, "विनय भाई, यदि सच पूछो तो सत्ता के कुचक्र में फँसकर सेवा माता और जनता के नामों को भी कलंकित कर दिया है भारतसेवक श्रीलाल ने। और अब आप देखेंगे कि जो बचा-कुचा नाम रह भी गया है वह इस 'जन-सेवक समाज' के जल में घुल जायगा।

घोष बाबू की बात सुनकर विनय भाई गम्भीर मुख-मुद्रा बनाकर बोले, "विचार तो आपका बहुत गम्भीर मालूम देता है घोष बाबू ! परन्तु खेद की बात यह है कि सेवा माता और जनता न जाने क्यों ऐसा अनुभव करने में असमर्थ हैं। उनका विचार है कि कोई नया और बड़ा कार्य करने में प्रारम्भिक कठिनाइयाँ आया ही करती हैं।"

"और इससे भी मजेदार वात यह है घोष बाबू कि उन्हें इस नये बच्चे के जन्म का समाचार सुनकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है। सुना है कि दोनों ने ही बच्चे के स्वास्थ्य और दीर्घ आयु के लिए अपने आशीर्वाद भेजे हैं" प्रमिला ने कहा।

प्रमिला की बात सुनकर घोष बाबू तिलमिला उठे। उनके मस्तक पर पसीना आ गया और वह निराशा भरे स्वर में बोले, "जनता की भोली अनभिज्ञता और सेवा माता की अपने लाड़ले बेटे में प्रगाढ़ आस्था और अंधविश्वास राष्ट्र का जितना भी अहित कर सकें उतना ही कम है। अन्त में इतना ही कह सकता हूँ मैं विनय भाई ! परन्तु इतना आप निश्चित रूप से जान लें कि इस नये बच्चे के बदन में रक्त नहीं है। यह मुर्दा पैदा हुआ है, मुर्दा ! मुझे देखना है कि आपका भारतसेवक कहाँ तक इसके मुर्दा शरीर को आक्सीजन प्रदान कर सकेगा।"

घोष बाबू की आवेशपूर्ण बात सुनकर विनय भाई मुसकराते हुए बोले मुर्दों में जान डालने की क्रिया में हमारे भारतसेवक श्रीलाल जी बहुत प्रवीण हैं घोष बाबू ! परन्तु आपकी एक बात से मैं निश्चित रूप से सहमत हूँ कि यह जो नये समाज का ढाँचा सामने आया है इसे जनता और सेवा माता की दिशा से आना चाहिए था, सत्ता की दिशा से नहीं। इस समाज के विकास में यही पद्धति घातक सिद्ध होगी और मैं आपको स्पष्ट कहे देता हूँ कि एक दिन जन-सहयोग स्वयं इस पद्धति को अपने कार्य के विकास से छिन्न-भिन्न कर देगा।"

"तो आपका मतलब है कि यह वर्तमान व्यवस्था जो सामने आई है यह नहीं रहेगी। इसमें परिवर्तन किया जायगा।" प्रमिला ने पूछा।

"किया जाने की बात नहीं है प्रमिला ! परिवर्तन स्वयं होता है। बात वास्तव में मूल सिद्धान्तों की है। देखना यह है कि समाज का निर्माण जिन सिद्धान्तों को आधार बनाकर किया गया है उनमें भी कुछ शक्ति है या नहीं। यदि उनमें कोई शक्ति है तो निश्चित रूपसे सही कार्य कर्त्ताओं के मिल जाने पर कार्य की प्रगति सही दिशा में होगी।" विनय भाई ने कहा।

विनय भाई की बात पर खीजकर घोष बाबू बोले, "क्या स्वप्न की बातें सोच रहे हो विनय भाई ! सत्ता रानी के रंगीन चश्मे से झाँककर सेवकों की सूरतें देखते हैं आपके भारतसेवक श्रीलाल जी !"

इसी चर्चा के बीच विनय भाई ने देखा कि आचार्य प्रकाश की जीप गाड़ी आकर उनके द्वार पर रुकी और वह मुस्कराकर घोष बाबू से बोले, "लीजिये आपके विचारों के एक और समर्थक आ पधारे।"

इतना कहकर विनय भाई खड़े होकर उनके स्वागत के लिए द्वार की ओर बढ़े और आचार्य प्रकाश गाड़ी से नीचे उतरे।

आचार्य प्रकाश को चीप गाड़ी से उतरते देखकर घोष बाबू मुस्कराये और प्रमिला से पूछा, "क्या आज ही पधारे हैं आचार्य प्रकाश ?"

"जी नहीं," प्रमिला ने कहा, "कल भी पधारे थे।"

थोड़ी ही देर में विनय भाई ने आचार्य प्रकाश के साथ कमरे में प्रवेश किया और सबने उनका स्वागत किया।

घोष बाबू को देखकर आचार्य प्रकाश प्रसन्नतापूर्वक बोले, "आपसे भेंट करके घोष बाबू, हार्दिक प्रसन्नता हुई। आपके कार्य के समाचार पत्रों में पढ़ता रहता हूँ। देश के मजदूर-समाज में आपने जो कार्य किया है वह वास्तव में सराहनीय है। विनय भाई कह रहे थे कि आपने अपने कार्य को केवल भाषणों तक ही सीमित न करके रचनात्मक कार्यों तक आगे बढ़ाया है।"

घोष बाबू आचार्य प्रकाश के मुख से अपने कार्य की प्रशंसा सुनकर मुग्ध होते हुए बोले, "मजदूरों की सेवा करना मैं अपना धर्म समझता हूँ आचार्य प्रकाश! क्योंकि मैं अपने को एक जन्मजात मजदूर मानता हूँ। मैंने एक मज़दूर के घर में जन्म लिया है, और देखा है कि उसे पग-पग पर किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।"

आचार्य प्रकाश आलथी-पालथी लगाकर तख्त पर बैठ गये और फिर प्रमिला की ओर देखकर मुस्कराते हुए बोले, "कल से देख रहा हूँ प्रमिला! कि तुम्हारी वीणा कहीं दिखाई नहीं देती। और फिर जब यह तुमने सरस्वती का मन्दिर बनाया है तो इसमें तो उसका होना आवश्यक ही हैं।"

आचार्य प्रकाश की बात सुनकर प्रमिला बोली, "वीणा मेरी बचपन की सहेली है आचार्य! परन्तु उसका और मेरा साथ एकांत में ही होता है।"

"एकांत की बातों का समय नहीं रहा अब प्रमिला! समाज की बातें सोचनी है। तुम्हारी वीणा केवल तुम्हारे आनन्द-क्षेत्र से बाहर निकल कर समाज के क्षेत्र में आनी चाहिए।" आचार्य प्रकाश ने कहा।

घोष बाबू, आचार्य प्रकाश की बात सुनकर गम्भीर वाणी में बोले, "समाज की ठेकेदारी लेना भी मज़ाक नहीं है आचार्य प्रकाश! ऐसे महान् कार्यों का तो भारतसेवक श्रीलाल और तपस्वी सुनील जैसे भारत माता के सेवकों से ही आशा की जा सकती है। प्रमिला बेचारी

एक नगण्य साहित्यिक की पत्नी समाज के उत्तरदायित्व को कैसे संभाल सकेगी ?"

घोष बाबू के व्यंग्य को सुनकर प्रमिला और विनय भाई के चेहरों पर मुस्कराहट आ गई। रमेश भी चित्र बनाना बन्द करके मण्डली के बीचों बीच आ बैठा और आश्चर्यचकित मुख-मुद्रा बनाकर उसने घोष बाबू से पूछा। "तो क्या आपके विचार से समाज के क्षेत्र में उतरने का केवल तपस्वी सुनील और भारतसेवक श्रीलाल जी जैसे महापुरुषों को ही अधिकार है। साधारण कोटि के लोग समाज-सेवा के क्षेत्र में नहीं जा सकते ?"

घोष बाबू बोले, "जाना और बात है चित्रकार ! और जन-क्रान्ति का कर्णधार बनना और बात है। एक आदमी में वह करामात होती है कि वह जन्मजात जन-रक्त-शोषक और निरंकुश सत्ता के कर्णधारों को भी अपना जादू का हाथ फेरकर त्यागी महात्मा और भारतीय समाज का महान् सेवक बना देता है और दूसरे जीवनभर अपने शरीर के रक्त की बूंद-बूंद का समाज के लिए बलिदान देता हुआ भी जन-क्रांति का नेता तो क्या एक साधारण सेवक कहलाने का अधिकार भी प्राप्त नहीं कर पाता।"

घोष बाबू की बात सुनकर आचार्य प्रकाश खूब ज़ोर-ज़ोर से हँस पड़े और तालियाँ पीटकर बोले, "भाई घोष बाबू ! बात आपने कमाल की कही, परन्तु भारतसेवक के साथ बेचारे तपस्वी सुनील को मैं नहीं समझता कि क्यों घसीटा जा रहा है ?"

घोष बाबू भी आचार्य प्रकाश की हँसी में हँसी मिलाकर बोले, "आप सब लोग एक ही थैले के चट्टे-बट्टे हैं। कोई किसी से कम नहीं है। बेचारी सेवा माता और जनता को ठगने के धंधे बनाने में आपको देर नहीं लगती।"

"और वे दोनों भी इतनी भोली-भाली हैं कि इन महानुभावों के चंगुल में फँसती ही चली जाती हैं।" विनय भाई ने गम्भीर मुख-मुद्रा बनाकर कहा।

"खेद यह है विनय भाई कि वे स्वयं ही नहीं फँसतीं ? अपने बाल-बच्चों, नाते-रिश्तेदारों और सगे-सम्बन्धियों को भी फँसाती जा रही हैं। जनता को मैं इनकी चालबाज़ियाँ लाख खोल-खोलकर समझाता हूँ परन्तु रक्त का सम्वन्ध कुछ ऐसा है कि विरोध बनता ही नहीं उनसे।" घोष बाबू बोले।

"दुर्बलता कहिए इसे मानव की घोष बाबू !" वैसी ही गम्भीर मुद्रा बनाकर प्रमिला ने कहा।

आचार्य प्रकाश को प्रमिला की शक्ल देखकर फिर हँसी आ गई। और वह घोष बाबू की ओर मुँह करके बोले, "घोष बाबू ! देखा आपने प्रमिला भी कितनी बदल गई है; परन्तु देख रहा हूँ कि आप पर किसी देशव्यापी परिवर्तन का कोई प्रभाव नहीं पड़ा ! आप जहाँ थे वहीं-के-वहीं हैं।"

आचार्य प्रकाश की बात सुनकर घोष बाबू उसी गम्भीरता के साथ बोले, "इसे मैं अपना दुर्भाग्य मान लेता हूँ आचार्य प्रकाश, परन्तु आपसे सही पूछता हूँ कि क्या वास्तव में कोई देशव्यापी परिवर्तन हुआ है ? आपकी नज़रें आपको धोखा तो नहीं दे रहीं ? शासन की प्रणाली में क्या वास्तव में आपको कोई परिवर्तन दिखाई देता है ? मेरी छोटी बुद्धि में तो कोई परिवर्तन आता ही नहीं। वही साहबियत सत्ता के शासन में दिखाई देती है। जनता की दशा पहले से अधिक खराब है। पहले राजा के विरुद्ध कोई आवाज तो बुलन्द कर सकता था परन्तु आज अपनी सरकार के विरुद्ध वैसा करने का साहस भी जनता में से धीरे-धीरे उठाता जा रहा है और सत्ता का अंकुश पहले की अपेक्षा और भी दृढ़ हो गया है।"

घोष बाबू की यह अन्तिम बात सुनकर आचार्य प्रकाश का भी रक्त खौलने लगा और उन्होंने स्वीकार किया, "यहाँ आपसे मैं सोलह आने सहमत हूँ घोष बाबू ! भारतसेवक श्रीलाल पर सत्ता का जादू काम कर रहा है। परन्तु आपने तपस्वी सुनील के विषय में जो इतनी बातें कह

डालीं, क्या जान सकूँगा कि वह सब आप दिल से महसूस करते हैं ?"

आचार्य प्रकाश की बात सुनकर घोष बाबू बोले, "वैसे कहता तो मैं साधारणतया वही बात हूँ आचार्य प्रकाश ! कि जो दिल से महसूस करता हूँ, परन्तु यदि आपके हृदय को ठेस लगी है मेरी बात से तो मैं अपनी बात वापस भी ले सकता हूँ।" और फिर विनय भाई की ओर देखकर बोले, "परन्तु भारतसेवक श्रीलाल के विषय में कही गई अपनी बात को, यह जानते हुए भी कि इससे विनय भाई के हृदय पर मार्मिक आघात हुआ है, मैं वापस लेने को कदापि तैयार नहीं।"

घोष बाबू के अन्तिम शब्द सुनकर विनय भाई मुस्कराते हुए बोले, "भारतसेवक श्रीलाल के व्यक्तित्व के विषय में आपकी यह बात मैं मानने को उद्यत नहीं कि उन पर सत्ता रानी तो क्या किसी का भी कुप्रभाव हो सकता है। और न हीं वह किन्हीं चश्मों से कभी देख सकते हैं। उन्हें अपनी नजर से देखना खूब आता है और परमात्मा ने उन्हें काफ़ी पैनी दृष्टि दी है।

परन्तु यह मैं अवश्य मान सकता हूँ कि कार्यव्यस्तता और अन्य कुछ कारणों के कारण कुछ भारतसेवकों का चुनाव ग़लत हो गया हो। जिसको लेकर आपको उनके जन-जाग्रति और भारत-सेवा के विषय में भी सन्देह होने लगा और वह सन्देह आपके मस्तिष्क से आगे बढ़कर आचार्यप्रवर प्रकाश बाबू के भी मस्तिष्क में घर कर गया।"

इस पर घोष बाबू उछलकर बोले, "बस यही तो मैं आपसे मनवाना चाहता था। मेरे कहने का अर्थ यही है कि भारतसेवक श्रीलाल आज-कल जिन भारतसेवकों को अपने विश्वास में लेते जा रहे हैं वे जनता के सच्चे हितैषी नहीं हैं, शुभचिन्तक नहीं हैं और यदि यह कह दूँ कि वे जनता और जनता के बालबच्चों के जीवन की कठिनाइयों से नितान्त अनभिज्ञ हैं, तो मेरी बात ग़लत नहीं होगी।"

घोष बाबू के शब्दों से अपनी विचारधारा में बल पाकर आचार्य प्रकाश बोले, "सच बात तो यह है विनय भाई ! कि जिन्हें भारतसेवक

श्रीलाल जी आजकल भारतसेवकों की पदवी प्रदान करने जा रहे हैं वे वास्तव में भारतसेवक नहीं हैं। भारतसेवक के प्रसाद को मुँह फैलाकर लपकनेवाले सत्ता रानी के नाते-रिश्तेदार और सगे सम्बन्धी हैं। इन लोगों ने भारतसेवक श्रीलाल जी और सच्चे भारतसेवकों के बीच एक ऐसी दीवार बनाकर खड़ी कर दी है कि जिसके आर-पार सही दृष्टिकोण से देखना असम्भव हो गया है।"

आचार्य प्रकाश की बात सुनकर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "विनय असम्भव किसी वस्तु को नहीं मानता आचार्य प्रकाश ! और किसी भी वस्तु को असम्भव मानना ही मनुष्य की सबसे बड़ी निर्बलता है। जहाँ वह ग़लत बात का विरोध करने के लिए अपने को असमर्थ पाता है, वहीं असम्भव का नारा बुलन्द करना प्रारम्भ कर देता है।"

रमेश एक जिज्ञासु की भाँति यह सब सुन रहा था। विनय भाई की बात सुनकर बहुत ही सरलतापूर्वक बोला, "आचार्य प्रकाश ने अभी-अभी एक दीवार की बात कही। मुझे बहुत ही पसन्द आई। और भारतसेवक का चित्र बनाने की दृष्टि से तो आपका यह विचार मेरे लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा।

परन्तु बात यह समझ में नहीं आ रही कि इस दीवार को बनी छोड़-कर सच्चे सेवक इधर-उधर पेंतरे क्यों काट रहे हैं ? कभी इस दीवार के नीचे से सुरंग बनाकर पार निकलने का प्रयास करते हैं और कभी वीर हनुमान की सेना में भर्ती होकर इसे फलाँगने का स्वप्न देखते हैं। आखिर क्यों नहीं वे अपनी सच्ची सेवा की शक्ति से इस दीवार को गिराकर अपने भारतसेवक श्रीलाल के पास पहुँच जाते ?

क्या उपस्थित विद्वद्वर इस बच्चे की शंका का निवारण कर सकेंगे ?"

रमेश के प्रश्न को सुनकर प्रमिला मुस्कराकर बोली, "यह भी एक रहस्य की बात है रमेश ! जिन सच्चे भारतसेवकों की बात आचार्य प्रकाश कर रहे हैं और जिनकी कोटि में अपने को लिखाने में घोष बाबू को भी कोई ऐतराज़ नहीं, वे सब-के-सब थोड़े-बहुत सत्ता रानी के प्रेमियों में

से हैं । सत्ता रानी की दीवार पर आघात करते हुए सभी का दिल कुलमुलाने लगता है ।"

"साथ ही एक बात और भी है रमेश !" विनय भाई मुस्कराकर बोले, "इन सच्चे भारतसेवकों की इस प्रेम-लीला के रहस्य से जनता और सेवा माता पूर्ण-रूपेण भिज्ञ हैं । उनसे छिपा नहीं है यह रहस्य ।"

विनय भाई की इस बात पर घोष बाबू तुनककर बोले, "तो क्या सत्ता को आप भारतसेवक श्रीलाल की विवाहिता पत्नी समझते हैं ? सत्ता से प्रेम करने का हमें अधिकार नहीं ?"

"पूरा-पूरा अधिकार है आपको और आचार्य प्रकाश को भी । परन्तु मेरी एक तुच्छ सी राय है आप दोनों महानुभावों के लिए, कि पहले आप दोनों आपस में निर्णय कर लें कि आप दोनों में कौन अधिक सुन्दर और गुणवान है जो सत्ता को प्राप्त कर सकता है और जिसे सत्ता स्वीकार कर सकती है ।" विनय भाई मुस्कराकर बोले ।

विनय भाई की बात पर प्रमिला हँसकर बोली, "क्या बात कह दी आपने भी आज ? मानो घोष बाबू, आचार्य प्रकाश और सत्ता रानी के पारस्परिक प्रेम-व्यवहार बिला जनता बहन की इच्छा के भी सम्भव हो सकते हैं ।"

जनता की बात सामने आने पर घोष बाबू उछलकर बोले, "जहाँ तक जनता का प्रश्न है मैं उनके अधिक निकट हूँ । मैंने उनके तथा उनके बाल बच्चों की आज तक निःस्वार्थ भाव से सेवा की है और कभी कुछ नही चाहा ।"

घोष बाबू का यह दावा आचार्य प्रकाश को मान्य न हो सका और वह तड़ककर बोले, "घोष बाबू ! आपकी धारणा जो जनता के निकट की है वह नितान्त भ्रम पूर्ण है, आप देश के मज़दूर वर्ग को ही देश की जनता मान बैठे हैं । यह आपकी सबसे बड़ी भूल है । आज मैं समझता हूँ कि मैं जनता के सबसे अधिक निकट हूँ । मेरा प्राचीन इतिहास भी जनता के निकट का है और आजकल मैं जो तपस्वी सुनील के साथ रह-

कर जन-सम्पर्क को स्थापित कर रहा हूँ वह आगामी युग में देश के अन्दर एक महान् क्रांति का सूत्र-पात करेगी ।"

आचार्य प्रकाश की बात सुनकर प्रमिला मुस्कराकर बोली, "अब कहिये घोष बाबू ! सत्ता रानी को प्राप्त करने की दिशा में आपकी यात्रा अधिक सफल है या आचार्य प्रकाश की ।"

इस पर विनय भाई हँसकर बोले, "मुझसे पूछो तो मुझे दोनों की यात्रा डावाँडोल दिखाई देती है । भारतसेवक श्रीलाल में आज भी मैं देखता हूँ कि जनता की आप दोनों से अधिक आस्था है और सत्ता तो उनकी मुट्ठी में है, उनके संकेत पर नाचती है । आप दोनों भी, मैं यह नहीं कहता कि अपने सत्ता रानी से प्रेम करने के स्वप्नों को अपने-अपने हृदयों के गुदगुदे कोनों में संजोना बन्द करदें, परन्तु अभी कुछ दिनों के लिए यदि उसे अवकाश देने की कृपा करें तो यह आपके लिए स्वास्थ्य-वर्धक होगा । साहित्य में मैंने पढ़ा है कि प्रेम भी एक बीमारी है जो क्षय रोग की तरह मनुष्य के हृदय में व्याप्त होकर उसके जीवन को मीठी-मीठी कसक से भर देता है । जीवन को रोदन में परिणित कर देता है । उर्दू का । प्रसिद्ध कवि मीर प्रेमविह्वल होकर कहता है :

"सिरहने मीर के आहिस्ता बोलो ।
अभी टुक रोते-रोते सो गया है ।।"

विनय भाई की बात सुनकर प्रमिला हँसकर बोली, "क्या खूब बात कह दी आपने भी ? कहाँ मीर और कहाँ हमारे घोष बाबू और आचार्य प्रकाश ? वह साहित्य का प्रेमी था और ये राजनीति के प्रेमी । राजनीति के प्रेम में ऊपर से कुछ, बाहर से कुछ, कहने को कुछ, करने को कुछ, यानी जो कुछ भी होता है वह क्या है इसे जान लेना एक समस्या है । यही दशा हमारे इन दो सत्ता के महान् प्रेमियों की भी है ।"

प्रमिला की बात सुनकर सब लोग खिल-खिलाकर हँस पड़े ।

इसके पश्चात् प्रमिला ने सबको एक-एक गिलास शिकंजवीन का प्रस्तुत दिया ।

आज के मधुर वर्तालाप और भेंट के लिए विनय भाई ने दोनों प्रतिनिधियों का स्वागत किया और आशा प्रकट की कि उनकी 'भारत साहित्य सहयोग' योजना को आगे बढ़ाने में उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

प्रमिला ने आचार्य प्रकाश और घोष बाबू के अनुरोध पर यह स्वीकार कर लिया कि वह अपनी सहेली वीणा को भविष्य में एकांतवासिनी ही न रहने देकर समाज के बीच ले आयेंगी।

चित्रकार रमेश के नये चित्र की रूप रेखा भी चलने से पूर्व आचार्य प्रकाश और घोष बाबू ने देखी परन्तु वह अभी स्पष्ट नही थी और पूछने पर रमेश अपने मन और मस्तिष्क की रूपरेखा भी प्रस्तुत न कर सका क्योकि अभी तक वह उसके अपने मस्तिष्क में ही स्पष्ट नहीं थी।

परन्तु एक चित्र सा अवश्य बनता जा रहा था और वह चित्र भारतसेवक का चित्र था।

: १६ :

घोष बाबू और आचार्य प्रकाश के विदा होने के पश्चात् विनय भाई रमेश और प्रमिला ने आलथी-पालथी लगा कर तख्त पर आसन जमाया। विनय भाई बीच में थे और प्रमिला तथा रमेश उनके दाँये-बाँये।

रमेश प्रमिला की ओर मुँह करके बोला, "भाभी, आपने घोष बाबू और आचार्य प्रकाश के प्रेमाकर्षण का वर्णन आज बहुत सुन्दर अवसर पर किया। और मैंने देखा कि वास्तव में दोनों के ही दिलों में सत्ता रानी के लिए कोमल स्थान बना हुआ है।"

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "सच पूछो तो सत्ता रानी पर जो इन महानुभावों का कोप भी है तो उसमें भी प्रेम की मात्रा ही अधिक है। प्रजातंत्र के झमेले से परेशान हैं बेचारे कि सत्ता से प्रेम करने के लिए भी बीच में जनता को डालना पड़ता है। और जनता जिसे ये महाशय भोली-भाली कहकर मूर्ख समझते हैं, बड़ी चतुर हैं।

तुम्हारी भाभी की बड़ी बहन हैं जनता रमेश ! अब तुम ही बताओ कि क्या वह भोली या मूर्ख कभी स्वप्न में भी हो सकती हैं?"

"नितान्त असम्भव !" रमेश ने बहुत ही सतर्कतापूर्वक कहा।

प्रमिला मुस्कराकर बोली, "जनता जीजी कम पढ़ी लिखी हैं रमेश भाई ! क्योंकि पिता जी के पास पढ़ाने के बहुत कम साधन थे। निर्धन थे वह और अपनी सन्तान के लिए बड़ी कठिनाई से खाने को भोजन और मोटा-झोटा कपड़ा जुटा पाते थे। ऐसी दशा में ऊँची शिक्षा का प्रश्न ही नहीं उठ सकता था?

परन्तु इसका यह अर्थ लगाना कि जीजी इतनी भोली हैं कि उन्हें मूर्ख होने तक की संज्ञा दी जा सकती है, स्वयं अपने को मूर्ख घोषित करना है।"

विनय भाई बोले, "तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा रमेश ! जनता

जीजी तो फिर भी खूब पढना-लिखना जानती हैं परन्तु सेवा माता ने तो बहुत ही कम पढ़ी हैं ।

परन्तु इस सबसे क्या ? चार अक्षर जान लेना ही तो शिक्षा नहीं है । जनता जीजी और सेवा माता को मैं बड़े-बड़े आचार्यों और शिक्षितो से अधिक विद्वान् और शिक्षित समझता हूँ । समय-समय पर दिखाई गई उनकी समझदारी के उदाहरण तुम्हारे सामने प्रस्तुत करूँ तो तुम सुनकर दंग रह जाओगे ।"

"आपके विचार से मैं सोलह आने सहमत हूँ ।" रमेश ने कहा । "भारतसेवक श्रीलाल जी ने 'जन सेवक समाज' के कार्यारम्भ में जिन महानुभावों को चुना है, वे अपने त्याग और तपस्या के प्रमाण पत्र पर सत्ता रानी की मुहर लगवाकर भले ही थोड़े समय के लिए भारतसेवक के इच्छित लक्ष को पीछे धकेलने में सफल हो जायें, परन्तु जनता को धोखा देना उनके लिए नितान्त असम्भव है ।"

भारतसेवक श्रीलाल और जनता का सीधा और आत्मीय सम्बन्ध है। उनपर यह रहस्य खुले बिना रह जाना नितान्त असम्भव है ।"

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "तुम्हारा विचार ठीक है रमेश ! अब तुम भारतसेवक को मेरी दृष्टि से देखने का प्रयास करने लगे हो । मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम अब भारतसेवक का सही चित्र बनाने में असफल नही हो सकते ।

भारतसेवक का एक प्रधान गुण यह है कि उनपर किसी भी व्यक्ति का कार्य प्रभाव डाल सकता है, व्यक्ति नहीं, उसकी वेशभूषा नही, उसका रूप और रंगढंग नहीं । प्रमाण पत्रों पर भी उन्हें कोई विशेष विश्वास नही है ।"

रमेश मुस्कराकर सिर खुजलाता हुआ बोला, "भारतसेवक का चित्र तो बनेगा ही विनय भाई ! परन्तु मैं देख रहा हूँ कि आपकी भारतसेवक की परिचय-पत्रिका भी अब तैयार होती जा रही है। भारतसेवक के सभी रूप निखरते जा रहे हैं और जो सबसे महत्वपूर्ण बात है वह यह

है कि वे सभी रूप अपनी-अपनी हार्दिक इच्छाओं, और मनोकामनाओं का स्पष्टीकरण स्वयं अपनी ज़बान से करते जा रहे हैं।"

प्रमिला रमेश की बात पर हँसकर बोली, "रमेश ! तुम इसे भारत-सेवक की परिचय-पत्रिका कहते हो और मैं इसे अपने और अपने सम्ब-न्धियों की जीवन-चर्चा मानती हूँ। जो कुछ हम सब करते हैं उसे लिखते रहने की तुम्हारे भय्या को आदत पड़ गई है। इसी को कुछ लोग साहित्य भी कहने लगे हैं। आप लोगों को इसे पढ़ने में आनन्द भी आता है और जनता जीजी तो इसे बड़े ही चाव से पढ़ती हैं और पढ़ती-पढ़ती कभी-कभी तो लोट-पोट हो जाती हैं।"

रमेश बोला, "लोट-पोट होने की तो बातें ही हैं ये सब भाभी ! और मुझे विश्वास है कि सत्ता रानी को जब ये चीज़ें पढ़ने का अवसर मिलेगा तो उनका मनमयूर भी नाच उठेगा। अपने प्रेमियों की संख्या में वृद्धि होती देखकर आखिर वह कौन-सी सुन्दर युवती होगी जिसका हृदय गर्व और आनन्द से फूल कर कुप्पा न हो जाय।"

घोष बाबू और आचार्य प्रकाश जैसे कठोर क्रान्तिकारियों और राज-नीतिज्ञों के हृदयों में भी प्रेम की सरस धार प्रवाहित होती रहती है, यह जानकर एक कलाकार के नाते मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई।"

"प्रेम-लीलाएँ हार्दिक प्रसन्नताओं का कारण बनती ही हैं रमेश ?" विनय भाई मुस्कराकर बोले। "तुम्हारी भाभी ने अभी तुम्हारा घोष बाबू और आचार्य प्रकाश की प्रेम लीलाओं से ही परिचय कराया है। अभी वेदान्ताचार्य रमण जी के दिल की गुदगुदाहट का तुम्हें इन्होंने परिचय नहीं दिया।"

वेदान्ताचार्य रमण जी का नाम सामने आते ही प्रमिला खिल-खिला कर हँस पड़ी। और फिर खड़ी होकर कमरे में घूमना प्रारम्भ करते हुए बोलीं, "रमण जी की याद आपने अच्छे अवसर पर दिला दी। रमण जी एक सांस्कृतिक व्यक्ति हैं और प्राचीन भारतीय सभ्यता के पुजारी हैं। वह जब सत्ता को राजा द्वारा प्रदत्त रेशमी सूट में लैस देखते हैं तो उनके

मस्तिष्क की सौंदर्य-कल्पना विकृत हो जाती है। सत्ता के मांसल शरीर और सौंदर्य के उभार को देखकर उनका दिल उनको अन्दर-ही-अन्दर कचोटने लगता है और इसी क्रिया तथा प्रतिक्रिया के मध्य उनको अचानक भारतसेवक श्रीलाल पर क्रोध आ जाता है।"

"भारतसेवक श्रीलाल जी पर क्रोध आ जाता है ?" आश्चर्यचकित होकर रमेश ने पूछा, "आख़िर यह क्यों भाभी ! यह तो मेरी समझ में नहीं आया। भारत के प्रजातंत्रिक शासन में बेचारे भारतसेवक सत्ता रानी को अपनी वेशभूषा बदलने पर कैसे बाध्य कर सकते हैं ?"

ये बातें चल ही रही थीं कि इसी समय वेदान्ताचार्य रमण जी की मोटर गाड़ी आकर विनय भाई के के द्वार पर रुकी ?

उसे देखकर विनय भई बोले, "रमेश ! लो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देने के के लिए वेदान्ताचार्य रमण जी स्वयं ही आ पधारे।" और इतना कहकर विनय भाई स्वयं उनका स्वागत करने के लिए कमरे से बाहर बराँडे में आ गये।

रमण जी ने कार से उतरकर अपनी धोती की चूनट ठीक की और फिर रेशमी बन्द गले के कोट की सिलवटें सँवारी। गले में पड़े साफ़े का पेंच ठीक किया और सर की पगड़ी पर तनिक हाथ फेरकर देखा और फिर क़रीने के साथ आगे बढ़े।

विनय भाई वरांडे में खड़े-खड़े यह सब देख रहे थे और इस समय तक रमेश तथा प्रमिला भी उनके पास आ चुके थे।

तीनों ने एक साथ वेदान्ताचार्य रमण जी को नमस्कार किया। और रमण जी ने भी भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत प्रणाम द्वारा तीनों के नमस्कार का उत्तर दिया।

चारों महाशय बैठक में चले गये और रमण जी को आदरपूर्वक विनय भाई ने तख़्त पर बिछे क़ालीन के ऊपर आसीन किया।

फिर विनय भाई बोले, "आज तो कई दिनों के पश्चात् आपके दर्शन कर रहा हूँ। सुना है आपका राजनीतिक संगठन देश में पर्याप्तशक्ति बटोरता

जा रहा है। अभी-अभी किसी ने मुझसे कहा था कि आपने एक देशव्यापी संस्था संगठित कर ली है।"

विनय भाई की बात सुनकर दिल में अन्दर-ही-अन्दर प्रसन्न होकर ऊपर से मुख-मुद्रा पर कृतज्ञता के भाव लाते हुए रमण जी बोले, "अपना इसमें कुछ नहीं है विनय भाई ! सब परमपिता परमात्मा की कृपा है। उसकी दया के बिना तो कुछ नहीं होता। वह चाहे तो पर्वत को राई बनादे, राई को चाहे तो पर्वत में परिणित कर दे।"

बात का अंतिम वाक्य कहते-कहते भगवान् में श्रद्धा और भक्ति के कारण रमण जी के नेत्र बन्द हो गये।

उनकी मुख-मुद्रा को देखकर विनय भाई मन-ही-मन मुस्कराये, परन्तु मन के भावों को चेहरे पर न आने दिया। और अपनी मुखाकृति बहुत सरल बनाकर बोले, "क्यों नहीं, क्यों नहीं। आपकी संगठन-शक्ति और लक्ष्मीपतियों का सहयोग, दोनों के गठबन्धन ने जिस संस्था को जन्म दिया है और जिस पर आपने हिन्दू धर्म और संस्कृति की छाप लगाने का प्रयास किया है, वह संस्था देश के समाज और जन-जीवन पर तो अपना प्रभाव डालेगी ही, परन्तु उससे भी अधिक उसका प्रभाव सत्ता रानी की दृष्टि में होगा।"

सत्ता रानी की बात सुनकर प्रमिला गम्भीर मुख-मुद्रा बनाकर बोली, "इसमें कोई संदेह नहीं रमण जी ! सत्ता पर आपके यश, गौरव, विद्वता, संगठन-शक्ति, वैभव और पराक्रम की गहरी छाप पड़ती जा रही है। मानने लगी है आपको भी वह अब।"

विनय भाई और रमेश ने देखा कि प्रमिला के इस छोटे से वाक्य का वेदान्ताचार्य रमण जी पर चमत्कारिक प्रभाव पड़ा। उन्होंने उत्सुकतापूर्वक पूछा, "सत्ता से आपकी भेंट इधर हुई थी क्या ?"

प्रमिला मुस्कराकर बोली, "होती ही रहती है हमारी तो भेंट। भेंट में तो दो प्रेमियों को कठिनाइयाँ आती हैं। जहाँ कोई प्रेम-व्रेम का झंझट न हो, वहाँ भेंट में कोई कठिनाई उपस्थित नहीं होती।"

प्रमिला के इस सरल और सादगी से भरे वाक्य ने वेदान्ताचार्य रमण जी पर विशेष आकर्षक प्रभाव डाला और वह तन्मयता के साथ बोले, "सत्ता रानी के साथ वास्तव में कैसा व्यवहार होना चाहिए यह बेचारा भारतसेवक क्या जाने। खद्दर की मोटी-झोटी धोतियाँ बाँधनी पड़ रही हैं बेचारी को और वे भी जनता के खादी-आश्रमों की बुनी-बुनाई। यदि सच पूछो तो प्रमिला! सच वास्तविक यह है कि भारतसेवक के सम्पर्क में आने पर सत्ता रानी का सौंदर्य ही नष्ट हो गया।"

वेदान्ताचार्य रमण जी की बात सुनकर विनय भाई ने अपनी मुख-मुद्रा और भी गम्भीर बनाली और तनिक संभलकर बोले, "तो आपका मतलब यह है कि राजा ने जो पोशाक सत्ता रानी को दी थी, वह सुन्दर थी आपके दृष्टिकोण से ?"

विनय भाई के प्रश्न पर रमण जी तनिक सतर्क होकर बोले, "मैं जनता-विरोधी बातें नहीं कर रहा हूँ विनय भाई, क्योंकि इस प्रजा-तन्त्र के युग में सत्ता को जनता की इच्छा के विरुद्ध प्राप्त नहीं किया जा सकता; परन्तु सत्ता के सौन्दर्य की रक्षा होनी भी उतनी ही आवश्यक है जितनी भारतीय संस्कृति की, जितनी हिन्दू धर्म की।"

"बहुत सुन्दर, बहुत सुन्दर रमण भाई! आपने तो सिद्धान्त की बात कह दी। सत्ता के सौन्दर्य की रक्षा में भारत का गौरव है; भारत की जनता का गौरव है, हिन्दू धर्म का गौरव है और जो सबसे बड़ी बात है वह यह है कि महापंडित वेदान्ताचार्य रमण जी का सत्ता के साथ इससे सम्बन्ध स्थापित होता है और उसका होना भारत की संस्कृति का नवो-दित विकास है, भारत की गौरव-गरिमा का पूर्णोदय है।" प्रमिला ने अर्धनिमीलित नेत्रों से कहा।

प्रमिला की बात सुनकर रमेश बौखलाया सा रह गया। उसकी समझ में कुछ भी न आया।

वेदान्ताचार्य रमण जी सकपकाये से, तनिक मुस्कराकर प्रमिला की ओर देखते हुए बोले, "अब आप मेरी भावुकता का अनधिकार लाभ उठाने

का प्रयास कर रही हैं प्रमिला देवी ! मैं आपसे सच-सच जानना चाहता हूँ कि क्या आपकी इधर सत्ता रानी से भेंट हुई है और यदि हुई है तो वह क्या कहती थीं मेरे विषय में ?"

प्रमिला अपनी मुखाकृति और भी गम्भीर बनाकर बोली, "आपकी सचमुच ही वह प्रशंसा कर रही थीं। कहती थीं कि इस राजनीति के क्षेत्र में कार्य करने वाले भारत-माता के सेवकों में से यदि भारतीय सभ्यता और संस्कृति का कहीं पर भी भावनात्मक विकास देखने को मिलता है तो वह वेदान्ताचार्य रमण जी के जीवन में है। आपके जीवन की सचाई में, न जाने क्यों, उनका दृढ़ विश्वास होता जा रहा है।"

विनय भाई बातों की दिशा बदलते हुए गम्भीर मुद्रा से एक दम मुस्कराकर बोले, "चलो जाने भी दो रमण जी ! सत्ता रानी की बातों को। जिस पर अपना अधिकार नहीं, उसके विषय में सोचना-विचारना ही क्या ? और कहिए कैसी गुजर रही है ? आपकी राजनीति के क्षेत्र में क्या-क्या पेंतरेबाज़ियाँ चल रही हैं ?"

राजनीति का नाम सामने आते ही रमण जी बोले, "उसी के लिए तो आया हूँ आपके पास विनय भाई ! आपने भारतसेवक महाशय की नई राजनीतिक चाल देखी ?"

"कैसी चाल ?" आश्चर्यचकित होकर विनय भाई ने पूछा।

इस पर रमण जी मुस्कराकर बोले, भारतसेवक की कोई भी चाल आपसे छिपी रह जाय, यह असम्भव बात है। आखिर आप भी तो किसी दिन उसी शतरंज के खिलाड़ी रहे हैं। आज एकांतवास किए बैठे हैं तो क्या ? परन्तु परमात्मा ही जाने आपके इस एकांतवास में भी आपकी कौन-सी गहरी चाल छिपी हुई है।"

इस पर प्रमिला मुस्कराकर बोली, "तो यों कहिये कि रमण जी भारतसेवक श्रीलाल की नई चाल का बहाना करके सीधी चोट आप पर ही करना चाहते हैं।"

"नहीं-नहीं ऐसी बात नहीं है प्रमिला देवी ! यह बात तो यों ही

प्रसंगवश मेरी जबान से निकल गई। आया तो मैं भारतसेवक श्रीलाल जी के उस नये समाज की आपको सूचना देने के लिए हूँ कि जिसमें भारत के निस्वार्थ सेवकों की सूची तैयार की जा रही है।" रमण जी बोले।

"यह तो भारतसेवक ने बड़ा ही शुभ कार्य करने का बीड़ा उठाया है। मेरी समझ में नहीं आ रहा उनके इस कार्य में आपको कहाँ आपत्ति है? मेरे विचार से तो आपको उनके इस कार्य में पूर्ण सहयोग देना चाहिए और उनकी इस योजना को सफल बनाना चाहिए।

मैंने जैसा कुछ भी इस नये समाज के विधान को देखा है, इसमें अराजनीतिक कार्य-कर्त्ताओं को देश की सेवा के लिए आवाहन दिया गया है।" विनय भाई ने सरलतापूर्वक कहा।

विनय भाई की इस बात पर झुँझलाकर रमण जी बोले, "मुझे खेद है विनय भाई कि आप जिस दृष्टि से भारतसेवक श्री लाल की कार्य-वाहियों को देखते हैं उस दृष्टि से मैं नहीं देख सकता। सन् १६४७ से पूर्व उनकी हर कार्यवाही के प्रति मेरी आस्था रहती थी, क्योंकि उस समय उनका उत्तरदायित्व मैं सम्पूर्ण देश के नागरिकों के प्रति समझता था, परन्तु आज मैं ऐसा नहीं समझता। आज उनका उत्तरदायित्व केवल अपनी पार्टी के ही प्रति है और उसी पार्टी की रक्षा के लिए इस नये समाज की दीवार बनाने का यह प्रयास भारतसेवक श्रीलाल ने किया है।"

इसपर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "यों कहिये कि यह भारत-सेवक श्रीलाल जी की दूसरी रक्षा-पंक्ति है, जो आप लोगों के आक्रमणों से अपनी सुरक्षा के लिए वह बनाना चाहते हैं।

परन्तु उनकी दिलेरी देखो कितनी साहसपूर्ण है कि उस दीवार को खड़ा करने के लिए उन्होंने निर्दलीय सभी भारतसेवकों को स्मरण किया है। क्या आप भी किसी ऐसे समाज का निर्माण करने की बात सोच सकते हैं? विचारणीय बात यह है केवल! जिस आधारशिला पर भारतसेवक इस नये समाज की स्थापना करने का विचार कर रहे हैं,

सोचना यह है कि वह तो दृढ़ है, वह तो समतल है।'

इसपर रमण जी कड़ककर बोले, "वह भी समतल नहीं है विनय भाई ! वह भी मज़बूत नहीं है। यों कहने को यह संस्था अराजनैतिक है परन्तु मूल रूप से इसकी जड़ों में राजनीति का खाद भरा गया है और राजनीति के पानी से इसका सिंचन किया जा रहा है। सत्ता रानी के संरक्षण में यह पौदा पल रहा है। ऐसी दशा में आप ही कहिए कि इसके पनपने की कितनी आशा है और यदि यह वृक्ष पनपकर बड़ा भी हो गया तो यह किस श्रांत पथिक को साया प्रदान करेगा ?

मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि रमण, घोष और आचार्य प्रकाश को इसकी छाया में बैठने का कदापि अधिकार नहीं मिल सकता। इसकी छाया में तो आपके भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता रानी का ही सोफ़ा-सेट बिछेगा। दर्शकों के रूप में विनय भाई, प्रमिला, तपस्वी सुनील, सेवा माता और जनता का भी समय-बे-समय स्वागत किया जाएगा।"

रमण जी की गम्भीर मुख-मुद्रा को देखकर प्रमिला बोली, "तब तो आपको कुछ-न-कुछ संतोष होना ही चाहिए। प्रेमी को वृक्ष की शीतल छायां न मिल सकी तो क्या ? उसकी प्रेमिका तो नये समाज के वृक्ष की शीतल छाया में सोफ़े पर आराम के साथ बैठेंगी।"

इसपर विनय भाई गम्भीरतापूर्वक बोले, "एक साहित्यकार की पत्नी होकर कितनी सिद्धान्त विरुद्ध बातें कर रही हो प्रमिला ! सत्ता रानी को नये समाज के वृक्ष की शीतल छाया में भारतसेवक श्रीलाल के साथ सोफे पर बैठी देखकर वेदान्ताचार्य रमण जी के हृदय की क्या दशा होगी, क्या तुम इतना भी अनुभव नहीं कर सकतीं ?"

"मुझे बनाने का प्रयत्न न करो विनय भाई ! भारतसेवक श्रीलाल राजनीति में बहुत ही चतुर व्यक्ति हैं। किसी भी कार्य को भोली-भाली दृष्टि से देखना अपनी मूर्खता को प्रमाणित करना है। इसलिए मैं इस नए समाज के निर्माण को सोलह आने उसकी राजनीतिक चाल मानकर चलूँगा और इसमें किसी भी प्रकार का मेरा सहयोग होना असम्भव

है।" बहुत स्पष्टता के साथ रमण जी ने कहा, "परन्तु आपकी 'भारत साहित्य सहयोग' की योजना से मैं सहमत हूँ और मैंने हर दृष्टि से विचार-कर देख लिया है कि आज यदि समाज को किसी एक स्तर पर लाकर उसके नवनिर्माण की दिशा दी जा सकती है तो वह साहित्य और साहित्य-कारों द्वारा ही सम्भव है।"

रमण जी की इस बात पर मुस्कराकर विनय भाई बोले, "साहित्य और साहित्यकार की बात आपने खूब कही रमण जी! परन्तु क्या आप साहित्य और साहित्यकारों को राजनीति की दलदल और उसके ऊपर की कीचड़ से भी ऊपर उभरा हुआ कमल-पुष्प ही समझ रहे हैं? यदि ऐसी बात है तो आप नितान्त भ्रम में हैं और जब आपके सामने उसकी दल-बन्दियाँ आयेंगी तो आप देखेंगे कि उसमें भी आपको तपस्वी सुनील, आचार्य प्रकाश, वेदान्ताचार्य रमण जी, भारतसेवक श्रीलाल, सत्ता रानी, सेवा माता और जनता बहन के सच्चे और झूठे प्रतिनिधि देखने को मिलेंगे।"

इसपर रमण जी मुस्कराकर बोले, "साहित्य और साहित्यकारों की इन दलबन्दियों से अपरिचित नहीं हूँ मैं विनय भाई! परन्तु फिर भी साहित्यसेवी चाहे जैसे भी क्यों न हों, वे भावुकता से अपना सम्बन्ध विच्छेद नहीं कर सकते और भावुकता मानव का सबसे बड़ा गुण है। मेरे विचार से कोई भी समाज-सेवा का कार्य यदि भावना पर आधारित करके किया जायगा तो निश्चित रूप से उसके अन्दर मानव-कल्याण की मूल प्रेरणा वर्तमान रहेगी।"

वेदान्ताचार्य रमण जी की यह बात सुनकर विनय भाई बहुत प्रभा-वित हुए और उन्होंने मन-ही-मन सोचा कि इस व्यक्ति में जहाँ धन-पतियों से साँठ-गाँठ, हिन्दू धर्म की रूढ़िवादी संकुचित मनोवृत्ति, वैज्ञानिक विकास में अरुचि मिलती है वहाँ मानव-हृदय में वास करनेवाली कोमल भावना का अभाव नहीं है। और वह मीठे शब्दों में बोले, "वेदान्ताचार्य रमण जी! आज आपको मैं अपने कितना बहुत निकट अनुभव कर

रहा हूँ, यह शब्दों में व्यक्त नहीं हो सकता। मानव-हृदय की भावना ही वास्तव में मानव की मनुष्यता है। मूल में वही वह वस्तु है जो मनुष्य को एक दूसरे के निकट लाती है, एक दूसरे के दुख-दर्द में हाथ बटाने की प्रेरणा देती है, एक को रोता देखकर दूसरे को रुलाती है, एक को हँसता देखकर दूसरे को हँसाती है, मूल बात यह है कि एक के जीवन का दूसरे के जीवन से सम्बन्ध स्थापित करती है और यही साहित्य की मूल प्रेरणा है।

साहित्य राजनीति का यन्त्र नहीं है और जो साहित्यकार पैसे की परवशता में राजनीति का यन्त्र बनकर कार्य करता है उसे अपने को साहित्यकार कहने में संकोच करना चाहिए।"

इतना कहकर विनय भाई हँसकर बोले, "परन्तु रमण जी, ये सब तो कल्पना की उड़ानें मात्र ही गिनी जायँगी ! क्या साहित्यकार के भाग्य में भगवान् ने आदर्शों की पूँछ पकड़कर जीवन भर भूखे मरना और अपने बाल-बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, वस्त्र और रहन-सहन का भी प्रबन्ध न करना ही लिख दिया है। और यदि लिख भी दिया है तो लिखने का कार्य तो वह भी नित्य करता है। क्यों न वह उस पहले लिखे पर एक कलम फेर कर नया लेख लिखना प्रारम्भ कर दे।

'भारत साहित्य सहयोग' में इसी नये लेख की व्यवस्था है रमण जी !"

विनय भाई की बात सुनकर रमण जी गद्गद् हो उठे और बोले, "भाग्य का लिखा हुआ लेख काटकर आप नया लेख लिखने जा रहे हैं विनय भाई ! देखिये भगवान् कहाँ तक अपने पूर्व निश्चित कार्यक्रम को आपकी लेखनी के द्वारा काटने और नया लेख लिखने की आज्ञा देते हैं।

यह भी सम्भव है कि भगवान् ने ही आपको यह सब करने का साहस और बल प्रदान किया हो और आपको यह महान् कार्य करने का निमित्त बनाया हो। मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ आपके साथ हैं।"

"मुझे आप पर पूर्ण विश्वास है।" विनय भाई ने कहा।

चलने से पूर्व रमेश रमण जी को नमस्कार करता हुआ बोला,

"आज जिस रूप मे आपके दर्शन कर रहा हूँ वह आज तक के दर्शनों से सर्वथा भिन्न है। मानव के लिए आपके हृदय मे ऐसी सद्भावना है, इसकी कल्पना भी आज तक नही कर पाया था। आज आपके दर्शन करके मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई।"

इसके पश्चात् रमरण जी ने विदा ली और विनय भाई, प्रमिला तथा रमेश तीनो ही उन्हे घर से बाहर कार मे बिठाने के लिए आये।

आज प्रात:काल रमेश की आँखें खुलीं तो उसके कानों में वीणा की मधुर झंकार पड़ी। आँखें मलकर वह तख्त पर उठ बैठा और सावधानी के साथ सुना तो वीणा की मधुर झंकार के साथ-साथ उसके कानों में मीठा रस घोलने वाली वीणा की झंकार के स्वर से भी मधुर संगीत सुनाई दिया।

संगीत का स्वर कहीं दूर प्रदेश से नहीं आ रहा था और न ही वह रेडियो की आवाज़ थी। अपने ही मकान के एक कोने से उठकर यह स्वर समस्त मकान के वायुमंडल में व्याप्त हो गया था।

रमेश अनायास ही इस स्वर की ओर आकर्षित होकर खिंचता चला गया और उसे पता नहीं कैसे और कब वह बैठक के द्वार पर जाकर चुप-चाप खड़ा हो गया।

रमेश ने देखा कि सामने दीवार पर लगे सरस्वती के चित्र के नीचे धूपदान में धूप जल रही थी और उसकी सुगन्धि से कमरे का सम्पूर्ण वायु-मंडल आच्छादित दो रहा था।

तख्त के ऊपर सरस्वती के चित्र के नीचे प्रमिला वीणा बजा रही थी। गा रही थी मधुर स्वर में और अर्धनिमीलित नेत्रों से सरस्वती के मुग्द्ध नेत्रों पर निहार रही थी। मंत्र-मुग्ध थी वह स्वयं भी और ऐसा प्रतीत होता था कि दीवार पर लगा चित्र साकार रूप धारण करके तख्त पर आ विराजा हो।

रमेश के आने की किंचित् मात्र भी आहट न हुई और प्रमिला एकांत चित्त से अपने मधुर संगीत तो अलापती रही।

वह गा रही थी :

तेज दो, बल दो माँ!
अन्धकार को मिटायें हम।

बदलकर आज की दुनियाँ,
नई दुनियाँ बसायें हम।
नयी कलियाँ नये जीवन में खिलकर मुस्कराती हैं।
नये युग की नई फुलवारियाँ ये बनती जाती हैं।
नयी चिड़ियाँ बड़ी चिड़ियों में मिलकर चह-चहाती हैं।
चहकने में नये युग की कहानी गुनगुनाती हैं।
इन्हें दिल से लगायें हम,
इन्हें खिलना सिखायें हम।
इन्हें उड़ना सिखायें हम॥
बदल कर आज की दुनियाँ,
नई दुनियाँ बसायें हम।
तेज दो, बल दो माँ।
अन्धकार को मिटायें हम।

संगीत का स्वर धीरे-धीरे कमरे के वातावरण में विलीन हुआ। प्रमिला ने धूपदान के पास वीणा को रखकर सरस्वती को प्रणाम किया और फिर नत मस्तक होकर पूजा समाप्त की।

प्रमिला ने कमरे के द्वार की ओर दृष्टि फैलाई तो देखा कि कमरे के दोनों द्वारों पर पायदानों के ऊपर विनय भाई और रमेश माता सरस्वती के सम्मुख करबद्ध खड़े थे।

उन दोनों को देखकर प्रमिला मुस्कराकर बोली, "आप दोनों भी सरस्वती माता की पूजा में आकर सम्मिलित हो गये, यह देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई।"

"इस विषय में तुम बड़ी ही चतुर हो प्रमिला! हम लागों को सूचना दिये बिना ही तुमने पूजा का कार्यक्रम निश्चित कर लिया।"

"परन्तु पूजा तो तीनों ने समाप्त की है।" मुस्कराकर प्रमिला बोली, "किसी कार्य को करने लगना ही उसकी सबसे बड़ी सूचना है। यही तो राष्ट्रपिता का जीवन-सन्देश था।"

विनय भाई बोले, "आज से यह बैठक 'भारत साहित्य सहयोग' का मुख्य कार्यालय और सरस्वती देवी का मुख्य मन्दिर घोषित की जाती है।"

"और प्रमिला देवी की इस मन्दिर की प्रधान पुजारिन के रूप में नियुक्ति कब होगी ?" रमेश ने सरल स्वभाव से पूछा।

इस पर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "नियुक्ति पदों पर होती है रमेश ! सेवा-कार्य के लिए नियुक्ति की आवश्यकता नहीं है। हाँ यदि भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता रानी ने कभी सरस्वती का कोई मन्दिर निर्माण कराने की योजना बनाई तो उसकी पुजारित की नियुक्ति नियुक्ति का विषय होगी।

अब यह तुम अपनी भाभी से पूछलो कि यह उस मन्दिर की पुजारिन के पद पर अपनी नियुक्ति करना पसंद करेंगी या नहीं।"

विनय भाई की बात सुनकर प्रमिला मुस्कराकर बोली, "रमेश, अपने भाई से पूछो कि क्या उस मन्दिर की सेवा के लिए पुजारिन की ही दरकार होगी ? पुजारी नहीं चाहिएगा ?"

प्रमिला की बात सुनकर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "रमेश ! अपनी भाभी से कहो कि वह देवी का मन्दिर होगा। देवी की सेवा में पुजारी क्या करेगा ? वहाँ तो पुजारिन की ही आवश्यकता प्रधान रूप से रहेगी।"

विनय भाई की बात सुनकर प्रमिला बोली, "रमेश, अपने भाई से कहो कि प्रमिला ऐसी देवी की सेवा में जाने से संकोच करेगी जहाँ पुजारी उसके साथ-साथ न जा सके।"

"बहुत सुन्दर उत्तर दिया आपने भाभी !" प्रसन्न होकर रमेश बोला। "आज का प्रभात कितना सुहावना है। आज मेरे जीवन का नया अध्याय प्रारम्भ होता है भाभी ! आपके मधुर संगीत ने मेरे कितने ही वर्षों से दबे हुए स्वर में एक नवीन उत्साह और ध्वनि का संचार किया है।

मुझे स्मरण हो रहा है कि एक दिन मैं भी अच्छा गा लेता था। और मेरे इसी कंठ-स्वर पर रीझकर एक चित्रकार से मुझे यह चित्रकला का

प्रसाद प्राप्त हुआ। उसकी अकस्मात् मृत्यु से एक दिन मेरा कंठ ऐसा रुँधा, ऐसा रुँधा कि कई दिन तक मेरे कंठ से कोई स्वर ही नहीं निकला।"

कहता-कहता रमेश मौन हो गया। ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो उसके जीवन पर किसी पुरानी घटना का प्रभाव साँप के विष की तरह छा गया।

तभी प्रमिला ने रमेश का कंधा पकड़ कर हिलाते हुए कहा, "रमेश, भूले तो नहीं हो नाँ, आज तुम्हें पता है तुम्हारे यहाँ कौन अतिथि आने वाला है ?"

प्रमिला की बात सुनकर रमेश सजग होता हुआ बोला, "सचमुच ही भूल गया था मै तो भाभी ! मुझे याद ही नहीं रहा कि आज जनता जीजी यहाँ पधारेने वाली हैं। मेरा सौभाग्य है कि आज मैं उनके दर्शन कर सकूँगा।"

"दर्शन तो उनके तुम अवश्य कर सकोगे रमेश, परन्तु तुमने उनके भोजन का भी कोई प्रबन्ध किया, या नहीं। तुम नहीं जानते कि वह तुम्हारे ये पूरी, पराँठे, चीले, पकौड़े, पापड़, कचरी, चटनी, अचार, मुरब्बे और ऐसी ही तकल्लुफ़ के अलाय-बलाय भोजन को बिलकुल पसंद नहीं करतीं।" प्रमिला ने कहा।

"तब फिर क्या प्रबन्ध करना होगा उनके लिए ?" रमेश ने सरल स्वभाव से पूछा।

"कोई विशेष खटराग करने की आवश्यकता नहीं है। तुम मकी का आटा और मेथी का शाक ले आओ। दही मैंने रात को ही जमा दी थी। उसे बिलोकर मट्ठा तैयार कर दूंगी और बस जनता बहन का मन-भाता भोजन बन गया। वह इसी भोजन को बड़े चाव से खाती हैं।" प्रमिला ने कहा।

रमेश ने चप्पलें पैरों में डालीं और दो थैले सँभालकर तेज़ी के साथ सब सामान बाज़ार से ले आया।

सामान के थैले अभी लाकर रसोई में टिकाये ही थे कि प्रमिला दूर सड़क पर देखती हुई बोली, "लो जनता जीजी भी आ गईं रमेश ! देख

रहे हो सामने पैदल-ही-पैदल कैसी तीव्र गति के साथ लपकी चली आ रही हैं।"

रमेश ने घर के द्वार को पार करती हुई अपनी दृष्टि सामने फैली सड़क पर बिछाई तो क्या देखा कि एक वयस्क स्त्री, न बहुत मैली और न धोबी के घर से आई हुई कलफदार सुफ़ेद बग्ग मोटे खद्दर की धोती पहने, सीधी तनी हुई इनके मकान की दिशा में लपकी चली आ रही है।

तभी विनय भाई की भी दृष्टि उधर पहुँच गई और वह नंगे ही पैर जनता जीजी के स्वागत के लिए तीव्र गति के साथ घर का द्वार पार करके सड़क पर निकल गये।

रमेश भी उनके पीछे-पीछे हो गया और प्रमिला घर के द्वार पर ही खड़ी होकर प्रतीक्षा करने लगी।

विनय भाई ने आगे बढ़कर जनता को सादर नमस्कार किया और जनतके हाथ से थैला अपने हाथ में लेते हुए बोले, "मोटर से आ रही हैं क्या ?"

जनता बोलीं, "नहीं, आस-पास के गाँवों का दौरा करती हुई चली आ रही हूँ। पैदल चलने से रास्ते में सभी बाल-बच्चों से भेंट होती चली जाती है। जहाँ थक जाती हूँ वहाँ घंटा-दो-घंटा विश्राम करके बाल-बच्चों का हाल-चाल पूछ लेती हूँ।"

मकान के द्वार पर आते ही प्रमिला ने नमस्कार किया और जनता जीजी नमस्कार का मुस्कराकर जवाब देती हुई बोलीं, "प्रमिला, एकदम एकांत-वासिनी हो गईं तुम तो। तुम्हारे भतीजे-भतीजियाँ तुम्हें कितना याद करती हैं, इसका तुम्हें अनुमान ही नहीं।"

सिर नीचा करके प्रमिला बोली, "भारतीय नारी की कठिनाई से क्या जीजी अपरिचित हैं ? एकांतवासी पति के साथ मुझे नत्थी करके आप भतीजे-भतीजियों के बीच न आने का उलाहना दे रही हैं।"

प्रमिला की बात सुनकर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "तो इसका अर्थ यह हुआ कि दोषी मैं ही ठहरा, परन्तु मुझे पूर्ण आशा है कि जब जनता

जीजी इस एकान्तवास में किये गये मेरे परिश्रम पर एक दृष्टि डालकर देखेंगी तो निस्सन्देह स्वीकार करेंगी कि इस एकान्तवास में भी मैं निरन्तर अपने भतीजे-भतीजियों की ही सेवा में संलग्न रहा हूँ। उठते-बैठते, सोते-जागते कोई भी क्षण ऐसा नहीं रहा जब जनता जीजी और उनके, उनके नहीं मेरे, बाल-बच्चों का भविष्य मेरे मस्तिष्क से निकल गया हो।"

"यह मुझसे और मेरी कल्पना से छिपा नहीं है विनय !" और इतना कहकर जनता ने प्रमिला को अपने निकट लेते हुए प्रेमार्द्र भाव से आशीर्वाद देकर पूछा, "मुन्ने दोनों डाक्ट्री में तथा मुन्नी विद्यापीठ प्रयाग में ही शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं क्या अभी ? और कितना समय लगेगा शिक्षा पूरी होने में ?"

"अभी दो और तीन वर्ष लड़कों को तथा पाँच वर्ष मुन्नी को लगेंगे।" प्रमिला ने कहा।

जनता मुस्कराकर बोली, "कम बच्चों की माता को कितनी निश्चिन्तता रहती है प्रमिला ! और एक मैं हूँ कि जिसे माता ही बनने का शौक है। अपने पेट की सन्तान चाहे थोड़ी ही है, लेकिन मेरे बाल-बच्चों की संख्या नित्य ही बढ़ती जाती है।"

विनय भाई ने श्रद्धा से जनता जीजी के सम्मुख सिर झुकाकर कहा, "जनता जीजी ! आप कहने मात्र को जीजी हैं, परन्तु वास्तव में सत्य यह है कि मैं हृदय से आपको भारत की माता के रूप में देखता हूँ। और अपने को आपके चरणों का एक तुच्छ सेवक समझता हूँ, बच्चा समझता हूँ अपने को आपका।"

जनता जीजी ने अपना एक हाथ प्रमिला के कन्धे पर रखा और दूसरा विनय भाई के कन्धे पर और इसी प्रकार तीनों ने 'भारत साहित्य सहयोग' के कार्यालय में प्रवेश किया।

सामने दीवार पर सरस्वती देवी का चित्र देखकर जनता मौन खड़ी रह गईं और काफ़ी समय तक एकटक उसे देखती रहीं। जनता जीजी का मस्तक झुक गया उस चित्र को देखकर और उन्होंने अपने दोनों हाथ

जोड़कर कहा, "माता नमस्कार ! आपका रूप विनय की कल्पना का प्रतीक है। कितनी महान् कल्पना है, साहित्य और सेवा का समन्वय है।"

जनता जीजी ने नेत्र खोले तो प्रमिला रमेश की ओर संकेत करके बोली, "इनकी कल्पना को साकार चित्रित करनेवाला चितेरा रमेश आपके सम्मुख खड़ा है जीजी ! इसीने तपस्वी सुनील के मेरठ ज़िले वाले ग्रामोद्योगाश्रम का वह चित्र चित्रित किया है जिसमें राष्ट्रपिता अपने दोनों हाथ तपस्वी सुनील और श्रीलाल भैया के कन्धों पर रखे खड़े हैं।"

रमेश आगे बढ़कर बोला, "चित्रकार रमेश जनता जीजी को सादर नमस्कार करता है।"

जनता ने रमेश को अपने पास बैठाकर सिर पर हाथ रखते हुए कहा; "चित्रकार रमेश ! तुम्हारी तूलिका में जादू है। तुम लेखक की भावनाओं के चितेरे हो। तुम्हारे चित्रों में प्राण हैं, सजीव हैं ये। ये चित्र मनुष्य की ही तरह बोलते और बातें नहीं करते, परन्तु आँखों वालों को भावना और कल्पना वालों को प्रेरित करते हैं, सजग करते हैं और उनकी स्मृतियों को जगाते हैं।

मैं तुम्हारी कला की हृदय से प्रशंसा करती हूँ।"

जनता के मुख से अपली कला की प्रशंसा सुनकर रमेश मंत्रमुग्ध हो गया। कुछ कहने की इच्छा मन में रहते हुए भी ज़बान पर कोई शब्द नहीं आया। परन्तु उसके नेत्रों की मौन भाषा ने उसके हृदय की कृतज्ञता को जनता जीजी पर प्रकट कर दिया और उसके भोलेपन से प्रभावित होकर जनता बोलीं, "तुम्हारे जैसा चित्रकार, विनय जैसा लेखक और प्रमिला जैसी व्यस्थापिका मिलकर 'भारत साहित्य सहयोग' की योजना को कोई कारण नहीं कि सफल न बना सकें।"

इस समय तक चारों व्यक्ति तख्त पर बैठ चुके थे और आपस में विचार-विमर्श प्रारम्भ हो गया था।

विनय भाई जनता जीजी की बात सुनकर बोले, "आपका विश्वास

पाकर हम तीनों इस महान् कार्य को निश्चित रूप से सफल बना सकेंगे। देश की सन्तान को सत्-साहित्य के निकट ला सकेंगे, इसमें मुझे कोई सन्देह नहीं। हमारे इस कार्य का कहीं से भी कोई विरोध सम्भव होगा, इसकी भी मुझे शंका नहीं, क्योंकि जो कार्य हम करने जा रहे हैं वह निस्वार्थ भाव से करने जा रहे हैं।"

विनय भाई की बात सुनकर जनता जीजी बोलीं, "अभी बहुत भोले हो विनय ! आखिर लेखक ही तो ठहरे। भावुकता में बहकर सब को अपने ही जैसे कोमल हृदय और कोमल भावनाओं से ओत-प्रोत समझने लगते हो।

तुम अभी नहीं जानते कि विरोध सर्वदा ग़लत बातों का ही नहीं होता और कभी-कभी तो प्रत्यक्ष में समर्थन करने वाला भी अन्दर-ही-अन्दर उसका कैसे विरोध करता है, इसका भी तुम्हें ज्ञान नहीं।"

"ऐसा आखिर क्यों ?" विनय भाई ने सरलतापूर्वक पूछा, "क्या कुछ बातें देश और देश की मानव-सन्तान के लिए ऐसी हो ही नहीं सकतीं कि जिन पर एक मत होकर देश का हर बुद्धिमान और देश-हितैषी एक मत से कह सके कि ये बातें देश और उसकी सन्तान के लिए आवश्यक हैं।

सत् साहित्य के सहयोग को मैं ऐसी ही आवश्यक वस्तु मानता हूँ।"

विनय भाई से जनता जीजी की भेंट ठीक सात वर्ष पश्चात हो रही थी। उनकी गम्भीरता को देखकर जनता जीजी बहुत प्रभावित हुईं और उन्होंने देखा कि विनय भाई के कहने में कोरी भावुकता ही नहीं थी, कल्पना की उड़ान ही नहीं थी, उनकी साहित्य-रचना और उसके प्रकाशन तथा प्रसार की गम्भीर योजना की भी, पूरी व्यवस्था थी।

जनता जीजी तनिक सुधरकर बैठती हुई बोलीं, "तुमने अभी-अभी पूछा विनय ! कि आखिर ऐसा क्यों ? तो उसका उत्तर केवल यही है कि यह मानव की प्रारम्भिक निर्बलता है। और जहाँ तक कुछ ऐसी बातों का सम्बन्ध है, कि जिन पर हमारे देश का बच्चा-बच्चा ही नहीं, संसार

का समस्त मानव-समाज एक मत हो सकता है, वे बातें हैं और मानव-जीवन के अटल सत्य के रूप में वर्तमान हैं।

और तुम्हारे सत् साहित्य के सहयोग को मानव मात्र के लिए मैं ऐसा ही अटल सत्य मानती हूँ।"

जनता जीजी की बात सुनकर प्रमिला मुस्कराकर बोली, "आप आज कह रही हैं जीजी! और इन्होंने जिस दिन यह योजना बनाई थी उसी दिन कहा था कि जनता जीजी का मुझे पूर्ण समर्थन प्राप्त होगा। और सच तो यह है जीजी! कि अभी तक इनकी इस योजना का विरोध भी किसी ने नहीं किया। घोष बाबू, आचार्य प्रकाश और वेदान्ताचार्य रमण जी ने भी अपना पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया है।

"सबका सहयोग लेना विनय को ख़ूब आता है। आखिर कलाकार ठहरा। अपनी कला से दूसरों को आकर्षित कर ही लेता है।" जनता जीजी ने कहा।

इस पर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "कला से नहीं जीजी, योजना और समस्या की सचाई से दूसरों को आकर्षित करने का प्रयास कर रहा हूँ। कला के प्रयोग को मैंने योजना की सफलता के लिए सुरक्षित रखा हुआ है। अमोघ शक्ति का प्रयोग तो विशेष अवसरों पर ही होना चाहिए।"

विनय भाई की यह बात सुनकर जनता जीजी खिलखिला कर हँस पड़ीं और बोलीं, "बात तुम्हारी सच है विनय! साधारण बातों के लिए अमोघ शक्ति का प्रयोग करना शक्ति का अपव्यय करना है।"

इसके पश्चात् बातों की दिशा भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता रानी की कारगुज़ारियों की ओर घूम गई। विनय भाई ने पूछा, "आप तो देहात से आ रही हैं जीजी! तनिक देहात की दशा तो बताइये। सुना है कि ज़मीदारी समाप्त होने से आम काश्तकारों की आर्थिक दशा में सुधार हुआ है। गाँवों में पंचायतों के बन जाने से गाँवों की सफ़ाई का प्रबन्ध ठीक-ठाक हो गया है। चकबन्दियों की क्या दशा है? क्या उनसे वास्तव

में खेती-पेशा लोगों को लाभ पहुँचा है ?"

विनय भाई का प्रश्न सुनकर जनता जीजी के होठों की मुस्कराहट जाती रही और माथे पर हल्का-सा पसीना आ गया। वह धीरे-धीरे बोली, "देहात की बात कुछ न पूछो विनय ! तुम्हारे शहरों से देहातों की दशा बिल्कुल भिन्न है। जमीदारी समाप्त होने से यह तो सच है कि ज़मीदारों का अंकुश जो बालबच्चों के सिर पर चौबीसों घटे सूली और फाँसी की तरह लटका रहता था, वह जाता रहा; परन्तु सत्ता के कारकुनों का पंजा आज भी वैसा ही मज़बूत है ज़ैसा पहले था और उसके व्यवहार में भी कोई अन्तर नहीं आया। उसका शासन-सूत्र चलाने का तरीका भी नही बदला। हकूमत की बू ज्यो-की-त्यो वर्तमान है।"

फिर विनय भाई ने पूछा, "ग्राम-पंचायतों की क्या दशा है ? उनसे कुछ देहात के वातावरण में अमन-चैन पैदा हुई है क्या ? गाँवों की गंदगी में कुछ सुधार हुआ है क्या ?"

जनता जीजी बोलीं, "यह दिशा और भी दुर्भाग्यपूर्ण है विनय ! पंचायतों के चुनावों ने तो गाँव का पारिवारिक जीवन ही नष्ट कर दिया। गाँव के सीधे-सादे आदमियों के मस्तिष्क में भी राजनीति की बू भर गई।

और रही स्वच्छता की बात, सो कुछ गाँवों में जहाँ पारस्परिक प्रेम की भावना है, और वर्तमान शिक्षा का कम प्रसार हुआ है, वहाँ सुधार भी हुए हैं।"

इस पर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "तो स्वच्छता और पारस्परिक प्रेम को शिक्षा ने ही ठेस पहुँचाई है ?"

"इसमें कोई संदेह नहीं विनय ! अधकचरी शिक्षा ने देहाती जीवन में विष का कार्य किया है। वास्तव में सच तो यह है कि शिक्षा मानव-जीवन के मानवीय तत्त्वों का स्तर ऊपर लाने के लिए नही दी जा रही। शिक्षा के मूल में धनोपार्जन की प्रवृत्ति प्रधान रूप से कार्य करती है और इस प्रवृत्ति का कही कोई अन्त नहीं। शिक्षा और बुद्धि की यह प्रवृत्ति

व्यापक बन गई है और इस अनन्तव्यापी प्रवृत्ति की चक्की में मानवता पिसती जा रही है। यह प्रवृत्ति ऐसी सरिता है कि जिसमें छोटे-बड़े सभी स्रोतों का जीवन खिंचकर आ जाता है और वे स्रोत सूख जाते हैं और उनसे जीवन पानेवाला मानव-समाज भी सूखने लगता है।

शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि जो इस बहाव को रोक दे।" बहुत ही गम्भीर वाणी में जनता जीजी ने कहा।

विनय भाई प्रमिला और रमेश तीनों ने मस्तक झुकाकर जनता के विचार का स्वागत किया।

जनता फिर बोली, "तुम्हारा सत् साहित्य विनय ! ऐसा ही होना चाहिए कि जो इन स्रोतों को सूखने से बचाये, इनके ग़लत दिशा में बढ़नेवाले बहाव को कम करे और इनको गहरा बनाये जिससे सिंचित होकर मानव-जीवन की क्यारियाँ हरी-भरी खेती के साथ लहलहा उठें। नये फूल खिलें और नई फ़स्लें पैदा हों। मानव-समाज में नव-जीवन संचरित हो उठे, नये उत्साह से भरकर हमारे राष्ट्र का हर बच्चा अपने बदन को पुष्ट बनाये, अपने मस्तिष्क को स्वस्थ और हृदय को पवित्र बनाये।"

विनय भाई ने खड़े होकर सरस्वती के चित्र के सम्मुख हाथ जोड़कर कहा, "जनता जीजी की मनोकामना पूरी कर सकूँ, बल दो मुझे माँ ! मेरी प्रतिभा कुंठित न हो, मेरा पौरुष निर्बल न हो, मेरी मेहनत असफल न हो।"

"योजना सफल हो तुम्हारी" आशीर्वाद देती हूँ विनय !" जनता जीजी ने भी खड़ी होकर विनय भाई के सिर पर हाथ रखते हुए कहा।

"तुम्हारा आशीर्वाद पाकर, योजना असफल हो जाय, कोई कारण नहीं इसका।" विनय भाई ने कहा।

प्रमिला और रमेश के हार्दिक आनंद का पारावार नहीं था इस समय।

इन दोनों की ओर देखकर जनता जीजी बोलीं, "तुम दोनों दो भुजाओं

के समान हो विनय की। योजना की सफलता विनय के विचार और तुम दोनों के प्रयास पर निर्भर होगी।"

"हमारा जीवन इस महान् कार्य के लिए अर्पित है जीजी" प्रमिला ने कहा।

"तो सफलता तुम्हारे पैर चूमेगी" विश्वास के साथ जनता जीजी बोलीं।

: १८ :

जनता जीजी के दिल्ली आने का समाचार दिल्ली के वायुमंडल में आच्छादित हो गया। भारतसेवक श्रीलाल, सत्तारानी, घोष बाबू, वेदान्ताचार्य रमण जी और आचार्य प्रकाश सभी ने सुना और जनता से मिलने की उत्कंठा भी सबके मन में हुई।

संध्या का समय था। सड़क पर बत्तियों का प्रकाश दूर तक फैल गया था। इसी प्रकाश में जनता ने देखा कि सड़क पर सरकारी वर्दी वाले सिपाही खड़े थे और उसके थोड़ी देर पश्चात् दो तीन कारें और उनके सामने एक जीप गाड़ी, जिस पर बावर्दी पुलिस तायनात थी, उधर आती दिखाई दीं।

जनता मुस्कराकर बोली, "विनय ! मालूम देता है कि श्रीलाल को मेरे यहाँ आने की सूचना मिल गई है। मिलने के लिए आ रहा है वह शायद। हो सकता है कि सत्ता भी उसके साथ हो।"

"शायद नही, सच ही है जीजी !" प्रमिला ने कहा। "उनके आने की सूचना तो आने से पूर्व सत्ता रानी के स्वयंसेवक दे-देते हैं। एक जाल-सा बिछ जाता है जिधर भी वह जाते हैं। आज भैया कोरे जन-नेता नहीं हैं, सत्ता-पति भी तो है वह और उनकी रक्षा का उत्तरदायित्व सत्ता रानी पर ही है।

भूल गईं क्या आप और सेवा माता और आप ही तो एक दिन यह उत्तरदायित्व सत्ता रानी को सौंपकर गई थीं।"

जनता जीजी मुस्कराकर बोलीं, "परन्तु उस दिन में और आज के दिन में मैं बड़ा अन्तर देख रही हूँ। उस दिन श्रीलाल जिधर भी क़दम उठाता था, तो सत्ता रानी पीछे और जनता आगे चलती थी परन्तु········।"

"परन्तु क्या ?" विनय भाई ने कहा, "आप तो आज भी आगे ही

है। आपसे ही तो मिलने के लिए भारतसेवक श्रीलाल इस कुटिया पर पधार रहे हैं। आज से पूर्व भी वह दो बार यहाँ पधारे है, एक बार सेवा माता के आने की सूचना लेने के लिए और एक बार उनसे मिलने के लिए। यह तीसरा अवसर है इस कुटिया को पवित्र करने का।"

जनता जीजी ने विनय भाई की बात सुनकर आश्चर्यचकित होकर पूछा, "तो क्या श्रीलाल कभी अपनी छोटी बहन प्रमिला से मिलने, उसकी खैर खबर लेने, नही आता ?"

"प्रमिला भी सत्ता रानी के राजमहलों में कभी नही जाती जीजी ! वह तो इसी कुटिया मे रहकर प्रसन्न है, और अब्र तो यह कुटिया भी सरस्वती का मंदिर बन गई है। इसी की पुजारिन बनने का निश्चय कर चुकी हूँ मैं।" प्रमिला ने कहा।

इसी समय भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता रानी की मोटर आकर विनय भाई के मकान के सामने ठहर गई। जनता जीजी, विनय भाई, प्रमिला और रमेश ने द्वार के निकट पहुँचकर उनका स्वागत किया।

भारत सेवक श्रीलाल ने विनय भाई के द्वार पर 'भारत साहित्य सहयोग' का एक सुन्दर बोर्ड देखा। और देखते ही बोले, "आखिर संस्था बना ही ली तुमने विनय ! उस दिन के पश्चात् फिर आये ही नहीं मेरी ओर।"

भारतसेवक श्रीलाल की बात सुनकर जनता जीजी मुस्कराकर विनय भाई पर झूठी डाट डालती हुई बोलीं, "विनय ! भैया श्रीलाल के इतनी बार याद करने पर भी तुम इनसे जाकर नहीं मिले। यह कैसा पारस्परिक सहयोग है तुम लोगों का। तुम लोगों के कामों में सहयोग न होने से मेरे बालबच्चों को बड़ी तकलीफ़ होती है।"

जनता जीजी के चेहरे की मुस्कराहट भाँपकर भारतसेवक श्रीलाल बोले, "भूल तो मैं ही गया जनता जीजी ! मुझे स्वयं ही ध्यान नही रहा इस कार्य का। जिस दिन विनय ने वह योजना मुझे दी थी तो मैंने अनुभव किया था कि उसके बिना जन-जाग्रति नितांत असम्भव है, परन्तु उसके

पश्चात् इतने झमेलों में फँस गया कि वह कार्यक्रम ही मस्तिष्क से निकल गया ।"

सत्ता रानी तनिक लज्जित सी होकर बोलीं, "दोष आपका नहीं है भारतसेवक ! दोष मेरा है कि मैंने आपको याद ही नहीं दिलाई वह महत्वपूर्ण योजना ।

वैसे मैंने उस योजना पर बहुत सुन्दर नोट देकर रख लिया है उसे अपने बैग में ।"

"चलिये सुरक्षित तो है वह और आपके थैले की शोभा बढ़ा रही है, मुझे इसी में हार्दिक संतोष है ।

आपके मस्तिष्क से मेरी योजना की स्मृति निकली नहीं, यह क्या कुछ कम महत्व की बात हैं ? आजकल बड़ा-बड़ी महान् योजनाओं का भण्डार बना हुआ है आपका मस्तिष्क । उसके एक कोने में मेरी योजना के चार पन्ने भी सुरक्षित पड़े हैं, इससे हर्ष की बात और क्या हो सकती है ?"

जनता जीजी को विनय भाई की बात सुनकर हँसी आ गई और वह बोलीं, "विनय को अपनी सलज से सुन्दर मज़ाक करना आता है । मुझे देखकर प्रसन्नता हुई कि आप लोगों में पारस्परिक स्नेह की क़मी नहीं है ।"

और इतना कहते-कहते सब लोग 'भारत साहित्य सहयोग' के प्रधान कार्यालय में पहुँच गये ।

भारतसेवक श्रीलाल ने देखा कि बैठक का रंग ही बदला हुआ है। सामने दीवार पर सेवा और साहित्य की प्रतीक सरस्वती का चित्र लगा हुआ है और उसके ठीक नीचे दीवार के पास धूपदान में धूप जल रही है ।

यह सब देखकर विनय भाई बोले, "संस्था नहीं है यह भारतसेवक श्रीलाल जी ! यह तो सरस्वती का मन्दिर है । साहित्य का रचनास्थल है । कल्पना और भावना का साम्राज्य है ।

संस्था बनाना राजनीतिज्ञों का कार्य है। समाज का निर्माण आप करते हैं और जनता जीजी के बालबच्चों की जाग्रति का भार भी आपके ही कन्धों पर है।

मैं लेखनी का मज़दूर हूँ और उसी की साधना और उपासना से यह मन्दिर बना लिया है।"

"और मैं इस मन्दिर में झाड़ू लगाने वाली, धूप जलाने वाली और आरती उतारने वाली पुजारिन हूँ भैया!" प्रमिला ने विनय भाई की बात को आगे बढ़ाते हुए कहा।

इसके पश्चात् बातों की दिशा बदल गई। भारतसेवक श्रीलाल ने अपनी देश और विदेश की नीति पर खुलकर प्रकाश डाला। संसार के सम्पूर्ण मानव-समाज से अपने सहयोग, शान्ति और सचाई के सिद्धान्त द्वारा जैसा उन्होंने भारतीय समाज का सम्पर्क स्थापित किया, उसका मुक्त-कण्ठ से वर्णन किया।

जनता जीजी ने भारतसेवक श्रीलाल की बातें बड़े संतोष के साथ सुनीं।

इसके पश्चात् भारतसेवक श्रीलाल ने सन् १९४७ से आज तक देश के वातावरण में आने वाली कठिनाइयों और आपत्तियों की एक सूची जनता जीजी के सम्मुख प्रस्तुत करने को सत्ता की ओर संकेत किया।

और सत्ता रानी ने तुरन्त अपने चमड़े के बटुवे में से उसकी ज़ंज़ीर खींचकर वह टाइप की हुई सूची निकालकर जनता जीजी के सम्मुख प्रस्तुत करके कहा, "सचमुच ही जीजी! घोर आपत्तियों का सामना करना पड़ा है आपके भैया जी को। राजा जी जैसे शासन कर्त्ता होते तो देखतीं कि देश में बंगाल के काल जैसी कितनी भूखमरियाँ फैल जातीं और पाकिस्तान से आनेवालों का तो भगवान् ही आश्रयदाता होता।

कल आपको दिल्ली की नई बस्तियों की सैर कराऊँगी। आप देखेंगी कि आपके भैया ने इतने थोड़े से समय में ही कितनी काया पलट करदी है दिल्ली की।"

सत्ता रानी की बात सुनकर जनता जीजी को कोई विशेष प्रसन्नता नहीं हुई। वह बोलीं, "दिल्ली की बस्तियाँ देखने का समय नहीं है इस समय मेरे पास। आप लोगों ने जो कुछ भी किया है वह सब ठीक ही है। योजनाएँ भी आपलोगों की बहुत बड़ी-बड़ी हैं और जब वे सफल हो जायँगी तो देश के रहनेवालों को उनसे निश्चय ही लाभ होगा।

परन्तु मैं देख रही हूँ कि आप लोगों का ध्यान बड़ी-बड़ी चीज़ों की ओर अधिक है और मशीनों की शक्ति में आपका विश्वास बढ़ता जा रहा है। विश्व का वैज्ञानिक विकास आपको अपनी ओर आकर्षित करता है। परन्तु हमारे देश का बल हमारे देश की मानव-शक्ति है और उसका सही उपयोग नहीं हो रहा, उसका सही शिक्षण नहीं हो रहा, उनका सही गठन नहीं हो रहा।"

जनता जीजी की बात सुनकर भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता रानी की गर्दनें नीचे झुक गईं।

जनता जीजी ने कहा, "सत्ता रानी अपने बँगले, अपनी कोठी, अपने भवन और अपने दफ्तरों पर जितना रुपया व्यय कर रही है वह सब मैं अपने दृष्टिकोण से ग़लत समझती हूँ।

मुझे मालूम है कि मेरे उन बच्चों के पास जिनपर कर लगाकर तुम ये सब इमारतें तैयार करा रही हो, बरसात, सर्दी और गर्मी से अपने तन को बचाने के लिए छाया नहीं है।"

कहती-कहती जनता जीजी शांत हो गई। परन्तु तुरन्त ही बोली, "श्रीलाल सोच रहा होगा कि मैं इतने दिन में इधर आई और आते ही मैंने उसकी कठिनाइयों के विषय में कुछ भी पूछे बिना, उसके साहस पूर्ण कार्यों की सराहना किये बिना, अपना रोना रोना प्रारम्भ कर दिया। कितनी ख़ुदगर्ज हूँ मैं ?"

भारतसेवक श्रीलाल जनता जीजी की बात सुनकर गम्भीरतापूर्वक बोले, "आप जो कुछ भी कह रही हैं सब सत्य है जीजी ! और मैं अपने को दोषी भी गिनता हूँ कि मैं आज तक क्यों भारत के बच्चे-बच्चे की

समस्या का हल नही सोच सका। परन्तु मेरे साधनो पर भी तो आपको दृष्टि डालनी चाहिए।

और जो सबसे बडी बात है वह यह है कि मै राष्ट्रपिता के सुझाये हुए मार्ग से जीवन मे विचलित नही हूँगा। अपना प्रत्येक पग फूक फूक-कर आगे रखना है मुझे। मैं नही चाहता कि आज क्राति की बात करके कल प्रजातत्र का फिर से सूत्र पकडना पडे मुझे। एक मार्ग जो बना लिया है, उसी पर चलते रहना चाहता हूँ।

यदि जनता जीजी को मेरी चाल गलत मालूम देती हो तो वह स्वतत्र है कि मुझे एक ओर बिठलाकर घोष बाबू को आगे बढादे। मै उनके पीछे चलकर देश की जो भी सेवा मुझसे बन पडेगी करता रहूँगा।"

इतना कहकर भारतसेवक श्रीलाल जी गम्भीर हो गये।

भारतसेवक श्रीलाल की गम्भीरता को देखकर जनता जीजी का दिल पिछल गया और उनकी आँखो के सामने श्रीलाल भैया के त्याग और तपस्या की वे सब घटनाएँ आकर नाँचने लगी जब उन्होने अपने जीवन के सम्पूर्ण सुख और शाति को जनता के बाल-बच्चो की समृद्धि और स्व-तंत्रता पर भेट चढा दिया था।

सत्ता रानी बड़ी ही सावधानी से भारतसेवक श्रीलाल और जनता जीजी की बाते सुन रही थी। दोनो की गर्म-नर्म बातो को सुनकर उसने अपने बटुवे से पहली पचवर्षीय योजना का फाइल निकाला और जनता जीजी की ओर मुँह करके मुस्कराती हुई बोली, "मालूम देता है कि विनय भाई ने यहाँ आते ही जनता जीजी के कानो को हमारे विरुद्ध पूरी तरह से भर दिया है।

परन्तु बात ऐसी नही है जनता जीजी ! मैने अपने कोठी और बॅगले ही नही बनवाये बल्कि पाकिस्तान से विस्थापित भारत की सतान को बसाने का भी पूरा-पूरा प्रबन्ध किया है। और जो कोठी-बँगले आपको सत्ता के दिखाई देते है वे सब जनता जीजी के ही हैं। सत्ता तो सेविका है आपकी। जब तक आप आज्ञा देगी और जैसी भी आज्ञा देगी वैसी

सेवा करती रहेगी।"

सत्ता रानी की बात सुनकर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "सत्ता रानी अपना दामन बचाने को जनता जीजी के सामने मेरी बुराई करने से काम नहीं चलेगा। आपके पास तो सुनाने के लिए अपनी सूचियाँ ही पर्याप्त हैं। आपकी पंचवर्षीय योजना में आखिर रह ही क्या गया है जिस पर आपने विचार नहीं किया ?"

विनय भाई की बात सुनकर प्रमिला बोली, "सकुचा क्यों रही हो भाभी ! अपनी कारगुज़ारी जनता जीजी के सम्मुख रखने में। अन्न के उत्पादन में आपने निश्चित रूप से वृद्धि की है। भूमि की सिंचाई के साधनों को बढ़ाया है, बिजली के नये कारखाने लगाये हैं, कपड़े के उत्पादन में वृद्धि की है, यातायात के लिए कई सड़कें बनाई हैं। सामूहिक विकास-योजनाएँ भी आपकी ज़ोरों पर हैं और जच्चा-बच्चा कल्याण-केन्द्रों की भी स्थापना की जा रही है। आखिर क्या कुछ नहीं कर रही हैं आप ?"

सत्ता रानी हाथ जोड़कर बोलीं, "इतना करने पर भी तो जनता जीजी को प्रसन्न नहीं कर पा रही हूँ प्रमिला बहन ! सच कहती हूँ आपसे कि आपके भैया भारतसेवक की सेवा में रहकर इन सात वर्षों में जितना कार्य करना पड़ा है उतना बीस वर्षों की राजा की सेवा में नहीं किया और फिर भी देख रही हूँ कि जीजी को संतोष नहीं हो रहा।

मैं तो सचमुच सोच रही थी कि इस बार जब जीजी से भेंट होगी तो वह निश्चित रूप से मेरे परिश्रम और मेरी सेवा की सराहना किये बिना नहीं रहेंगी।"

सत्ता रानी की यह बात सुनकर विनय भाई मुस्कराते हुए बोले, "सत्ता रानी ! आपने अभी तक जनता जीजी के सम्मुख अपनी विशाल योजनाओं का ही लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। बड़े-बड़े कल-कारखानों की उन्नति की योजनाएँ और बड़े-बड़े मकानों और नगरों के ही निर्माण और उत्थान की अपनी । वा प्रस्तुत की है। परन्तु आप भूल ही जाती हैं कि जनता जीजी सेवा माता की सुपुत्री हैं। इनपर आपकी जन-सेवा की दिशा

में की गई कारगुजारियों का जितना प्रभाव पड़ेगा उतना अन्य किसी भी वस्तु का नहीं पड़ सकता ।"

प्रमिला बोली, "लो आपने तो सत्ता रानी के हाथों में जनता जीजी को प्रसन्न करने की चाबी ही थमा दी । इसीलिए मैं कहा करती हूँ कि आप कोरे साहित्यिक हैं । राजनीति आपको छू तक नहीं गई । इतने भोलेपन से काम करोगे तो सत्ता भाभी की नोटबुक में जानते हो आपका नाम किस पन्ने पर लिखा जायगा ।"

सत्ता रानी प्रमिला के व्यंग को समझकर भी बात की दिशा पहली ही ओर करती हुई बोलीं, "जनता जीजी ! आपके भैया श्रीलाल ने मेरा कार्य-भार सँभालकर यह बात नहीं है कि जन-सेवा के कार्यों से हाथ खींच लिया है । पत्रों में पढ़ा ही होगा कि आपके भैया ने जन-सहयोग और जन-जाग्रति के लिए 'जन-सेवक-समाज' का निर्माण किया है ।"

जनता जीजी सत्ता रानी की गम्भीर मुख-मुद्रा देखकर मुस्कराती हुई भारतसेवक श्रीलाल की ओर दृष्टि करके बोलीं, "यह कैसा समाज बनाया है तुमने ! जो दफ्तरों के फ़ाइलों में ही सीमित होकर रह गया है । कानों में चर्चा तो इसलिए पहुँच जाती है कि इसके निर्माण-कर्त्ता की हर आवाज़ को सुनने के लिए जनता के कान हर समय उतावले बने रहते हैं, परन्तु इसकी कोई कारगुज़ारी देखने में नहीं आती । आखिर कैसे भारत-सेवक भर लिये हैं आपने इस समाज में ?

ऐसा समाज बनाने के पहले तपस्वी सुनील, आचार्य प्रकाश और मैं तो कहूँगी कि घोष बाबू तथा वेदान्ताचार्य रमण और विनय को साथ लेना चाहिए । जब सेवा के कार्य का बीड़ा उठाया था तो सेवा-माता के सभी सेवकों को इसमें निमंत्रित किया जाना चाहिए था ।"

जनता जीजी की बात सुनकर भारतसेवक श्रीलाल जी बोले, "समाज का निर्माण मैं अपने लिए नहीं कर रहा हूँ जीजी ! इसका निर्माण तो देश के रहने वालों की दशा को सुधारने के लिए किया जा रहा है और जो-जो भी महानुभाव देश की वर्त्तमान दशा से चिंतित हैं उन्हें इस दिशा

में पग बढ़ाना चाहिए।

जो लोग आगे क़दम बढ़ायेंगे, यह समाज उनका होगा। इसमें कोई राजनीति का अखाड़ा नहीं खोला गया। सेवा-भाव से कार्य करनेवाले सज्जन इसमें सहर्ष प्रवेश पा सकते हैं।"

भारतसेवक श्रीलाल जी विनय भाई के कमरे को बड़े ध्यान से देख रहे थे। उन्होंने अनुभव किया कि वह कमरा क्या है, यह वह स्वयं बोल रहा था। उसकी दीवारों पर लगे चित्रों को देखकर उन्होंने रमेश की ओर देखा और मुस्कराकर बोले, "तपस्वी सुनील के ग्रामोद्योगाश्रम की एक झलक में वहाँ से तुम ये सब चुरा लाये हो रमेश!" दीवारों पर लगी तस्वीरों की ओर संकेत करते हुए बोले और फिर सत्ता रानी की ओर मुँह करके कहा, "तुम रमेश को कहीं अपनी योजनाओं की सैर मत करा देना सत्ता! नहीं तो क्या मालूम कि यह नौजवान वहाँ से क्या-क्या चुरा लाये। और विनय को तो दिखाना ही मत अपनी कारगुज़ारियाँ, क्योंकि उन्हें देखकर यह क्या कुछ लिख मारे, इसपर फिर नियंत्रण रखना असंभव हो जायगा। और उस सबका जनता जीजी और सेवा माता पर क्या प्रभाव पड़ेगा इसके विषय में भी अभी कुछ नहीं कहा जा सकता।"

भारतसेवक श्रीलाल की बात सुनकर सत्ता रानी कुछ सकुचाती सी और कुछ मुस्कराती सी ज़रा इठलाकर बोलीं, "आपतो सारा दोष मेरे ही सिर थोपने पर तुले हुए हैं। आखिर मैं मना कहाँ करती हूँ कि आप इनके सामने अपनी योजनाओं का कच्चा चिट्ठा प्रस्तुत न करें। ये तो आपके अपने ही घर के आदमी हैं। इनपर तो आप हर प्रकार का विश्वास कर सकते हैं।

जन-सेवक-समाज का एक विभाग इनको सौंप दीजिये। मुझे भी तो देखने दीजिये कि आखिर यह क्या गुल खिलाते हैं?"

सत्ता रानी की बात सुनकर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "गुल-खिलाने का काम तो आप लोगों का है, हमारा काम तो भूमि को जोतकर तैयार कर देना है। 'भारत साहित्य सहयोग' यही कार्य करेगा। देश के

मानव-समाज को अपने विकास के प्रति जागरूक करेगा। अपने उत्तर-दायित्व को समझने की प्रेरणा देगा और भारतीय समाज को विश्व के मानव-समाज के साथ-साथ सोचने, विचार करने और चलने की साक्षरता देगा।

'भारत साहित्य सहयोग' की भूमि पर सत्ता रानी आराम से अपनी योजनाओं के गुल खिला सकती है।"

विनय भाई की बात सुनकर जनता जीजी को हँसी आ गई और मुस्कराहट भारतसेवक श्रीलाल के होंठों पर भी नाच उठी। प्रमिला गम्भीर मुख-मुद्रा बनाकर विनय भाई की ओर देखती हुई बोली, "आपने तो भाभी को ही धर्म संकट मे डाल दिया। आखिर कहाँ तक गुल खिलायेंगी यह बेचारी जब ज़मीन तैयार करने का काम भैया श्रीलाल के साथ-साथ आप भी सँभाल लेगे ?"

प्रमिला की बात को और भी आगे बढ़ाते हुए जनता जीजी मुस्करा-कर बोलीं, "सत्ता रानी की क्षमता से तुम अभी परिचित नहीं हो प्रमिला ! सत्ता कितने गुल खिला सकती है, इसका आभास तुमको नही है। सत्ता के गुल खिलते मैंने देखे है। सत्ता के गुलदस्ते भी देखे हैं, सत्ता के बाग बागीचे भी देखे है, सत्ता के वीरान किये हुए हरे भरे खेत भी देखे है और सत्ता की लहलहाती हुई खेती भी देखी है। सत्ता क्या कुछ नही कर सकती, यदि करने पर आये ?"

"परन्तु भाभी का करने पर आना ही तो कठिन समस्या है। वह तो भैया श्रीलाल ने प्यार-प्यार में इनसे इतने गुल खिलवा लिए और इनसे आगे बढ़-बढ़कर ज़मीन जोतते रहे, नही तो यदि कोई और होता भैया की जगह तो सत्ता रानी को अपनी माँगपत्ती सँवारने, साड़ी, ब्लाउज़ और सेंडिल की खरीद करने, नाटक, सिनेमा, सर्कस, कार्निवाल और प्रदर्शनियाँ देखने और ऐश करने से ही अवकाश नहीं मिलता।" प्रमिला ने कहा।

इसपर सत्ता रानी मुस्कराकर बोलीं, "इसका अर्थ यह हुआ कि

प्रमिला जीजी मेरे त्याग और कठिन परिश्रम से अनभिज्ञ नहीं हैं। मैंने निश्चित रूप से सेवा के मार्ग पर पग बढ़ाया है।"

भारतसेवक श्रीलाल जी गम्भीरतापूर्वक बोले, "निश्चित रूप से बढ़ाया है। मुझसे विश्वस्त साक्षी इसका अन्य कोई नहीं हो सकता।

मैं जानता हूँ कि जनता जीजी ने भी सत्ता के विभिन्न रूपों का देखा है परन्तु जितने निकट से देखने का मुझे अवसर मिला है उतने निकट से अन्य किसी भारतीय ने सत्ता को नहीं देखा।"

विनय भाई भारतसेवक श्रीलाल जी की बातें सुनकर बोले, "इसमें सन्देह करना भी मूर्खता की बात है भारतसेवक ! प्रमिला आपकी बहन है परन्तु इसका जितना निकट सम्पर्क मुझसे है उतना आज भारतसेवक श्रीलाल और जनता जीजी से तो क्या सेवा माता से भी नहीं हो सकता, जिनके पेट में इसने पूरे नौ महीने पैर फैलाये हैं।

परन्तु उस सम्पर्क का सम्बन्ध समाज से बिलकुल नहीं है। वह मेरा और आपका व्यक्तिगत सम्बन्ध है और उसका परिचय कभी-कभी समाज सम्बन्धी कामों में भ्रामक सिद्ध होता है।"

विनय की बात सुनकर भारतसेवक श्रीलाल जी दृढ़तापूर्वक बोले, "कभी-कभी नहीं विनय, सौ में निन्यानवे प्रतिशत भ्रामक होता है परन्तु भारतसेवक श्रीलाल उस भ्रम की सीमा को पार कर चुका है।"

विनय भाई ने नत मस्तक होकर भारतसेवक श्रीलाल के इस दावे को स्वीकार किया और इस स्वीकृति को देखकर जनता जीजी को हार्दिक प्रसन्नता हुई।

जनता जीजी मुस्कराकर बोलीं, "तब तो विनय और प्रमिला को अपनी भाभी का ही सुझाव मान लेने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।"

अपने सुझाव का जनता जीजी द्वारा समर्थन प्राप्त करके सत्ता रानी का हृदय अन्दर-ही-अन्दर गुदगुदा उठा और वह मुस्कराकर बोलीं, "अर्थात् 'जन-सेवक-समाज' का शिक्षा, और जन-जाग्रति सम्बधी कार्य विनय भाई को सँभाल लेना चाहिए।"

जनता जीजी और सत्ता रानी की जब बातें हो रही थी तो भारत-सेवक श्रीलाल कमरे की दीवारो पर बने चित्रों को बड़े ध्यान से देखते हुए इधर्-उधर तख्त पर घूम रहे थे, परन्तु उनके कान दोनों की बातो पर टिके थे ।

जब उन्होने देखा कि जनता जीजी और सत्ता रानी एक निश्चय पर पहुँच गई तो उनके कान विनय भाई का उत्तर सुनने के लिए व्याकुल हो उठे ।

एक क्षण के लिए विनय भाई ने अपने को धर्म-संकट में पाया । उनकी दृष्टि 'जन-सेवक-समाज' के ढॉचे पर गई और उन्होने देखा कि ढाँचा देश भर में पुरा हुआ होने पर भी, सब प्रदेशों में उसके प्रतिनिधि होने पर भी, केन्द्र में उसका व्यवस्थित कार्यालय होने पर भी, भारत-सेवक श्रीलाल, कई अन्य नेता और सत्तारानी का संरक्षण प्राप्त होने पर भी, अवैतनिक भारतसेवकों का समूह सहयोग और कार्य-दान पाकर भी, जनता के ग़रीब बाल-बच्चों से उसका कोई सम्पर्क नही, कोई सम्बन्ध नही ।

ऐसी सस्था मे घुस जाना आसान बात नही ।

विनय भाई की गम्भीर मुख-मुद्रा पर भारतसेवक श्रीलाल ने देखा और कहा, "सुधरी हुई चीज़ों को सँवारना और चला ले-जाना कोई विशेष गुण नही है किसी कार्यकर्त्ता का । योग्यता वही निखरतीहै जहॉ कार्यकर्त्ता को बिगड़ी हुई चीज़ को चलाना होता है । कुशल मिस्त्री वही है जो पुरानी मशीन को नई मशीन की रफ्तार दे सके ।

फिर तुम्हारे सुपुर्द तो नई मशीन की जा रही है । जाम अवश्य है वह मशीन, परन्तु पुर्ज़े तो सब नये है । उनकी सफ़ाई करके ग्रीस और तेल डालकर रवॉ कर देने की बात है । और सच तो यह है कि एक कुशल मिस्त्री के उस पर बैठने की आवश्यकता है ।"

जनता जीजी और तनिक साहस के साथ बोली, "श्रीलाल भैया का वह दिन भूल गये विनय ! जब देश की पुरानी छकड़ा मशीन को, उसके

टूटे-फूटे पुर्जों के साथ इसने सँभाला था। कौन कहता था कि यह अनाज की समस्या को हल कर सकेगा ? कौन कहता था कि यह इस शताब्दियों के गुलाम पड़े देश को संसार में सबसे ऊँचा मस्तक रखनेवाले देशों के साथ उसी आनबान और शान के साथ गिना सकेगा जिसका अनुभव वे स्वतन्त्र देश कर रहे हैं ? किसको पता था कि यह पूँजी के उस अभाव में, जिसमें राजा ने इसे छोड़ा था, पंचवर्षीय जैसी महान् योजना का इतनी सफलता के साथ संचालन कर सकेगा ? किसे पता था कि देश के विभाजन से पैदा हुई विस्थापितों की समस्या को यह इतनी सुगमता से हल कर सकेगा और किसे पता था कि यह चार लाख की जन-संख्या वाला दिल्ली का प्राचीन ऐतिहासिक नगर आज मेरी पच्चीस लाख सन्तान को अपनी गोद में विश्राम दे सकेगा।

उसी पुरानी मशीन का चालक भैया श्रीलाल तुम्हारे हाथों में 'जन-सेवक-समाज' की नई मशीन सौंपने के लिए खड़ा है। सेवक बनकर, मिस्त्री बनकर, लेखक और विचारक बनकर मैदान में आओ विनय !

जनता पुकारती है तुम्हें। मेरे बच्चों को जगाओ, उन्हें जीवन में आगे बढ़ने का रास्ता सुझाओ।"

जनता जीजी की बात सुनकर भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता रानी मुग्ध हो गये। श्रीलाल तो आनन्दविभोर होकर गुनगुनाने लगे और सरस्वती के चित्र के सम्मुख खड़े होकर सेवा माता की छटा निहारने लगे।

प्रमिला और रमेश एकाग्र भाव से विनय भाई के चेहरे को देख रहे थे, सोच रहे थे कि विनय भाई इस गम्भीर स्थिति में क्या उत्तर देंगे।

विनय भाई के नेत्र एक क्षण के लिए मुंद गये और तुरन्त ही सबके सम्मुख खड़े होकर सरस्वती के चित्र को नमस्कार करते हुए कहा, "ऐसा प्रतीत होता है माँ ! कि मेरी परीक्षा का समय आ गया है। अपना एकान्तवास त्यागने की इच्छा न रहने पर भी ऐसा लग रहा है कि उसे न त्यागना कर्तव्य की अवहेलना करना है। मानव-समाज की माता जनता के आवाहन को ठुकराने का साहस नहीं है मुझमें।

वचन देता हूँ जनता जीजी कि अपना जीवन 'जन-सेवक-समाज' की सेवा मे लगा दूँगा । मेरा साहित्य आपकी सेवा का लेखा-जोखा होगा, आपकी सन्तान के जीवन का कलात्मक इतिहास होगा वह ।"

भारतसेवक श्रीलाल प्रसन्न होकर बोले, "विनय, तुम्हारा मै हृदय से आभारी हूँ । तुमने यह कार्य अपने ऊपर लेकर मुझे एक बहुत बड़ी चिन्ता से मुक्त कर दिया ।"

सत्ता रानी मुस्कराकर जनता जीजी से बोली, "विनय भाई जैसा एकान्तवासी व्यक्ति मेरी दृष्टि मे दूसरा नही आया । चलिए अब तो आपके दर्शन होते ही रहेगे ।"

"देखिए," मुस्कराकर प्रमिला ने कहा "दर्शन के लिए भैया श्रीलाल की ओर ही दृष्टि डाला करो भाभी ! और यदि इनसे आगे बढने की बात है तो घोष बाबू, आचार्य प्रकाश और वेदान्ताचार्य रमरण जी इसके उम्मीदवार है ।"

घोष बाबू, आचार्य प्रकाश और रमरण जी के नामो को सुनकर सत्ता रानी ने होठ बिचका दिये ।

भारतसेवक श्रीलाल के चेहरे पर प्रमिला की बात सुनकर मुस्कान खेल उठी और वह उसी लहजे मे बोले, "प्रमिला की बात गलत नही है सत्ता रानी ! आपके उम्मीदवारो की सूची में इन तीन महानुभावो के नाम सबसे ऊपर है । यो है तो और भी बहुत से, परन्तु ये तीनो महारथी दलबल के साथ आगे बढ रहे है ।"

"ऐसे बढने वाले तो बहुत आते है भारतसेवक, परन्तु अब तो आपके ही साथ जीवन चलाने का निश्चय कर लिया है मैने ।" सत्ता रानी मुस्कराकर बोली ।

"ऐसा निश्चय तो आपने राजा साहब की मसनद पर बैठकर मखमली तकिए से कमर लगाकर न जाने कितनी बार किया होगा सत्ता-रानी ! आपका निश्चय क्या कोई अग्निकुंड की भॉवरे देकर और ध्रुव-तारे के दर्शन करके होता है ? वह तो एक सरकारी प्रतिज्ञा पत्र है जिसका

ड्राफ्ट बनाना आपका अपना काम है।" विनय भाई ने कहा।

"अब ऐसी बात नहीं है।" आँखें तरेरकर जनता जीजी ने कहा, "मेरा अधिकार छीनकर अपनी भाभी को देने का प्रयास मत करो विनय !"

कमरे में इस अन्तिम वार्तालाप के व्यंग्य, आनन्द और विनोद से जो प्रसन्नता का वातावरण आच्छादित हुआ उससे सबके मन की कली खिल गई। सबके चेहरों पर आशा, उत्साह और उमंग नृत्य करने लगा।

चलते समय सत्ता रानी ने जनता जीजी के सम्मुख अपने नव निर्माण की झाँकी प्रस्तुत करने का प्रस्ताव दुबारा रखा, परन्तु जनता जीजी ने स्वीकार नहीं किया। उन्हें दूसरे दिन दोपहर के बारह बजे तक तपस्वी सुनील के ग्रामोद्योग आन्दोलन में जाकर सम्मिलित होना था और इस बीच में उनसे मिलने के लिए आने वालों की संख्या कम नहीं थी।

आचार्य प्रकाश, घोष बाबू और वेदान्ताचार्य रमण जी मिलने के लिए आने वालों में विशेष अतिथि थे।

भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता रानी को सभी लोगों ने जाकर कार में बिठलाया।

चलने से पूर्व एक बार फिर सत्ता रानी ने विनय भाई से 'जन-सेवक-समाज' के जन-सम्पर्क, जन-जागरण, जन-शिक्षण और सूचना विभाग का कार्य सँभालने का वचन लिया और विनय भाई ने निःसंकोच भाव से कह दिया, "जन-सेवा कार्य में सहयोग देकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी।"

भारतसेवक के चले जाने पर जनता जीजी, प्रमिला, विनय भाई और रमेश ने भोजन किया और भोजन के पश्चात् सभी लोग फिर कार्यालय में आ गये।

प्रमिला ने जनता जीजी को विनय भाई की सब पुस्तकें आलमारी से निकालकर दिखाई। और उनसे भी महत्वपूर्ण वे पुस्तकें थीं जो वह अपनी नई योजना के अन्तर्गत जनता के कम पढ़े-लिखे बालबच्चों के लिए तैयार कर रहे थे।

विनय भाई ने उनका बस्ता खोलकर जनता जीजी के सम्मुख रखा और एक-एक पुस्तक का संक्षेप में वर्णन करके उसके विषय के विषय में वताया।

: १६ :

सन्ध्या समय जनता जीजी विनय भाई के मकान के पीछे वाले गुलाब बाग में घास के मैदान में जाकर बैठ गईं। प्रमिला और रमेश भी उनके साथ थे।

जनता जीजी बोलीं, "इधर सात वर्ष में विनय ने जो कार्य किया है उसे देखकर तो मैं वास्तव में चकित रह गई। मुझे क्या पता था कि राष्ट्रपिता के सत्याग्रह का यह सिपाही एक दिन मेरी और मेरे बाल-बच्चों की ऐसी जीती-जागती कहानियाँ लिखकर आज के समाज को राष्ट्र के साहित्य में अमरत्व प्रदान करेगा।"

प्रमिला बोली, "जीजी, आपने 'भारत साहित्य सहयोग' की योजना को भी देखा है क्या? इधर सेवा माता से यदि आपकी भेंट हुई होगी तो निश्चय ही आपसे उन्होंने इसके विषय में चर्चा की होगी।"

जनता जीजी मुस्कराकर बोलीं, "चर्चा ही नहीं प्रमिला, मुझे माताजी ने यहाँ केवल इसी कार्य की सिद्धि के लिए भेजा था जो मैं आज पूर्ण कर चुकी। भारतसेवक श्रीलाल के 'जन-सेवक समाज' को विनय की कार्य-व्यवस्था मिलनी ही चाहिए, यही निश्चय करके मैं आश्रम से चली थी।"

"और वह आपकी इच्छा पूर्ण हो गई।" रमेश ने गम्भीरतापूर्वक कहा। "जनता जीजी ने साहित्य से उसका सेवक छीन लिया। निश्चय ही यह जन-सेवा की दिशा में एक महत्वपूर्ण पग है, परन्तु कला की क्षति भी उतना ही बड़ा सत्य है।"

जनता जीजी बोलीं, "चित्रकार! मैं कला का उद्देश्य कला नहीं मानती। कला की सार्थकता जन-सेवा में ही है और उसी के लिए मैंने अपने पुराने कार्यकर्त्ता को कला से, एकांतवास से वापस लिया है। मैं विनय को फिर समाज के बीच हँसता-खेलता, लिखता-पढ़ता देखना चाहती हूँ। मैं

नहीं चाहती कि वह एकांत में किसी कमरे के अन्दर अपने को बन्द करके केवल कला का ही उपासक बनकर रह जाय।"

प्रमिला बोली, "वह तो अब वह स्वयं भी रहनेवाले नहीं हैं। आपके आ जाने से कार्य की एक व्यवस्थित और योजनाबद्ध दिशा बन गई, वरना सोच तो वह स्वयं भी इस दिशा में ही रहे थे।"

ये बातें चल ही रही थीं कि इसी समय घोष बाबू भी आ पधारे और उन्हें जनता जीजी के पास अपनी खाकी पेंट की क्रीज़ का ध्यान न करके घास पर बैठना ही पड़ा।

जनता जीजी ने स्नेहपूर्ण स्वर में पूछा, "कहिए घोष बाबू, क्या हालचाल हैं आपकी कार्य-दिशा में ? सुना है कि इधर मिल-कोलोनी में आपने बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है।"

जनता जीजी से अपने कार्य की प्रशंसा सुनकर घोष बाबू बोले, "किया तो कुछ अवश्य है जनता जीजी! और सफलता भी मिली है। परन्तु खेद की बात यह है कि भारतसेवक श्रीलाल के गुर्गे काम करने में बड़ी रुकावटें पैदा करते हैं। कई बार तो बने बनाये काम को ही बिगाड़ डालते हैं। केवल इसलिए कि वह कार्य उनके द्वारा सम्पन्न होना चाहिए, उसके करने का यश उनको मिलना चाहिए और वहाँ के रहनेवालों पर उनकी छाप पड़नी चाहिए।"

घोष बाबू की गम्भीर मुख-मुद्रा देखकर जनता जीजी मुस्कराकर बोलीं, "तुम दोनों की यह शिकायत तो जिस दिन से तुम लोग सेवा के मैदान में उतरे हो, उस दिन से बराबर चली आ रही है परन्तु देख रही हूँ मैं कि यह शिकायत होने पर भी तुम लोगों को मेरे बाल-बच्चों की सेवा करने से चैन नहीं।"

"आदत जो पड़ गई है दोनों की सेवा करने की।" मुस्कराकर प्रमिला ने कहा। "आदत कोई अच्छी हो या बुरी, छोड़नी बड़ी कठिन है जीजी! जैसे मदिरा पीने वाले को मदिरा की लत होती है, भंग पीने वाले को भंग पीने की लत होती है, जुआ खेलने वाले को जुए की लत होती

है वैसे ही इन राजनीतिक शौकीनों को मैंने देखा है कि राजनीति की लत होती है।"

"इसमें कोई सन्देह नहीं। श्रीलाल और घोष भैया को राजनीति की ज़बरदस्त लत है। इनका खाना-पीना, रहना-सहना, रोना-गाना, खेलना-कूदना सब राजनीति को ही लेकर होता है।" जनता जीजी ने कहा।

जनता की यह बात सुनकर घोष बाबू उछल पड़े और सामने खड़े विनय भाई की ओर मुँह करके बोले, "सुना आपने विनय भाई! जनता जीजी का भी वही अनुमान है जो मेरा है। आप जो उस दिन कह रहे थे कि भारतसेवक श्रीलाल क्या राजनीति से बाहर की बात सोच ही नहीं सकते? उसी बात को आज जनता जीजी ने स्पष्ट कर दिया।"

विनय भाई घोष बाबू की बात सुनकर मुस्कराये और बोले, "जनता जीजी के अपने विचार हैं और आपके अपने। परन्तु मेरा जहाँ तक विचारों का सम्बन्ध है मैं किसी के पीछे नहीं चलता। मेरा अपना स्वतंत्र विचार है। और वह आज भी ज्यों-का-त्यों है। मैं मनुष्य को विचार-धाराओं से ऊपर मानता हूँ। विचार-धाराएँ मनुष्य के मस्तिष्क से जन्म लेती हैं, विचार-धाराओं से मनुष्य जन्म नहीं लेता। विचार-धाराओं से मनुष्य के विचार बदलते हैं और मनुष्य का जीवन भी बदलता है। परन्तु सबके मूल में मनुष्य ही है और वह मनुष्य किसी एक बात को अपने जीवन का प्रधान लक्ष्य बना सकता है, अपना सम्पूर्ण जीवन नहीं।"

विनय भाई की बात सुनकर प्रमिला मधुर शब्दों में बोली, "आपका मतलब है कि भारतसेवक श्रीलाल के विषय में आप यह मानने को उद्यत नहीं कि वह जीवन में जो भी कार्य करते हैं उसके मूल में उनकी कोई राजनीतिक चाल रहती है। हाँ, यह कहने में इन्हें कोई संकोच नहीं कि वह देश के हर इन्सान की भलाई के लिए जो कुछ भी करते हैं, उसमें राजनीति भी एक साधन बन जाती है और ऐसा प्रधान साधन बन जाती है कि जिसे भूलना घोष बाबू, आचार्य प्रकाश और वेदान्ताचार्य रमण

जी के लिए कठिन हो जाता है।"

जनता जीजी मन-ही-मन विनय भाई और प्रमिला की भारतसेवक श्रीलाल के अन्दर आस्था देखकर दग रह गई। यों सेवा माता और तपस्वी सुनील ने उन्हें पूरी तरह इस बात से अवगत करा दिया था कि विनय भाई का भारतसेवक श्रीलाल से कोई मतभेद नहीं है, परन्तु फिर किसी कार्य में पारस्परिक सहयोग न देखकर वह भावना ज्यों-की-त्यों बनी हुई थी।

आज विनय भाई और प्रमिला की बात सुनकर जनता जीजी के मन की भावना आप-से-आप तिरोहित हो गई।

विनय भाई और प्रमिला की बात सुनकर घोष बाबू बोले, "यही तो व्यक्ति-पूजा है विनय भाई और इसे मैं प्रश्रय नही दे सकता। मैं व्यक्ति को सिद्धान्तों और विचार-धाराओं से ऊपर की वस्तु नही मानता। यह सच है कि सिद्धान्तों का निर्माण भी व्यक्तियो द्वारा ही होता है और व्यक्ति ही विचार-धाराएँ संचालित करते हैं, परन्तु एक बार सिद्धान्तों और विचार-धाराओं के बन जाने के पश्चात् व्यक्ति को भूल जाना चाहिए और सिद्धान्तों तथा विचार-धाराओ का अनुसरण करना चाहिए।" घोष बाबू ने गम्भीरतापूर्वक कहा।

घोष बाबू की बात को सुनकर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "तो आपका मतलब है कि आँखें मीचकर, कानों को बन्द करके, मस्तिष्क पर ताला चढाकर और दिल के द्वारों पर कुंडी देकर विचारों और सिद्धान्तों की आँधी में उड़ने वाले पीपल का सूखा पत्ता बना लेना चाहिए अपने को ?"

प्रमिला बोली, "पीपल का सूखा पत्ता बनने को नही कह रहे हैं घोष बाबू ! यह तो कह रहे हैं कि पीपल का सूखा ठूंठ बन जाना चाहिए व्यक्ति को जिसके सूखे कोने पर एक ही पक्षी एक ही विचार-धारा तथा एक ही सिद्धान्त को लेकर बैठ सके। उस वृक्ष में नई शाखाएँ और नये पत्ते उग ही न सकें।" और फिर घोष बाबू की ओर मुँह

करके बोली, "घोष बाबू ! यह रूढ़िवाद की दूसरी दिशा है जो आप सुझा रहे हैं। प्राचीन काल से आने वाली उन रूढ़ियों के प्रति, जिनके लिए वेदान्ताचार्य रमण जी के मन में मोह है, आपके हृदय में कैसी जलन पैदा होती है। आप उन्हें बातों के दौरान में अनेकों बार 'मूर्ख' और 'अंधविश्वासी' की संज्ञा दे डालते हैं।

इस पर घोष बाबू गम्भीरतापूर्वक बोले, "तो प्रमिला देवी आज मेरी तुलना उस पोंगापंथी महाशय रमण से करना चाहती हैं, जिनके जीवन में सचाई नाम की कोई वस्तु है ही नहीं।"

घोष बाबू की यह तीखी बात सुनकर जनता जीजी मुस्कराकर बोलीं, "कितना तीखा निश्चय करते हो घोष ! रमण एक असाधारण विद्वान् है। उसके विषय में योंही कुछ कह देना मैं उचित नहीं समझती। तनिक विचार कर देखो कि तुम्हारे मन में कल की पैदा हुई विचार-धारा और कल के निर्धारित सिद्धान्तों के प्रति जब इतनी गहरी आस्था है कि उसे तनिक सी भी ठेस लगानेवाले के बड़े-से-बड़े सेवक को तुम क्षमा प्रदान नहीं कर सकते तो वेदान्ताचार्य रमण जी के मन में इतने प्राचीन भारतीय सिद्धान्तों और विचार-धाराओं के प्रति कितना मोह हो सकता है। इनमें 'मूर्खता' या 'अन्धविश्वास' की क्या बात है ?"

घोष बाबू जनता जीजी की ऐसी ही बातों को अप्रगतिशील समझकर मुस्करा देते हैं और आज भी वह मुस्करा दिये। उनके चेहरे की गम्भीरता नष्ट हो गई और बहुत ही सरलतापूर्वक, यानी मानो जनता जीजी को एक बज़ुर्गवार समझा रहे हों, बोले "जनता जीजी आप बहुत भोली हैं। सतयुग की बातें त्रेता और द्वापर में नहीं, कलियुग में सोच रही हैं। भाग्य पर मैं विश्वास नहीं करता, वरना ऐसी परिस्थिति में इसे भाग्य के ऊपर ही टालकर मैं आगे बढ़ जाता।"

घोष बाबू की बात पर प्रमिला खिल-खिलाकर हँस पड़ी और बोली, "बातें खूब लच्छेदार करते हो घोष बाबू !"

प्रमिला की बात को और भी बटाते हुए विनय बाई बोले, "इतना

ही क्यों कहती हो प्रमिला ! यों क्यों नहीं कहतीं कि खाते ही बातों का हो। नेता मज़दूरों के हो और मज़दूरी रत्ती भर नहीं करते । झल्ली वालों की यूनियन का चन्दा एकत्रित कर सकते हो, परन्तु क्या एक दिन झल्ली लेकर चाँदनी चौक में भी घूम सकते हो और रात उस पुराने ऐतिहासिक घंटाघर के चबूतरे पर तपते सीमेंट के फ़र्श पर, बिस्तर लगाकर काट सकते हो जहाँ देहात से आये हुए जनता जीजी के बाल-बच्चे अपनी झल्लियों को सिरहाने दिये लेटे रहते हैं ?"

विनय भाई की बात सुनकर घोष बाबू तिलमिला उठे । उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो विनय भाई ने भारतसेवक श्रीलाल का दोष लाकर उनके सिर पर मढ़ दिया और इस प्रकार उन्हें जनता जीजी की दृष्टि में अपमानित करने की चेष्टा की ।

वह विनय भाई की ओर व्यंग्य दृष्टि से देखकर बोले, "घंटाघर के चबूतरे पर गर्मी, सर्दी और बरसात में जनता जीजी के बाल-बच्चे बिना साये और सहारे के पड़े रहते हैं इसका दोष भी आप मेरे सिर पर मँढ़ना चाहते हैं विनय भाई ? ऐसा मालूम देता है कि आजकल सत्ता रानी से कुछ साँठ-गाँठ हो गई है । सुना है इधर सत्ता रानी ने काफ़ी लेखकों को पुरस्कार, नौकरियाँ और अन्य समितियों की सदस्यता प्रदान करके कृतज्ञ किया है । क्या आप पर भी सत्ता रानी की सुकृपा हुई है इधर कुछ ?"

घोष बाबू की बात सुनकर विनय भाई रमण जी अपनी हँसी न रोक सके और हँसते-हँसते बोले, "मुझ पर तो सत्ता रानी की पहले से ही सुकृपा रही है और जब से उन्हें प्रमिला के सम्बन्ध का ज्ञान हुआ है तब से तो उनका झुकाव मेरी ओर हो जाना स्वाभाविक ही था । क्या इसमें भी आपको कोई संदेह दिखाई देता है ?

विनय भाई की बात सुनकर जनता जीजी को भी हँसी आ गई और वह किसी प्रकार उसे रोककर बोलीं, "घोष, तुम किसी की भी बात का अर्थ लगाने में विलम्ब नहीं करते और संकोच भी नहीं होता तुम्हें किसी पर आक्षेप करने में । विनय को तुम नहीं जानते, यह कहने का साहस मैं

नहीं कर सकती। यह कितना ज़िद्दी है इसका भी तुम्हें ज्ञान है, परन्तु फिर भी तुम्हारे मन में एक बात आई और तुम कह गये। क्या विचारकर कह गये यह मैं अभी तक समझ नहीं पाई। समझ इतना ही सकी हूँ कि तुम्हारे मन में कहने की आई और तुम कह गये। क्या आशा करूँ कि भविष्य में ऐसी बातों के कहने में सावधानी बरतोगे ?"

प्रमिला मुस्कराकर व्यंग्य कसती हुई बोली, "घोष बाबू को असावधान कभी मत समझना जीजी ! ऐसा समझने से इनकी कार्य-कुशलता को ठेस लगती है। इनकी समझदारी के प्रति अविश्वास पैदा होता है।"

बातें शायद और आगे बढतीं परन्तु इसी समय वेदान्ताचार्य रमण जी आ पधारे और सबने आश्चर्य के साथ देखा कि जनता जीजी ने आदरपूर्वक खड़ी होकर उनका स्वागत किया।

घोष बाबू ने सोचा कि अब उनका यहाँ ठहरना उपयुक्त नहीं क्योंकि नवागंतुक को भी बातें करने का अवसर देना चाहिए। वह खड़े होते हुए बोले, "अच्छा जनता जीजी, अब आपसे मैं विदा लेता हूँ। मैं चाहता था कि आपको मिल-कोलोनी में अपने साथ चलकर दिखाता परन्तु जब आप कहती हैं कि इस समय आप बहुत व्यस्त हैं तो फिर कभी देखा जायगा। परन्तु मेरा विश्वास है कि यदि आप उसे देखतीं तो आपको प्रसन्नता होती।"

घोष बाबू की बात सुनकर जनता जीजी बोलीं, "तुम्हारी मिल-कोलोनी को मैं भली प्रकार देखकर आई हूँ घोष ! तुम्हारे साथ में उसकी सही दशा का अनुमान नहीं लगा सकती थी। तुम्हारे साथ जाकर कोलोनी को देखना वैसी ही भूल होती जैसी सत्ता रानी के साथ जाकर सत्ता रानी की विकास योजनाओं को देखना। काम करनेवालों के साथ जाकर उनके काम का सही अंदाज़ नहीं लगाया जा सकता।"

जनता जीजी की बात सुनकर प्रमिला बोली, "जीजी सब कुछ देख आई हैं घोष बाबू आपकी कारगुज़ारियाँ। आपका पुस्तकालय भी देखा जीजी ने और औषधालय भी देखा। और यदि सच-सच कहूँ आपसे तो

प्रशंसा भी कर रही थीं आपकी कार्य-प्रणाली की।"

प्रमिला की बात सुनकर घोष बाबू को हार्दिक संतोष हुआ और वह जनता जीजी के सम्मुख कृतज्ञता प्रकट करते हुए बोले, "आपने मिल-कोलोनी का निरीक्षण किया, यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। अब मैं आज्ञा लूंगा आपसे। वेदान्ताचार्य रमण जी का समय खराब नहीं करूँगा।" रमण जी की ओर देखते हुए बोले।

रमण जी ने मुस्कराकर कहा, "आप अपनी बातें समाप्त कर लें, मेरी चिन्ता न करें। यदि मेरी उपस्थिति में बातें करने में कोई विघ्न उपस्थित हो गया हो तो उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ और थोड़ी देर के लिए यहाँ से दूर जाकर प्रतीक्षा भी कर सकता हूँ।"

घोष बाबू खड़े होते हुए बोले, "जी नहीं, आप अपनी बातें करें। मैं आज्ञा चाहता हूँ। आपके नियत समय का कुछ भाग मैंने अवश्य ले लिया, इसका खेद है मुझे।"

घोष बाबू को घर के द्वार तक ही नहीं काफ़ी दूर तक विनय भाई और प्रमिला छोड़ने के लिए गये, परन्तु रमेश उसी स्थान पर बैठा रहा।

रमेश विनय भाई के मकान पर आनेवाले हर महानुभाव के भारत-सेवक की ही संज्ञा देता है और उसके चरित्र, उसकी बातें, उसके हावभाव उसकी शक्ल सूरत, उसकी चेष्टा और मनोवृत्ति का अध्ययन करने का प्रयास करता है। वह एक भी क्षण अपना उनके सम्पर्क से पृथक् रहकर काटना उचित नहीं समझता और क्या कोई भगवान् का भक्त अपने इष्टदेव की स्मृति में तल्लीन होता होगा जो रमेश भारतसेवक में तल्लीन होता है।

विनय भाई के पास आनेवाला हर भारतसेवक उसके चिंतन, उसके अनुभव, उसके दर्शन और सम्पर्क का विषय होता है। उनके जीवन की भावना, विचार और कल्पना का वह उनकी बातें सुनकर अनुमान लगाता है और अपने चित्र की पूर्ति में वह उसका क्या उपयोग कर सकता है इस विषय पर सोचता-विचारता है।

घोष बाबू जनता जीजी के पास ही हरी घास पर तनिक संकोच के साथ बैठ गये। उन्हें भय था कि उनकी सुफ़ैद बग्ग धोती में निश्चय ही घास के दाग़-धब्बे लग जायेंगे और उनके कोट में सिलवट पड़ जायेंगी।

घोष बाबू के संकोच को देखकर जनता जीजी मुस्कराकर बोलीं, "सुना है रमण जी पहले युगों में भारत के आचार्य लोग बनों में रहते और घास पर बैठकर ही अपने विद्यार्थियों को शिक्षा-दीक्षा देते थे।"

वेदान्ताचार्य रमण जी अपनी वर्तमान परिस्थिति को एकदम भूलकर सतयुग में पहुँच गये और मुक्त कंठ से बोले, "आपका कथन सत्य है जनता जीजी! हमारे देश की प्राचीन शिक्षा-पद्धति का आश्रमों में ही विकास हुआ था। उन्हीं में अपने-अपने समय के आचार्य लोग रहे हैं और उन्हीं के अन्दर शिक्षा प्राप्त करके उनके शिष्य लोग जन-कल्याण के लिए बाहर आये हैं।"

रमेश जनता के प्रश्न तथा वेदान्ताचार्य के उत्तर को सुनकर मुस्करा दिया और बोला, "आपने मुझे एक बहुत ही सुन्दर चित्र बनाने की स्थिति प्रदान की है इस समय, मैं आपका हृदय से आभारी हूँ।"

जनता जीजी मुस्कराकर बोलीं, "कलियुग में रमण जी आचार्य लोगों को पास बैठने में बड़ी ही कठिनाई होती है। देखिये तो कितना समय बदल गया। समय के परिवर्तन ने मनुष्य को बदल दिया, वरना तो वे ही आचार्य सतयुग में थे और वे ही आप भी हैं। मैं दोनों में कोई अन्तर नहीं मानती।"

जनता जीजी की बात सुनकर वेदान्ताचार्य रमण जी अपने को सतयुग के वेदान्ताचार्यों की श्रेणी में खड़ा करके आनन्दमग्न हो उठे। वह आचार्यत्व के आवेश में यह भूल ही गये कि आखिर जनता जीजी किस लिए यह समानता स्थापित कर रही हैं।

रमण जी भावना में बहकर दीन भाव में बोले, "वे सतयुग के आचार्य थे जनता जीजी और ये कलियुग के, यह अन्तर तो दूर होने वाला नहीं।"

"इसीलिए सम्भवतः आपको घास पर बैठने में संकोच हो रहा है

रमण जी ! यदि सतयुग के आचार्य होते आप तो निस्सन्देह आलथी-पालथी लगाकर जनता जीजी के बराबर बैठ गये होते।"

"परन्तु आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमारे विनय भाई और प्रमिला आज भी सतयुग के प्राणी हैं।" रमेश ने कहा।

रमेश की बात सुनकर मानो रमण जी का स्वप्न टूट गया और वह गम्भीर होकर बोले, "क्या बचपन की बातें करते हो ? कहीं घास पर बैठने-न-बैठने से कोई व्यक्ति सतयुग या कलियुग का होता है ? विनय भाई और प्रमिला को मैं बहुत सज्जन व्यक्तियों की कोटि में रखता हूँ, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि इनकी समानता सतयुग के व्यक्तियों से की जा सके।"

रमण जी ने यह बात इतनी गम्भीरतापूर्वक कही कि जनता जीजी को भी हँसी आ गई।

"आप हँस रही हैं मेरी बात पर।" रमण जी ने कहा।

"नहीं, तुम्हारी बात पर नहीं हँस रही, चित्रकार रमेश के भ्रम पर हँस रही हूँ कि जो विनय और प्रमिला को सतयुग के रहनेवाला मान बैठा। बच्चा ही तो है अभी ! बेचारे को ज्ञान ही क्या कि युग का क्या प्रभाव पड़ता है मनुष्य पर।" जनता जीजी अपनी हँसी को रोकती हुई बोलीं।

इसी समय विनय भाई और प्रमिला भी घोष बाबू को सड़क पर किसी सवारी में बिठलाकर वापस आ गये। विनय भाई ने आकर बातों को नई दिशा देते हुए कहा, "जनता जीजी ! इधर श्री वेदान्ताचार्य ने भी एक बहुत सुदृढ़ राजनीतिक दल बना लिया है। सब विस्थापित राजे, महाराजे, नवाब और काफ़ी मिलमालिक तथा व्यापारी आपके साथ हैं। पूँजी भी अच्छी-खासी कर ली है आपने और देशव्यापी आन्दोलन भी प्रारम्भ कर दिया है।"

यह बात विनय भाई ने इतनी गम्भीरतापूर्वक कही कि रमण जी यह जानने में असमर्थ रहे कि कदाचित् वह यह बात उनकी निंदा में कह रहे

हैं या स्तुति में।

वेदान्ताचार्य रमण जी प्रसन्न मुख-मुद्रा से बोले, "सब व्यवस्था ठीक कर ली है मैंने जनता जीजी! अब केवल आपके ही सहयोग की देर है। आपके भूखे नंगे बाल-बच्चों के लिए अनाथालय और भोजन-क्षेत्र खोलने की व्यवस्था पर भी हम लोग विचार कर रहे हैं। उन्हें भूखा-नंगा देखकर सच जानिये आँखों में आँसू आ जाते हैं।"

रमण जी ने यह बात प्रसन्न मुख-मुद्रा से प्रारम्भ की और रुँआँसी मुद्रा में समाप्त हुई।

इनकी यह नाटकीय प्रणाली रमेश ने आज प्रथम बार देखी।

विनय भाई यह अभिनय देखकर हँस पड़े और बोले, "रमणजी! रामलीला के मैदान में एकत्रित होने वाली जतना नहीं बैठी है आपके सामने; इन पर ऐसी खोखली भावुकता का प्रभाव नहीं होता। इन्हें तो आप जब तक ले जाकर अपने अनाथालय और भोजन-क्षेत्र नहीं दिखलायें तब तक यह तुम्हारी बातों पर विश्वास करने वाली नहीं हैं।"

प्रमिला मुस्कराकर बोली, "अपने विधवा आश्रम और महिला-शिक्षा केन्द्रों का भी इन्हें निरीक्षण कराइये रमण जी। स्त्री होने के नाते इन पर उनका अधिक प्रभाव पड़ेगा।"

प्रमिला की बात सुनकर जनता जीजी बोलीं, "तब तो मालूम देता है कि इधर रमण जी ने इन राजे-महाराजों और पूँजीपतियों की धनराशि का काफी सुन्दर उपयोग किया है। भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता रानी के छापे मारते समय जो पैसा ये लोग किसी तरह लुका-छिपा कर ले भागे, उसमें से रमण जी ने अपना भाग निकलवा लिया।"

"आपने बिलकुल ठीक सोचा जनता जीजी!" प्रमिला मुस्कराकर बोली।

वेदान्ताचार्य रमण जी अन्दर-ही-अन्दर यह समझकर कि अब वह कोरे आचार्य मात्र नहीं हैं, एक देशव्यापी राजनीतिक दल के अगुवा भी हैं, सोचा कि उन्हें हर व्यक्ति की हर बात के दो अर्थ लगाने चाहिएँ। एक

उसका राजनीतिक अर्थ और दूसरा साधारण अर्थ ।

उन्होंने विनय भाई, प्रमिला और जनता जीजी की बातों का राजनीतिक अर्थ लगाकर देखा तो पाया कि वे लोग उन्हें मूर्ख बनाने का प्रयास कर रहे हैं और स्पष्ट रूप से कह रहे हैं कि वेदान्ताचार्य रमण अब भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता रानी के जूठन पर अपना जीवन यापन करने चला है ।

वह एकदम सतर्क होकर बोले, "आप लोगों की बातें मैं समझता ही न हूँ, आप इस भ्रम में रहने की कृपा न करें। मेरे जिन साथियों को आप इतनी घृणित दृष्टि से देख रहे हैं, उनमें से बहुत से श्रीलाल तथा सत्ता के साथी भारतसेवकों से चरित्र में बहुत ऊँचे हैं। एक श्रीलाल को मैं नहीं कहता, परन्तु उसके साथियों की आप कहें तो मैं हज़ार घृणित कार्यवाहियाँ आपके सम्मुख प्रस्तुत कर सकता हूँ। अब रही सत्ता रानी और उनके भारतसेवकों की बात, सो उनमें तो यदि एक प्रतिशत भी भले व्यक्ति मिल जायें तो अहोभाग्य ।"

यह बात वेदान्ताचार्य रमण जी ने इतनी गम्भीरतापूर्वक कही कि एक क्षण को सन्नाटा छा गया। कोई भी उनकी बात का उत्तर न दे सका। वह फिर उसी गम्भीरता से बोले, "मैं मानता हूँ कि राजे-महाराजों और नवाबों ने भोग-विलास में पड़े रहकर देश के लोगों का रक्त चूसा। उनके कारिन्दों ने ग़रीब मज़दूरों का ख़ून चूँस-चूँसकर बड़े-बड़े कल कारखाने खड़े कर लिए और देश भर में एक व्यापारी वर्ग पैदा कर दिया। परन्तु आपका भारतसेवक जो ग़रीब जनता पर नित्य नये कर लगाकर सत्ता के नाते-रिस्तेदारों को भारतसेवकों का नाम दे-देकर मोटी-मोटी तनखाहों पर भर्ती करता चला जा रहा है और उनकी घूसखोरी दिन-पर-दिन बढ़ती जा रही है, वह सब क्या है ?

जनता जीजी ! तुम्हारी छाती पर बैठकर तुम्हारा भैया और तुम्हारी भावज के द्वारा चक्की पीसी जा रही है ।

मुझे रोना आता है यह सब देखकर और दिल इनका भी रोता होगा

जो यह विनय भाई महाशय खड़े हैं आपके सम्मुख। लेखक होने के नाते मैं सोच नहीं सकता कि इनकी भावना और प्रतिभा इतनी कुंठित हो गई हो कि यह देश के वातावरण से नितान्त अलग हो जायें।"

कहते-कहते वेदान्ताचार्य रमण जी का गला रुँध गया। उनके कंठ से और एक भी शब्द न निकला। और जो सबसे महत्वपूर्ण बात थी वह यह थी कि उनके नेत्र सजल हो रहे थे, उनमें आँसू छलछला रहे थे।

विनय भाई, प्रमिला, रमेश और जनता जीजी ने यह दृश्य देखा तो उनका हृदय हिल उठा। वेदान्ताचार्य रमण जी के हृदय की सच्ची तड़पन उनके सम्मुख नाच उठी। एक साहित्यकार के हृदय में अपने देशवासियों की अधोगति को देखकर कितनी पीड़ा होती है, इसका अनुभव किया।

विनय भाई गम्भीरतापूर्वक बोले, "आचार्य रमण जी, आपके हृदय की पीड़ा का मैं अनुभव न करता हूँ ऐसी बात नहीं है। आपके दिल में जो कसक है उससे कम मेरे दिल में भी नहीं है। खेद की बात है कि जनता जीजी की सन्तान आज हमारे देश में कितने ही वर्ग बनाकर अपने-अपने वर्ग के स्वार्थों में लिप्त है। ये स्वार्थों के बन्धन तोड़ने का प्रयास करना ही हर भारतसेवक का कर्तव्य है। भारतसेवक श्रीलाल जी भी मेरे और आप जैसे व्यक्ति हैं। सत्तापति होकर यदि वह एकदम समस्त देश के रहनेवालों का एक समाज बना दें तो देश की कार्य-व्यवस्था का ढाँचा छिन्न-भिन्न होकर एकदम चकनाचूर हो जाय।"

विनय भाई की बात को आगे बढ़ाते हुए जनता जीजी ने कहा, "इसीलिए भारतसेवक श्रीलाल ने पहले भारतीय समाज की छाती पर खड़ी हुई ऊँची-ऊँची चोटियों को धराशायी किया। उनके टुकड़े-टुकड़े करके उन्हें गहरी खंदकों और खाइयों में भरा, जिससे एकदम नीची भूमि कुछ ऊपर उभर आई और ऊँची-ऊँची चोटियों के गिर जाने से दूर-दूर तक देश में दृष्टि फैलाने का अवसर मिला।"

प्रमिला बातों के बीच पैदा हुए गम्भीर वातावरण को तोड़ती हुई मुस्कराकर बोली, "इसलिए वेदान्ताचार्य रमण जी से सविनय प्रार्थना है

कि वह इन ऊँची-ऊँची चोटियों की कौली भरकर समय की प्रगति से संघर्ष करने की कृपा न करें। इन्हें साधारण भूमि को हमवार बनाने के लिए गहरी खाइयों में लुढ़क जाने दें। कहीं ऐसा न हो कि इनकी चपेट में आकर हमारे आचार्य जी मय अपने प्राचीन धर्म, साहित्य और संस्कृति के नीचे दबकर किसी गहरी खाई में समा जायें और फिर हमें उनकी खोज करने के लिए दुबारा खाइयाँ खोदनी पड़ें।"

प्रमिला की बात सुनकर वेदान्ताचार्य रमण जी के मुख-मंडल पर भी हल्की-सी मुस्कान की रेखा खिंच गई।

विनय भाई बोले, "मैं आचार्य जी से अनुरोध करूँगा कि वह भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित ज्ञान को देश की जनता तक पहुँचाने में मुझे सहयोग दें और मेरी 'भारत साहित्य सहयोग' की योजना को देश-व्यापी बनाने का कार्य मेरी ही तरह उत्तरदायित्व लेकर संभालने की कृपा करें।"

"दिशा तो विनय ने आपकी योग्यता के अनुकूल ही सुझाई है, वेदान्ता-चार्य रमण जी ! विनय के प्रस्ताव की मैं सराहना करती हूँ।" जनता जीजी ने कहा।

रमण जी बोले, "विनय भाई का सुझाव मेरी प्रवृत्ति के अनुकूल अवश्य है जनता जीजी ! परन्तु यह इस कार्य को भारतसेवक श्रीलाल के 'जनसेवक समाज' में 'जन-जागृति' के अंतर्गत करना चाहते हैं। श्री-लाल की किसी भी योजना को बल देना उसकी राजनीतिक स्थिति को सुदृढ़ करना है। और मैं एक राजनीतिक दल का नेता होकर यह किसी प्रकार नहीं कर सकता।"

वेदान्ताचार्य रमण जी की बात सुनकर जनता जीजी बोलीं, "आप अपने विचारों में स्वतन्त्र हैं वेदान्ताचार्य रमण जी ! परन्तु मेरा सुझाव आप सब राजनीतिक नेताओं को यही है कि यदि आप मेरे बाल-बच्चों के सही हितैषी हैं तो आपको उनके हित में राजनीति से बाहर निकलकर विचार और कार्य करने की आवश्यकता है।"

इतना कहकर जनता जीजी खड़ी हो गईं। वेदान्ताचार्य रमण जी ने भी विदा ली और इसके पश्चात् जनता जीजी, प्रमिला, विनय भाई और रमेश एक मोटर रिक्शा लेकर दिल्ली की सैर को निकल पड़े। जनता जीजी देखना चाहती थीं कि वास्तव में दिल्ली ने कैसी प्रगति की है।

जनता जीजी ने दिल्ली के इर्द-गिर्द घूमकर देखा और पाया कि वास्तव में गत सात-आठ वर्ष के अन्दर दिल्ली का रंग ही बदल गया।

रात्रि को भोजन के पश्चात् काफी देर तक विनय भाई से जनता जीजी की बातें होती रहीं और उन बातों का प्रधान विषय यही था कि लोगों को उनके उत्तरदायित्व की दिशा सुझाई जाय, उनके चरित्र का विकास हो और उन्हें स्वयं अपने निर्माणकार्यों में जुटने की प्रेरणा दी जाय।

भारतसेवक और सत्ता रानी ही सब कुछ करनेवाली नहीं हैं। साधन जुटाना और मार्ग प्रदर्शन करना ही उनका कार्य है। वही कार्य भारत का प्रत्येक भारतसेवक कर सकता है! अन्तर केवल इतना ही है कि भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता अवसर आने पर ग़लत काम करनेवालों को बलपूर्वक भी रोक सकते हैं परन्तु अन्य भारतसेवक बल का प्रयोग नहीं कर सकते।

परन्तु राष्ट्रपिता ने अपने जीवन का बलिदान देकर यह बात सिद्ध कर दी कि जो कार्य बल से नहीं हो सकता वह सेवा और सत्याग्रह से हो सकता है और सेवा तथा सत्याग्रह करने की हर भारतसेवक को पूरी-पूरी स्वतन्त्रता है।

इन्हीं बातों के बीच 'जन-सेवक-समाज' की चर्चा चल गई। विनय भाई बोले, "जनता जीजी, आपने मुझे धर्मसंकट में फँसाकर एक ऐसी संस्था के साथ नत्थी कर दिया कि जिसे निदर्लीय कहने पर कोई विश्वास नहीं करता। और करे भी कोई कैसे, जब उसका कर्णधार एक राजनीतिक दल का नेता है।"

विनय भाई की बात सुनकर जनता जीजी बोलीं, "बात तो तुम्हारी सच है विनय, और सन्देह उन लोगों का भी ग़लत नहीं जो 'जन-सेवक

समाज' को निदर्लीय मानने में संकोच करते हैं, परन्तु यह भी सत्य है कि देश की जनता के उत्थान के लिए एक ऐसी संस्था की नितान्त आवश्यकता है कि जो राजनीति की दलदल से दूर रहकर केवल देश के जन-जीवन की ऐसी गुत्थियों को खोलने का प्रयास करे जिनके न खलने से समाज-विकास रुक रहा है।

मेरा तुम्हें 'जन-सेवक-समाज' में लाने का एक मात्र यही उद्देश्य है। मैं देश में एक निदर्लीय समाज की व्यवस्था देखना चाहती हूँ।"

जनता जीजी की बात सुनकर विनय भाई बोले, "जहाँ तक उद्देश्य की बात है, आपके मत से मैं सोलह आने सहमत हूँ और भरसक प्रयास भी करूँगा कि मेरा हर क़दम पूरी सतर्कता के साथ यह देखकर आगे बढ़े कि मेरा उपयोग किसी राजनीतिक चाल की पूर्ति के लिए तो नहीं हो रहा है, परन्तु मैं जानता हूँ कि फिर भी भारत जैसे देश में, जहाँ विचार और सिद्धान्त को भुलाकर व्यक्ति की उपासना की जाती है, इसका राजनीतिक प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता।

परन्तु जहाँ तक भारतसेवक श्रीलाल का सम्बन्ध है मैं उन्हें एक राजनीतिक दल का नेता होने पर भी निदर्लीय ही मानता हूँ।"

इस पर जनता जीजी मुस्कराकर बोलीं, "बस यहीं से तो अन्ध-विश्वास प्रारम्भ होता है विनय ! एक लेखक होने के नाते तुम भावना-प्रधान व्यक्ति हो और जब किसी व्यक्ति को देखते हो तो उसके एक कार्य को दृष्टि में रखकर नहीं देखते। उसके सम्पूर्ण जीवन और जीवन की घटनाओं पर दृष्टि डालते हो।

यह बहुत बड़ी मानवता की बात है। घोष के अन्दर सबसे बड़ी यही कमी है। वह एक ही बात पर अच्छे-से-अच्छे आदमी को फाँसी का दण्ड भी दे सकता है।"

रात्रि को बारह बजे तक विनय भाई और जनता जीजी आपस में बातें करते रहे। उन्हें पता ही न चला कि प्रमिला कब की सो गई।

सोने से पूर्व जनता जीजी ने एक गिलास पानी माँगा और विनय

भाई पानी लेने को उठे तो क्या देखते हैं कि रमेश के कमरे में बत्ती जल रही है।

विनय भाई पानी लाना भूल गये और जनता जीजी से पास जाकर बोले, "जीजी, भारतसेवक तो आपने बहुत देखे होंगे परन्तु जैसी लगन का भारतसेवक रमेश है ऐसा जीवन में देखने को नहीं मिला होगा।

तनिक धीरे-धीरे आओ तो मेरे पीछे-पीछे।"

कहकर दोनों, जनता जीजी और विनय भाई, नंगे पैर, जिससे कोई आहट न हो, रमेश के कमरे के द्वार पर पहुँच गये।

सामने दीवार पर कैनवेस लगा था। रंग की प्यालियाँ ज़मीन पर रखी थीं और रमेश हाथ में तूलिका लेकर एक तस्वीर के होंठ रंग रहा था।

होंठों पर तूलिका लगाकर वह एक पग पीछे हट गया और चित्र की ओर देखकर मुस्कराया। उसकी गर्दन हिल रही थी।

विनय भाई और जनता जीजी ने देखा कि वह चित्र और कुछ नहीं था, जनता जीजी का अपना ही चित्र था, वही वेश-भूषा जिसमें वह आज सुबह नंगे पैर रास्ते पर तीव्र गति के साथ बढ़ी चली आ रही थीं। वही मोटी धोती, वही ब्लाउज़, वे ही बिखरे और रूखे बाल और वे ही टूटी चप्पलें।

चित्र देखकर जनता जीजी का हृदय प्रफुल्लित हो उठा। वह आगे बढ़कर मुस्कराती हुई बोलीं, "मेरा चित्र बिना मेरी आज्ञा के बना रहे हो चित्रकार ?"

रमेश भी वैसी ही मुस्कान अधरों पर लेकर बोला, "पूजा के लिए आज्ञा की आवश्यकता नहीं होती जीजी ! देवी की प्रतिमा बनाने की सबको आज्ञा है।"

विनय भाई बोले, "चित्र बहुत ही सुन्दर बना है रमेश ! कितना सही हाथ है तुम्हारा।" और फिर जनता जीजी की ओर मुँह करके बोले, "हाँ एक बात की सूचना देनी भूल ही गया था आपको। मैं एक पुस्तक

लिख रहा हूँ।"

"नाम क्या है उसका ?" जनता जीजी ने पूछा।

"उसका नाम है 'भारतसेवक' और उसी भारतसेवक के मुखपृष्ठ का चित्र हमारा यह चित्रकार आज तक नहीं बना सका। इसी बीच में मैं देख रखा हूँ कि इसने एक-से-एक सुन्दर, और काफी कठिन भी, कई चित्र बना डाले परन्तु 'भारतसेवक' का चित्र बनाने में इसे बड़ी कठिनाई हो रही है।"

"होनी तो नहीं चाहिए ऐसे कुशल चित्रकार को।" जनता जीजी ने कहा। "जो चित्रकार आठ बजे से बारह बजे तक इतना सुन्दर चित्र बना सकता है उसके लिए 'भारतसेवक' का चित्र बनाना कौन बड़ी समस्या है ?"

"बड़ी गम्भीर समस्या है जनता जीजी !" रमेश ने गम्भीरतापूर्वक कहा। "जिन लोगों का चरित्र एक निश्चित रूप-रेखा में बँध जाता है उनके चित्र बनाना कठिन समस्या नहीं रहती, परन्तु जिनका कोई रूप ही निर्धारित न हो सके उनकी कल्पना करना सहज काम नहीं है।

फिर विनय भाई उस चित्र को छापना चाहते हैं अपनी 'भारतसेवक' की परिचय-पत्रिका पर और पत्रिका का चित्रण अभी अधूरा है। इसलिए जब तक पत्रिका पूर्ण न हो जाय तब तक चित्र का बनाना सम्भव नहीं।"

"चित्रकार की बात सही है विनय ! जब तुम अपनी पत्रिका समाप्त कर लोगे तभी उसका सही चित्र बन सकेगा, उससे पूर्व नहीं।" जनता जीजी ने कहा।

जनता जीजी द्वारा अपने मत का समर्थन पाकर रमेश को हार्दिक प्रसन्नता हुई और वह मुस्कराता हुआ बोला, " चित्र की चिंता न करें आप विनय भाई ! खड़े-खड़े एक रात में पूरा कर दूँगा। पहले पत्रिका तो पूरी कर लो। मैं तो देख रहा हूँ कि आपकी पत्रिका पूरी होने में ही देर होती जा रही है।"

विनय भाई को सचाई स्वीकार करने में आपत्ति नहीं हुई और वह मुस्कराकर बोले, "बात तो तुम्हारी सचमुच सही है रमेश ! लिखने बैठा

था 'भारतसेवक' की दस बीस पन्ने की परिचय-पत्रिका और वह भी इसलिए कि तुम्हें भारतसेवक का चित्र बनाने में कठिनाई न हो, परन्तु लिखते-लिखते यह एक अच्छा खासा उपन्यास बन गया। अब यदि तुम इसे भारतसेवक की परिचय-पत्रिका न कहकर 'भारतसेवक' उपन्यास कहो तो कुछ अनुचित न होगा।"

'भारतसेवक' उपन्यास की बात सुनकर जनता जीजी ने पूछा, "सुना है विनय, उपन्यास लिखना भी एक बड़ी भारी कला है, और तुमने उसमें कुशलता प्राप्त की है।"

जनता जीजी की बात सुनकर विनय भाई बोले, "उपन्यास ही क्या जीजी ! किसी भी बात को इस ढंग से कह जाना कि वह दिलचस्प बन जाय, एक बड़ी भारी कला है। और इसके लिए मैंने केवल इतना ही अनुभव किया है कि यदि आप अपनी ही बात का सही-सही, बिला अधिक नून-मिर्च लगाये, वर्णन कर दें तो उससे अधिक दिलचस्प और कोई बात नहीं हो सकती।

भारतसेवक श्रीलाल से अपना निकट सम्पर्क है और उनके जीवन के में जितना निकट जा सकता हूँ उतना अन्य के नहीं। इसीलिए मैंने उनके जीवन को आधार मानकर यह पुस्तक लिख डाली।

मुझे यह उपन्यास सी ही जचती है। परन्तु यह है वास्तव में क्या, इसका सही अंदाज़ हमारे आलोचना साहित्य-सेवक लगायेंगे। आखिर मैं ही क्यों पूरी उधेड़बुन में अपना मस्तिष्क ख़राब करूँ। कुछ उनके लिए भी तो सोचने-समझने को छोड़ दूँ।"

विनय भाई की बात सुनकर रमेश गम्भीरतापूर्वक बोला, "आपकी राय से मैं पूरी तरह सहमत हूँ। आप अपनी पुस्तक लिखकर समाप्त करें। जो कोई जो कुछ भी समझेगा, समझता रहेगा। मुझे भी चित्र बनाने को देर हो रही है। बेचारा छापेखाने वाला भी परेशान है और पुस्तक-प्रकाशक का तो दम गले में आ रहा है। आप लेखक हैं, इस नाते आपसे कुछ कहते नहीं बनता कि कहीं आपका मूड ही खराब न हो जाय और

पुस्तक बीच में ही लटक जाय। और उस बेचारे की पूँजी बीच में ही त्रिशंकू की तरह हवा में अटकी रह जाय।"

रमेश की बात सुनकर विनय भाई ज़ोर से खिल-खिलाकर हँस पड़े और खूब हँसे और हँसते-हँसते ही बोले, "तुमने बड़े काम की बातें कह डालीं रमेश! और वास्तविकता भी इनमें कितनी है।"

जनता जीजी बोलीं, "वास्तव में तुम बड़े अच्छे हो रमेश! चारों ओर का ध्यान रखकर विनय को सजग रखते हो। वरना तो इसे यह भी पता न चले कि सूर्य किधर से निकलता है, और किधर जाकर संध्या को छिप जाता है।"

जनता जीजी की बात सुनकर रमेश बोला, "यह गुरुतर कार्यभार तो भाभी प्रमिला के ऊपर है। इस परिवार की चक्की को चलानेवाली चालिका वही हैं। जहाँ तक लापरवाही की बात है, मैं विनय भाई से कहीं आगे हूँ, परन्तु इतना अवश्य है कि जब किसी काम पर जुट जाता हूँ तो सुबह, दोपहर, शाम और रात नहीं देखता। और यह बात विनय-भाई की भी है।

शायद इसीलिए भगवान् ने मेरा सम्बन्ध विनय भाई के साथ जोड़ दिया है।"

जनता जीजी ने पूछा, "तो अब कब तक काम करते रहोगे तुम? बारह बज गये होंगे अब तो।"

और ठीक उसी समय सामने दीवार पर लगे घण्टे ने टन-टन-टन करके बारह बजा दिये।

रमेश बोला, "आप जाकर सोओ जीजी! मुझे सुबह आपके विदा होने से पूर्व यह चित्र समाप्त करना है। यदि आप चली गईं और इसमें कोई कमी रह गई तो फिर मैं उसे कैसे पूरा करूँगा?"

विनय भाई और जनता जीजी रमेश को चित्र पर कार्य करता छोड़कर बाहर बराँडे के सामने मैदान में बिछी चारपाहियों पर आकर लेट गये और थोड़ी ही देर में दोनों को निद्रा देवी ने दबा लिया।

सुबह सबसे पहले प्रमिला की ग्राँखें खुलीं ग्रौर उसने क्या देखा कि रमेश के कमरे में बत्ती जल रही थी। प्रमिला सीधी वहीं जा पहुँची ग्रौर रमेश को चित्र बनाता देखकर बोली, "मालूम देता है ग्राज रात रमेश भाई ने इसी चित्र की तैयारी में काट दी।" ग्रौर फिर चित्र को देखकर बोली, "परन्तु रात सफल कर ली तुमने रमेश! जीजी उठकर देखेंगी तो बहुत ही प्रसन्न होंगी ग्रौर तुम्हारे भैया को भी यह चित्र बहुत पसंद ग्रायेगा।"

"शायद ग्राये," मुस्कराकर रमेश ने कहा ग्रौर मन में सोचा, भोली भाभी को क्या पता कि जनता जीजी ग्रौर विनय भाई रात के बारह बजे ही इस चित्र को देखकर उसकी प्रशंसा कर चुके हैं।

रमेश चित्र पर ग्रंतिम रेखाएँ खींच रहा था ग्रौर उसे ज्यों-का-त्यों कार्यमग्न छोड़कर प्रमिला ने सरस्वती देवी के मन्दिर में झाड़ू लगाई; फिर एक कपड़ा पानी में भिगोकर वहाँ का फ़र्श साफ़ किया ग्रौर तख्त पर बिछी चाँदनी को बदला। इसके पश्चात् सरस्वती के चित्र के नीचे रखे धूपदान को साफ करके उसके ग्रन्दर नई धूप जलाई ग्रौर फिर वीणा लेकर माता की स्तुति में निमग्न हो गई।

जनता जीजी ग्रौर विनय भाई की ग्राँखें तनिक देर से खुलीं, परन्तु ग्राँखें खुलते ही दोनों रमेश के कमरे की ग्रोर लपके ग्रौर देखा कि चित्र ग्रौर रमेश कमरे में नहीं थे।

इसके पश्चात् उन्हें प्रमिला की वीणा का स्वर सुनाई दिया ग्रौर वे वहाँ पहुँचे तो क्या देखा कि सेवा माता सरस्वती के चित्र के ठीक नीचे जनता जीजी का चित्र रखा हुग्रा था ग्रौर दोनों के सम्मुख धूपबत्ती जल रही थी। प्रमिला नेत्र बन्द किये वीणा के मधुर स्वर में ग्रपना कोकिल-कंठ-स्वर मिलाकर गा रही थी।

तेज दो बल दो माँ!
ग्रंधकार को मिटायें हम।……

पूजा समाप्त हुई। सब लोग ग्रपने नित्य कर्मों से निवृत्त हुए ग्रौर

जनता जीजी ने विदा ली ।

विनय भाई के लाख कहने पर भी जनता जीजी ने किसी सवारी में बैठकर जाना पसन्द नहीं किया । जैसे पैदल आई थीं वैसे ही चल दीं । वही थैला था पास में जिसके अन्दर एक पानी के हाथ की मोटी नमकीन रोटी, आम के अचार की एक फाँक और एक गुड़ की डली प्रमिला ने रख दी । यह जनता जीजी का मनभाता खाना था, जिसे वह बहुत रुचि के साथ खाती हैं और विशेष रूप से जब यात्रा पर होती हैं तब तो उन्हें पसंद ही यह खाना आता है।

जनता जीजी के चले जाने पर प्रमिला का मन भारी हो उठा। वह एकांत में जाकर बैठ गई । ठीक छै-सात वर्ष पश्चात् जनता जीजी से उसकी भेंट हुई थी । जनता जीजी का प्रमिला सेवा माता के ही समान आदर करती है और सच बात तो यह है कि प्रमिला की सेवा माता केवल पैदा करने वाली माता हैं और उसका सारा काम, उसकी सारी देखभाल, सारी शिक्षा-दीक्षा, जनता जीजी ने ही सम्पन्न की थी ।

जनता जीजी प्रमिला को बहन होने पर भी पुत्री के समान प्रेम करती हैं । चलते समय जनता जीजी का भी मन भारी हो उठा था ।

विनय भाई प्रमिला को लेकर मकान के पीछे गुलाब बाग में चले गये और एक गुलाब की कली तोड़कर उसके गाल पर फेरते हुए बोले, "प्रमिला ! यह मिलन और विछोह ही मानवता की परख के क्षण होते हैं। इन्हीं में पवित्र भावना द्रवित हो उठती है और कुण्ठित हृदय पाषाण बना रहता है ।"

प्रमिला विनय भाई का सहारा लेकर घास पर बैठ गई । उसकी ज़बान पर एक शब्द भी न आया । केवल आँखों के दो कोनों में दो आँसू मोती बनकर भर गये । मानो दो सीपियों के दो कोनों में दो सच्चे मोती लाकर रख दिये हों ।

विनय भाई ने गुलाब की कली से ही धीरे-धीरे उन मोतियों को नीचे गिरा दिया ।

और तभी दोनों ने देखा कि मुस्कराता हुआ रमेश जनता जीजी का चित्र लिए सामने खड़ा था।

रमेश ने चित्र दोनों से पाँच गज़ की दूरी पर रखकर कहा, "देखो भाभी! जीजी कैसी लपकी चली आ रही हैं? धूल भरे बाल कैसे सुन्दर लग रहे हैं?"

चित्र देखकर प्रमिला का मन कुछ और-सा हुआ और वह तनिक सँवरकर बैठती हुई बोली, "रमेश भाई, तुमने यह चित्र सचमुच बहुत ही सुन्दर बनाया है।"

और फिर दोनों चित्र की प्रशंसा में लग गये।

: २१ :

विनय भाई आज बहुत देर तक साहित्य की गतिविधियों के ऊपर विचार करते रहे और जो वस्तु विशेष रूप से उनके विचार का माध्यम बनी, वह थी कला।

विनय भाई जनता के जीवन का साहित्य लिखते हैं, जनता की भाषा लिखते हैं, और सच तो यह है कि जो वह अपने इर्द-गिर्द देखते-भालते और बोलते-चालते हैं उसी को ज़रा सफ़ाई के साथ लिख डालते हैं। इसे भी कुछ विद्वान् कला की संज्ञा देते हैं, परन्तु कुछ कहते हैं कि यह साधारण कला है, इसमें कला का कोई विशेष चमत्कार नहीं, पांडित्य की कोई अनूठी दिशा नहीं।

कला का दूसरा रूप केवल कलाकारों के मस्तिष्क की कलाबाज़ी तक ही सीमित है। उसका विशेष गुण यही है कि किसी भी बात को सफ़ाई के साथ सीधा-सादा इस प्रकार न कहा जाय कि आम आदमी की समझ में आ जाय। हर बात सिर से ही आरम्भ होकर पैरों तक नहीं चलनी चाहिए। जहाँ जैसा जी चाहे कलाकार कर गुज़रे और पाठक उसका जोड़-तोड़ अपने विचार से लगातार करे, अर्थात् पाठक को भी पका-पकाया भोजन नहीं मिल जाना चाहिए। उसे भी भोजन करने से पूर्व थोड़ा परिश्रम अवश्य करना चाहिए, थोड़ी देर चूल्हा फूँकने की भी आवश्यकता है।

कला में निखार लाने के लिए कलाकार को विश्वसाहित्य के कुछ विशेष पात्रों के रूप, कुछ बड़े लेखकों की प्रणाली, कुछ विशेष विचारकों के सिद्धान्त और कुछ मनोवैज्ञानिकों के विश्लेषण अपनी रचना में ठूँस ही देने चाहिएँ। क्योंकि इनका प्रभाव चाहे पाठक के मस्तिष्क पर ऊब उठना ही हो, परन्तु आलोचक-मंडली की वाह-वाही लूटना भी तो कलाकार का एक महत्वपूर्ण काम है। और निपुण लेखक इस लूट से पीछे

रह जाना कभी पसंद नहीं करेगा ।

मतलब यह है कि साधारण जीवन की घटनाओं में आनन्द लेना हल्के कलाकार का काम है, भारी कलाकार इससे ऊपर उठकर उड़ता है, परन्तु विनय भाई को इस भारी हो उठने की प्रणाली में खतरा-ही-खतरा दिखाई देता है। उन्हें वे कलाकार और उनकी कला हवा में उड़ती दिखाई देती है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस दुनिया की भूमि से उनका कोई सम्बन्ध नहीं। उनकी रचनाएँ इससे ऊपर की वस्तु हैं और वे स्वयं भी इस दुनियाँ के साधारण जीवों से कम ही सम्बन्ध रखते हैं।

विनय भाई के सम्मुख इस समय देश की जनता के लिए जन-जागृति का साहित्य प्रस्तुत करने की बात है। वह सोच रहे हैं कि यदि इस कार्य में सहयोग लिया जाय तो कौन-सी कला का लिया जाय, उस कला का लिया जाय जिससे पाठक को लेख के आशय तक पहुँचने में सुगमता हो, अथवा उस कला का लिया जाय कि जिसके आल-जाल में फँसकर वह यह भी पता न लगा सके कि आखिर लिखनेवाला कहना क्या चाहता है और जो कुछ वह कहना चाहता है उसका उसके जीवन से भी कोई सम्बन्ध है या नहीं।

बहुत सोच-विचार के पश्चात् विनय भाई ने यह निश्चय कर लिया कि उन्हें हल्की और फीकी कला, अर्थात् स्वाभाविक कला का ही आश्रय लेना है, चाहे भले ही उनके इस निर्णय के फलस्वरूप उन्हें स्वयं को भी साहित्य के प्रकांड पंडित और आचार्य हल्का-फुल्का लेखक ही क्यों न घोषित कर दें।

वह जानते थे कि उसकी रचना की सबसे अधिक खिल्लियाँ उड़ाने-वाले वेदान्ताचार्य रमण जी होंगे जो स्पष्ट शब्दों में घोषित करेंगे कि यह साहित्य-रचना नहीं है, साहित्य का उपहासमात्र है परन्तु विनय भाई को इसकी चिंता नहीं थी क्योंकि वह जानते थे कि वह साहित्य निश्चित रूप से जनता और उसके बाल-बच्चों के मनोरंजन, चिंतन और भावना-त्मक उद्वेलन में सफल होगा। उनके जीवन को गुदगुदायेगा, कोरी कल्पना

की दुनिया न बसाकर, उनके आस-पास की दुनिया में ही साहित्यिक वातावरण की नई दुनिया बसायेगा, उनके जीवन की मुँदी हुई कलिका की पंखुरियों को अपने झकोरों से खिलायेगा, उन्हें हल्की-हल्की लोरियाँ देकर जगायेगा-सुलायेगा, जीवन में मस्ती के साथ आगे बढ़ते हुए, हँसते-कूदते और खेलते हुए रहना सिखायेगा, आपस में प्यार और सहयोग के साथ जीने का रास्ता बतायेगा। केवल चमत्कार-ही-चमत्कार की स्वप्निल दुनिया के गहरे गम्भीर सागर में डूबने और उभरने के लिए नहीं छोड़ देगा, अपनी छोटी-छोटी हल्की-हल्की नौकाओं में विहार करने की सुविधा प्रदान करेगा।

इन्हीं विचारों में निमग्न विनय भाई 'भारत साहित्य सहयोग' के कार्यालय में बैठे थे। रमेश ने हाथ में एक चित्र लिए हुए कमरे में प्रवेश किया और वह चित्र विनय भाई के सम्मुख रखकर बोला, "भारतसेवक का चित्र बनाने से पहले मैंने सोचा साहित्य-सूची के मुख-पृष्ठ का चित्र बना दूँ।"

विनय भाई ने चित्र हाथ में लेते हुए कहा, "चित्र बहुत सुन्दर बना है रमेश! देहात की पूरी छटा है और वाचनालय-पुस्तकालय भी खुल गया तुम्हारा। वहाँ से पुस्तकें ले-लेकर पढ़ने वाले भी पुस्तकें लेकर वृक्षों की शीतल छाया में घास पर बैठे हुए आनन्दपूर्वक समाचार-पत्र पढ़ रहे हैं, पुस्तकों का अध्ययन कर रहे हैं। और पुस्तकालय की व्यवस्थापिका भी कितनी प्रसन्न-मुद्रा में पुस्तकें वितरित कर रही हैं।"

विनय भाई के अन्तिम वाक्य पर रमेश मुस्कराकर बोला, "ये पुस्तकें वितरित करने वाली कौन हैं भला विनय भाई! आप इन्हें पह-चानते भी हैं या नहीं?"

रमेश के इतना कहने पर विनय भाई ने चित्र को और भी ध्यान-पूर्वक देखा और बोले, "रमेश! तुमने तो अपनी भाभी प्रमिला का ही चित्र बना दिया।"

"और नहीं तो किसका बनाता? किसी भी कार्य की व्यवस्थापिका

के रूप में मैं भाभी से आगे कुछ सोच ही नहीं सकता। चित्र के वाता-वरण में जो आमोद-प्रमोद दिखाई देता है वह प्रमिला भाभी के ही प्रबन्ध में सम्भव है।" रमेश ने कहा।

तभी प्रमिला ने कमरे में प्रवेश करके पूछा, "मेरे पीछे से मेरी चर्चा कैसी चल रही है रमेश !" और मुस्कराकर विनय भाई के पास बैठते हुए अपनी दृष्टि चित्र पर फैला दी।

चित्र को देखकर प्रमिला बोली, "तो यह जनता जीजी और उनके बाल-बच्चों को साहित्य का सहयोग प्रदान किया जा रहा है। जनता जीजी भी तो देखो एक ओर से अपने बाल-बच्चों को पुस्तकें पढ़ती देखकर कितनी प्रसन्न मुद्रा में चली आ रही हैं।" और इतना कहकर प्रमिला ने चित्र के एक कोने से आती हुई जनता जीजी की शक्ल की ओर संकेत किया।

उसे देखकर विनय भाई और भी खिल उठे और बोले, "तब तो रमेश ने इस छोटे से चित्र में कहीं-न-कहीं मेरा चित्र भी अवश्य बनाया होगा।"

रमेश मुस्कराकर बोला, "आप लेखक हैं विनय भाई ! आपका साहित्य सहयोग की इस दिशा से कोई सम्बन्ध नहीं। यह जनता जीजी और प्रमिला का मंदिर है। आपका स्थान तो सरस्वती के मंदिर में है, उसी मंदिर में जहाँ आप विराजमान हैं। आपका चित्र जब भी बनेगा इसी वातावरण में बनेगा।"

"तो इसका यह अर्थ हुआ कि तुम मुझे जनता और प्रमिला के मंदिर में जाने के योग्य नहीं समझते। मैं तो अपने इस मंदिर को भी उठाकर उसी मंदिर के अन्दर स्थापित कर देना चाहता हूँ।

इस मंदिर की व्यवस्था उसी मंदिर के लिए की थी मैंने।" गम्भी-रतापूर्वक विनय भाई ने कहा।

"इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु उस मंदिर के बन जाने पर इस मंदिर की आवश्यकता ही समाप्त हो गई हो, ऐसी बात नहीं है विनय

भाई ।" रमेश ने गम्भीर वाणी में कहा । "साधना का स्थान पृथक् है और जन-पूजा का पृथक् । साधना और जन-पूजा का स्थान एक कभी नहीं हो सकता । मुझसे ही यदि आप कहें कि मैं जनता जीजी और प्रमिला के वाचनालय-पुस्तकालय के एक कोने में अपना बोर्ड लगाकर चित्र बनाना प्रारम्भ कर दूँ और वह चित्र वन जाय तो असम्भव बात है ।"

रमेश की बात सुनकर प्रमिला मुस्कराकर बोली, "तो इसका अर्थ मैं यही समझूँ कि तुमने मुझसे अपने भाई को छीनने का यह सब जाल रचा है । अर्थात् मैं तो देहात-देहात घूम-फिरकर वाचनालय-पुस्तकालय खोलती फिरूँ और ये यहाँ बैठकर एकान्त में पुस्तकें लिखें । और तुम उनके चित्र बनाओ ।

यह कभी सम्भव नहीं होगा । आप दोनों को एकान्त छोड़कर जनता के बीच बैठकर लिखने और चित्र बनाने की कला सीखनी होगी ।"

प्रमिला की बात सुनकर विनय भाई खूब हँसे, खूब हँसे और बोले, "रमेश ? तुम्हारे मन की बात को, देखा तुमने, तुम्हारी भाभी कितनी जल्दी भाँप लेती हैं ? तुमने एक बात कही और प्रमिला ने अपना अर्थ लगा लिया ।"

इसके पश्चात् तीनों की बातों की दिशा 'भारत साहित्य सहयोग' से 'जन-सेवा-समाज' की ओर घूम गई। रमेश बोला, "कल आपने जनता जीजी को वचन तो दे दिया कि आप 'जन सेवा समाज' के कार्य में सहयोग देंगे परन्तु यह नहीं बतलाया कि आपका वह सहयोग किस दिशा में होगा ।"

रमेश की बात सुनकर विनय भाई बोले, "मेरा सहयोग उसी दिशा में होगा रमेश, जो मेरी दिशा है । कोई भी समाज बने, और कोई भी मुझसे सहयोग चाहे, या मैं अपनी सेवा का योग दूँ, तो इसका अर्थ जीवन की दिशा बदलना नहीं होगा ।"

"यह तो ठीक ही है ।" रमेश ने कहा, "आपसे दिशा बदलने की

बात करना वैसा ही है जैसे गंगा को हिमालय की दिशा देना, हिन्द-महासागर की ओर जानेवाले मार्ग से उसे विचलित करने का प्रयास करना।

गंगा, बह रही है। समाज के बीचोंबीच बह रही है। उसके जल का उपयोग करना है। गंगा किसी को मना नहीं करती और नहरें खोदकर जिधर भी उसे अपने हित के लिए बहाकर मानव ले जाये, ले जा रहा है, ले जा सकता है। वह हर दिशा में परमार्थ के लिए जाने को उद्यत है। परन्तु दिशा बदलने की बात सम्भव नहीं।"

प्रमिला मुस्कराकर बोली, "कितने सुन्दर साहित्यकार बनते जा रहे हो रमेश ! अपने भैया से गंगा की उपमा दे रहे हो। उपमा उल्टी हो गई तुम्हारी। गंगा से तो तुम्हें मेरी उपमा देनी चाहिए थी। तुम्हारे भैया तो किनारे है दोनों ओर के जिनके बीच में आराम और सुरक्षा के साथ गंगा बहती है।"

प्रमिला अभी पूरी बात भी न कहने पाई थीं कि घोष बाबू आ पधारे और बोले, "सुना है आपने जनता के आग्रह पर भारतसेवक श्रीलाल के माया जाल से रचे 'जन सेवक समाज' का एक सेवक बनना स्वीकार कर लिया है। जनता की बात टालने को मैं आपसे नहीं कह रहा, परन्तु इससे आपकी साहित्यि-निष्ठा को निश्चित रूप से धक्का लगेगा। आज तक जो लोग आपको एक स्वतंत्र लेखक और विचारक के रूप में देखते रहे है, उनका विचार आपके विषय में बदल जायगा।"

घोष बाबू की बात सुनकर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "क्या बातें कर रहे हो घोष बाबू ? मेरे विषय में जो कुछ मेरे पाठकों का मत है वह मेरी रचनाओं को पढ़कर बना है, मेरी शक्ल देखकर नहीं। और आगे उनका विचार भी बदलेगा तो मेरी रचनाओं की सचाई और झूठ के आधार पर ही बदलेगा।

हाँ इतना सम्भव अवश्य कि जो लोग बिला कुछ पढ़े लिखे, केवल ऊपरी सम्पर्क के आधार पर अपने विचार बना लेते है, उन्हें समझने में कठिनाई अवश्य आयगी। सो उनकी मै कोई विशेष चिंता नहीं

करता। वे लोग तो ऐसे ही हैं कि जो हवा के एक झकोरे की चपेट से इधर और दूसरे की चपेट से उधर।"

घोष बाबू बोले, "फिर भी संगति और सम्पर्क का प्रभाव तो पड़ता ही है। क्या इससे भी आप इन्कार कर सकते हैं ?"

इससे इन्कार करने की आवश्यकता नहीं घोष बाबू ! यह तो सचाई की ओर बढ़ने का मार्ग है। संगति और सम्पर्क जिससे जितना घनिष्ट होगा, चित्रण भी उसका उतना ही सजीव हो उठेगा। तुम जानते ही हो कि मैं सुनी-सुनाई बातों पर कभी कुछ लिखता ही नहीं। लिखता केवल वही हूँ, जिससे ठेस खाता हूँ और अच्छे काम की चाल को रुकता हुआ पाता हूँ। तुम जानते ही हो कि मैं रास्ता बनाता हूँ और केवल अपने लिए कभी कोई रास्ता नहीं बनाता। उसके बनाने में जो-जो भी मुझे योग देता है, उसका आभार मानता हूँ, दिल के नरम कोने में स्थान देता हूँ।" विनय भाई गम्भीरतापूर्वक बोले।

घोष बाबू विनय भाई से पुराने परिचित थे। राजा के विरुद्ध उन्होंने घोष बाबू के साथ कंधे-से-कंधा भिड़ाकर संघर्ष किया था, जेलें कूटी थीं, हण्टर खाये थे और लाठी के वार भी मुस्कराकर सिर पर सहे थे।

विनय भाई विचारों के कितने स्वतन्त्र व्यक्ति हैं यह भी घोष बाबू से छिपा नहीं था। वह जानते थे कि विनय भाई जिस बात को करना ग़लत समझते हों उसे किसी प्रलोभन के वश कभी नहीं कर सकते।

इसके अतिरिक्त और कोई जानता हो, या न जानता हो, परन्तु घोष बाबू ने सत्ता रानी के वे प्रलोभन भरे पत्र विनय भाई के पास आये हुए स्वयं अपनी आँखों से पढ़े थे जिनमें उन्हें एक -से-एक सुन्दर प्रलोभन दिया गया था।

घोष बाबू गम्भीरतापूर्वक बोले, "आपसे अपरिचित रहने की तो कोई बात ही नहीं है विनय भाई ! परन्तु मैं सोच रहा हूँ कि आपका 'जन-सेवक-समाज' में दिया गया सहयोग भारतसेवक श्रीलाल की स्थिति को, चाहे आप चाहें या न चाहें, राजनीति के क्षेत्र में बल देगा।"

"इसमें कोई सन्देह नहीं ।" विनय भाई ने घोष बाबू की बात को स्वीकार करते हुए कहा, "इसी कारणवश मैं किसी नेक काम से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर दूँ यह भी मुझे ठीक नहीं जचता ।

में 'जन-सेवक-समाज' के किसी कार्य में यदि सहयोग दे रहा हूँ तो उसका एक मात्र कारण यही है कि मैं देश की जनता के जीवन को साहित्य और कला की मधुर कल्पना से, सरल अनुभूति से, मर्मस्पर्शी संवेदना से, सहृदयता से, स्वस्थ चिन्तन से भर देना चाहता हूँ ।

और मैं समझता हूँ कि मेरे इस उद्देश्य में मुझे 'जन-सेवक-समाज' के सहयोग से बल मिलेगा और मेरा जो कार्य एक वर्ष में होने वाला है वह एक महीने में पूरा न हो सकेगा ।" गम्भीरतापूर्वक विनय भाई ने कहा ।

"हो सकता है अपनी मनोकामना सफल हो और आप अपने उद्देश्य की पूर्ति में आशातीत उन्नति कर सकें, परन्तु मुझे इसमें हर प्रकार का सन्देह है ।

आपको मैं एक सच्चा कार्यकर्त्ता और अपनी धुन का पक्का साहित्य-सेवी मानता हूँ और जानता भी हूँ कि आप जिस धुन पर कमर कसकर लग जाते हैं उसे रात-दिन करके पूरा कर ही डालते हैं, परन्तु भेद केवल इतना ही है कि आज तक आपको जो साथी मिले हैं उनमें चिन्तन और भावना चाहे आपसे कम रही हो, अनुभव और कल्पना में भी आप उनसे आगे हों, परन्तु जहाँ तक कार्य में लगन की बात रही है, उनमें से एक भी आपसे पीछे रहने वाला नहीं रहा । और यदि कह दूँ कि इसी को मैं आपकी सफलता का मूल कारण मानता हूँ, तो आपके दिल को चोट नहीं लगनी चाहिए ।"

घोष बाबू की बात को सुनकर विनय भाई ने गम्भीरतापूर्वक सोचा और सोचते ही रहे काफी देर तक ।

प्रमिला मुस्कराकर बोली, "कैसी चिन्ता में फँसा दिया आपको घोष

बाबू ने ? चिन्ता और सोच-विचार का समय तो समाप्त हो चुका। अब सोचने का समय नहीं रहा, अब तो कर्तव्य-पथ पर पग बढ़ाने का समय है। जीवन का एक-एक दिन वृथा नष्ट हो रहा है और योजना दिन-पर-दिन पुरानी पड़ती जा रही है। जनता जीजी के बाल-बच्चों में नया उत्साह भरना है, नई उमंगें पैदा करनी हैं।"

"नया उत्साह भरना है, नई उमंगें पैदा करनी है। यह तो हम भी कहते हैं। हमें जनता जीजी के बच्चे-बच्चे को खाना, कपड़ा और घर देना है।" घोष बाबू बोले, "शिक्षा देनी है उन्हें परन्तु इस कार्य को सत्ता रानी के गुर्गे पूरा नहीं कर सकते। उन बेचारों को तो अपनी पेट-पूजा, अपने पुलाव-कोफ्ते, अपनी बिरयानी, अपने सूट, अपनी मोटर, अपने बंगले और अपनी ऐश से ही छुट्टी नहीं मिलती।

आज आप जब भारतसेवक की सेवा में जाने का निश्चय कर ही चुके तो आपको यह भी बतला दूँ कि इस देश की स्वतन्त्रता के पर्दे के पीछे जहाँ एक राजे-महाराजों, नवाबों, जमीदारों और सूदखोर साहूकारों का समाज नष्ट हुआ है वहाँ एक सत्ता रानी के नाते रिश्तेदार भारत-सेवकों और सिपहसालारों का ऐसा दल भी बन गया है जिसके जाल को चीरकर जनता की भोलीभाली सन्तान के दर्शन करना भी भारतसेवक श्रीलाल के लिए कठिन हो गया है।

आपको संघर्ष करना होगा इन सबसे। सत्ता रानी के नियंत्रण को गरल की प्याली समझकर हलक के नीचे उतारना होगा विनय भाई।" और इतना कहकर उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही घोष बाबू उठकर खड़े हो गये।

विनय भाई भी उनके साथ घर से बाहर तक काफी दूर उन्हें छोड़ने के लिए गये। लगभग एक फर्लांग की दूरी पर जाकर एक रिक्शा मिली और घोष बाबू उसमें बैठ गये।

चलते समय विनय भाई मुस्कराकर बोले, "आपके आदेशों का ध्यान रखकर क़दम बढ़ाने का प्रयास करूँगा घोष बाबू! परन्तु इतना याद

रहे कि आपका सहयोग मुझे अवश्य मिलेगा।

मैं एक नेक कार्य करने का स्वप्न देख रहा हूँ और चाहता हूँ कि मेरे देश का बच्चा-बच्चा सुशिक्षित हो, सभ्य हो, सहृदय हो और चिन्तनशील हो। वह अपने हित और अहित को स्वयं पहचाने और सच्चे मायने में प्रजातन्त्र की सत्ता रानी का मार्गदर्शन कर सके।"

विनय भाई रिक्शा के चले जाने पर लौटकर आये तो क्या देखा कि रमेश और प्रमिला के बीच उसी बात को लेकर चर्चा चल रही थी। रमेश कह रहा था, "घोष बाबू की इस बात से मैं सहमत हूँ कि विनय भाई को वैसे कार्यकर्त्ता मिलने कठिन हैं जैसे उन्हें सत्याग्रह आन्दोलन में मिले थे। उन कार्यकर्त्ताओं में जो लगन थी वह इन कार्यकर्त्ताओं में नहीं हो सकती जो छैल-छबीले बनकर भारत माता के सेवा पथ पर निकले हैं।"

प्रमिला कह रही थी, "यह बात नहीं है रमेश ! कार्यकर्त्ताओं से काम लेना भी साधारण खेल नहीं है। ये लोग कोरे वेतन के प्रलो-भन से कार्य नहीं करते। ये सेवा के भाव से प्रेरित होकर आते हैं परन्तु जीवन की समस्याएँ भी इनके साथ उलझी रहती हैं। इनसे काम लेने के लिए जहाँ एक इनको सेवा-पथ का मार्ग दर्शन करना होता है वहाँ दूसरी ओर इनकी समस्याओं का हल भी खोजना चाहिए। जो नेता दोनों का समन्वय करके चलते हैं उन्हें सफलता मिलती है।"

रमेश बोला, "किसी हद तक आपकी बात से मैं सहमत हो सकता हूँ भाभी ! परन्तु घोष बाबू की बात को निर्मूल साबित करने के लिए मेरा मस्तिष्क गवाही नहीं देता।"

विनय भाई चुपचाप खड़े दोनों की बातें सुन रहे थे। वह पीछे से बोले, "बातें तुम दोनों की ही सही हैं और जो कुछ घोष बाबू ने कहा, सत्य की मात्रा उसमें भी कम नहीं है। परन्तु इससे भी कठोर सत्य यह है कि सेवा और त्याग की ज्वाला सिलगानी पड़ती है। इस ज्वाला को सिलगाना साधारण खेल नहीं है। देश के ठंडे पड़े वातावरण के बीच

जन-जागृति की ज्वाला कैसे सिलगाई जाती है, इसका पाठ हमने राष्ट्र-पिता से सीखा है और उसका सबसे महान् चिंगारी दहकाने वाला भारत-सेवक श्रीलाल है। सन् १९४२ में जो चिंगारी भारतसेवक श्रीलाल ने दहकाई थी उसकी गर्मी ने राजा के शताब्दियो पुराने जमें हुए पैर उखाड़कर फेंक दिये।

आज भी हमारे देश की जनता का कायापलट होने की आवश्यकता है। जनता की सन्तान के जीवन में एक नई चिंगारी सुलगाना नितान्त आवश्यक है।

'जन-सेवक-समाज' के निर्माण की जो बुनियादें खोदी जायँगी उनमें विनय 'भारत साहित्य सहयोग' की ईंटें, चूना, सीमेंट भरकर साधारण भूमि के स्तर पर लाने का प्रयास करेगा। ये बुनियादें भारतीय संस्कृति, सभ्यता, मानवता, जीवन की सचाई और राष्ट्र-प्रेम के आधार पर निर्मित की जायेंगी।

ऐसी मेरी कल्पना है, ऐसी मेरी इच्छा है।"

विनय भाई कहते-कहते चुप हो गये।

प्रमिला और रमेश ने कहा, "हमारी तुच्छ सेवा आपके चरणों में अर्पित है, इस महान् कार्य के लिए।"

भारतसेवक श्रीलाल ने 'जन-सेवक-समाज' के निर्माण की घोषणा तो कर दी परन्तु उसके कार्य का विकास करने का उनके पास समय नहीं है। उनका अधिकांश समय सत्ता रानी की कारगुज़ारियों को भुगताने में ही समाप्त हो जाता है और जो बचा-खुचा समय है वह उस पार्टी के गठन में निकल जाता है जिसकी पीठ पर सवार होकर वह सत्ता रानी के महलों तक पहुँचे हैं।

इस नये समाज का निर्माण वह सत्ता रानी की उन महान् योजनाओं की पूर्ति के लिए करना चाहते हैं जिनका संचालन जनता और उसके बाल-बच्चों की दशा सुधारने के लिए एक बड़े पैमाने पर किया जा रहा है और जिसके अन्दर राष्ट्र की आय का बहुत बड़ा भाग व्यय हो रहा है।

समाज का ढाँचा तैयार हुए काफ़ी दिन हो गये, परन्तु कार्य में कोई प्रगति दिखाई नहीं दी।

जनता जीजी और सेवा माता ने प्रचार करके विनय भाई को 'जन-सेवा-समाज' में कार्य करने को बाध्य करके भारतसेवक श्रीलाल के मस्तिष्क की एक परेशानी को दूर करने का प्रयास किया और उन्हें भी विश्वास था कि विनय भाई जिस कार्य को संभालेंगे उसे पूरा-पूरा निभा ले जायेंगे।

श्रीलाल जी अपने कमरे में बैठे यही विचार कर रहे थे कि सामने से सत्ता रानी मुस्कराती हुई आती दिखाई दी। आज उन्होंने नई खादी की रेशमी साड़ी बाँधी थी, जिसका रंग आस्मानी था और उस पर लाल रंग का ब्लाउज़ उनके सौंदर्य में कमाल की वृद्धि कर रहा था। सेंडिल भी आज नया था और आँखों पर चश्मा भी सुन्दर और जचीला था। गाल में पान का टुकड़ा दबा था।

भारतसेवक एक क्षण को तो भूल ही गये कि उनके मस्तिष्क में कोई समाज-वमाज का पचड़ा लगा हुआ था। एकटक सत्ता रानी के रूप को निहारकर बोले, "सत्ता, तुम्हारा रूप मैं देखता हूँ नित्य ही सुन्दर-से-सुन्दरतम होता जा रहा है। जीवन की जवानी और सौंदर्य का उभार दोनों ही साथ-साथ आगे बढ़ रहे हैं। मुझे देखकर हार्दिक प्रसन्नता है कि जब से तुम्हारा मेरे साथ सम्पर्क हुआ है तुम्हारा स्वास्थ्य दिन-पर-दिन सुधरता ही जा रहा है और तुम्हारे लावण्य में बराबर वृद्धि हो रही है।

आज तुम्हें यह मानना ही होगा कि राजा के साथ जब तुम रहती थीं तो चाहे फैशन कितना भी था लेकिन शरीर में रक्त नहीं था, चेहरा पीलिया के मरीज़ का जैसा हो रहा था और चालढाल में यह चुस्ती और यह मुस्कराहट नहीं थी। सारा बदन ढीला जचता था। यौवन का जीवन में उभार आया ही न हो, ऐसा प्रतीत होता था।"

सत्ता रानी इठलाकर आँखें तरेरती हुई बोलीं, "आपकी कृपा की मैं जीवन भर आभारी रहूँगी भारतसेवक! राजा जी में और आप में आकाश-पातल का अन्तर है। उनके समय में और आज के समय में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया है। आपने देश के हर व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन कर दिया है।

फिर मेरा जीवन परिवर्तित न होता, यह भला कैसे सम्भव था? आपकी दया का प्रसार जब जनता जीजी के उन बाल-बच्चों तक पर हो रहा है जिनकी कभी आपने सूरत नहीं देखी, और देखने का अवसर भी शायद कभी न मिले, तो मैं उससे अछूती रह जाती, यह भला कैसे सम्भव था?"

और इतना कहकर सत्ता रानी भारतसेवक के पास में पड़ी आराम कुर्सी पर बैठ गई और बैठते ही बोलीं, "जनता जीजी ने 'जन-सेवक-समाज' संस्था की ओर ध्यान दिया, यह देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। इतनी दूर रहकर भी सेवा माता और जनना बहन आपकी कठि-

नाइयों का देखिये कितना ध्यान रखती है ।"

भारतसेवक का ध्यान सत्ता रानी के सौंदर्य से हटकर 'जन-सेवक-समाज' पर पहुँच गया । वह बोले, "इसमें क्या सन्देह है सत्ता रानी ! जो आत्मीय जन होते हैं, वे चाहे जहाँ भी रहें, उन्हें अपने बच्चों और छोटे भाइयों की चिंता बनी ही रहती है ।

तुम्हारी योजनाओं में जन-सहयोग प्राप्त करने के लिए मैंने 'जन-सेवक-समाज' की घोषणा की थी परन्तु देख रहा हूँ कि यह समाज दफ्तरों से बाहर अपना प्रसार कर पाने में सफल ही नहीं हो रहा । दफ्तरों की फाइलों के ढेर लगते जा रहे हैं और जनता के बीच इसकी मैं कोई कार्यवाही नहीं देखता । केवल मेरे घोषणा कर देने और इसका विधान छापकर बाँट देने से समाज का निर्माण नहीं होगा ।

समाज के निर्माण के लिए सही कार्यकर्त्ता मिलने चाहिएँ ।"

इस पर सत्ता रानी मुस्कराकर बोलीं, "तो क्या विनय भाई से भी सही कार्यकर्त्ता आपकी दृष्टि में अन्य कोई है ?"

"विनय एक माना हुआ कार्यकर्त्ता है । तुम्हें चाहिए कि बिला किसी भेदभाव के उसे अपना पूरा सहयोग दो । मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि तुम्हारा सही सहयोग उसे मिला, तो वह इस 'जन-सेवक-समाज' को दफ्तरों से बाहर घसीटकर जनता के बीच ले जायगा ।"

"आपका विश्वास सफल हो, मेरी तो यह मनोकामना रहेगी ।" सत्ता रानी ने गम्भीरतापूर्वक कहा ।

सत्ता रानी की गम्भीर मुख-मुद्रा देखकर भारतसेवक श्रीलाल मुस्कराकर बोले, "अपनी मनोकामना का राजनीतिक संचालन न करके पारिवारिक संचालन करना । विनय का और मेरा क्या सम्बन्ध है, इससे तुम अपरिचित नहीं हो ।"

"आप चिन्ता न करें, इसका विश्वास दिलाती हूँ मैं । उनके किसी भी कार्य में यथासम्भव बाधा उपस्थित नहीं होने दूंगी ।" सत्ता रानी ने कहा ।

सत्ता रानी के विश्वास दिलाने पर भारतसेवक श्रीलाल को विश्वास हो गया कि विनय के काम में कोई विशेष बाधा उपस्थित नहीं होगी। जहाँ तक काम करने का सम्बन्ध था उन्हें विनय पर पूर्ण विश्वास था और वह उसकी कार्य-प्रणाली से पूर्व परिचित थे।

ये बातें चल ही रही थीं कि सेवक ने विनय भाई के पधारने की सूचना दी और सत्ता रानी स्वयं बाहर आकर उन्हें अन्दर लिवा ले गईं।

भारतसेवक श्रीलाल जी ने खड़े होकर आदर और प्रेम के साथ विनय भाई का स्वागत किया और बोले, "बड़ी लम्बी उम्र लेकर आये हो विनय ! सत्ता से अभी तुम्हारे ही विषय में बातें चल रही थीं।"

विनय भाई मुस्कराकर सत्ता रानी की ओर देखते हुए बोले, "आज तो भाभी का ठाट-बाट ही निराला दीख रहा है। कहीं किसी पार्टी में जाने की बात मालूम देती है। मुझे खेद है कि मैंने आपके कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति से विघ्न डाल दिया।"

विनय भाई की बात सुनकर सत्ता रानी बोलीं, "इस तरह की दो साड़ियाँ कल खरीदकर लाई हूँ विनय भाई! जानते हो दो क्यों लाई हूँ ?"

"क्या जानूँ भाभी के रहस्य की बातें और फिर तब जब कि मेरी भाभी राजनीतिक है, पारिवारिक नहीं।" मुस्कराकर विनय भाई बोले।

विनय भाई की बात सुनकर भारतसेवक और सत्ता रानी दोनों बहुत प्रसन्न हुए। सत्ता बोलीं, "सच जानो विनय भाई, एक साड़ी मैंने प्रमिला के लिए ली थी और उसे तुम अपने साथ लेते जाना।"

सत्ता रानी की बात सुनकर विनय भाई सिटपिटाये और गर्दन नीची करके बोले, "और सब आज्ञा पालन करने को तैयार हूँ भाभी ! परन्तु यह लेन-देन का व्यापार नहीं चलेगा। प्रमिला की आदतें मैं तुम्हारे प्रलो-भन पर खराब कर लूं तो फिर कैसे गाड़ी चलेगी भाभी ! अच्छे कपड़े भी ग़रीब आदमी के लिए वैसी ही लतें हैं जैसी शराब पीना और जुआ खेलना।"

विनय भाई की बात सुनकर सत्ता रानी को ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो किसी ने उनके उफान खाते हुए दूध के झागों पर पानी का छींटा मार दिया हो। उसका तमाम शरीर झनझना उठा। उसे ऐसा लगा कि विनय भाई ने उसका घोर अपमान कर दिया। जिसके हाथ से उपहार लेना देश के बड़े-बड़े आदमी अपना सौभाग्य समझते हैं, उसके हाथ के उपहार को तुच्छ समझकर विनय भाई ने ठुकरा दिया।

सत्ता रानी की त्योरी चढ़ गई और भवों में बल पड़ता भारतसेवक श्रीलाल और विनय भाई दोनों ने देखा। और दोनों ही मुस्कराकर एक साथ बोले, "रूठ गईं सत्ता रानी ?"

सत्ता रानी ने कहा, "आप लोगों को किसी के रूठने न रूठने की क्या चिन्ता ? सिद्धान्तवादी ठहरे आप लोग तो। परन्तु यह भी जान लीजिये कि इन सिद्धान्तों से ऊपर व्यावहारिक सम्बन्ध हैं और वे पारस्परिक लेन-देन से ही दृढ़ होते हैं।

मैंने कितने प्यार से प्रमिला के लिए कल वह साड़ी खरीदी थी, इसका अनुमान लगाना विनय भाई के लिए सम्भव नहीं।"

सत्ता रानी की बात सुनकर विनय भाई बोले, "सत्ता भाभी ! विनय को इतना अभावुक व्यक्ति न समझो। भावना और विचारों के अतिरिक्त तो उसके पास और कुछ है ही नहीं। विनय की तो दुनियाँ ही भावना और विचारों की है, परन्तु यह साड़ी अभी उन विचारों और भावना की दुनियाँ से बाहर की वस्तु है। पहले भावना का वातावरण तो बनने दो, देखने तो दो विनय को कि भाभी की भावना विनय के विचारों के साथ-साथ कहाँ तक चलती है। फिर एक नहीं, हजार साड़ियाँ, मैं नहीं, प्रमिला स्वयं अपनी भाभी से माँगकर पहन सकती है। बड़ी भाभी माता के बराबर होती है, और मेरी हार्दिक कामना है कि मैं आपको सेवा माता के साथ-साथ खड़ी करके देख सकूँ।"

विनय भाई की बात सुनकर सत्ता रानी की त्योरी के बल ढ़ीले पड़ गये और वह मुस्कराकर बोलीं, "बड़े ही विचित्र हो विनय भाई ! भारत-

सेवक श्रीलाल को समझाने में कितना समय लगा है मेरा, इसका अनुमान तुम नहीं लगा सकते। और अब सोच रही हूँ कि तुम्हें पढ़ने के लिए मुझे दूसरी पुस्तक प्रारम्भ करनी होगी।"

"निश्चित रूप से करनी होगी भाभी ! क्योंकि भारतसेवक श्रीलाल जी को प्रसन्न करना उतना कठिन नहीं है जितना मुझे प्रसन्न करना होगा। इन्हें प्रसन्न करने के लिए तो आप अपना तन-मन सब कुछ अर्पण कर सकती हैं परन्तु मेरे प्रसन्न करने के लिए तो आपको एक मात्र अपना स्नेह ही प्रदान करना होगा। उद्दंडता और उच्छृंखला पर विजय प्राप्त करने के लिए आपका स्नेह ही कारगर हो सकेगा।" मुस्कराकर विनय भाई ने कहा।

विनय भाई की बात सुनकर भारतसेवक बोले, "सत्ता रानी ! सुनी तुमने विनय की बात ! कितनी तीखी और कितनी मीठी हैं ये बातें। परन्तु जब तुमने 'जन-सेवक-समाज' के निर्माण का निश्चय ही किया है तो विनय को प्रसन्न रखना तुम्हारे लिए आवश्यक हो गया है।

'जन-सेवक-समाज' तुम्हारा बच्चा है और उसे पालने तथा परवरिश करने का उत्तरदायित्व तुम विनय भाई और प्रमिला पर सौंपने चली हो, तो इतना ध्यान रखना कि ये लोग आर्थिक सकट में न आने पायें। ये पूँजी-पति लोग नहीं हैं। व्यापार करना वे नहीं जानते और उद्योग-धंधों में में भी इनका जीवन नही बीता। ये लोग तो कार्यकर्त्ता है और जनता तथा जनता के बाल-बच्चों की सेवा करना ही इनके जीवन का मुख्य लक्ष्य रहा है।"

भारतसेवक श्रीलाल की बात सुनकर सत्ता रानी ने कहा, "आपके कहने का आशय मैं पूरी तरह समझती हूँ। और यह अनुभव भी कर रही हूँ कि यह काम निश्चित रूप से दूसरे ही प्रकार का है। 'जन-सेवक-समाज' के निर्माण का कार्य विकास योजनाओं की ठेकेदारी नहीं है। मेरे नाते-रिश्तेदारों और सम्बन्धियों ने जीवन भर वही कार्य किया है और वे उसी प्रकार की सेवा के योग्य है। 'जन-सेवा-समाज' का कार्य विनय भाई प्रस-

न्नतापूर्वक सँभाले । मै इनको इनके कार्य में भरसक सहयोग दूँगी ।"

सत्ता रानी की बात सुनकर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "आपके बच्चे को पालने का उत्तरदायित्व अपने सिर पर लेने वाला विनय आपको सादर प्रणाम करता है ।

और आशा करता है कि जब वह बच्चा वयस्क होकर वास्तव में जनता की सेवा पर जुटेगा, तो सत्ता रानी उस पर डोरे डालने का प्रयास नही करेंगी । केवल इसलिए कि उसके लालन-पालन में वह थोड़ा-बहुत सहयोग देंगी, वह बालक आपका नही कहलायगा, वह बालक विनय और उसकी धाय प्रमिला का होगा। इसमें कोई आपत्ति तो नही है ना तुम्हें ?"

विनय भाई की बात सुनकर भारतसेवक श्रीलाल हँसकर बोले, "तुम बड़े ही चतुर हो गये हो विनय ! पूरी दस्तावेज लिखा लेना चाहते हो अपनी भाभी से । यानी बच्चे पर से उसका भविष्य का अधिकार भी छीन लेना चाहते हो ।"

यह सुनकर सत्ता रानी मुस्कराकर बोली, "चलो आपकी यह भी बात स्वीकार की हमने । आप इस बच्चे को गोद लेना चाहते हैं तो प्रसन्नतापूर्वक ले सकते हैं, परन्तु जब इसका इतिहास लिखा जायगा तो उसमें इतिहास-लेखक को यह लिखना ही होगा कि यह बच्चा भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता रानी का है ।"

"इसमे मुझे कोई आपत्ति नही, परन्तु यह बच्चा राष्ट्र का बच्चा होगा और इसका जीवन राष्ट्र के उत्थान में योग देगा । और इसका पालन-पोषण भी राष्ट्र की सम्पत्ति से होगा ।

इसके अतिरिक्त जो आपने इसकी जन्मपत्री तैयार की है उसका अध्ययन मैने पूरी तरह कर लिया है । उसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं । जनता और जनता के बालबच्चों की सेवा के लिए इस नये समाज में बच्चे के पालन-पोषण, शिक्षण और मार्ग-प्रदर्शन का उत्तरदायित्व मैं अपने ऊपर लेकर चलूगा ।"

इतना आश्वासन देकर विनय भाई खड़े होते हुए बोले, "अब आज्ञा

चाहूँगा आपसे । मुझे बारह बजे तक घर पर पहुँच ही जाना चाहिए । वहाँ आचार्य प्रकाश और वेदान्ताचार्य रमण जी पधारने वाले हैं ।"

भारतसेवक और सत्ता रानी, दोनों विनय भाई को कोठी के द्वार पर छोड़ने के लिए आये और विदा होते समय भी भारतसेवक ने विनय भाई से कहा । "विनय, 'जन-सेवक-समाज' के कार्य को जितनी जल्दी हो सके हाथ में ले लो । यह आजकल मेरा सिरदर्द बना हुआ है । मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे संरक्षण में यह समाज फले-फूले ।"

"इसका साक्षी भविष्य होगा । मनुष्य का कर्त्तव्य कार्य करना है । फल की इच्छा छोड़कर कार्य करूँगा । वचन देता हूँ आपको ।" विनय ने कहा और इसके पश्चात् वह विदा हो गये ।

भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता रानी लौटकर कमरे में आये तो सत्ता रानी ने देखा कि भारतसेवक श्रीलाल के चेहरे पर आशा की रेखाएँ खिंची हुई थीं और उनका मन प्रसन्न दिखाई देता था ।

सत्ता ने कहा, "'जन-सेवक समाज' की चिंता से थोड़ी वहुत मुक्ति दिखाई देती है । अब कुछ व्यवस्थित ढंग से इसके विषय में सोचा-समझा जा सकेगा । इसके पालन-पोषण के लिए अर्थ-व्यवस्था की दिशा में भी विचार किया जा सकेगा ।

विनय भाई का इस दिशा में सहयोग हमें बहुत लाभकर सिद्ध होगा ।" भारतसेवक के मस्तिष्क को पूरी तरह पढ़कर सत्ता रानी ने कहा ।

भारतसेवक गम्भीरतापूर्वक बोले, "इसी दिशा में मैं भी विचार कर रहा हूँ । जनता की सेवा के हमने शासन-व्ववस्था में बहुत से भेद रखे हैं । उनमें से किसी एक में से विनय भाई के कार्य-संचालन के लिए व्यवस्था कर दो ।

उसके सम्मुख पैसे की कठिनाई नहीं आनी चाहिए ।"

"यह सब कुछ मैंने पूरी तरह समझ-बूझ लिया है ।" सत्ता रानी मुस्कराकर बोलीं और निश्चय भी कर लिया है कि किस मद से उनकी आवश्यकता की पूर्ति हो सकती है ।

विनय बेचारे की आवश्यकता ही कौन बड़ी है ।" सत्ता रानी ने कहा ।

"तो मैं अब इस चिंता को भी अपने मस्तिष्क से निकालता हूँ । तुम इसकी व्यवस्था कर देना । मेरे सामने आजकल देश और विदेश की राजनीति की कई बहुत महत्वपूर्ण समस्याएँ अटकी हुई हैं ।

देशव्यापी नये चुनाव की भी समस्या कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं है । यह बात तो निश्चित ही है कि मेरे दल को ही जनता और उसके बाल-बच्चों का सहयोग मिलेगा, परन्तु इधर देख रहा हूँ कि जनता के कुछ बच्चे बाग़ी होते जा रहे हैं । उनको ध्यान में रखकर नये चुनाव का आन्दोलन प्रारम्भ करना है ।" गम्भीरतापूर्वक भारतसेवक श्रीलाल ने कहा ।

सत्ता रानी मुस्कराकर बोलीं, "चुनाव आन्दोलन की बात आपने खूब कही भारतसेवक ! आपके दल की शत प्रतिशत विजय निश्चित है । घोष बाबू कहीं इनीगिनी दस-पाँच सीटों पर विजयी हो जायेंगे । आचार्य प्रकाश की भी यही दशा होगी और सम्भव है कि वेदान्ताचार्य रमण जी को भी बहुत हाथ-पैर मारने पर कहीं कुछ सीटें उपलब्ध हो सकें, परन्तु इस सबसे बनता क्या है ?

सत्ता रानी तो अब निश्चय कर चुकी है कि आपके अतिरिक्त अन्य किसी के साथ गठबन्धन नहीं करेगी । मैंने अच्छी तरह सोच-समझकर देख लिया है कि मुझे जितनी स्वतन्त्रता आप प्रदान कर सकते हैं उतनी अन्य कोई नहीं कर सकता ।

यह सत्य है कि राजा साहब के शासन-काल में मैंने खूब ऐश की, खूब आनन्द लूटा, परन्तु जो सुख और जो मान-मर्यादा आज मिली है वह उस समय नहीं थी ।

"क्यों, क्या परेशानी थी तुमको राजा साहब के समय में ?" भारत-सेवक श्रीलाल ने मुस्कराकर पूछा ।

"सबसे बड़ी परेशानी तो आपने और जनता जीजी के बाल-बच्चों ने ही पैदा की हुई थी । नित्यप्रति काले झंडे लेकर मेरी कोठी के सम्मुख जो हाय-हाय के नारे लगते थे, उनसे कान पक गये थे मेरे । मस्तिष्क

खराब हो जाता था मेरा । सच जानो भारतसेवक ! कि सुबह्-ही-सुबह हाय-हाय के जब मै नारे सुन लेती थी तो दिन भर वे ही मेरे कानों में गूँजते रहते थे ।"

इसी समय भारतसेवक के पास कुछ मिलनेवालों की टोली आ पहुँची और सत्ता रानी ने वहाँ से विदा ली ।

× × ×

विनय भाई भारतसेवक श्रीलाल की कोठी से चलकर सीधे अपने घर आये और स्नानादि से निवृत्त होकर प्रमिला तथा रमेश के साथ बैठकर भोजन किया ।

भोजन के उपरान्त तीनों व्यक्ति 'भारत साहित्य सहयोग' के कार्यालय में आ गये । तख्त पर बिछे कालीन पर बैठकर प्रमिला ने पूछा, "सत्ता रानी से क्या-क्या बातें हुईं ?"

विनय भाई बोले, "बातें बहुत हुईं, परन्तु जो तुमसे अधिक सम्बन्ध रखती है वह यह है कि उन्होंने एक आस्मानी रंग की सुन्दर साड़ी तुम्हारे लिए खरीदकर रखी हुई है ।"

प्रमिला मुस्कराकर बोली, "तो लेते क्यों नहीं आये आप ?"

विनय भाई ने उत्तर दिया, "तुम्हारी साड़ी तुम्हीं को दी जा सकती है । सत्ता रानी के यहाँ ऐसा सम्भव नहीं कि साड़ी तुम्हारी और मिल जाती मुझे ।"

विनय भाई की बात सुनकर रमेश हँसता हुआ बोला, "सत्ता रानी ने सोचा होगा कि कही विनय भाई साड़ी घर तक ले जाने के बजाय किसी दर्जी की दूकान पर न पहुँच जायँ, और वह साड़ी साड़ी न रहकर विनय भाई के कुर्तों में बदल जाय । आखिर आपको भी तो 'जन-सेवक-समाज' के कार्यालय में बैठकर सुशोभित होना है ।"

रमेश की बात सुनकर विनय भाई और प्रमिला दोनों खिल-खिलाकर हँस पड़े । विनय भाई ने कहा, "भय की बात तो सच्ची ही निकली । मैं तो समझ रहा था कि शायद यों ही किसी कारणवश सत्ता रानी ने साड़ी

देने में आनाकानी की है।"

ये बातें चल ही रही थीं कि मकान के सामने आचार्य प्रकाश की जीप गाड़ी फूँ-फूँ करती हुई आकर रुकी और उन्होंने उससे नीचे उतरकर घर के घेरे में प्रवेश किया। विनय भाई, रमेश और प्रमिला ने घर के वराँडे में आकर आपका स्वागत किया।

आचार्य प्रकाश छूटते ही बोले, "आखिर फँस ही गये भारतसेवक के जाल में विनय भाई! जब आपकी इच्छा ही इस 'जन-सेवक-समाज' को अन्दर से देखने की है, तो आपको रोकनेवाला भला कौन है? परन्तु मैं अंतिम चेतावनी देने से पीछे नहीं रहूँगा। इसीलिए इस समय, समय न रहने पर भी, मै तुमसे भेंट करने आया हूँ।"

विनय भाई आचार्य प्रकाश को आदरपूर्वक कालीन पर बिठाते हुए बोले, "तो क्या दिल्ली से प्रस्थान हो रहा है आचार्य प्रकाश का?"

"संसद का अधिवेशन समाप्त हो गया। अब सोचता हूँ कि छुट्टी का समय तपस्वी सुनील के कार्यक्रम पर लगा दूँ।" आचार्य प्रकाश बोले।

"विचार तो बहुत सुन्दर है आपका। तपस्वी सुनील का ग्रामोद्योग आन्दोलन देश की उन्नति में एक महत्वपूर्ण योगदान है। आप जैसे निपुण कार्यकर्त्ता का सहयोग उन्हें मिलना ही चाहिए।" विनय भाई ने गम्भीरता पूर्वक कहा।

"और आप जैसे कार्यकर्त्ता का सहयोग उन्हें नहीं मिलना चाहिए?" प्रश्न करते हुए आचार्य प्रकाश ने पूछा।

इस दिशा में आचार्य प्रकाश का यह पहला ही प्रश्न था। उसे सुनकर विनय भाई बोले, "अब देर हो चुकी आपके प्रस्ताव को आचार्य प्रकाश। मेरी जैसी साधारण योग्यता का व्यक्ति यदि जीवन में एक कार्य भी सफलतापूर्वक कर पाये तो मै समझता हूँ कि जीवन सफल हो गया।

और जीवन का रास्ता भी बार-बार नहीं बनाया जाता। तपस्वी सुनील की कार्य-प्रणाली से मैं बहुत दूर तक सहमत हूँ परन्तु आधुनिक विज्ञान के युग में एकदम प्राचीन भारत की कल्पना करना मेरे लिए

कठिन है । समझ में नहीं आता कि मैं वर्तमान को स्वप्न और भूत को सत्य मानकर कैसे आगे बढ़ूँ ।"

"भारत की शक्ति उसका जन-बल है, क्या आप इस मूल सत्य से भी मतभेद रखते हैं ?" आचार्य प्रकाश ने प्रश्न किया ।

"इससे मतभेद रखना सूर्य को चन्द्रमा और चन्द्रमा को सूर्य कहने के बराबर है आचार्य प्रकाश ! परन्तु जिन उद्योगों को आधार मानकर तपस्वी सुनील आज के समाज का ढाँचा गढ़ना चाहते हैं वह कल के औद्योगिक विकास में हास्यास्पद प्रतीत होने लगेगा ।

भारतसेवक की पंचवर्षीय योजना कोई साधारण सत्य नहीं है । योजना की पूर्ति की प्रगति में देर हो रही है और सत्ता रानी की चाल तनिक मन्दी है, ऐसा आप कह सकते हैं, परन्तु योजना के फलस्वरूप देश के औद्योगिक वातावरण में जो क्रान्ति होगी, उसका अनुमान लगाये बिना भविष्य के समाज का स्वप्न ग़लत कर लेना भी मैं कोई बुद्धिमत्ता की बात नहीं समझता ।"

विनय भाई की बात सुनकर आचार्य प्रकाश मुस्कराकर बोले, "तपस्वी सुनील के कार्यकर्त्ता और आपकी 'जन-सेवक-समाज' के कार्यकर्त्ताओं में क्या अन्तर है, आप जानते हैं ?"

"सब कुछ जानता हूँ आचार्य प्रकाश !" विनय भाई ने कहा ।

"और जान बूझकर भी इतनी गहरी खाई में कूदते संकोच नहीं होता आपको विनय भाई ?" आचार्य प्रकाश ने कहा ।

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "संकोच इस लिए नहीं होता कि मन में विश्वास है कि मैं इस गहरी खाई को पाट दूँगा और इसके ऊपर से अपने कार्यकर्त्ताओं को कुशलतापूर्वक आगे बढ़ाता हुआ जनता और उसके बाल-बच्चों के बीच ले जाऊँगा ।

जिन देहातों में तपस्वी सुनील भूमि का दान माँगते और ग्रामोद्योगों की स्थापना करते फिर रहे हैं उन्हीं के बीच में मैं अपने जन-सहयोग केन्द्र स्थापित करूँगा । जनता को यह भी बतलाऊँगा कि तपस्वी सुनील उनके

लिए क्या कुछ कर रहे हैं और भारतसेवक श्रीलाल की पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत उनके देहातों का निकट भविष्य में कैसा कायापलट हो जाना है।"

विनय भाई की बात को आगे बढ़ाती हुई प्रमिला बोली, "और उन्हें यह भी समझाना है कि वह कायापलट करनेवाला कोई जादूगर नहीं आयेगा सातवें आस्मान से उतरकर। यह कायापलट उन्हें स्वयं करना होगा।

इस कायापलट के लिए उन्हें शिक्षित होना चाहिए, अपने अधिकारों का उन्हें ज्ञान होना चाहिए, अपने और अपनी सत्ता के उत्तरदायित्व को समझना चाहिए, देश और समाज के प्रति अपने कर्त्तव्य को जानना चाहिए।

और इस सबके लिए शिक्षा की आवश्यकता है, सत् साहित्य की आवश्यकता है।"

विनय भाई बोले, "तपस्वी सुनील के आश्रमों में, सत्ता रानी के स्कूलों में, पंचायतों में, गाँवों में और शहरों के सब मुहल्लों में संस्कृति साहित्य-केन्द्र खोलने का प्रयास करूँगा और उनके द्वारा देश की जनता में अपने उत्तरदायित्व के लिए जागरूकता पैदा करूँगा।

राष्ट्र के बच्चे-बच्चे को राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य पालन की प्रेरणा दूँगा और मस्ती के साथ जीवन में आनन्द और शांति के साथ, सन्तोष और सहयोग के साथ आगे बढ़ने और दूसरों को बढ़ाने का अवसर प्रदान करूँगा।"

विनय भाई और प्रमिला की साहस और उत्साहपूर्ण बातें सुनकर एक क्षण के लिए तो आचार्य प्रकाश प्रभावित होकर स्तम्भित से हो गये, परन्तु तुरन्त ही ज़ोर से खिलखिलाकर हँस पड़े। और मुस्कराकर बोले, "क्या स्वप्न की बातें सोच रहे हो विनय भाई? 'जन-सेवक-समाज' की भूमि पर खड़े होकर लाल किले का निर्माण करने का स्वप्न देख रहे हो? 'जन-सेवक-समाज' जानते हो क्या है? सत्ता रानी की कृपा की एक रेखा है। उर्दू वाले जिसे 'नज़रे इनायत' कहते हैं, और वह भी किसी

नायिका की, वही वस्तु है यह। इस भूमि पर इतने सुदृढ़ दुर्ग नहीं बनाये जा सकते। इस पर वह लहलहाती खेती भी नहीं उगाई जा सकती जिसके पक जाने पर काट लेने में कोई संशय न हो। कौन बोये, कौन काटे, इसका क्या पता है विनय भाई!"

आचार्य प्रकाश की बात सुनकर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "विनय ने आज तक भूमि को जोतना और बोना ही सीखा है आचार्य प्रकाश! फ़सल काटने की इच्छा विनय ने कभी नहीं की। और वह इच्छा आज भी नहीं है विनय के मन में। विनय कोई पूँजी एकत्रित करके बाल-बच्चों के लिए छोड़ जाने का इच्छुक नहीं है। वह जानता है कि चाल यों ही चलती आई है और यों ही चलती जायगी।"

जब आचार्य प्रकाश ने देखा कि विनय पर कोई रंग नहीं चढ़ता तो मुस्कराकर बोले, "आप बाज़ आनेवाले व्यक्ति नहीं हैं, यह मैं भली प्रकार जानता हूँ और जान बूझकर भी इतना सब कुछ इसलिए कह गया कि मन नहीं माना। आप जैसे सहृदय व्यक्ति को 'जन-सेवक-समाज' जैसी असहृदय संस्था में प्रवेश करते देखकर हृदय पर चोट लग रही है।"

"यह मैं जानता हूँ।" बहुत ही गम्भीरतापूर्वक विनय भाई ने कहा। "मुझे 'जन-सेवक-समाज' का कोई प्रलोभन नहीं है। हाँ भारतसेवक श्रीलाल को मैं अवश्य जानता और जनता के बाल-बच्चों का आज भी सबसे बड़ा हितैषी और प्रतिनिधि मानता हूँ। और उसी नाते जब मैं जन-जागृति और जन-सहयोग की बात सोचता हूँ तो उससे बड़ा पथ-प्रदर्शक अन्य कोई व्यक्ति मेरी दृष्टि में नहीं आता।"

"तपस्वी सुनील भी नहीं?" गम्भीरतापूर्वक आचार्य प्रकाश ने पूछा।

"हाँ, जहाँ तक मेरे उद्देश्य की पूर्ति का प्रश्न है, वहाँ तक तपस्वी सुनील भी नहीं। जहाँ केवल जनता तक अपनी बात को ले जाने का प्रश्न है, वहाँ मैं समझता हूँ कि तपस्वी सुनील और भारतसेवक श्रीलाल के नामों का आश्रय लेकर आगे बढ़ने का प्रयास कदापि नहीं करूँगा। उसके लिए सीधा जनता और उनके बाल-बच्चों तक जाने का विचार

है मेरा।

परन्तु शिक्षा का कार्य भोजन, कपड़े और घर से या जीवन की उन आवश्यकताओं के प्रकार का नहीं है जिनके बिला जीवन दूभर हो उठे। शिक्षा का जनता और उसके बाल-बच्चो के जीवन में प्रवेश कराने के लिए सत्ता रानी का सहयोग लेना ही होगा। और यह सहयोग भारतसेवक श्रीलाल के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है, तपस्वी सुनील के द्वारा नहीं।

तपस्वी सुनील को तो कभी-कभी स्वयं भारतसेवक श्रीलाल के सहयोग के बिला आगे बढ़ने में कठिनाई होने लगती है और उनके ग्रामोद्योग आश्रमों का बिना सत्ता रानी के सहयोग के स्वावलम्बी रूप से चलना नितान्त असम्भव है।"

विनय भाई की यह बात सुनकर आचार्य प्रकाश मुस्कराकर बोले, "बात आपकी किसी हद तक सही है। परन्तु मै समझता हूँ कि आपके 'जन-सेवक-समाज' मे कार्य करने से लोगों को भ्रम होगा। और उनकी आपके अन्दर से स्वतन्त्र आस्था जाती रहेगी। वे आपको भारतसेवक और सत्ता रानी के विज्ञापन का एजेण्ट समझने लगेंगे।"

यह सुनकर विनय भाई ज़ोर से हँस पड़े, "अर्थात् लोग-बाग समझेंगे कि मै सत्ता रानी से साँठ-गाँठ करके मोटी रकम 'जन-सेवक-समाज' के नाम पर वसूल करने लगा हूँ। मैंने अपना लेखन-कार्य बन्द करके भारत-सेवक और सत्ता रानी का विज्ञापन करना प्रारम्भ कर दिया है।

बिल्कुल यही बात घोष बाबू ने भी कही थी और इसमें कोई संदेह नही कि वेदान्ताचार्य रमण जी भी यही कहेंगे। और इससे भी आगे की बात कह दूँ कि चाहे आप महानुभावो ने कहने के लिए अपने भ्रम को दूसरों का नाम लेकर मेरे सम्मुख प्रस्तुत किया है, परन्तु सत्य यह है कि यह धारणा आपके अपने ही मन की है और मै आपकी इस धारणा को दूर करने की कोई चिन्ता नहीं करता। मेरी शक्ल और मेरे शरीर का सम्बन्ध बहुत कम लोगों से है। केवल जो मै लिख रहा हूँ उसका व्यापक सम्बन्ध है और यह मेरे भविष्य के लिखने पर आधारित रहेगा।"

"बड़े कठोर होते जा रहे हैं आप !" प्रमिला ने विनय भाई की ओर मुस्कराते हुए कहा। "आचार्य प्रकाश के आपके विषय में विचार बदल जायेंगे, इसकी आपको चिन्ता नहीं।"

"सत्ता रानी से सम्बन्ध स्थापित हो जाने पर कठोरता आ ही जाती है।" और फिर आचार्य प्रकाश की ओर देखकर बोले, "स्मरण है वह सन् १९३० वाला नमक-कानून तोड़ने का आन्दोलन ! सत्ता रानी के सेवकों ने कैसी लाठी बरसाई थी हम दोनों की खोपड़ियों पर।"

"तो क्या आपका विचार अब औरों की खोपड़ियों पर लाठी बरसाने का है?" आचार्य प्रकाश ने पूछा।

विनय भाई हँसकर बोले, "क्या आपको मुझसे यही आशा है ?"

आचार्य प्रकाश ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया और खड़े होकर कहा, "तब विदा लूँगा आपसे। मुझे संध्या तक तपस्वी सुनील के आश्रम में पहुँच जाना है।

मेरा हर प्रकार का सहयोग आपको जन-जागृति और साहित्य सहयोग के कार्य में मिलेगा।"

"मुझे आपसे यही आशा है।" विनय भाई ने प्रसन्नतापूर्वक कहा।

ऐसा साहित्य निर्मूल्य है जो जनता और जनता के बाल-बच्चों की बात नहीं करता। ऐसा साहित्य निर्मूल्य है जो जनता और जनता के बाल-बच्चों तक नहीं पहुँचता।

ऐसा विनय भाई का विचार है। और इन्हीं दो विचारों से प्रेरित होकर विनय भाई की अपनी भावना और अपना चिन्तन कार्य करता है।

ऐसे साहित्य के निर्माण के लिए वह प्रयत्नशील है और साहित्य को जनता और जनता के बाल-बच्चों तक पहुँचाने की उनके मन में उत्कट इच्छा है, मस्तिष्क और हृदय की प्रेरणा है। इसी के लिए वह बड़े-से-बड़ा माध्यम स्थापित करने का विचार कर रहे हैं।

'जन-सेवक-समाज' में सहयोग देने के पश्चात् 'भारत साहित्य सहयोग' कोई पृथक् संस्था बनी रहे, इसकी आवश्यकता नही। वह प्रमिला से बोले, "प्रमिला ! आज एक महत्वपूर्ण बात करनी है तुमसे और रमेश तुम भी तनिक पास को आ जाओ, क्योंकि यह बात तुमसे भी उतना ही सम्बन्ध रखती है जितना प्रमिला और मुझसे।"

विनय भाई की बात सुनकर प्रमिला और रमेश दोनों उनके निकट आकर बैठ गये।

संध्या का सुहावना समय था। सूर्य देवता अस्ताचल के निकट पहुँच चुके थे। दिवस का अवसान समीप था। रात्रि और फिर नये प्रभात की वेला, नया ऊषाकाल, नया जागरण, नयी प्रेरणा, नया जीवन, नया कार्य-क्रम, परन्तु यह सब बीते दिन की शृंखला और परम्परा की ही नई कड़ी होगी, नया रूप होगा। दर्शन कोई नया नहीं, वही जन-जागृति का मूलाधार साहित्य जिसके बिना जन-जागृति भी भ्रामक होगी, चाहे वह धार्मिक अगुओं द्वारा की गई हो या राजनीति के आचार्यों द्वारा उसका मार्ग, प्रदर्शन हुआ हो, वह जनता के जीवन की शांति नहीं बन सकती।

वह जीवन के सही उत्थान की प्रेरणा नहीं बन सकती ।

विनय भाई गम्भीरतापूर्वक बोले, "जनता जीजी की आज्ञा पालन करने के लिए, भारतसेवक श्रीलाल की शुभ इच्छा पूरी करने के लिए, सत्ता रानी से प्राप्त साधनों का सही उपयोग करने के लिए, जनता के बाल-चच्चों तक पहुँचकर उनसे सीधा सम्पर्क स्थापित करने के लिए, अपने को टूटा-फूटा जो कुछ भी आता है उसे उनके पास तक पहुँचाने के लिए मैंने 'जन-सेवक-समाज' का माध्यम चुन लिया। इसमें अब कोई परिवर्तन होने का कारण नहीं है।"

"होना भी नहीं चाहिए।" उसी दृढ़ता के साथ प्रमिला ने कहा।

"मैं आप दोनों के मत से पूरी तरह सहमत हूँ।" रमेश बोला।

"तो फिर ठीक है 'भारत साहित्य सहयोग' का जो बोर्ड घर के बाहर लगा हुआ है उसे उतार दो। वह कोई पृथक् संस्था नहीं रह सकती" विनय भाई ने कहा।

"प्रमिला और रमेश यह सुनकर अवाक् रह गये। मानो उनके पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई। उनकी आँखों में पानी भर आया और उनके दिलों की धड़कन बढ़ गई।

प्रमिला ने सहमकर पूछा, "आखिर ऐसा क्यों? 'जन-सेवक-समाज' भी रहे और 'भारत साहित्य सहयोग' भी फले फूले। एक के रहने में दूसरे को भय कहाँ है?"

"भय की बात नहीं है प्रमिला! विचारों और भावनाओं की दो दिशा होने की बात है। और मैं ऐसा मानता हूँ कि एकरूपता नष्ट होने पर शक्ति का ह्रास होता है, विकास नहीं होता।" विनय भाई गम्भीरता-पूर्वक बोले।

रमेश ने एक शब्द भी होठों से नहीं निकाला।

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "भारत साहित्य सहयोग" का बोर्ड घर के द्वार से नीचे उतरवाने में प्रमिला! मुझे उतना ही कष्ट हो रहा है जितना अपने पहले बच्चे को सुफ़ेद खद्दर में लपेटकर छोटे से चटाई के

टुकड़े पर रखकर यमुना-घाट की ओर ले जाते हुए किसी दिन हुआ था। परन्तु 'जन-सेवक-समाज' की नींव भरने के लिए ऐसी न जाने कितनी बरसाती संस्थाओं को उनमें दफ़नाना होगा और तब उन सब संस्थाओं की हड्डियों से जो ढाँचा तैयार होगा, वह निश्चय ही जनता की पिछड़ी हुई दुर्बल सन्तान को अपने मज़बूत कंठों पर बिठलाकर राष्ट्र और समाज की ऊँची-नीची ज़मीन को पार करता हुआ आगे बढ सकेगा। ऊँचे टीलों को गिराकर गहरी खंदकें पाट सकेगा।"

विनय भाई की बात सुनकर इस बार प्रमिला और रमेश दोनों मौन रहे। कोई बात नहीं थी उनके पास कहने को। विनय भाई के निर्णय से वे दोनों बाहर कुछ सोचना नहीं चाहते थे, करने का तो प्रश्न ही नहीं था कुछ।

विनय भाई उसी मुस्कान-पूर्ण मुद्रा में बोले, "भारत साहित्य सहयोग का कार्य-भार 'जन-सेवक-समाज' ने अपने कन्धों पर ले लिया। अब तुम्हारा कार्य और भी हल्का हो गया रमेश! सरस्वती के इस मन्दिर को तुम अब केवल कला-केन्द्र की संज्ञा दे दो और इस बोर्ड पर 'भारत साहित्य सहयोग' के स्थान पर 'साहित्य कला-केन्द्र' लिख दो।"

प्रमिला और रमेश दोनों विनय भाई के विचार से सहमत हो गये और रमेश तुरन्त अपनी रंग की प्यालियाँ और तूलिका लेकर कार्य पर जुट गया।

दूसरे दिन प्रातःकाल विनय भाई के घर पर 'साहित्य कला-केन्द्र' का बोर्ड लगा था और अन्दर से वीणा की मधुर झंकार आ रही थी। मधुर संगीत का स्वर घर के सम्पूर्ण वातावरण में आच्छादित था। स्वर था :

तेज दो, बल दो माँ!
अंधकार को मिटायें हम।......

इसी समय मकान के द्वार पर घाँय-घाँय करके एक मोटर रुकी।

विनय भाई बोले "वेदान्ताचार्य रमण जी का अपना आदेश देने का नम्बर सबसे बाद में आया। परन्तु प्रयास करने में चूकने वाले वह भी नही है।"

और सचमुच ही तीनों ने घर के वराँडे में आकर देखा तो रमण जी कार से उतरकर उधर ही लपके चले आ रहे थे।

परन्तु आज वेदान्ताचार्य रमण जी अकेले नही थे। उनके साथ एक विशालकाय महोदय, जो उनकी ही भाँति बन्द गले का रेशमी कोट पहने थे, सर पर मारवाड़ी रेशमी पगड़ी थी, आँखों पर सुनहरी फ्रेम का चश्मा था, गले में भागलपुरी दुपट्टा पड़ा था, धोती सुफेद और बहुत ही महीन थी मानो किसी मिल-मालिक ने विशेष रूप से तैयार की थी, पैरों मे काला पेटेण्ट लैदर का जूता था और हाथ में हाथी-दाँत की मूँठ वाली एक काली आबनूसी लकड़ी की शानदार बेंत थी। रंग स्याह था उनका और नाक मोटी थी। मुँह पर चेचक के दाग़-धब्बे और कुछ गहरे-गहरे गड्ढे भी थे। ऊपर का होंठ कुछ कटा हुआ होने के कारण दो दाँत भी बाहर को चमक रहे थे।

इन महाशय की चाल भी निराली ही थी। एक पैर को घुमाकर रखते थे और कमर में थोड़ा-सा कूब होने के कारण पूरा बदन कमान की तरह मालूम देता था, परन्तु फिर भी बहुत ही हँसमुख प्राणी थे। रमण जी एक बार सकेत करते थे तो वह दो बार मुस्कराते थे।

विनय भाई, प्रमिला और रमेश ने वराँडे से नीचे उतरकर दोनों आगन्तुकों का स्वागत किया और उन दोनों ने भी नमस्कार किया।

सभी लोग बैठक में जाकर तख्त पर बिछे कालीन पर मोटे तकियों से कमर लगाकर बैठ गये। वेदान्ताचार्य रमण जी ने विनय भाई का नवागन्तुक से परिचय कराते हुए बतलाया कि आपके बगाल में चार जूट मिल और दो कपड़े के बड़े कारखाने हैं। ताँबे के आप बहुत बडे व्यापारी है और सरकारी टकसालो को ताँबा देने का ठेका आपका ही है।

"आपसे भेंट करके बड़ी प्रसन्नता हुई ।" विनय भाई ने कहा, "मैं देहाती आदमियों की ज़िन्दगियों के हालचाल लिखनेवाला एक साधारण लेखक हूँ सेठ जी ! इससे पूर्व कि रमण जी मेरा किसी तूल-तबूल के साथ साहित्यकार, उपन्यासकार, आलोचक इत्यादि कहकर परिचय दें, मैंने यही उचित समझता हूँ कि अपनी असलियत आप ही खोल दूँ ।"

विनय भाई की बात सुनकर सेठ जी बोले, "शुन्दर-शुन्दर बड़ौ शुन्दर । देहाती लोगाँ की बात लीडराँ की बात शै रमण जी ! थारी खातर म्हारा पूरा शहयोग शैं । रुपिया पेशा की थारी खातिर कूण कमी शै ।"

रमण जी बोले, "सेठ जी करोड़पति है और प्रतिवर्ष लाखों रुपया दान करते हैं । मैंने आपकी 'भारत साहित्य सहयोग' की योजना आपके सम्मुख रखी थी और आपने सहर्ष उसके लिए अपना सहयोग देना स्वीकार कर लिया है । मेरे विचार से आप उस साहित्य-सेवा के कार्य को प्रारम्भ कर दें और व्यर्थ भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता रानी के पचड़े में न पड़ें । उनके झमेले में आपकी योजना जाने कहाँ लटकी रह जायगी, यह आप अभी नहीं जानते ।" स्वाभाविक गम्भीरतापूर्वक यह बात रमण जी ने कही ।

रमण जी की बात सुनकर विनय भाई बोले, "बहुत देर कर दी आपने रमण जी! 'भारत साहित्य सहयोग' नाम की संस्था को तो मैं यमुना माता की लहरों के हवाले कर चुका । अब तो केवल उसकी भावना ही अवशेष है और वह भी 'जन-सेवक-समाज' के एक विभाग का एक कार्य-क्रम बन चुकी ।"

"तो क्या आपने 'जन-सेवक-समाज' की सेवा स्वीकर कर ली ? अपने जीवन की स्वतन्त्रता को सरकारी संरक्षण के हाथों बेच दिया ? आपका स्वतन्त्र अस्तित्व समाप्त हो गया ?" रमण जी ने एक साँस में तीन प्रश्न किये ।

"यदि मेरे ऊपर के वाक्य का आपकी दृष्टि में यही अर्थ है, तो मुझे इसे भी मान लेने में कोई आपत्ति नहीं है । परन्तु लेखक होने के नाते मैं

अपना स्वतन्त्र अस्तित्व कभी किसी चीज़ में विलीन नहीं समझता। वह स्वच्छन्द है और स्वच्छन्द ही रहेगा। कोई उसके विषय में क्या समझेगा, इसका उत्तरदयित्व उस पर है, मुझ पर नहीं।" गम्भीरतापूर्वक विनय भाई ने कहा।

वेदान्ताचार्य रमण जी की दशा इस समय ऐसी थी जैसे किसी व्यक्ति को बिजली छू जाने का धक्का लग जाने के पश्चात् होती है।

वह बोले, "आपने यह कार्य सोच-विचारकर नहीं किया विनय भाई! जिस 'जन-सेवक-समाज' को आधार बनाकर आप सत् साहित्य को जनता तक ले जाना चाहते हैं पहले यह तो सोच लिया होता कि वह समाज स्वयं भी जनता और उसके बाल-बच्चों के निकट पहुँचा हुआ है अथवा नहीं।"

"या बात थानै बड़ी मार्का की कई शै रमण जी!" सेठ जी बोले।

विनय भाई ने मुस्कराकर कहा, "मैं सब बातें भली प्रकार सोच चुका हूँ। 'जन-सेवक-समाज' की क्या दशा है, उसकी पहुँच कहाँ-कहाँ तक है, उसके कार्यकर्त्ताओं का क्या रूप है, यह सब मुझसे छिपा हुआ नहीं है। मैं कोई भी कार्य जीवन में भ्रमवश नहीं करता। जो कुछ करता हूँ उस पर पहले काफ़ी विचार कर लेता हूँ और फिर उसे निभाने का पूरा प्रयास करता हूँ।"

विनय भाई की बात सुनकर वेदान्ताचार्य रमण जी को काफ़ी निराशा हुई, परन्तु फिर भी उन्होंने कहा, "आपके निश्चय का मैं विरोध क्यों करूँ? और मुझे अधिकार भी क्या है उसका विरोध करने का? पारस्परिक सम्पर्क और एक साहित्यकार के नाते आपकी दिशा ग़लत देखकर सुझाव दे देना मैंने अपना कर्तव्य समझता हूँ।"

इस समय वेदान्ताचार्य का चेहरा बहुर गम्भीर था।

प्रमिला ने मुस्कराकर पूछा, "क्या आपकी दृष्टि में जनता तक सत् साहित्य को पहुँचाना और उसे अपने उत्तरदायित्व तथा अधिकारों के प्रति जागरूक करना ग़लत दिशा है?"

प्रमिला की बात सुनकर रमण जी के चेहरे पर भी मुस्कराहट छा गई और वह सरल वाणी में बोले, "विनय भाई, आपकी अपेक्षा प्रमिला देवी साहित्य के प्रसार में अधिक सफल होंगी।"

"सफल हूँगी, यह आपका आशीर्वाद है रमण जी ! आप आचार्य हैं साहित्य के और राजनीतिज्ञ होने के नाते भविष्यद्रष्टा भी हैं। वैसे मैं ऐसा मानती हूँ कि आपको भविष्य की अपेक्षा भूत का अधिक ज्ञान है।" प्रमिला मुस्कराकर बोली।

"थारा बात शई शै देवी जी।" हाथ जोड़कर सेठ जी ने, यह समझते हुए कि प्रमिला रमण जी की प्रशंसा कर रही है, कहा।

रमण जी को भी हँसी आ गई और वह विनय भाई की ओर मुँह करके बोले, "साहित्यकार की पत्नी की भाषा को सेठ जी ने देखिये कितना सही समझा।"

"थारा बात शई शै रमण जी।" सेठ जी ने कहा।

विनय भाई ने इन बातों को एक ओर छोड़कर रमण जी से पूछा, "कार्य मैं करने जा रहा हूँ, इसमें कोई सन्देह नहीं। मंच मैंने जो निश्चित कर लिया अब उसी से यह कार्य होगा। और निश्चित रूप से होगा, इसमें कोई सन्देह की बात नहीं।

परन्तु आपने जो सहयोग का वचन दिया था, उसकी क्या स्थिति है अब ?"

वेदान्ताचार्य रमण जी विनय भाई की बात सुनकर सिटपिटाये। दाँये देखा, बाँये देखा, आँखें मिचमिचाईं, सर से पगड़ी उतारी, गले का साफ़ा खोला, मलकर हलक़ साफ़ किया, और फिर अंगड़ाई तोड़ते हुए बोले, "बचन-बद्ध होने के कारण नाँ तो कहना कठिन है विनय भाई, परन्तु यही सोच रहा हूँ कि अपनी इस चाल में भी भारतसेवक श्रीलाल ही सफल हुआ। आखिर अपने जन-सहयोग के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए उसने आपके द्वारा मेरा सहयोग ले ही लिया।"

"आपका ही नहीं, आचार्य प्रकाश और घोष बाबू का भी।" मुस्करा-

कर प्रमिला बोली। "अब कहिये आप राजनीतिज्ञ हैं या भारतसेवक श्रीलाल जी ?"

प्रमिला की बात सुनकर वेदान्ताचार्य रमण जी का मुँह तमतमा उठा। वह रक्तवर्ण हो गया और उन्होंने गम्भीरतापूर्वक कहा, "तो क्या आप मुझे मूर्ख बनाना चाहते हैं ? मेरा ही उपयोग आप मेरे विरुद्ध करना चाहते है ?"

"यह आपसे किसने कहा ?" प्रमिला मुस्कराकर बोली।

"तुमने ही तो कहा।" रमण जी बोले।

यह सुनकर प्रमिला हँस पड़ी और हँसते-हँसते कहा, "मेरी बात का भी आपने खूब बुरा माना रमण जी ! मैं तो समझती हूँ कि आपसे हर प्रकार की बातें करने का मुझे अधिकार है। सत्ता रानी को मैं भाभी कहती हूँ और इस नाते आप मेरे भैया होते हैं। भैया को बहनों की बातों पर इस प्रकार रूठते मैंने कहीं नहीं पाया।"

"थारा पूरा-पूरा हक शै।" सेठ जी बोले।

और वेदान्ताचार्य रमण जी का क्रोध भी न जाने कब काफ़ूर हो गया। वह प्रमिला को अपनी छोटी बहन के समान स्नेहपूर्ण स्वर में बोले, "तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी प्रमिला ! और मेरे योग्य भी जो कार्य होगा मैं पीछे नहीं रहूँगा।"

"मुझे आपसे यही आशा थी।" विनय भाई ने कहा।

इसके पश्चात् वेदान्ताचार्य रमण जी ने विदा ली।

प्रमिला, रमेश और विनय भाई कार तक उन्हें छोड़ने आये।

कार में बैठकर रमण जी की दृष्टि घर के द्वार पर गई तो क्या देखा कि वहाँ 'भारत साहित्य सहयोग' के स्थान पर 'साहित्य कला-केन्द्र' का बोर्ड लगा था। उसे देखकर वह रमेश से बोले, "चित्रकार रमेश ! तुम साहित्य को रूप देने वाले कलाकार हो।" और फिर तीनों की ओर मुँह करके कहा, "आप तीनों ही साहित्य, कला, केन्द्र की साकार प्रतिमाएँ हैं। साहित्य, चित्र और संगीत का समन्वय खड़ा है मेरी आँखों के सम्मुख,

ईश्वर करे आपका सहयोग आपकी सफलता बने ।"

"वेदान्ताचार्य के शब्द निरर्थक नहीं हो सकते।" विनय भाई मुस्करा-कर बोले ।

और फिर कार चल पड़ी ।

विनय भाई की लिखने की रफ़्तार काफ़ी तीव्र गति के साथ चल रही है। भारतसेवक का साधारण परिचय देते-देते एक अच्छी खासी पोथी तैयार होती जा रही है। और उसे नित्य प्रति प्रमिला और रमेश को सुनाने में उन्हें विशेष आनन्द आ रहा है।

वह जो कुछ भी लिखते हैं उसे अपने मिलनेवालों को सुनाने की उन्हें धुन रहती है। कुछ मिलनेवाले चाहें सुनना चाहें या न सुनना चाहें परन्तु विनय भाई के पास आकर उन्हें सुनना ही पड़ता है और अधिकांश तो आते ही उनकी नई रचना को प्रकाशित होने से पूर्व सुनने के लिए हैं।

परन्तु रमेश और प्रमिला उन सुनने वालों में से नहीं है। ये दोनों सुनते हैं तो उसमें उतना ही रस लेते हैं जितना विनय भाई को आता है। ये दोनों अपने को विनय भाई की रचना से पृथक कुछ नहीं समझते। ये समझते हैं कि विनय भाई जो कुछ भी लिख रहे हैं, उनका अपना जीवन उनकी रचना के ताने-बाने के दो मज़बूत धागे हैं।

रमेश को 'भारतसेवक' की जानकारी कराने के लिए विनय भाई को एक पुस्तक लिखनी पड़ी। उन्हें भारतसेवक का चित्र बनवाना था। जब थोड़ा परिचय लिखना प्रारम्भ किया तो सोचा कि चित्र भी वन जायगा और एक पत्रिका भी तैयार हो जायगी, जिसके मुखपृष्ठ पर भारतसेवक का चित्र होगा।

परन्तु बात वहीं पर समाप्त नहीं हुई। भारत सेवक श्रीलाल के साथ-साथ घोष बाबू, आचार्य प्रकाश, तपस्वी सुनील, सेवा माता और जनता बहन भी मंच पर आ पधारे। और उनसे मंच खाली करके चले जाने के लिए भी कहना उचित नहीं था क्योंकि उनके बिना नाटक की भूमिका अभिनीत करने के लिए एक पग भी भारतसेवक आगे नहीं बढ़ सकता।

इस पर विनय भाई ने सोचा कि चलो इनको भी क्यों छोड़ा जाय।

भारत की सेवा करने में तो ये लोग भारतसेवक श्रीलाल से पीछे नहीं रहे । अपनी शक्ति, अपने साधन, अपनी बुद्धि, अपनी योग्यता और कर्मठता के आधार पर सभी ने भारत माता की सेवा की है। यातनाएँ सही हैं, जेलें काटी है, गोलियाँ खाई हैं और जिन्दगी के खेल खेले हैं।

इनका भी परिचय देना आवश्यक समझकर विनय भाई ने इन्हें भी अपनी रचना में सम्मिलित कर लिया।

यह देखकर रमेश को हार्दिक प्रसन्नता हुई और उसने विनय भाई को उनकी उदारता के लिए मन-ही-मन अपनी श्रद्धा के पुष्प अर्पित किये। उसका हृदय गद्-गद् हो उठा। उसके नेत्रों की पुतलियों में विनय भाई की साकार प्रतिमा उतर आई।

इस प्रकार रचना का आकार बढ़ता गया और रमेश के मस्तिष्क में भारतसेवक की रूपरेखा भी स्पष्ट होती गई।

विनय भाई जो कुछ भी लिखते हैं वह आम लोगों की बात लिखते हैं, कोई ऐसा रहस्य उद्घाटित नहीं करते कि जिसका महान् कलाकारों की तरह चोरी के भय से छुपाकर रखने की आवश्यकता समझे।

रमेश ने भारतसेवक को देश भक्ति के क्षेत्र में देखा, राजनीतिक क्षेत्र में जाँचा, समाज-सेवा के मैदान में परखा, भावना के क्षेत्र में देखा, शिक्षा, संस्कृति और विद्वता के प्रांगण में झाँका, कला के केन्द्रों में देखा और देखा मानवता की कसौटी पर अपने को कसते हुए।

विनय भाई का जीवन रमेश के सम्मुख खुला पड़ा था। उसने उन्हें एक पिता के रूप में देखा, एक भाई के रूप में देखा, एक सहायक के रूप में देखा और एक मजदूर के रूप में और सभी रूपों में उसने उसे मानवता की कसौटी पर खरा पाया। अपने वारे में, जब से वह उनके सम्पर्क में आया है, कभी उनकी कोई बात नहीं सुनी। उनके मस्तिष्क में हर समय औरों की चिन्ता भरी पाई।

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "रमेश भारतसेवक श्रीलाल की क्या-क्या प्रशंसा करूँ तुमसे। वह आज के युग में एक अनोखी प्रतिभा है।

मानव नहीं है वह, महामानव है। जिस 'जन-सेवाक-समाज' की उसने नींव डाली है उसकी दीवारों को खड़ा करके उन पर छतें पाटना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।"

"आपके विचार से मैं पूरी तरह सहमत हूँ। मुझे भी आज्ञा दीजिये कि मेरा क्या कार्य होगा 'जन-सेवक-समाज' में ?" रमेश ने पूछा।

"और मुझे क्या करना है, मैं भी तो जान लूँ।" मुस्कराकर प्रमिला बोली।

"तुम दोनों को अभी 'जन-सेवक-समाज' में कुछ नहीं करना है। तुम्हारा कार्य-क्षेत्र 'साहित्य-कला-केन्द्र' है। इसी में रहकर तुम्हें 'भारतसेवक' नाटक की पूरी तैयार करनी है।

मेरा अभिप्राय समझ गये रमेश ! मेरा आशय समझ गई प्रमिला !" विनय भाई ने कहा।

रमेश और प्रमिला बोले, "पूरी तरह समझ गये। आप अपने कार्य-क्रम की रूपरेखा तैयार करें। इधर हम लोग अपनी तैयारी पूरी करते हैं। हमारे पास कमी किसी चीज़ की नहीं है। आपके तनिक से संकेत पर देशव्यापी आन्दोलन प्रारम्भ हो जायगा। साहित्य हमारा तैयार हो रहा है।

हमारी सांस्कृतिक नाटक मण्डली के सभी पात्र तैयार हैं।"

"तो मैं अब बिदा लेता हूँ तुमसे। जो कुछ भी तैयारी में कमी हो उसे भी पूरा कर लेना।" विनय भाई ने कहा।

प्रमिला मुस्कराकर बोली, "यह प्रमिला का प्रबन्ध है, विनय भाई का नहीं। इसकी व्यवस्था हिल नहीं सकती। आप निश्चिन्ततापूर्वक जा सकते हैं।"

विनय भाई रमेश की ओर देखकर बोले, "रमेश अब मेरे पास बत-लाने के लिए कुछ नहीं रहा। जो कुछ भी अब शेष है वह केवल कार्य-क्रम की अन्तिम रूपरेखा मात्र है और उससे भारतसेवक के चित्र में कोई परिवर्तन आनेवाला नहीं है।

मैं चाहता हूं कि तुम अब अपने काम की अन्तिम रूपरेखा पर जुट जाओ।

और प्रमिला तुम भी मंच की व्यवस्था और संगीत का कार्यक्रम पूरा करो । समय अब दूर नहीं है जब हमें सेवा, साहित्य और कला को लेकर जनता और उनके बाल-बच्चों के बीच पहुँच जाना है ।"

"हमारी पूरी-पूरी तैयारी है विनय भाई ! आप किंचित्मात्र भी इसकी चिंता न करें । आपके आदेश में देर हो सकती है परन्तु हमारे कार्य प्रारम्भ करने में आपको देर नहीं मिलेगी ।" रमेश ने कहा ।

प्रमिला ने केवल मुस्कराकर विनय भाई की ओर देख भर लिया और विनय भाई को उनकी बात का उत्तर मिल गया ।

आज पहले दिन विनय भाई 'जन-सेवक-समाज' के कार्यालय में पहुँचे । अपने विभाग के दर्शन किये । एक कमरा, दो मेज़ और कुछ कुर्सियाँ पड़ी थीं । विभाग में दो कार्यकर्त्ता और एक सहायक भी था ।

तीनों ने विनय भाई को सादर नमस्कार किया और उनको आशा बँधी कि सम्भवतः अब वहाँ भी कुछ कार्य होता दिखाई दे । उनके जीवन को भी शायद कोई व्यवस्था मिले ।

कमरे को देखकर विनय भाई थोड़ी देर इधर-उधर घूमे और फिर कुर्सी डालकर उसके बीचों-बीच बैठ गये । और बोले, "आप लोगों के परिवार में आज एक नई वृद्धि हुई है । मैं सेवा का व्रत लेकर यहाँ आया हूँ । सेवा माता के आग्रह और जनता बहन की आज्ञा ने मुझे यहाँ भेजा है ।

क्या आप लोग सेवा-पथ पर मेरे साथ चल सकेंगे ?"

कार्यकर्त्ताओं में से एक ने कहा, "भाई जी ! आये हम लोग भी यहाँ इसी बात को मन में लेकर थे कि संस्था के संरक्षण में हमें देश की जनता की सेवा करने का अवसर मिलेगा । और आप देखेंगे कि जब जैसा अवसर मिलेगा आप हमें पीछे नहीं पायेंगे ।"

विनय भाई को अपने कार्यकर्त्ता की बात सुनकर बहुत हर्ष हुआ ।

वह बोले, "अवसर आपको पूरा-पूरा मिलेगा। परन्तु मैं देख रहा हूँ कि जिस घर में हम लोग अपना परिवार बसाने जा रहे हैं पहले उसका तो सुधार कर लें।"

विनय भाई ने देखा कि उनके दोनों कार्यकर्त्ता और सहायक इधर-उधर बगलें झाँकने लगे।

जिस कमरे में ये लोग बैठे थे वह निहायत गन्दा था। दीवारों के कोनों में जाले पुरे हुए थे। मेज़ें भी साफ़ नहीं थीं और आलमारी के पीछे भी काफ़ी कूड़ा करकट एकत्रित था।

एक कार्यकर्त्ता साहस बटोर कर बोला, "भाई जी आप तनिक कमरे से बाहर चले जायें। हम लोग अभी जुटकर इसे साफ़ किये लेते हैं।"

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "मेरे बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है। मुझे ज़रा झाड़ू उठादो और देखो कि सफ़ाई कैसी होती है। राष्ट्र-पिता के आश्रम में मैंने छै महीने लगातार झाड़ू लगाई है। कितनी ही बार सेवा माता ने मेरे हाथ से झाड़ू छीनकर मेरी भूल ठीक की है और जनता जीजी मेरी भूलों को देखकर मुस्कराई हैं। परन्तु भारतसेवक श्रीलाल ने सर्वदा ही मेरा साहस बढ़ाया है।"

विनय भाई की यह बात सुनकर कार्यकर्त्ता लोग श्रद्धा से भर गये। तीनों ने दौड़-दौड़कर पूरे कमरे को साफ़ किया, झाड़ू दी, पानी की बाल्टियों पर बाल्टियाँ डालकर कमरे को धोया और भीगे कपड़े से उसके फर्श और किवाड़ों को पोंछा। और फिर सामान लगाने की बात सामने आई।

विनय भाई उनकी कठिनाई को देखकर बोले "अब मेज़ें लगाइये। आप एक-एक मेज़ ले लीजिये और मेरे लिए किसी बढ़ई को बुलवाकर एक तख़्त बनवा दीजिये।

दूसरे दिन तख़्त बनकर तैयार हो गया और विनय भाई ने अपना आसन जमा लिया।

परन्तु आसन जमाने के लिए तो वह 'जन-सेवक-समाज' में नहीं

आये। आसन जमाने वालों की तो पहले ही कौन कमी थी कि जिसकी पूर्ति उनके आने से होनी आवश्यक थी।

विनथ भाई ने सोचा कि योजना और साधन जनता का कभी कोई लाभ नहीं कर सकते जब तक सच्चे कार्यकर्त्ता उन साधनों के द्वारा उस योजना की पूर्ति के लिए कटिबद्ध न हों।

इसलिए आज देश को आगे बढाने के लिए सच्चे कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है। ऐसे कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है जो राष्ट्र के जीवन में फैली कुरुचिपूर्ण आदतों को उनकी बीमारी घोषित करके, उनके मनों में उन बीमारियों के प्रति घृणा पैदा करदें और सुरुचिपूर्ण बातों के लिए उनके हृदयों में आनन्द और उमंग की भावना भरदें। जनता के जीवन को उत्साहपूर्ण करदें।

विनय भाई ने सोचा कि जब 'जन-सेवक-समाज' का एक कार्य यह भी है कि वह भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता रानी की जनता की भलाई मे प्रस्तुत योजना को जन-सहयोग प्रदान करें तो उसके लिए आवश्यक व्यय की व्यवस्था भी भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता राती को ही करनी चाहिए।

और यह बात मन में आते ही विनय भाई भारतसेवक श्रीलाल की ओर चल दिये।

कोठी पर पहुँचे तो सत्ता रानी से भेंट हुई और पता चला कि भारत-सेवक से सोमवार से पहले भेंट होनी कठिन है। उनका कार्यक्रम बहुत ही व्यस्त है। देश-विदेश से मिलने वालों की संख्या इतनी अधिक है कि उनके पास एक क्षण का भी अवकाश नहीं।

विनय भाई ने सर से टोपी उतारकर छोटी मेज़ पर रख दी और सिर पर हाथ फेरते हुए कुर्सी पर बैठ गये।

सत्ता रानी भी मुस्कराकर उनके सामने वाली कुर्सी पर जा बैठीं और फिर आँखें तरेरकर बोली, "कहिये विनय भाई! प्रमिला देवी तो

प्रसन्न है। उन्हें आप हमारे यहाँ कभी नहीं लाते। मैं तीन बार हो आई हूँ आपके यहाँ, जबकि रिश्ता आपका है यहाँ मेरे आने का। मेरा आपके यहाँ जाने को कोई नाता नहीं।"

सत्ता रानी की बात सुनकर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "प्रमिला को यहाँ लाने में दो भय लगते हैं मुझे सत्ता रानी! पहला भय तो मेरा अपना है और वह यह है कि यदि पारितोषिक या भेंट स्वरूप ही कहीं आपने उन्हें दस-पाँच रेशमी साड़ियाँ, ब्लाउज़ और सेंडिल दे डाले तो मेरे लिए कठिनाई पैदा हो जायगी। आखिर उसकी आदतें आप क्यों ख़राब करना चाहती हैं, यह मेरी समझ में नहीं आया।

दूसरी कठिनाई मैं आपके लिए देख रहा हूँ। आपके महलों की सभ्यता का पालन यदि वह गाँव की स्त्री न कर सकी तो इसमें आपका अपमान होगा और आपके अर्दली लोग आपका उपहास करेंगे कि आपकी एक नातिन कैसी मूर्ख है।"

सत्ता रानी ने ध्यानपूर्वक विनय भाई की बात सुनी और फिर वैसी ही गम्भीर मुस्कराहट के साथ बोली, "ये सब बनने की बातें छोड़ दीजिये विनय भाई! साफ़-साफ़ कहिये ना, कि प्रमिला देवी मुझे अपने भैया भारतसेवक श्रीलाल की पत्नी नहीं समझतीं, समझती हैं कि कोई रखैल है। जिसका सम्बन्ध पारिवारिक नहीं। वह सम्बन्ध कोरा आर्थिक है और थोड़ा बहुत उसे सामाजिक या व्यवहारिक भी कहा जा सकता है।"

कहते-कहते सत्ता रानी का मन भारी हो उठा। मानो उसने अनुभव किया कि उसको अपना आत्मीय कहनेवाला संसार में कोई नहीं है।

सत्ता की भावुकता को देखकर विनय भाई ने सोचा कि क्या सत्ता में भी भावुकता हो सकती है। एक नारी है आखिर वह भी तो और उसके पास महसूस करनेवाला हृदय भी है। परन्तु यदि यह नाटक का अभिनय निकला, तो खेल यहीं पर ख़राब हो जायगा।

विनय भाई गम्भीरतापूर्वक बोले, "आप अबला नहीं हैं सत्ता रानी, सबला हैं आप। आपके सम्बन्धों को साधारण नारी के सम्बन्धों की तरह सोचकर नहीं चला जा सकता।"

सत्ता रानी ने विनय भाई के चेहरे पर गम्भीरतापूर्वक देखा और मुस्कराकर बोलीं, "'जन-सेवक-समाज' का कार्यालय देखा आपने। सुविधाएं तो हमने काफी दी हुई हैं वहाँ के कार्यकर्ताओं को। कोई कठिनाई आपके किसी काम में आये तो मै आपकी सेवा के लिए तैयार हूं।"

विनय भाई बोले, "इस समय वहीं से आ रहा हूं मै। मै समाज के अन्य विभागों की बात कुछ नहीं जानता परन्तु मेरे जन-सहयोग और जन-जाग्रति विभाग में तो मुझे दो टूटी मेजों, चार कुर्सियों, दो कार्यकर्त्ताओं और एक सहायक के अतिरिक्त और कुछ नही मिला। एक टूटी टाइप करने की मशीन भी है वहाँ।"

"तब तो पूरे दफ्तर की व्यवस्था है आपके पास। क्या कुछ नहीं है ? आपतो राष्ट्रपिता के आश्रमों में रह चुके हैं जहाँ सब कार्यवाही एक चटाई बिछाकर ही हो जाती थी और एक ही कार्यकर्त्ता सहायक का भी काम कर लेता था।" सत्ता रानी मुस्कराकर बोलीं।

विनय भाई अन्दर-ही-अन्दर तिलमिला उठे। उनके मस्तिष्क में पुरी हुई नाड़ियाँ झनझना उठीं। परन्तु फिर भी असीम संयम के साथ वह सत्ता रानी के चेहरे पर दृष्टि डालकर मुस्करा दिये। और फिर गम्भीर वाणी में बोले, "राष्ट्रपिता के उस चटाई वाले आश्रम की तुलना न तो उस 'जन-सेवक-समाज' के दफ्तर से की जा सकती है और न आपके इस राजसी ठाटबाट वाले दफ्तर से। उस दफ्तर का काम सत्ता रानी की योजना के लिए जन-सहयोग प्राप्त करना नही होता था। उसका काम था देश की जनता को प्राणदान देना और उसकी उस सेवा पर मुग्ध होकर जनता अपने बाल-बच्चों के निवाले बचाकर दान देती थी।

परन्तु तुम तो कर लगाती हो जनता पर सत्ता रानी। तुम्हारा वह

कर क्या तुम्हारे ही वेतनों की पूर्ति के लिए है ? तुम्हारी योजना को जन-सहयोग देने वाले कार्यकर्त्ताओं को क्या अपने परिवारों को चलाने के लिए उसमें से अपना पारश्रमिक पाने का अधिकार नहीं है ?"

सत्ता रानी विनय भाई की बात सुनकर सहम उठीं। उनके चेहरे की मुस्कराहट विनय भाई के देखते-ही-देखते काफर हो गई।

सत्ता रानी के चेहरे पर उड़ती हुई हवाइयों के देखकर विनय भाई अन्दर-ही-अन्दर मुस्कराकर बोले, "कहिये, चाहिए जन सहयोग आपको ? हमारे कार्यकर्त्ता तैयार हैं। साधन हैं आपके पास उनसे काम लेने के लिए ?"

सत्ता रानी सरलतापूर्वक बोलीं, "भारतसेवक और मैं वहुत ही गम्भीरतापूर्वक इस समस्या पर विचार कर रहे है कि हम लोग कैसे आपसे और आपके कार्यकर्त्ताओं से सहयोग लें ?"

इस पर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "सोचने-विचारने में अधिक समय नष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। काम करने के लिए देर हो रही है। हमारे कार्यकर्त्ता बेचैनी के साथ जनता और उसके बाल-बच्चों की परेशानियों को देख रहे हैं। आप और भारतसेवक श्रीलाल जी जो कुछ उनके लिए करना चाहते हैं उसमें उनका हार्दिक सहयोग प्राप्त करने के लिए हमारे कार्यकर्त्ता तैयार हैं।" विनय भाई ने कहा।

विनय भाई की बात सुनकर सत्ता रानी मन-ही-मन स्तम्भित सी रह गईं। उन्होंने गम्भीरतापूर्वक एक बार फिर विनय भाई के चेहरे पर देखा और देखकर नरम आवाज़ में मधुर स्वर केसाथ बोलीं, "ऐसे ही कार्य-कर्त्ताओं को संगठित करके जनता जीजी और उनके बाल-बच्चों की सेवा करने को भारतसेवक ने 'जन-सेवक-समाज' की नींव डाली है। आपसे सच बात कहने में संकोच क्यों करूँ, बात सच यह है कि भारतसेवक के सही-सही आशय तक केवल आप ही पहुँच पाये हैं। भारतसेवकों की तो यों यहाँ नित्य पंक्ति खड़ी रहती है, परन्तु भारतसेवक के लक्ष तक पहुँचने वालों की अभी बहुत कमी है।"

सत्ता रानी की बात सुनकर विनय भाई मुस्कराकर अन्दर-ही-अन्दर सोचने लगे कि सत्ता रानी भी वास्तव में दिलचस्प एक औरत है। अपने सम्पर्क में आने वालों को काफ़ी ठोक बजाकर देखती है। उनकी शक्लें देखती है, उनकी अक्लें देखती है। उनके तौरतरीके भाँपती है, उनके सम्बन्ध देखती है, उनके मतलब जानती है और यह सब कुछ जान कर विचार करती है कि आखिर सम्पर्क में आने वाला व्यक्ति उसके अपने कुछ मतलब का भी है या नहीं।

विनय भाई ने देखा कि भारतसेवक के भवन में उनके अपने घर का जैसा वातावरण नहीं था। विनय भाई और प्रमिला का घर नहीं था यह। यह घर था सत्ता रानी का और भारतसेवक श्रीलाल इसमें आकर बसे थे।

सत्ता रानी के घर पर सत्ता रानी का ही अधिकार था। उनकी इच्छा के बिना वहाँ पत्ता भी नहीं हिल सकता था।

और जहाँ तक भारतसेवक श्रीलाल का सम्बन्ध था, उनके लिए पत्ता तो क्या, सत्ता रानी को स्वयं विनय भाई ने उनके चारों ओर हिलते-जुलते और मुस्कराते देखा था।

विनय भाई ने अनुभव किया कि भारतसेवक श्रीलाल के साथ जब-जब सत्तारानी की उनसे भेंट हुई है उसमें और आज की भेंट में कितना व्यावहारिक अन्तर है, कितनी पारिवारिक दूरी है।

विनय भाई एक लेखक अवश्य हैं, परन्तु व्यावहारिक दुनियाँ से दूर रहने वाले और साहित्यकार को संसार से प्रथम कोई विशेष दैविक शक्ति समझने वाले लेखक नहीं है वह। वह जहाँ क़लम चलाना जानते हैं, बातें करना जानते हैं, वहाँ व्यवहार में भी उनके कोई कमी नहीं है। आखिर काम ही जब उन्होंने जन-सम्पर्क, जन-सहयोग और जन-जाग्रति का सँभाला है।

विनय भाई ने सोचा कि ज़रा अब, जब इतनी देर ही हो गई तो, तनिक सत्ता रानी की नाड़ी भी देख ली जाय। क्या केवल नाड़ी देखने

का अधिकार सत्ता रानी का ही है। वह बोले, "सत्ता रानी, आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मेरे साथ सहयोग करने को घोष बाबू, वेदान्ताचार्य रमण जी, आचार्य प्रकाश और तपस्वी सुनील सभी तैयार हैं। आपको 'जन-सेवक-समाज' के मेरे विभाग की हर कमेटी में इनके दर्शन हुआ करेंगे। बेचारे सभी बड़ा प्रेम करते हैं आपको।"

विनय भाई की बात सुनकर सत्ता मुस्कराकर बोली, "यह दफ्तर है मेरा। उपहास की जगह नहीं है। जब आपके दफ्तर में आऊँगी तो वहाँ आप जैसी चाहें गत बनालें मेरी। परन्तु इतना समझ लेना कि सेवा माता का रास्ता मुझेभी मालूम है और मेरा एक पग आपके हज़ार क़दमों से आगे होगा।"

"यही तो मैं चाहता हूँ आपसे सत्ता रानी! मैं तो चाहता हूँ कि आप झुंझलाहट में आकर ही एक बार यदि सेवा माता के मार्ग पर खड़ी हो जायें तो रास्ता ही बदल जाय देश का।

मेरी और मेरे कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता ही न रहे आपको।" इतना कहकर विनय भाई खड़े हो गये।

सत्ता रानी उन्हें कोठी के द्वार तक जाकर मोटर में बिठलाकर लौटी।

: २५ :

विनय भाई संध्या को घर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि रमेश अपने कमरे में है और प्रमिला अपने कमरे में। दोनों के कमरों का ढाँचा बदला हुआ था आज।

प्रमिला बड़ी बैठक में थी और बिस्तर ज़मीन पर लगा हुआ था। कमरे का तख्त कमरे के बाहर वरांडे में पड़ा था और प्रमिला वीणा बजा रही थी।

विनय भाई को देखकर उसने वीणा बजाना बन्द कर दिया। वीणा एक ओर रखकर अँगड़ाई लेती हुई मुस्कराकर बोली "आज जितना रियाज़ किया है मैंने जीवन में पहले कभी नहीं किया। संगीत की सब धुनें तैयार कर लीं।"

विनय भाई को देखकर रमेश ने भी बुरुश उठाकर एक ओर रख दिये और रंग की प्यालियाँ दूसरी तरफ़ सरकादीं। फिर उनके पास जाकर नमस्कार करता हुआ बोला, "आज तो पूरी ही ड्यूटी दे डाली आपने 'जन-सेवक-समाज' की।"

"ड्यूटी पूरी नहीं, पूरी से भी कहीं अधिक देनी होगी वहाँ।" विनय भाई ने कहा।

"क्यों क्या 'जन-सेवक-समाज' का ढाँचा ठीक-ठाक नहीं कर चल रहा है ?" प्रमिला ने पूछा।

इस पर विनय भाई मुस्कराकर बोले, "ढाँचा ठीक-ठाक क्या, बेठीक-ठाक भी नहीं है कुछ। ढाँचा तो वहाँ पूरा-का-पूरा बनाना होगा। तब जाकर कही कुछ कोई काम चल सकेगा। अभी तो केवल साइनबोर्ड-ही-साइनबोर्ड है 'जन-सेवक-समाज' का और उसके पीछे भारतसेवक श्रीलाल का नाम है।

और इससे आगे की बात यदि सुनना चाहो तो वह यह है कि आम

लोग इसे धनधान्य से पूर्ण सरकारी सस्था समझते है। सत्ता रानी की कृपा-पात्री संस्था समझते हैं और इसीलिए मोटा सहयोग दे सकने वाले इसे सहयोग देना व्यर्थ समझते हैं।"

प्रमिला बोली, "तब तो समस्या ही बिल्कुल उल्टी है। आपका कहना सत्य ही है कि किसी बात के सही निर्णय पर पहुँचने के लिए उसके घटनास्थल पर एक कार्यकर्त्ता के रूप में पहुँचना नितान्त आवश्यक है। तभी उसका सही ज्ञान हो सकता है।"

विनय भाई की बात सुनकर रमेश के चेहरे पर निराशा की एक हल्की सी रेखा खिंचने ही वाली थी कि विनय भाई मुस्कराकर साहसपूर्ण स्वर में बोले, "परन्तु कोई बात नहीं प्रमिला ! मुझे विश्वास है कि इस सस्था को बनाया जा सकता है और चलाया जा सकता है। इसका भविष्य उज्ज्वल करके उससे जनता और उसके बाल-बच्चों को लाभ पहुँचाया जा सकता है।"

विनय भाई की यह बात सुनकर रमेश को प्रसन्नता हुई। और वह बोला, "आज दिन भर मंच के सेटिंग पर विचार करता रहा। और पूरी रूपरेखा बनाली है उसकी। भाभी प्रमिला और आप उसे देखकर समझलें और अपने अतिम सुझाव दे डालें तो उसका अतिम रूप पूरा करके एक काम से छुट्टी पाजाऊँ।"

विनय भाई हालाकि सुबह के घर से निकले हुए थे और बदन चूर-चूर हो रहा था परन्तु रमेश के आग्रह को न टाल सके। वह रमेश से भी अधिक उत्साह के साथ बोले, "चलो मैं चलता हूँ और प्रमिला तुम भी खड़ी होकर देखो तो रमेश ने क्या कुछ कर लिया है आज-ही-आज में।"

और सचमुच ही विनय भाई और प्रमिला ने देखा कि जो समय-समय पर रमेश ने चित्र बनाये थे वे सब यों ही नही बनाये थे। पूरे भारतसेवत की रूपरेखा के आधार उन चित्रों का निर्माण किया गया था।

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "रमेश वास्तव में बहुत सुन्दर। भारत-सेवक की पूरी कहानी तुम्हारे मस्तिष्क में साफ़ हो चुकी है अब। उसकी

रूपरेखा के अंतर्गत आने वाले चित्रों को तुमने खूब बनाया है और यदि कोई मेरी पुस्तक के पढ़ने के पश्चात् तुम्हारे मंच पर दृष्टि डालेगा तो पूरी पुस्तक का स्वरूप उनकी आँखों में चित्रित हो उठेगा।"

प्रमिला भी मुस्कराकर बोली, "बड़े ही चतुर हो रमेश ! भारत-सेवक को साथ-साथ चित्रित करते जा रहे हो। तुम्हारी कला की सराहना करती हूँ।"

. रमेश आज बहुत प्रसन्न था। उसने अपने मस्तिष्क से भारतसेवक के मंत्र को जो रूप दिया उसे विनय भाई और प्रमिला, दोनों ने पसंद किया।

ठीक इसी समय विनय भाई के मकान के सामने एक स्टेशन-वेगन आकर रुकी।

प्रमिला मुस्कराकर विनय भाई से बोली, "आप दिन भर के परिश्रम से थक गये होंगे। अपने कमरे में जाकर विश्राम करें। पूर्वाभिनय प्रारम्भ कराके मैं अभी आ रही हूँ आपके पास।

मैंने आज से ही भारतसेवक नाटक का पूर्वाभिनय प्रारम्भ कर दिया है।"

"यह तुमने बहुत ही सुन्दर कार्य किया प्रमिला ! मुझे रमेश के मंच और तुम्हारे नाटक की अब किसी भी समय आवश्यकता पड़ सकती है।" विनय भाई ने अपने कमरे की ओर प्रस्थान करके कहा।

दिनभर के थके माँदे विनय भाई ने अपने कमरे में पहुँचकर चप्पलें उतारीं। सर से टोपी उतारकर खूँटी पर टाँगी। कुर्ते के ऊपर जो जाकट पहनी हुई थी, उसे उतारकर खूंटी पर टाँगा। कुर्ते की आस्तीनें ऊंची कीं और फिर कमरे से बाहर स्नान-गृह में जाकर हाथ, मुंह, पैर धोकर भीगे हाथों को सर के बालों पर फेरा और फिर तौलिया लेकर हाथ, मुँह, सर, पैर पोंछे, तौलिया अलगनी पर टाँगा और फिर अपने कमरे में प्रवेश किया।

खाट पर साधारण बिस्तर बिछा था। एक दरी और उसपर खद्दर की सफ़ेद चादर। एक साफ़-सा तकिया भी लगा था उसपर उसे सिरहने

देकर विनय भाई लेटे ही थे कि प्रमिला कमरे में आ गई और मुस्कराकर बोली, "खामखा की आफ़तें सिर ले लेते हैं आप तो। सुबह चार बजे उठना। किताबों और कलम कागज़ों में सिर खपाना, अपने और हमारे पेट का साधन जुटाना और फिर 'जन-सेवक-समाज में मुफ़्त काम करने के लिए दोड़ पड़ना। मेरी तो यह कुछ भी समझ में नहीं आता। आख़िर इस शरीर से क्या बैर है आपका ?"

विनय भाई प्रमिला की बात पर मुस्कराकर बोले, "पूर्वाभिनय प्रारम्भ कर दिया सब लोगों ने। सभी पात्र उपस्थित हैं ना !"

"सब" आँखें तरेरकर मुस्कान के साथ हल्का सा बल खाते हुए प्रमिला ने कहा।

"तुम कितनी अच्छी हो प्रमिला ?" विनय भाई प्रमिला का हाथ अपने हाथ में लेते हुए बोले।

"जितने आप बुरे हैं।" अर्धनिमीलित नेत्रों से अपने हाथ को विनय भाई के हाथों में ढीला करते हुए प्रमिला ने कहा।

"रमेश भी कितना अच्छा बच्चा मिला है तुम्हें। कितना चतुर, कितना सुसभ्य और……"

"कितना महान् कलाकार है जो अपनी एक रेखा से दर्शक को उद्वेलित कर देता है। दर्शक के अन्दर भावना भर देता है, उसके मस्तिष्क को चिन्तन प्रदान करता है।" प्रमिला ने कहा।

"इसमें कोई सन्देह नहीं। रमेश एक दिन महान् चित्रकार होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह जो भारतसेवक का चित्र बनायेगा वह भारत की जनता में पूजा जायेगा।" विनय भाई ने कहा।

"इसमें मुझे रत्ती भर भी संशय नहीं है। परन्तु देख रही हूँ कि रमेश इस महत्वपूर्ण कार्य को बराबर टालता जा रहा है। मेरा कहने का यह अर्थ नहीं कि वह अपने उत्तरदायित्व से अनभिज्ञ है परन्तु भेद इतना ही है कि इस समय जिस कार्य को मैं महत्वपूर्ण समझ रही हूँ उसे वह नहीं समझ रहा।" प्रमिला ने कहा।

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "कोई बात नहीं प्रमिला ? भारतसेवक चित्र तभी बनना चाहिए जब रमेश अपने मन में उसकी निश्चित धारणा बना ले। इससे पूर्व का कोई भी प्रयास उतना प्रभावोत्पादक नहीं होगा, जितना आवश्यक है।"

प्रमिला ने पूछा "ज़रा 'जन-सेवक-समाज' के दफ्तर की दशा तो कहो कैसी है ?"

विनय भाई बोले "किसी भी संस्था के प्रारम्भ में उसकी जैसी दशा होती है, वैसी ही इसकी भी है। दफ्तर का एक कमरा है, दो मेजें हैं उसमें और चार कुर्सियाँ हैं। दो कार्यकर्त्ता और एक सहायक भी है उसमें। एक टेलीफोन लगा हुआ है।

बस सब कुछ यही है अभी तो। परन्तु काफी है, काम चलाने भर के लिए। ज्यों-ज्यों काम आगे बढ़ेगा साधन जुटते जायेंगे। अच्छे काम करने वाले होने चाहिएँ, काम आगे ही बढ़ेगा।"

विनय भाई के विश्वास को देखकर प्रमिला मुग्ध हो गई। प्रमिला को कितना सन्तोष था विनय भाई के साथ जीवन बिताने में, सादा रहने में और सन्तोष के साथ दोनों प्राणियों को साथ-साथ भोजन खाने में।

और इस घर में जब से भोजन करने वालों की संख्या तीन हो गई थी तब से तो परिवार परिवार न रहकर समाज बन गया था।

प्रमिला खड़ी होती हुई घड़ी देखकर बोली, "समय भी कितनी तीव्र गति से व्यतीत होता है। देखते-देखते ही दो घंटे निकल गये। पूर्वाभिनय का समय समाप्त हो गया। मैं अभी आती हूँ साहित्य-कला-केन्द्र के अतिथियों को धन्यवाद देने के पश्चात् विदा करके।"

"अवश्य जाओ प्रमिला !" विनय भाई ने कहा।

रमेश और प्रमिला ने सब आगन्तुकों को प्रणाम करके विदा किया।

इसके पश्चात् विनय भाई, रमेश और प्रमिला ने साथ-साथ बैठकर भोजन किया।

तीनों व्यक्ति भोजन करके उठे ही थे कि तभी 'जन-सेवक-समाज

का सहायक वहाँ आ पहुँचा और उसने 'जन-सेवक-समाज' के प्रधान मंत्री का पत्र विनय भाई के हाथों में दिया।

विनय भाई ने लिफ़ाफ़ा खोला तो उसमें मंत्री जी के पत्र के साथ-साथ भारतसेवक श्रीलाल का भी पत्र था। उन्होंने लिखा था, "विनय, तुम आये और मैं मिल न सका। सत्ता रानी ने अपने इतने काम फैला रखे है कि उनमें चौबीस घंटे उलझा रहता हूँ। संध्या को आठ बजे तुम आकर अवश्य मिल जाओ। नहीं तो फिर मैं एक सप्ताह के लिए विदेश के दौरे पर चला जाऊँगा।"

विनय भाई का बदन आज दिनभर की थकान से चूर-चूर हो रहा था। अभी चन्द मिनट पूर्व सोच रहे थे कि खाना खाकर खटिया पर विश्राम करेंगे। परन्तु इसी समय भारतसेवक श्रीलाल का पत्र मिल जाने से और उसमें यह सूचना पढकर कि वह एक सप्ताह के दौरे पर बाहर जा रहे हैं, विनय भाई उनसे मिलने का निश्चय न टाल सके।

कुल्ला करके, हाथ मुँह धोकर अपने कमरे में पहुँचे और रमेश तथा प्रमिला ने आश्चर्य चकित होकर देखा कि वह सिर पर टोपी लगाये और पैरों में चप्पल पहने, कहीं जाने को तैयार हैं।

प्रमिला ने पूछा, "आखिर 'जन-सेवक-समाज' का काम क्या रात-दिन चौबीस घंटे होता ही रहता है?"

विनय भाई ने मुस्कराकर उत्तर दिया, "भारतसेवक श्रीलाल जी का पत्र लाया है सहायक। कल वह विदेश यात्रा पर जा रहे हैं और सात दिन में लौटेंगे। उन्होंने संध्या को आठ बजे का समय दिया है मिलने के लिए। वहीं जा रहा हूँ।"

उत्तर सुनकर प्रमिला मुस्करा दीं और विनय भाई द्वार की ओर बढ़ गये।

रमेश और प्रमिला ने भी विनय भाई का थोड़ी दूर तक साथ दिया। विनय भाई को सवारी में बिठलाकर रमेश और प्रमिला घूमते हुए वापस लौट आये।

विनय भाई से भारतसेवक ने 'जन-सेवक-समाज' के विषय में खुलकर

बातें कीं और स्पष्ट रूप से स्वीकार करके कहा, "मैं इस संस्था को जिस रूप में देखना चाहता था इसका वह रूप नहीं बन सका। इसका रूप सरकारी संस्था जैसा बनता जा रहा है। मैंने इसे जन-सहयोग और जन-जाग्रति के लिए प्रारम्भ करने का विचार किया था परन्तु वह सब कुछ नहीं हो रहा।

तुम्हें सर्वप्रथम इसी दिशा में प्रयास करना है।"

"यह मैं भी निश्चय कर सका हूँ। परन्तु इस कार्य को मैं अकेला केन्द्र में बैठकर नहीं कर सकता। इसके लिए देश के कोने-कोने में मेरे कार्यकर्त्ताओं को जाना होगा।" विनय भाई ने कहा।

"अवश्य जाना होगा। बिना कार्यकर्त्ताओं के जनता और उसके बाल बच्चों तक हमारी आवाज़ कैसे पहुँचेगी? हमारी बातें कौन करेगा उनसे और उनकी कौन सुनेगा? उनके लिए हम क्या कुछ कर रहे हैं, इसका कैसे ज्ञान होगा उन्हें?"

"यह कार्य हमारे कार्यकर्त्ता करेंगे, हमारा साहित्य करेगा। इसका सम्बन्ध आपके सूचना और शिक्षा-विभाग से है। हमारे कार्यकर्त्ता सूचना और शिक्षा-विभाग के कार्यों में सहयोग देंगे। ये मन्त्रालय अपना कुछ कार्यभार हमारे कंधों पर डालकर देखें कि हम कहाँ तक उसे संभालने के योग्य साबित होते हैं।" विनय भाई ने कहा।

भारतसेवक बोले, "तुम्हारे काम की सत्ता रानी को बड़ी चिंता है विनय! यह तुम्हें तुम्हारी आशा से भी अधिक सहयोग देंगी। 'जन-सेवक समाज' के कार्य में देरी हो रही है, इसकी लज्जा मुझसे अधिक इन्हें है आखिर इनका ही तो कार्य करने के लिए तुमने इतने कार्यकर्त्ताओं को निमन्त्रण दिया है।

सबको लाकर सत्ता रानी के मेहमान बना दो। ये भी तो तनिक देखें कि कार्यकर्त्ताओं से कैसे सुलझा जाता है। अभी तक इनका पाला अपने सेवकों से ही पड़ा है, जो बेचारे नौकरी की दाब में इनकी डाठ-फटकार तक सह लेते हैं और 'हुज़ूर सरकार' के अतिरिक्त उनकी ज़बान से और कुछ

नहीं निकलता ।"

भारतसेवक श्रीलाल जी मुस्करा रहे थे यह बात कहकर ।

सता रानी के चेहरे पर लाली छा गई और वह मुस्कराकर बोलीं, "विनय भाई अपने कार्यकर्त्ताओं से स्वयं ही उलझते रहेंगे तथा जो बचा-कुचा मामला होगा उसे भारतसेवक सँभाल लेंगे। और मैं पूरी आशा रखती हूँ कि मुझे विनय भाई कार्यकर्त्ताओं के झल्लाने से मुक्त ही रहने देंगे।

कोई विशेष बात नहीं है इसमें, केवल बात इतनी ही है कि मेरा और उनका स्वभाव नहीं मिल सकेगा ।"

सत्ता रानी की बात सुनकर विनय भाई बोले "परन्तु अब समय दूर नहीं है जब आपको सेवा माता और जनता से मिलने के लिए देहात में पैदल चलकर जाना होगा । इन दफ्तरों के फ़ाइलों में सिर मारना छोड़-कर गाँव के मैदानों में घूमना होगा ।"

सत्ता रानी मुस्कराकर बोलीं, "आपसे और क्या आशा की जासकती है विनय भाई ? बचपन से आज तक जो मुसीबत नहीं उठाई, वह लाकर आप मेरे सिर मँढ़ना चाहते हैं ।

आप चाहते हैं तो मँढ़ दीजिये, मैं हाथ नहीं रोकूंगी आपका । और आप देखेंगे कि आपसे एक कदम आगे ही रहूँगी ।"

"मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं ।" विनय भाई मुस्कराकर बोले, "और यह भी वायदा कीजिये कि भारतसेवक श्रीलाल के विदेश यात्रा से लौटने से पूर्व मेरा कार्य हो जायगा ।"

भारत सेवक श्रीलाल ने कहा, "हाँ सत्ता रानी ! विनय का काम हो ही जाना चाहिए । विनय के काम में जितनी देरी करोगी उतनी ही तुम्हें जन-सहयोग मिलने में देर होगी ।"

सत्ता रानी भारतसेवक श्रीलाल की बात पर मुस्कराकर बोलीं, "मैं तो सेविका हूँ आपकी । नेकनामी हो या बदनामी, जो कुछ भी होगी सो आपकी होगी । मैं तो आपके कर कमलों द्वारा संचालित एक मशीन मात्र हूँ ।" इठलाकर सत्ता रानी ने कहा ।

"इन्सान मशीन नहीं हो सकता, होना चाहें तब भी नहीं हो सकता सत्ता रानी ! और तुम तो हो ही नहीं सकतीं क्योंकि तुमने तो अब सेवा माता के पग-पर-पग रखना प्रारम्भ कर दिया है। कभी-कभी शासन की ऐंठ रक्त में तेज़ी भरकर मस्तिष्क की नसों को ऐंठ देती है, परन्तु वह प्रभाव क्षणिक होता जा रहा है।

ग़लत नहीं कह रहा हूँ। विनय भाई, और सत्ता रानी को प्रसन्न करने के लिए भी नहीं कह रहा हूँ, परन्तु यह सच है कि सत्ता रानी का सब क्रोध, सब वक्र गति मुझसे आँखें मिलाते काफ़ूर हो जाता है।"

विनय भाई मुस्कराकर बोला, "इसका मतलब तो मैं यही लगाऊँगा कि आपने जादू कर दिया है सत्ता रानी पर। तभी तो यह घोष बाबू, आचार्यप्रकाश, तपस्वी सुनील और वेदान्ताचार्य रमण जी से बातें नहीं करतीं।"

विनय भाई की बात सुनकर मुस्कराते हुए बड़ी ही सरल वाणी में भारतसेवक बोले, "तुम्हारी यह बात मैं मानने को उद्यत नहीं विनय ! सत्ता रानी में यही सबसे बड़ा गुण है कि यह सभी से प्रेम-भाव रखती हैं और जब से हमने राजा का तख्ता पल्टा है तब से तो यह बहुत ही सतर्क रहती हैं इन बातों में।

आज ही संध्या की बात है कि जब मैं दौरे से लौटा तो ये सब लोग यहाँ एकत्रित थे और बड़ी घुट-घुटकर बातें हो रहीं थीं।"

भारतसेवक श्रीलाल की बात सुनकर विनय भाई को कोई विशेष आश्चर्य नहीं हुआ। और फिर सत्ता रानी की ओर देखकर मुस्कराते हुए बोले, "जहाँ तक सत्ता रानी की चतुराई और व्यवहार कुशलता की बात है, उससे मैं सहमत हूँ परन्तु इनका यह व्यवहार यदि आपकी अनुपस्थिति में भी ऐसा ही बना रहे तो मैं समझूं कि वास्तव में कोई अन्तर आया है।"

और इतना कहकर विनय भाई चलने को खड़े हो गये। भारतसेवक और सत्ता रानी ने कोठी के द्वार पर आकर उन्हें गाड़ी में बिठलाया।

विनय भाई घर पर पहुँचे तो रमेश और प्रमिला उनकी प्रतीक्षा में थे। बराँडे से बाहर खाटें बिछी हुई थीं। विनय भाई वहीं पर रुककर खटिया पर बैठ गये।

आज बुरी तरह से थक गया था उनका बदन।

प्रमिला बिना कहे ही एक गिलास ठंडा पानी ले आई और विनय भाई ने प्रमिला के चेहरे पर स्नेहाद्र दृष्टि डालकर गिलास हाथ में ले लिया। धीरे-धीरे चार पाँच घूंट पानी पीकर गिलास प्रमिला को दे दिया। और फिर खटिया पर लेट गये।

लेटने के पश्चात् विनय भाई बोले, "सम्भव है सरकार के सूचना विभाग से हमें अपने कार्यकर्त्ताओं की संख्या बढ़ाने में सहयोग मिल जाय। और तब हम अपने जन-सहयोग केन्द्रों के खोलने की व्यवस्था कर सकें।

जन-सहयोग केन्द्रों के कार्यकर्त्ता देश की पंचवर्षीय योजना के उद्देश्यों को जनता तक पहुँचायेंगे।"

प्रमिला ने मुस्कराकर पूछा, "भैया और भाभी के रुख कैसे थे, यह भी तो आपने भांपकर देखा होगा।"

"ठीक ही थे दोनों के। श्रीलाल जी की उत्कत इच्छा के विरुद्ध सत्ता रानी कभी कुछ सोचती ही नहीं। वहाँ तो आँखें बन्द करके आज्ञा का पालन की प्रथा है। आगे भगवान् जाने। अच्छे खासे लिखने-पढ़ने का काम करते-करते सेवा माता और जनता बहन की भावना और आज्ञा-पालन के लिए इस 'जन सेवक-समाज' का सदस्य बनना पड़ा।

बन गया हूँ तो अब निभाऊंगा भी पूरी तरह प्रमिला !"

इसके पश्चात् तीनों व्यक्ति सो गये।

: २६ :

विनय भाई के परिवार में प्रातःकाल सबसे पहले प्रमिला उठती है। परन्तु आज प्रमिला ने साश्चर्य देखा कि विनय भाई उससे भी पहले उठे बैठे थे और वह अपने कमरे में लेखन-कार्य कर रहे थे।

प्रमिला यह सब देखकर वहाँ नहीं गई और सीधी अपने कार्यालय में पहुँची। कार्यालय की सफ़ाई के पश्चात् उसने धूप जलाई और सरस्वती को नमस्कार करके वीणा के तार साधे।

वीणा के तारों की झंकार रमेश के कानों में पड़ी तो वह भी आँखें मलता हुआ खटिया से उठ बैठा। उसकी दृष्टि मकान की ओर गई तो उसे प्रमिला तथा विनय भाई दोनों ही अपने-अपने कार्य पर जुटे मिले।

रमेश ने भी खटिया छोड़ दी और नित्यकर्म से निवृत्त होकर अपनी चित्रशाला को जाकर सँवारा। दीवारों पर लगे अर्धचित्रित चित्रों की रूप-रेखाएँ निखारीं और फिर मुस्कराकर अपने से ही बोला, "निर्णय का अन्तिम समय आ गया। पुस्तक छपती जा रही है और मंच के तैयार होने में भी देर नहीं।

जनता की ओर भारतसेवक बढ़ना ही चाहता है। उसके आगे बढ़ने से पूर्व उसका चित्र बन ही जाना चाहिए। पुस्तक के ऊपर भी वही चित्र छपना है और मेरे विचार से विनय भाई को अब पुस्तक समाप्त करने में अधिक समय नहीं लगेगा।

विनय भाई का कल का परिश्रम देखकर मैं यह समझ रहा था कि वह आज लेखनी नहीं उठा सकेंगे। आज उनका बदन दुख रहा होगा, और वह देरी से खटिया छोड़ेंगे।

परन्तु वास्तव में हुआ ऐसा नहीं। हुआ यह कि मैं स्वयं देर से उठा और वह अपने कमरे में बैठे लिख रहे हैं। प्रमिला भाभी भी वीणा लिए रियाज़ कर रही हैं।'

रमेश ने अपनी तूलिका संभाली और रंग की प्यालियों को पास में रखी तिपाई पर टिकाकर दीवार पर लगे अर्धचित्रित चित्र पर जुट गया।

प्रमिला ने रियाज़ बन्द करके ज्योंही माता सरस्वती की वन्दना प्रारम्भ की त्योंही रमेश ने अपनी तूलिका रंग की प्याली पर टिका दी और विनय भाई ने अपनी लेखनी लिखे हुए काग़ज़ों पर रख दी। और वे दोनों भी सरस्वती के मन्दिर में चले आये।

प्रमिला गा रही थी माता की वन्दना का मधुर गीत। और विनय भाई तथा रमेश करबद्ध हो, आँखें बन्द किये, वन्दना में सम्मिलित हो गये।

वन्दना के पश्चात् तीनों ने साथ-साथ बैठकर नाश्ता किया और नाश्ते के तुरन्त उपरान्त विनय भाई बोले, "सहायक को भोजन के लिए भेज दूँगा। मेरा भोजन तुम वहीं भेज देना।"

विनय भाई की यह बात सुनकर रमेश और प्रमिला बोले, "तो इसका अर्थ यह हुआ कि हम लोग अब साथ-साथ बैठकर भोजन भी नहीं कर पायेंगे।"

"जन-सेवा का व्रत लेकर रमेश! आराम से बैठकर भोजन की बात भूल जानी चाहिए। जनता के बीच काम करने को जब-जब भी हम निकले हैं तो हफ्तों-हफ्तों गुड़ और चनोंपर ही जीवन निर्वाह किया है। यहाँ तो बनाबनाया भोजन मिलेगा।" विनय भाई ने कहा। और इतना कहकर वह, प्रमिला ने देखा चलने को तैयार थे।

"तो जा रहे हैं आप?" प्रमिला ने पूछा।

"निश्चित रूप से जा रहा हूँ और निकट भविष्य में ही मेरा विचार यहाँ एक कार्यकर्त्ताओं का कैम्प लगाने का है। उसमें योग्य कार्यकर्त्ताओं को परखने का अवसर मिलेगा और उन्हें यह भी समझा सकेंगे कि हम लोगों की क्या कार्यप्रणाली होगी और हमारे कार्य की दिशा क्या होगी।" विनय भाई बोले।

घर से चलकर विनय भाई समय से पन्द्रह मिनट पूर्व ही कार्यालय में पहुँचे तो देखा कि उनके कार्यकर्त्ता तथा सहायक में से किसी का भी

पता नहीं था ।

विनय भाई स्वयं कार्यालय खोलकर उसमें जा बैठे । उनके दोनों कार्यकर्त्ता और सहायक समय से आधा घंटा पश्चात् आये और दफ्तर खुला देखकर तनिक सकपकाये। आँखें बचाकर अन्दर घुसे तो विनय भाई ने उनसे कुछ नहीं कहा । परन्तु उनके कुछ न कहने पर भी उन्हें लज्जा बहुत आई और तीनों ने आपस में निश्चय किया कि भविष्य में ठीक समय पर कार्यालय में आयेंगे ।

विनय भाई ने कार्यालय में जमकर आसन लगाया । और थोड़े ही दिनों में उन्होंने सत्ता रानी से जन-सहयोग और जन-सम्पर्क के लिए रुपया भी प्राप्त कर लिया।

रुपया हाथ में आते ही विनय भाई ने सोचा कि जो सबसे पहला कार्य उन्हें उस रुपये से करना चाहिए वह है अच्छे कार्यकर्त्ताओं का संगठन ।

विनय भाई का यह निश्चित मत था कि कोई समाज चल ही नहीं सकता जब तक उसके पास अच्छे कार्यकर्त्ता न हों ।

विनय भाई ने कार्यकर्त्ताओं का संगठन किया और देश के विभिन्न भागों में जन-सम्पर्क केन्द्र स्थापित किये । आपने दिल्ली के कार्यालय में भी विभिन्न दिशाओं की चहल-पहल प्रारम्भ की और देखा कि अब उनका विभाग कुछ-कुछ चलने लगा है, हिलने लगा है और थोड़ा-थोड़ा बोलने भी लगा है ।

'जन-सेवक-समाज' के अन्य विभागों में भी चर्चा फैली कि 'जन-सेवक-समाज' के जन-जाग्रति और जन-सम्पर्क विभाग को विनय भाई ने देखते-देखते चन्द दिनों में ही चमका दिया । और केवल अपने विभाग को ही नहीं 'जन-सेवक-समाज' कोई संस्था है, यह समाचार अपने कार्य-कर्त्ताओं के द्वारा जनता और उसके बालबच्चों तक पहुँचा दिया।

विनय भाई ने अपने कार्यालय की व्यवस्था में सादगी बरती । राष्ट्र-पिता के आश्रम की कुछ मोटी-मोटी बातें यहाँ भी लागू कर दीं ।

आज संध्या-समय घोष बाबू मिलने के लिए आये तो विनय भाई

ने उन्हें अपना दफ्तर दिखाते हुए पूछा, "कैसी व्यवस्था देखी आपने ?"

"वैसी अव्यवस्था तो नहीं है जैसी 'जन-सेवक-समाज' की आम हवा है, और सत्ता रानी की जैसी बन्दिशें भी आपका संरक्षण होने पर सम्भव नहीं थीं, परन्तु यदि साफ़ बात का बुरा न मानें तो एक बात कहदूँ।" घोष बाबू बोले।

"एक बात नहीं, आप दो बात कह सकते हैं। आपको पूरा-पूरा अधिकार है।" विनय भाई ने मुस्कराकर कहा।

परन्तु घोष बाबू बात कहते-कहते रुक गए। और बोले, "बात आपकी आपस की है। जब सामने आये तो प्रेम भाव से सुलझा लेना। मैं उसे प्रकाश में नहीं लाना चाहता।"

"यह आपकी और भी दया है।" विनय भाई हँसकर बोले। "आप यदि सर्वदा ऐसे ही विचारवान बने रहें तो सच कहता हूँ कि बहुत सी उलझनें उलझनें न रहकर स्वयं सुलझ जायें।"

विनय भाई की बात सुनकर घोष बाबू मुस्कराकर बोले, "विनय भाई जितनी सुगमतापूर्वक आपने अपना दफ्तर जमा लिया, उतनी सरलता से यदि मैं भी जमा पाता तो शायद इतनी उलझनों में न फँसता; परन्तु मुझे भी अपना दफ्तर जमाना था और काम करना था। मुझे उलझनें भी पैदा करनी पड़ीं और फिर उनके सुझाव भी प्रस्तुत किये। और यह सब कार्य कितनी कुशलतापूर्वक किया, जब कभी आपको यह किस्सा सुनाऊंगा तो आपको नया उपन्यास लिखना होगा और उसका नायक भारतसेवक नहीं घोष बाबू होंगे।

विनय भाई को हँसी आगई घोष बाबू की बात सुनकर और वह बोले, "घोष बाबू! आपका हृदय कितना सरल है और आपने सचाई को कितनी आसानी से स्वीकार कर लिया, यहा तो वह आपके जीवन का गुण है, जिसकी रस्सी में मेरी और आपकी आत्मा बँधी हुई हैं। आपका किस्सा मैं एक दिन अवश्य सुनूंगा और यदि आपको नायक बनाकर उपन्यास लिखने की प्रेरणा हुई तो मैं अवश्य लिखूंगा।"

राजनीतिक विचारों में अन्तर होने पर भी, हम दोनों जनता और उसके बालबच्चों की जाग्रति और सम्पन्नता के लिए एक मंच पर आ सकते हैं।"

घोष बाबू बोले, "आपने इतनी जल्दी अपने कार्यालय को इतना सजीव बना लिया, इसके लिए आप मेरी बधाई के पात्र हैं।"

विनय भाई मुस्कराकर बोले, "केवल बधाई से ही काम नहीं चलेगा घोष बाबू! हमें देश भर का दौरा करना होगा। देश के कोने-कोने में जन-सम्पर्क केन्द्र स्थापित करने होंगे जिनमें रहकर हमारे कार्य-कर्त्ता अपने क्षेत्र की जनता को सद्साहित्य देकर जाग्रत करें, छोटे बड़े उद्योग-धंधों द्वारा जीवनोपार्जन के नये मार्ग सुझायें और अपने घरों तथा देहातों की सफाई का ज्ञान करायें। नारी-शिक्षा की दिशा में भी आगे बढ़ें और बीमारों की चिकित्सा की व्यवस्था करें।"

घोष बाबू मुस्कराकर बोले, "यह सब तो मैं नित्य सुनता आ रहा हूं। सत्ता रानी की योजनाओं में यह सब कुछ भरा पड़ा है। मेरे कहने का अर्थ यह है कि इसे कार्य रूप में कैसे परिणित किया जाय? बात काम करने की है, योजना बनाने की नहीं। योजनाएं बनाने को तो हमारे भारत सेवक श्रीलाल क्या कुछ कम हैं?

और वैसे मै आपके साथ हूँ। जिस मंच पर आप खड़े होंगे उसपर मैं आपके साथ रहूँगा। जनता के हित के किसी भी काम में मै पीछे रहने वाला नहीं हूं।"

"आपसे मुझे यही आशा है।" विनय भाई गम्भीरतापूर्वक बोले।

घोष बाबू को गये अभी अधिक समय व्यतीत नहीं हुआ था कि आचार्य प्रकाश आ पधारे। और उन्होंने सूचना दी कि आगामी सप्ताह में तपस्वी सुनील दिल्ली पधारने वाले है और उनके साथ जनता जीजी तथा सेवा माता भी होंगी।

विनय भाई गम्भीरतापूर्वक बोले, "आपको तपस्वी सुनील के आगमन की सूचना किससे मिली?"

"सूचना विश्वस्थ है ।" आचार्य प्रकाश बोले और फिर उनकी दृष्टि विनय भाईके कार्यालय की ओर गई । उसे देखकर वह बोले, "विनय भाई, कार्यालय की व्यवस्था तो आपने बहुत सुन्दर बनाली । अबतो काफी कार्य-कर्त्ताओं की चहल-पहल दिखाई देती है यहाँ ।"

विनय भाई मुस्कराकर बोले "यह वही भारतसेवक का निर्जीव बच्चा है आचार्य प्रकाश, और अभी तो कुछ है ही कुछ नहीं । डेढ़ दो वर्ष का इसका जीवन है । आपकी कृपा से सौ दोसौ कार्यकर्त्ता कार्य कर रहे हैं देश भर में और बीस जन-सम्पर्क केन्द्र भी स्थापित हो चुके हैं।"

"आपके प्रयास की मैं सराहना करता हूँ । यों आम लोगों में तो यही चर्चा है कि कार्यकर्त्ताओं के नाम पर भारतसेवक अपने पिछलगों की रोटी-पानी का प्रबन्ध कर रहे हैं परन्तु आप सच जानें मेरा ऐसा विचार नहीं है । और जब आप जैसा त्यागी कार्यकर्त्ता इसका संचालन कर रहा है, तो शंका की कोई बात ही नहीं होनी चाहिए ।" आचार्य प्रकाश गम्भीरतापूर्वक बोले ।

विनय भाई ने आचार्य प्रकाश की बात सुनकर कहा, "भारतसेवक श्रीलाल का एक पिछलगा मैं भी हूँ आचार्य प्रकाश ! और एक दिन आप भी रहे हैं उनके पिछलगे । घोषबाबू और वेदान्ताचार्य की बात मैं नहीं करता क्योंकि इन दोनों का उनसे सर्वदा सैद्धान्तिक विरोध रहा है !

परन्तु आपसे सूचनार्थ निवेदन कर दूँ कि मेरे कार्यकर्त्ताओंके विषय में ऐसे शब्दों का प्रयोग उन दोनों महानुभावों ने भी नहीं किया । मेरे कार्य-कर्त्ता किसी के पिछलगे नहीं हैं । वे सभी स्वाभिमानी कार्यकर्त्ता हैं और जनता तथा उनके बालबच्चों की कठिनाइयों को देखकर उनके हृदयों में पीड़ा उमड़ती है । वे लोग चन्द चाँदी के टुकड़ों की खातिर यहाँ आकर एकत्रित नहीं हुए हैं । उनका लक्ष बहुत ऊँचा है । जो कुछ उन्हें उनके जीवन यापन के लिए दिया जा रहा है वह उनकी योग्यता और कर्मठता को देखते हुए कुछ भी नहीं है ।"

विनय भाई की बात सुनकर आचार्य प्रकाश तनिक सहम से गये

और फिर धीरे-धीरे बोले "मैंने जो कुछ सुना था वह आपके सामने कह दिया। इसे आप मेरा मत न मानें।"

"तो आप सहमत हैं 'जन-सेवक-समाज' के विचारों से ? और तैयार हैं देश भर का दौरा करके यह घोषित करने के लिए कि हम सब लोग राजनीतिक विरोधों को एक ओर रखकर जन-जाग्रति के लिए निकले हैं, जनता की भलाई के सब कामों में सहयोग देने के लिए निकलें है।"

'तैयार हैं, भाई तैयार है विनय ! आख़िर क्या दस्तावेज़ लिखाकर पीछा छोडेंगे ? आपसे एक बार कह दिया कि मुझे आपके नेतृत्व में विश्वास है। मैं जानता हूँ कि आप मुझसे कोई राजनीतिक चाल नहीं चलेंगे।" आचार्य प्रकाश ने कहा ।

इसके पश्चात् आचार्य प्रकाश ने विदा ली।

आज सुबह से संध्या हो गई और आने वालों का ताँता लगा रहा। आने वालों का यह क्रम नित्य तीव्र ही गति के साथ बढ़ने लगा। अन्तिम भेंट करने आने वाले श्री वेदान्ताचार्य रमण जी थे।

विनय भाई के कार्यालय को देखकर रमणजी बोले, "कार्यालय की तो आपने बहुत सुन्दर व्यवस्था करदी विनय भाई ! देखकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।"

"आपको पसन्द आई यह व्यवस्था ?" विनय भाई ने मुस्कराकर पूछा।

"आप कोई कार्य करें और मुझे पसन्द न आये, यह भी भला कभी सम्भव है ? अब समय आ गया कि आप अपनी साहित्य-योजना को आगे ढ़ायें।" रमणजी ने कहा।

"यही हो रहा है वेदान्ताचार्य रमण जी ! अब समय आ गया हैं कि जन-जाग्रति और जन-सम्पर्क के लिए साहित्य और कला का प्रयोग किया जाय। जन-सम्पर्क-केन्द्र स्थापित करके पहले मैंने सेवा का कार्य प्रारम्भ किया है और अब उसके साथ-ही-साथ साहित्य मनोरंजन की दिशा में

भी आगे बढ़ा जायगा ।

रमणजी ने पूछा, "सन्ध्या को आप यहाँ कितने बजे तक रहते हैं ?"

"यहाँ रहने का कोई समय नहीं है मेरा रमण जी ! जब तक भी काम मुझे रोके रहे, रुका रहता हूं ।" विनय भाई ने उत्तर दिया ।

"मैं इसलिए पूछ रहा था कि यदि उस ओर चल रहे हों तो साथ लेता चलूँ, आपको मुझे उसी ओर जाना है ।" रमण जी बोले ।

"मुझे अभी रुकना होगा ।" विनय भाई ने कहा "हो सकता है मुझे काफ़ी देर हो जाय यहाँ ।"

"तो मैं आज्ञा चाहूँगा" रमण जी बोले ।

"आशा है आप क्षमा करेंगे मुझे ।" विनय भाई ने कहा ।

रमण जी के चले जाने के पश्चात् विनय भाई के कमरे में कार्यालय के सब कार्यकर्त्ताओं की एक सभा हुई, जिसके अन्दर सबने मिलकर अपने-अपने विचार व्यक्त किये और सहयोग और सद्भावना के साथ जन-सेवा के कार्य में आगे बढ़ने का संकल्प किया ।

इसके पश्चात् सभा विसर्जित हुई और विनय भाई ने अपने घर की ओर प्रस्थान किया ।

: २७ :

विनय भाई अपने कार्यालय से सीधे घर पहुँचे तो क्या देखा कि प्रमिला और रमेश का पूर्वाभिनय-कार्यक्रम पूरी सावधानी के साथ चल रहा है।

उन्हें हार्दिक संतोष हुआ कि उनका जन-जागरण की दिशा में दूसरा कार्य-क्रम भी पर्याप्त सावधानी के साथ आगे बढ़ रहा है।

विनय भाई के मस्तिष्क में इस समय अपनी हर प्रकार की योजना से 'जन-सेवक-समाज' को जनता और उसके बाल-बच्चों के पास तक पहुँचाने की चिंता थी।

जन-सहयोग केन्द्रों के कार्यकर्त्ताओं का जाल देश भर में फैलाकर विनय भाई ने सोचा कि अब उन्हें देश का दौरा करना चाहिए। उन्हें जाकर देखना चाहिए कि उनके कार्यकर्त्ताओं ने क्या कार्य किया है। उनकी उनके कार्य-क्षेत्रों में क्या कठिनाइयाँ है। और उन्हें उनके मार्ग में आने वाली कठिनाइयाँ दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

विनय भाई इसी विचार में निमग्न अपने कमरे में जाकर बैठ गये। थोड़ा आराम करके कपड़े उतार दिये और फिर घूमने के लिए मकान के पीछे वाले गुलाब-बाग़ में पहुँच गये।

वह सोच रहे थे कि इस बार जनता के बीच जाया जाय तो सूखी लेक्चरबाजी का रूप लेकर नहीं जाना चाहिए। हमें जनता के बाल-बच्चों के अन्दर अमोद-प्रमोद का वातावरण लेकर जाना चाहिए। हमें उनके अन्दर घुल-मिलकर उनके दिलों की वास्तविक वेदना को पहचानना चाहिए।

वह यह सब सोच ही रहे थे कि रमेश और प्रमिला ने आकर उन्हें नमस्कार किया। और उन्होने भी मस्तिष्क से भविष्य के कार्यक्रमों को दूर करके बड़े प्रेम से पूछा, "पूर्वाभिनय का कार्यक्रम ठीक-ठीक चल

रहा है प्रमिला !"

"अभी तक तो कोई कठिनाई सामने नहीं आई। सब ठीक ही चल रहा है। हमें विश्वास है कि हमारा यह मंच हमारे अभीष्ट को दर्शकों के सम्मुख प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत कर सकेगा।" रमेश ने कहा। "इसमें भारतसेवक की भूमिका भी आ गई और उसका भविष्य भी सामने है।"

"यही होना भी चाहिए।" विनय भाई बोले।

इसी समय उन्हें उपन्यास के मुखपृष्ठ के चित्र की बात स्मरण हो आई। वह बोले, "पुस्तक समाप्त हो गई रमेश ! अब मुझे और कुछ नहीं लिखना है भारतसेवक के विषय में। जो कुछ उसका परिचय मैं देना चाहता था और देने की योग्यता रखता था उसके अनुसार प्रस्तुत कर चुका।"

प्रमिला मुस्कराकर बोली, "वाह जी, यह कैसा उपन्यास? कहीं किसी चीज का कोई जोड़ ही नहीं। यानी जहाँ आपकी इच्छा हुई उपन्यास लिखना बन्द कर दिया।"

विनय भाई बोले, "प्रमिला ? यह नया प्रयोग है उपन्यास का जिसे समझने के लिए पाठक के मस्तिष्क को थोड़ी कसरत करनी आवश्यक है।"

और फिर तनिक मुस्कराकर बोले, "परन्तु, मैं इन प्रयोगों से दूर ही हूँ और दूर ही रहना चाहता हूँ प्रमिला !

जहाँ तक मुझे भारतसेवक के विषय में लिखना था मैं लिख चुका। भारतसेवक का अन्तिम अध्याय तुम मंच पर प्रस्तुत करने जा ही रहे हो। इसके पश्चात् जनता की दिशा में प्रस्थान करने के अतिरिक्त और रह ही क्या जाता है ? आखिर इन कार्यालयों में बैठकर तो जन-सम्पर्क और जन-जागरण सम्भव नहीं है।"

प्रमिला मंत्र-मुग्ध हो गई उस यात्रा की बात सुनकर जिस पर वह विनय भाई, रमेश और अपने पूरे 'साहित्य-कला-केन्द्र' की टोली के साथ देश भर का भ्रमण करेगी। जनता और उनके बाल-बच्चों में अपने

संगीत के स्वर से साहस, और उमंग पैदा करेगी ।

रमेश बोला, "विनय भाई ! आपको जो लिखना था आप लिख चुके । अब पुस्तक को रूप देना मेरा काम है । मेरे काम में आप हस्त-क्षेप न करें और विश्वास रखें कि जो चित्र रमेश बनायेगा वह भारत-सेवक का सही चित्र होगा । कल प्रात.काल चलकर आप मंच की तैयारी भी देख लें । आपको देखकर प्रसन्नता होगी कि कितना सुन्दर मंच बना है और कितना सरल । भारतसेवक यदि चाहें तो इसी मंच का प्रयोग अपनी भारत व्यापी यात्रा के लिए कर सकते हैं ।" रमेश ने कहा ।

"सुझाव तो सुन्दर है तुम्हारा रमेश !" विनय भाई बोले, "परन्तु मुझे भय यही है कि कहीं कल ठीक समय पर तुम भारतसेवक का चित्र ग़लत प्रस्तुत कर गये तो बड़ी कठिनाई पैदा हो जायगी । सीधा मंच पर प्रस्तुत करने से सुधार करने का अवसर नहीं मिलेगा ।"

रमेश मुस्कराकर बोला, "मुझपर और मेरी कला पर विश्वास रखिये विनय भाई ! भारतसेवक का चुनाव ग़लत नहीं होगा । और सुधार के लिए तो जीवन पड़ा है । जीवन भर सुधार करते रहिए आप और मैं सुधरता रहूँगा ।"

विनय भाई को तभी-तभी याद आया कि दूसरे दिन तपस्वी सुनील, सेवा माता और जनता बहन भी दिल्ली आ रहे हैं ।

यह सुनकर प्रमिला बोली, "तब तो नाटक वास्तव में सफल होगया आपका । जो कुछ आप करने जा रहे हैं वही प्रेरणा जनता जीजी, तपस्वी सुनील और सेवा माता के मन में भी वर्तमान है । आप उनकी ओर बढ़ते चले हैं और वे आपके पास आ रहे हैं ।

"ये लोग कब तक आ रहे हैं ?" उत्सुकतापूर्वक रमेश ने पूछा ।

"हो सकता है कल ही आ जायें ।" विनय भाई बोले ।

"उनके ठहरने की व्यवस्था कहाँ है ?" रमेश ने पूछा ।

"आना तो उन्हें यहीं चाहिए और मेरा विश्वास भी है कि वे यहीं पधारेंगे । इस घर को छोड़कर अन्य घर के मेहमान ये लोग दिल्ली मे

बनना पसन्द नहीं करेंगे ।"

विनय भाई के ये शब्द सुनकर रमेश ने जिज्ञासापूर्ण स्वर में पूछा, "क्या भारतसेवक श्रीलाल जी कभी सेवा माता और जनता वहन को अपने राजमहलों में निमंत्रित नहीं करते ?"

इस पर विनय भाई मुस्कराकर बोले, भारतसेवक श्रीलाल उन राजमहलों को अपना नहीं समझते रमेश ! वे तो सत्ता रानी के महल हैं, उनमें वह जनता जीजी और सेवा माता को क्यों निमंत्रित करें ?

और फिर जो सत्य यह है कि सेवा माता और जनता वहन इन राजमहलों में कभी जायेंगी क्या ? वे तो महलों में तभी प्रवेश कर सकती हैं जब भारत के सब नर नारियों के पास महलों की व्यवस्था हो। जब तक देश की अधिकांश जनता और उसके वालबच्चों के पास झोंपड़ी की भी व्यवस्था नहीं है तब तक वे फूँस और छप्पर के आश्रमों में ही निवास करेंगी ।"

रमेश के मन की शंका दूर हो गई ।

इसके पश्चात् तीनों खाने पर बैठे । देसी खाना था तीनों का । चटपटा चटाखेदार भोजन नहीं था । अचार, मुरब्बा, पापड़, कटारी इत्यादि की भी भरमार नहीं थी । थोड़ी खीर, पूरी, चटनी और रायता था । दो शाक थे एक रसेदार और दूसरा खुश्क, परन्तु मिर्चें नहीं थीं किसी में भी।

भोजन परसा गया और खाना भी प्रारम्भ हो गया, परन्तु बातें चलती ही रहीं। विनय भाई बोले, "प्रमिला, 'जन-सेवक-समाज' का मेरा कार्यालय अब सुचारु रूप से कार्य कर रहा है। आज कार्यालय में घोषबाबू, आचार्य प्रकाश और रमण जी भी पधारे थे। तीनों बहुत प्रसन्न हुए और अपना पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया है ।

प्रमिला और रमेश दोनों को यह सूचना पाकर प्रसन्नता हुई । प्रमिला गम्भीरतापूर्वक बोली, "इससे अधिक प्रसन्नता की और कोई बात नहीं हो सकती जब कि आप लोगों जैसे भारतसेवक एक साथ मिलकर जनता और उसके बालबच्चों से सम्पर्क स्थापित करने और जन-जागरण का संदेश

देने एक साथ निकलें और एक स्वर में बोलें।"

रात्रि को खाटों पर लेटे-लेटे भी इसी के सम्बन्ध में चर्चा चलती रहीं और जाने कब विनय भाई को नीद आगई।

प्रमिला धीरे से बोली, "कई दिन की नींद आँखों में भरी है, तुम्हारे भैया की।"

रमेश का मन नाटक के अंतिम दृश्य पर अटका हुआ था। वह बोला "भाभी कमाल हो गया और देखो जनता जीजी, सेवा माता तथा तपस्वी सुनील भी कैसे शुभ अवसर पर आ पधारे हैं।"

"अपनी-अपनी भूमिका अभिनीत करने के लिए सबको मंच पर आना ही होता है रमेश !" मुस्कराकर मधुर शब्दों में प्रमिला बोली।

और फिर पूछा "तुम भारतसेवक की कोठी पर गये थे रमेश ! मैंने तो भूल ही गई तुमसे दिनभर के काम का लेखा-जोखा लेना। आओ तनिक दस मिनट के लिए ज़रा लिख लूं, कहीं भूल न जाऊँ और।"

रमेश और प्रमिला सामने दफ्तर में जाकर बैठ गये और दोनों अपनी दिनभर के काम की प्रगति एक दूसरे के सम्मुख रखी।

रमेश बोला, "भारतसेवक श्रीलाल जी मेरे चित्रो को देखकर बहुत प्रभावित हुए भाभी ! और फिर उन्होंने पूछा कि विनय भाई जो 'भारत-सेवक' उपन्यास लिख रहे हैं उसके मुखपृष्ठ चित्र बनाया तुमने ?"

"अजीब संकट में फँस गया हूँ भाभी ! समझ में ही नहीं आता कि किसका चित्र बनाऊँ। विनय भाई से बातें करता हूँ तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह भारतसेवक के रूप में श्रीलाल जी का चित्र बनवाना चाहते हैं और भारतसेवक श्रीलाल जी से की तो ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी दृष्टि में केवल विनय भाई ही एक आदर्श भारतसेवक हैं। श्रीलाल जी कहते हैं कि जब रचना विनय की है तो मुखपृष्ठ पर विनय का ही चित्र जाना चाहिए।"

प्रमिला को हँसी आ गई रमेश की समस्या को सुनकर। औ समस्या वास्तव में जटिल थी, एक चित्रकार के लिए।

इस पर रमेश मुस्कराकर बोला, "परन्तु भाभी मैं भी निश्चय कर चुका हूँ कि मुझे क्या चित्र बनाना है।"

प्रमिला ने आगे कुछ नहीं पूछा तो रमेश बोला, "सत्ता रानी से भी बातें हुई थीं आज तो। कहतीं थीं, 'रमेश भैया ! सच-सच कहो मेरा चित्र कब बनाओगे तुम। राजा साहब के समय के मैं तुम्हें अपने बहुत से चित्र दिखा सकती हूँ परन्तु इधर जबसे भारतसेवक की सेविकाई की है तब से मेरा कोई चित्र ही नहीं बनाता।"

रमेश से सीधी सरल बातें सुनकर प्रमिला ने पूछा "तो तुमने क्या उत्तर दिया सत्ता रानी की बात का ?"

मैंने कहा, "भाभी चित्र बनाने का तो अपना काम ही है। 'साहित्य-कला-केन्द्र' में बहुत सुन्दर चित्र बनाये जाते हैं। आप हमारे यहाँ पधारिये और संरक्षिका बनिये उसकी। चित्रकारी की हस्तकला को उन्नति देने के लिए यह संस्था कार्य कर रही है।"

इस पर उन्होंने मुस्कराकर कहा, "मै एक दिन तुम्हारे यहाँ अपना चित्र खिचवाने अवश्य आऊँगी रमेश ! परन्तु प्रमिला मेरे यहाँ कभी नहीं आती, इसका मुझे खेद है। सेवा माता नहीं आतीं, जनता जीजी नहीं आतीं तो उनसे क्या कहूँ ? बड़ी है वे। परन्तु प्रमिला तो मुझसे और भारतसेवक दोनों से छोटी हैं। वह फिर क्यों नहीं आतीं ?"

"तब यह सुनकर तुमने क्या उत्तर दिया ?" प्रमिला ने पूछा।

"मैंने कहा आने जाने की कोई विशेष बात नहीं है सत्ता रानी ! प्रमिला भाभी के लिए तो शायद ही दिल्ली की कोई गन्दी बस्ती रही हो जिसको जाकर उन्होंने अपनी आँखों से न देखा हो, और वहाँ की गंदगी को अपनी नाक से न सूंघा हो। उन्हें इन महलों में आने में क्या कठिनाई होगी। फिर आने की स्वीकृति देने से पूर्व उनकी एक ही प्रार्थना है आपसे।"

सत्तारानी एकदम सतर्क होकर बोलीं, "मुझसे ? मुझसे और प्रार्थना ? मैं तो उनकी सेवा के लिए हूँ। आज्ञा तो करें आकर वह।

भारतसेवक की छोटी बहन को तो मैं अपनी पलकों पर संभालूंगी ।"

"तो फिर तुमने क्या कहा ?" प्रमिला ने पूछा ।

मैंने कहा "वह आयेंगी आपके पास, और निश्चित रूप से आयेंगी, परन्तु इतनी प्रार्थना है, कि आप उन्हें कोई साड़ी इत्यादि की भेंट देकर लज्जित करने की कृपा न करें । वह कभी किसी की कोई भेंट स्वीकार नहीं करतीं । आम सभाओं में गलों को फूलों से भर देने वाली पुरानी प्रणाली के भी वह विरुद्ध हैं । बड़ी सरल हैं वह सत्ता रानी ! आपको उनसे बातें करने में आनन्द प्राप्त होगा और आप ऐसा अनुभव करेंगी कि जैसे आप किसी ऐसी स्त्री से मिल रही हो जो आपके हृदय की सही दशा को जानती हैं ।"

सत्ता रानी को तुम्हारी बातों में रस नहीं आया होगा रमेश !" प्रमिला ने कहा । "और सम्भव है क्रोध भी आया हो कहीं-कहीं मन में, परन्तु चेहरे पर प्रसन्नता ही छाई रही होगी । बहुत बड़ा गुण है यह भी उनका। कितना भयानक और कितना भ्रामक गुण है यह आज के मानव का कि जिससे सीधे-साधे किसी भी क्रम के चलने में कठिनाई होती है ।"

"रस आये या न आये भाभी, परन्तु सत्ता रानी को तो यहाँ आना ही होगा ।" मुस्कराकर मस्ती के साथ रमेश ने कहा ।

"क्यों ऐसा क्या जादू कर आये हो तुम सत्ता रानी पर कि जिसके कारण उन्हें आना ही पड़े तुम्हारे इस 'साहित्य-कला-निकेतन' में ?" प्रमिला ने पूछा ।

रमेश साहस से सीना उभारकर बोला, "वह जादू है रमेश की चित्र-कला का भाभी ! विनय भाई का उपन्यास तो पाँच दस रुपया खर्च करने पर पलंग के सिरहने तकिये के पास रखने को मिल सकता है, परन्तु रमेश का बनाया हुआ चित्र पा जाना इतना सरल नहीं है । उसके लिए तो उन्हें 'साहित्य-कला केन्द्र' को अपने चरण कमलों से पवित्र करना ही होगा ।"

प्रमिला आज बहुत प्रसन्न थी ।

रमेश फिर बोला, तुम, "सत्ता रौनी को विनय भाई के उपन्यास और अपने चित्रों के अतिरिक्त मैं एक और भी आकर्षण दे आया हूँ भाभी ! कहो तो तनिक आपके अनुमान से वह क्या आकर्षण हो सकता है ?"

प्रमिला मुस्कराकर बोली, "तुम बड़े नटखट होते जा रहे हो रमेश। और क्या, तुमने अपनी भाभी के उल्टे-सीधे गाने की बात कही होगी ?"

और दोनों ने मुस्कराकर कार्यालय का ताला लगाया।

: २९ :

विनय भाई प्रातःकाल ठीक चार बजे शैय्या से उठ बैठे। प्रमिला और रमेश भी उनके साथ-ही-साथ उठे और सब नित्यकर्मों से निवृत्त होकर अपने अपने काम पर जुट गये।

प्रार्थना समय आकर तीनों एकत्रित हो गये और उसके पश्चात् तीनों ने साथ-साथ बैठकर नाश्ता किया।

विनय भाई बोले, "आज किसी भी समय सेवा माता, जनता बहन और तपस्वी सुनील आ सकते हैं, इसका ध्यान रखना और अपने पूर्वाभिनय के कार्यक्रम में किसी प्रकार की कमी न आने देना।"

ये बातें चल ही रही थी कि दूर सड़क पर सामने से सेवा माता, तपस्वी सुनील और जनता जीजी पैदल-पैदल आते दिखाई दिये।

उन्हें देखकर विनय भाई सहर्ष बोले, "लो वे तीनों तो आ ही गये। मेरे विचार से ये तीनो महानुभाव वे ही है। सेवा माता को देखो प्रमिला! इतनी आयु में भी कैसी तीव्र गति के साथ चली आ रही हैं।"

प्रमिला उधर देखकर बोली, "इसमें कोई सन्देह नहीं। जनता जीजी की भी चाल देखो कैसी मस्तानी है। सारी दुनियाँ की चिन्ता अपने मस्तिष्क में बटोरकर भी जीजी के चेहरे से कभी कोई यह अनुमान नहीं लगा सकता कि इन्हें कोई चिन्ता है।"

"चिन्ता अगर देखनी है तो तपस्वी सुनील का चेहरा देखलो प्रमिला! चिन्ता-ही-चिन्ता मे जलाकर अपना सारा शरीर स्याह कर लिया है इन्होने। शरीर को देखो तो ईसा मसीह जैसे हड्डियों के ढाँचे को छोड़कर कही कुछ और दिखाई नही देता है।" विनय भाई बोले।

और इतना कहकर ये तीनों प्राणी उनके स्वागत के लिए आगे सड़क पर बढ़ गये।

अपने मकान से लगभग दो सौ गज की दूरी पर जाकर उनका स्वागत

किया और तीनों ने नमस्कार करके उन तीनों के हाथों का बोझा अपने हाथों में ले लिया।

तपस्वी सुनील ने विनय भाई से पूछा, "'जन-सेवक-समाज' का कार्य कैसा चल रहा है ? तुम्हारे वहाँ पहुँच जाने से मैंने सोचा कि जनता के पैसे का अपव्यय रुक जायगा और किसी समाज-सेवा के कार्य की व्यवस्था होगी। साथ ही सच्चे लगन वाले कार्यकर्त्ताओं को भी जन-हित के कार्य करने का अवसर मिलेगा।"

तपस्वी सुनील की बात का उत्तर देते हुए विनय भाई ने 'जन-सेवक-समाज' के कार्य के प्रति सन्तोष प्रकट किया और कहा "हम लोग देहातों में जन-सहयोग-केन्द्रों की स्थापना करते जा रहे हैं जिनमें रहकर हमारे कार्यकर्त्ता उन देहातों में जन-जागरण का संदेश पहुँचा रहे हैं। इनके अतिरिक्त हमारे अन्य कार्यकर्त्ता भी देश के कोने-कोने में जाकर कार्य कर रहे हैं।

अब मेरा विचार देशभर का एक दौरा करने का है।"

इस पर प्रमिला मुस्कराकर बोली, "देश का यह दौरा परन्तु तपस्वी जी मेरा इनके इस कार्यक्रम से विरोध है। मैं कहती हूँ कि इन्हें अकेले न करके 'साहित्य-कला-केन्द्र' की पूरी टोली के साथ करना चाहिए, जन-सेवक मंच पर जन-सेवक ध्वजा फैराती हुई जब आपकी यह जन-सेवक टोली देश का दौरा करेगी तो जनता जीजी और उनके बाल बच्चों के मन में बड़ा उत्साह होगा ?

इस पर जनता जीजी मुस्कराकर बोलीं, "इसका मतलब यह हुआ कि 'भारतसेवक' उपन्यास भी छपकर तैयार हो गया और प्रमिला तथा तथा रमेश ने उसका नाटक भी तैयार कर दिया।"

"नाटक ही तैयार नहीं किया जीजी ! रमेश ने मंच भी तैयार कर लिया और आप देखेंगी तो सराहना करेंगी और कहेंगी कि यह भारत में किसी संस्था का पहला ही मंच है।" प्रमिला बोली।

"बहुत तीव्र गति से आगे बढ़े हो विनय ! मुझे तुमसे यही आशा

थी। तुम्हारे इस कार्य से देश के वातावरण में एक जन-क्रान्ति का सूत्र-पात होगा। जनता बेटी के बाल-बच्चे धोखा देकर मतलब निकालने वाले राजनीतिज्ञों को समझने लगेंगे और अपने असली सेवकों की भी उन्हें पहचान हो जायगी।" सेवा माता ने कहा।

जनता जीजी बोलीं, "विनय! सुझाव तो प्रमिला का बहुत सुन्दर है और टोली भी तुम्हारी किसी से कम नहीं। जब तुम साहित्य और मंच की शक्ति अपने साथ लेकर आगे बढ़ोगे और योग्य कार्यकर्त्ताओं का जाल जनता के बाल-बच्चों में बिछाते जाओगे तो निश्चित रूप से समझलो कि उनके हृदय में तुम्हारा स्थान बनता जायगा। वे तुम्हारे ऐसे ही बच्चे होंगे जैसे अपने पेट-जाये बच्चे होते हैं।"

जनता जीजी की बात सुनकर विनय भाई बोले, "आपकी आज्ञा है तो इस बार इस नये मंच के प्रयास को ही देखूँ कैसा सफल होता है। परन्तु बाहर जाने से पूर्व इसकी परीक्षा दिल्ली में ही ले लेनी चाहिए।"

इस पर प्रमिला मुस्कराकर बोली, "परीक्षा आप चाहें तो एक नहीं दस बार ले सकते हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जब ये साधारण मंच जनता और उसके बाल-बच्चों को आकर्षित कर लेते हैं तो हमारा सेवा, साहित्य और संस्कृति का प्रसार करनेवाला मंच जनता को क्यों आकर्षित नहीं कर सकेगा?"

"अवश्य कर सकेगा प्रमिला!" विश्वास के साथ जनता जीजी ने कहा, "और जहाँ विनय जैसे लेखक, रमेश जैसे चित्रकार और प्रमिला जैसी कोकिल कंठी गायिका का सहयोग हो वहाँ तो मेरे बाल-बच्चे उछ-लते-कूदते, गाते-बजाते आकर एकत्रित होंगे।

तुम्हें पैसा भी देंगे और तुम्हारी बातों को भी मन लगाकर सुनेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है।"

बातों ही बातों में ये प्राणी जाने कब आकर मकान के पीछे वाले फूल-बाग की घास में बैठ गये।

किसी ने देखा ही नहीं रमेश ने कैसे चुपके से जाकर अतिथियों के

नाश्ते का प्रबन्ध कर दिया, स्नान-गृहों की सफाई कर दी और अन्दर सहन में जो थोड़ी बहुत गन्दगी फैल गई थी उसे भी कूचली लेकर साफ कर दिया।

तभी प्रमिला आकर बोली, "जाने कब चुपके से तुम इधर खिसक आये। मैंने देखा ही नही। मै बातो मे ही उलझी रही और यहाँ तुम्हें सफाई का काम करना पड गया।"

रमेश मुस्कराकर बोला, "कभी आपकी भूल से लाभ उठाकर आपकी थोड़ी सेवा करदूँ तो करदूँ बरना जान-बूझकर तो आप कभी जीवन में मुझे इसका अवसर देने वाली नही हैं।"

"काम ही क्या है रमेश हमारे घर में? तुम्हारे भैया रोज नाराज होते है कि नौकर रख लूँ परन्तु मै सोचती हूँ कि नौकर रख लिया तो मै क्या करूँगी।" प्रमिला ने कहा।

रमेश मुस्कराकर बोला, "आप तो कभी किसी काम को काम समझती ही नही। काम बेचारा काँपने लगता है आपकी शक्ल देखकर?"

"हँसी कर रहे हो अपनी भाभी की रमेश!" प्रमिला मुस्कराकर बोली।

"तुम्हें माता समझता हूँ भाभी! इसलिए जीवन में कभी हँसी सम्भव ही न होगी।" रमेश ने सरल आकृति से कहा।

प्रमिला बोली, "जनता जीजी का मन भी हमारे मत से मिल गया रमेश और उन्होंने हमारी पूरी टोली की यात्रा का समर्थन किया है। और मुझे विश्वास है कि तुम्हारे भैया जनता जीजी के सुझावों को टाल नही सकते।"

इस पर रमेश ने गम्भीर होकर पूछा, "तो क्या 'साहित्य-कला-केन्द्र' भी 'जन-सेवक-समाज' का एक अंग हो जायगा?"

"इसके विषय में अभी कुछ नही कह सकती मै कि वह क्या विचार कर रहे है। मुझे और तुम्हें उनके रहते, इन बातों की चिन्ता करने की आवश्यकता नही है। हमें तो केवल यही सोचना है कि हमारा मंच जनता

श्रौर उसके बाल-बच्चों की अपनी चीज बन जाय।" प्रमिला ने कहा।

"यह तो बनकर रहेगा भाभी ! अब इसमें विलम्ब नहीं होगा।" रमेश बोला।

विनय भाई को कार्यालय जाना था और वह ठीक समय पर खड़े होते हुए बोले, "मैं अब आज्ञा चाहूँगा। आज-ही-आज में कई बातें निश्चित करनी हैं क्योंकि मैं इसी सप्ताह दौरे पर निकल जाना चाहता हूं।"

और फिर प्रमिला तथा रमेश की ओर देखकर बोले, "अपना कार्यक्रम भी निश्चित कर लेना। मैं जाता हूँ।" कहकर विनय भाई चले गये और प्रमिला समझ गई जो उसे समझना था।

सेवा माता, जनता बहन और तपस्वी सुनील तो नाश्ता करके राष्ट्रपिता की समाधि के दर्शन करने निकल गये और भोजन के लिए जनता जीजी ने कहा, "भोजन की चिन्ता न करना। हम लोग संध्या को तुम्हारा पूर्वाभिनय अवश्य देखना पसन्द करेंगें और यदि कोई सुझाव होगा तो वह भी देंगे। हम लोग निश्चित रूप से छै बजे तक लौट आयेंगे। संध्या का भोजन सबका साथ मिलकर होगा। विनय को टेलीफोन पर कह देना कि समय पर आ जाए।"

विनय भाई के आने की बात सुनकर प्रमिला बोली, "उनके आने की बात कुछ न पूछिये जीजी ! आजकल तो उनका बहुत समय 'जन-सेवक-समाज' के कार्य में लग रहा है। रात के आठ-नौ बज जाते है लौटने में।

और फिर आज तो वह शीघ्र से शीघ्र लौटने का प्रयास करेंगे। आप से बातें करने का अवसर ही कहाँ मिलता है। तपस्वी जी से ही देखिये कितने दिन पश्चात् उनकी भेंट हुई है।"

अतिथियों के जाने पर रमेश और प्रमिला अपने-अपने कामों पर जुट गये। दोनों के पास आज पूर्वाभिनय का अन्तिम दिन था और उनकी परीक्षा लेने वाले गुरुजन भी आ पहुँचे थे।

संध्या को ठीक छै बजे आज 'भारतसेवक' के सभी पात्र उपस्थित

थे। तभी तपस्वी सुनील, जनता जीजी और सेवा माता भी आ पधारीं। विनय भाई भी आज छै बजे ही चले आये।

आज के पूर्वाभिनय के विषय में रात्रि को जनता जीजी ने कहा, "नाटक बहुत सफल रहेगा और इसकी सफलता का श्रेय रमेश और प्रमिला को जाता है। इन्हीं दो कार्यकर्त्ताओं के परिश्रम में आप और हम सब लोगों को एक भले काम के लिए एकत्रित कर लिया है। मै इन्हें आशीर्वाद देती हूँ कि ये दोनों अपने लक्ष्य की पूर्ति में सफल हों, अपनी कला का प्रयोग ये मेरे बाल-बच्चों को जाग्रत करने के लिए कर रहे है, यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता है।"

आज का पूर्वाभिनय बहुत सफल हुआ और उसके पश्चात् ख़रबूज़ों की एक दावत भी हुई। विनय भाई ने आज जनता जीजी, सेवा माता और तपस्वी सुनील के आने की प्रसन्नता में 'साहित्य-कला-केन्द्र' के सदस्यों को दावत दे डाली।

ख़रबूजे की दावत और कच्ची खाँड का शर्बत।

बस यही थी विनय भाई की देहाती दावत जिसमें न तो कई प्रकार की तश्तरियाँ, मिठाइयाँ और नमकीन था और न मिर्च और न प्यालियों की भरमार के साथ चाय पानी और बेकरी के बिस्कुट।

'साहित्य-कला-केन्द्र' के सभी सदस्यों ने खूब मन भरकर ख़रबूज़े खाये और ऊपर से डटकर कच्ची खांड का शर्बत पिया।

भोजन किसी ने किया ही नहीं।

और बात सच यह थी कि भोजन बना ही नहीं था। प्रमिला डर रही थी कि यदि किसी अतिथि ने भोजन की इच्छा प्रकट की तो क्या होगा।

परन्तु किसी ने प्रमिला को कष्ट नहीं दिया और जो जाने वाले थे उन्हें विदा करके अन्य सब अपनी-अपनी खाटों पर लेट गये।

लेटने के पश्चात् भी बहुत देर तक, जनता जीजी और विनय, सेवा माता और प्रमिला तथा रमेश और तपस्वी सुनील में बातें होती रहीं।

मंच की व्यवस्था पूरी हो गई। उसे देखकर प्रमिला बोली, "मंच के बीचों-बीच सेवा माता सरस्वती का चित्र तुमने बहुत सुन्दर बनाया है और फिर इसके दोनों ओर कुदाली और वीणा को भी बहुत सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है।"

रमेश बोला मंच बनाने से अधिक सफलता हम लोगों को भाभी, साहित्य प्रसार में मिली है। 'भारतसेवक' की पाँच-पाँच रुपये की दो हज़ार प्रतियाँ हाथों-हाथ निकल गईं।

यह साहित्य-प्रसार नाटक देखने के प्रभाव को जनता में स्थायी बनाने का महत्वपूर्ण साधन होगा।"

"इसमें कोई सन्देह नहीं।" प्रमिला ने कहा। "तब तो मुझे दीखता है कि तुम्हारे भाई की यह भी योजना चल निकली।"

"चल ही नहीं निकली भाभी, यह तो दौड़ रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'साहित्य-कला-केन्द्र' की टोली की एक देशव्यापी यात्रा भारत के वायु-मंडल को भारतसेवक की रूपरेखा प्रदान कर सकेगी।"

विनय भाई ने प्रमिला की बातों के अंतिम शब्द सुनकर कहा "अवश्य कर सकेगी प्रमिला! परन्तु आज सोच रहा हूँ कि यह टोली भी 'साहित्य-कला-केन्द्र' की न होकर 'जन-सेवक-समाज' की ही होनी चाहिए।"

विनय भाई की यह यात सुनकर प्रमिला और रमेश निराधार खड़े रह गये। पहले 'भारत-साहित्य सहयोग' संस्था की स्थापना की और जब काम चल निकला तो 'जन-सेवक-समाज' के हवाले कर दिया उसको। फिर 'साहित्य-कला-केन्द्र' की स्थापना की और आज जब यह संस्था चलने लगी है तो इसे भी 'जन-सेवक-समाज' में ले जाने की बात है।

विनय भाई गम्भीरतापूर्वक बोले, "प्रमिला और रमेश! तुम्हें कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता होगा कि मैं व्यावहारिक जगत से अनभिज्ञ हूँ।

कहीं पर पैर जमाता ही नहीं। जहाँ जमने की स्थिति आती है और मैंने उसे समाप्त करने की बात सोचने लगता हूँ।

परन्तु मैं किसी भी अच्छी चीज़ को समाप्त करने की बात कभी नहीं सोचता। उसे व्यापक बनाने की दिशा में ही मेरी दृष्टि रहती है।"

बातें करते-करते विनय भाई, प्रमिला और रमेश मंच पर जा बैठे।

विनय भाई ने मंच को देखकर कहा, बनाया तो सुन्दर है तुमने विनय ! इसपर बैठकर और सेवा माता सरस्वती के दर्शन करके किसी भी कार्य को करने की प्रेरणा मिलती है।"

विनय भाई ने पूछा, "भारतसेवक उपन्यास सुनते हैं कि शहर भर में फैल गया और उसे लोग बड़े चाव से पढ़ रहे हैं परन्तु मेरे हाथ में अभी तक उसकी एक प्रति भी नहीं आई।"

रमेश ! यदि तुम लेखक होते तो मेरे दिल की बेचैनी को अनुभव करते।"

विनय भाई की बात सुनकर रमेश से रहा नहीं गया और वह श्रद्धापूर्वक बोला, "अन्याय तो किया है मैंने आप पर विनय भाई, परन्तु न्याय की रक्षा के लिए किया है, आपकी आत्मा को कष्ट पहुँचाने के लिए नहीं किया, आपनी आत्मा की तुष्टि के लिए किया है।"

विनय भाई ने गम्भीरतापूर्वक पूछा, "आखिर सुन तो लूं मैं कि तुमने क्या किया है और देख तो लूं मैं कि तुमने कैसा चित्र बनाया है।"

प्रमिला मुस्करा रही थी यह सब सुनकर।

रमेश ने डरते-डरते काग़ज़ों में लिपटी 'भारतसेवक' की एक प्रति निकाली और उसे विनय भाई के हाथों में देते हुए बोला, " मैंने अपने दिल और दिमाग से जिसे सही भारतसेवक समझा है उसका चित्र चित्रित किया है विनय भाई ! कलाकार अनुभव कुछ करे और चित्रित कुछ करे यह सम्भव नहीं, असम्भव है। और जो इसके विपरीत करता है उसे मैं कलाकार नही मानता।"

विनय भाई पुस्तक हाथ में लेकर ठगे से रह गये। उनके मस्तक पर पसीना आ गया। उन्हें ऐसा लगा कि मानों उन्होंने भारतसेवक श्रीलाल

के साथ विश्वासघात किया। उनकी प्रतिष्ठा और अधिकार पर छापा मारा। अनधिकार चेष्टा की।

वह बोल नहीं सके एक शब्द भी रमेश से।

रमेश सरल भाव से बोला, "भूल हो गई विनय भाई! परन्तु यह भूल तो रमेश से जीवनभर होती ही रहेगी। भारतसेवक का चित्र बनाते समय उसके सामने विनय भाई के अतिरिक्त और कोई व्यक्ति आ ही नहीं सकता। जीवन के जितना निकट में विनय भाई के हूँ उतना अन्य किसी के हो ही नहीं सकता।"

तभी मंच के एक किनारे से भारतसेवक श्रीलाल और सत्ता रानी ने प्रवेश किया। विनय भाई, रमेश और प्रमिला ने खड़े होकर उनका स्वागत किया।

विनय भाई ने उपन्यास चुपके से अपने घुटने के नीचे दबा लिया और सोचा कि किसी प्रकार पुस्तक की चर्चा ही न चले तो अच्छा है, परन्तु आज की यह बैठक 'भारतसेवक' के सही रूप को लेकर जनता के बीच में जाने का अन्तिम निर्णय करने के लिए हुई थी।

'भारतसेवक' उपन्यास में इसकी पूरी योजना थी। इसलिए उसका वितरण तो सदस्यों में होना आवश्यक ही था।

भारतसेवक श्रीलाल जी ने गम्भीर मुख-मुद्रा बनाकर पूछा, "भारत-सेवक उपन्यास की एक प्रति तो दे दीजिये, देखें भारतसेवक का कैसा चित्र बनाया है तुम्हारे कलाकार ने।"

और प्रमिला ने पास में रखे हुए पुस्तकों के बंडल से एक प्रति निकालकर उनके हाथ में दे दी।

पुस्तक उनके हाथ में पहुँचते ही विनय भाई को ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो किसी ने उनके सिर पर सैंकड़ों घड़े पानी डाल दिया हो।

परन्तु भारतसेवक श्रीलाल के चेहरे पर अपूर्व प्रसन्नता छा गई। वह खुश होकर रमेश की ओर मुँह करके बोले, "तुमने मेरी जनता जीजी और सेवा माता की भावना को ध्यान में रखकर 'भारतसेवक' का चित्र

बनाया है रमेश ! मैं मुक्त कंठ से तुम्हारे प्रयास की सराहना करता हूँ और विनय से आशा करता हूँ कि वह सच्चा भारतसेवक बनकर देश का दौरा करे और देश की जनता को अपनी सेवा भावना से भरे। जनता के बाल-बच्चों में पारस्परिक सहयोग की भावना जाग्रत कर दे तो उनके जीवन की अनेकों समस्याएँ आपसे आप हल हो जायें। यह तुमको उन्हें समझाना है।"

भारतसेवक की बातें विनय भाई ने गम्भीरतापूर्वक सुनी और आश्वासन दिया कि वह उनकी भारतसेवक की कल्पना को और भी व्यापक बनाने का प्रयास करेंगे और अपना जीवन इस महान् कार्य के लिए लगा देंगे।

इसी समय घोष बाबू, आचार्य प्रकाश और वेदान्ताचार्य रमण जी भी आ गये। मंच को देखते ही उनकी तबियत प्रसन्न हो गयी। रमेश को उसकी चित्रकला के लिए बधाई देकर बोले, "बहुत सादा और सुन्दर मंच बना दिया तुमने रमेश !" और फिर भारतसेवक श्रीलाल जी तथा सत्ता रानी की ओर देखते हुए आँखें तिरछी करके विनय भाई के अगल-बगल बैठ गये।

प्रमिला ने 'भारतसेवक' उपन्यास की एक-एक प्रति इन सबको भेंट की और सबने उसे उलट-पलटकर देखा। भारतसेवक का चित्र देखा, भारतसेवक की रूप-रेखा देखी और विश्वास किया कि यह भारतसेवक वास्तव में जन-सम्पर्क और जन-जागरण का अराजनीतिक मार्ग निकाल सकेगा। इसको सहयोग देना जनता को उन्नति का मार्ग सुझाना है।

मंच पर बैठे सज्जनों ने अपनी-अपनी बातें कहीं और बात सबकी एक ही थी। कोई अन्तर नहीं था किसी के कहने में। वही जन-सम्पर्क और जन-जागरण की बात। अन्तर केवल बात कहने के लहजे में था, व्याख्या में था, विस्तार में था और उन सबकी अब कोई आवश्यकता नहीं थी जब पूरा तीनसौ पन्नों का उपन्यास ही उस पर लिख दिया गया।

विनय भाई खड़े होकर बोले, "कहने का समय समाप्त हो गया अब। यात्रा पर प्रस्थान करने का समय है। काम करने का समय है। व्याख्यान से पेट नहीं भरता, तन नहीं ढकता, विश्राम के लिए घर नहीं मिलता, शिक्षा नहीं मिलती, इलाज नहीं होता बीमारी का। इस सबके लिए श्रम करना आवश्यक है।

परन्तु उस श्रम के फल को कोई लूटकर न ले जाय इसके लिए जागरूक रहना है। तेज और बल के साथ अपने श्रम से अर्जित साधनों को सुरक्षित रखना है।

हमें एक समाज का निर्माण करना है। वैसा होने में ऊपर का समाज नीचे और नीचे का ऊपर आयगा। परन्तु इस नीचे आने और ऊपर जाने में टक्कर नहीं होनी चाहिए। यही भारतसेवकों की योजना की कसौटी है। यह टक्कर राष्ट्र की उन्नति में घातक होगी।"

"निश्चित रूप से घातक होगी।" मंच पर बैठे सभी सज्जनों ने एक स्वर से कहा। 'घातक होगी' सब सभा में बैठे लोगों के कंठ से निकला।

विनय भाई फिर बोले, "हमें शान्तिपूर्वक आगे बढ़ना है। जो लेटे और बैठे हुए हैं उन्हें सहारा देकर खड़ा करना है और जो असुरक्षित मैदान में दौड़ लगाकर अन्य लोगों को उनकी आवश्यकताओं से भी वंचित करने का प्रयास करना चाहते हैं उन्हें रोककर रखना है। उनकी दौड़ पर रोकथाम होने की आवश्यकता है।

यही वह महत्वपूर्ण कार्य है जिसे लेकर 'जन-सेवक-समाज' की स्थापना की गई है।"

इसके पश्चात् प्रमिला ने देश व्यापी दौरे का प्रस्ताव सबके सामने प्रस्तुत करके कहा, "आपको आज यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आज से 'साहित्य-कला-केन्द्र' कोई पृथक संस्था नहीं रही। यह संस्था भी 'भारत-साहित्य-सहयोग' की ही भाँति 'जन-सेवक-समाज' में विलीन हो गई।"

यह सूचना सुनकर घोष बाबू, आचार्य प्रकाश और रमण जी अन्दर-

ही-अन्दर बहुत तिलमिलाये परन्तु विरोध नहीं कर सके क्योंकि 'जन-सेवक-समाज' का साहित्य-प्रसार, जन-सम्पर्क और जन-जाग्रति के कार्य-क्रम में अपना पूरा सहयोग देने का वे विनय भाई को वचन दे चुके थे।

भारतसेवक श्रीलाल प्रधान पद पर बैठे थे। वहीं से उन्होंने गम्भीर वाणी में पूछा, "किसी को कोई आपत्ति है इसमें ?"

घोष बाबू बोले, "आपत्ति तो किंचित मात्र भी नहीं और 'साहित्य-कला-केन्द्र' का व्यापक स्वरूप हो, यह देखकर प्रसन्नता ही हुई, परन्तु तुम्हारी गहरी राजनीति से तनिक भय लगता है भारतसेवक ! अपनी सादगी ही सादगी में तुम क्या कुछ गुल दिखाओ, इसका कुछ पता नहीं चलता। तुम्हारी राजनीति का यह नया प्रयोग मैं देख रहा हूँ कि बहुत ही सफल सिद्ध होता जा रहा है"

घोष बाबू की बात को जरा टालकर श्रीलाल जी बोले, "आपको यह जानकर हर्ष होगा कि मैं आज की इस सभा में अपना भारतसेवक-पद विनय को सहर्ष प्रदान करता हूँ।"

और फिर सत्ता रानी की ओर मुँह करके पूछा, "तुम्हारा क्या मत है इसमें सत्ता रानी ?"

सत्ता रानी मुस्कराकर बोली, "मैं क्या मत प्रकट कर सकती हूँ आपके सामने ! आपके संसर्ग में रहकर मैंने एक ही बात सीखी है कि सचाई को मान लेने से सुगम आगे बढ़ने का और कोई रास्ता नहीं। सो आज आप सभी महानुभावों के सम्मुख स्वीकार करती हूँ कि 'जन-सेवक-समाज' को मेरे चुने हुए भारतसेवक गति प्रदान नहीं कर सके।

और इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि विनय भाई ने इतने कम समय में इस संस्था को जो गति दी की है वह इस संस्था के निर्माण में अपना विशेष स्थान रखती है।"

सत्ता रानी इससे भी और आगे बढ़कर बोलीं, "'जन-सेवक-समाज' में 'साहित्य-कला-केन्द्र' के कार्यकर्त्ताओं की पूरी टोली-की-टोली जन-सम्पर्क और जन-जागरण के लिए मिल जाने से 'जन-सेवा-समाज' को चार चाँद

लग जायेंगे। समाज का पूरा वातावरण साहित्यिक, सांस्कृतिक और कलाप्रिय हो जायगा। उसमें मस्तिष्क की उधेड़-बुन को नीचे दबाकर वही भावना प्रवाहित होगी जो मानव मात्र के जीवन को शान्ति प्रदान करेगी।"

सत्ता रानी की बात सुनकर आज घोष बाबू, आचार्य प्रकाश और रमण जी चमत्कृत रह गये।

सत्ता रानी तनिक मुस्कराकर बोलीं, "चिन्ता न करें आप लोग, मैं सेवामाता के पथ पर बहुत शीघ्र आने वाली हूँ।"

विनय भाई सुनकर मुस्कराते हुए बोले, "तब तो भारतसेवक श्री-लाल का श्रम भी सफल हुआ और सेवामाता की इच्छा भी पूर्ण हुई। जनता जीजी को यह देखकर कितनी प्रसन्नता होगी, इसका आप, सभी अनुभव कर सकतीं हैं।"

सभा के सभी सदस्यों ने 'साहित्य-कला-केन्द्र' को भी जन-सेवक-समाज में विलीन करने और उसी के अन्तर्गत 'भारतसेवक' मंच को लेकर देश का दौरा करने का निश्चय किया।

प्रमिला ने वीणा संभाली और संगीत प्रारम्भ किया।

तेज दो, बल दो माँ !
अन्धकार को मिटायें हम।

सरस्वती के चित्र के एक ओर भारतसेवक, सत्ता रानी, और रमणजी थे तथा दूसरी ओर विनय भाई, घोष बाबू और आचार्य प्रकाश। प्रमिला बीचोंबीच सेवा माता सरस्वती की तस्वीर के नीचे वीणा लिए बैठी थी। संगीत आगे बढ़ा :

मुस्कराती ज़िन्दगी यह,
लहलहाती ज़िन्दगी यह,
स्वप्न बनती जा रही क्यों ?
सोचते हैं।

जि़न्दगी इन्सान की
मैशीन बनती जा रही क्यों ?
सोचते हैं।
कल्पना में मूल का
आधार खोती जा रही क्यों ?
सोचते हैं।
बन रहा साहित्य कैसा,
कल्पना का भूल सपना,
पर जहाँ बिखरा पड़ा साहित्य अपना,
कौन जाता है वहाँ ?
यह सोचते हैं।
गाँव पर साहित्य लिखते
बहुत से लेखक हमारे,
पर सचाई है यही कि
गाँव की मिट्टी न देखी,
गाँव का पानी न देखा,
गाँव की ताक़त न देखी।
फिर रहे हैं बावरे से
आज ये लेखक अहेरी,
बींधने को गाँव की सुकमारता।
दिन हुए बीते पुराने, वे अहेरी,
जब चलीं चालें तुम्हारी,
अब नहीं फँसती तुम्हारे
जाल में आभा पुरानी।
नव प्रयोगों में तुम्हारे
क्यों फँसे आभा गँवारिन ?

तेज दो बल दो माँ !
अंधकार को मिटायें हम ।
जन-जन की आभा से,
जन-जन के गौरव से,
जनता के गौरव का दीपक जलायें हम ।
जनता के जीवन की उन्नति का,
जनता के बच्चों की जाग्रति का,
जीवन-संदेश सुनायें हम ।
तेज दो, बल दो माँ !
अंधकार को मिटायें हम ।

गाते-गाते पूरी टोली मंच से नीचे उतर आई और दोनों ओर बैठे दर्शकों के बीच से होती हुई जनता और उसके बाल-बच्चों की दिशा में यात्रा पर निकल पड़ी ।

इसी समय ठीक उनके सामने प्रकाश हुआ और क्या देखा कि सामने से सेवा माता, तपस्वी सुनील और जनता जीजी अपनी खंजड़ी और खड़ताल पर गाते हुए आ रहे हैं :

तेज दो बल दो माँ,
अंधकार को मिटायें हम ।

नाटक के पंडाल के बीचोंबीच दोनों का सम्मिलन हुआ और फिर सब मिलकर मंच पर गये ।

मंच पर पहुँचकर जनता जीजी ने सेवा माता की ओर देखकर कहा "जन-सेवक-समाज" को आशीर्वाद देने सेवा माता स्वयं आपके बीच आई है । आपके हृदयों की श्रद्धा को देखकर गंगा माता स्वयं यहाँ आगई ।

भारतसेवक विजय भाई की यह देशव्यापी यात्रा सफल हो इसकी हृदय से कामना करती है । आप सब मिलकर एक स्वर में कहें :

देश में जन-जाग्रति हो ।
और सब ने कहा, "देश में जन-जाग्रति हो ।"

जागे जागे देश हमारा :
जागे अपने देश की जनता,
जागे यह जग सारा।

यह स्वर पंडाल के वायुमंडल में ऊपर से गुंजरित हो उठा और सबने उसके स्वर में स्वर मिलाया।

सभा समाप्त हो गई परन्तु दर्शक मंत्रमुग्ध से बैठे रह गये।

तो विनय भाई ने दर्शकों से हाथ जोड़कर कहा "सभा की कार्य-वाही समाप्त हुई। अब यात्रा करनी है कल से मुझे। यह नाटक नहीं था जो आप देख रहे थे। हमने आपके सम्मुख भारतसेवक की रूपरेखा प्रस्तुत की है और 'जन-सेवक-समाज' का कार्यक्रम। हमें विश्वास है कि आप लोग अधिक से अधिक संख्या में जन-सेवक बनकर 'जन-सेवक-समाज' के सदस्यों की संख्या बढ़ायेंगे।

सभा विसर्जित होती है।